

श्रीः ।

श्रीपण्डितश्यामलालदैवज्ञसंगृहीत—
ज्योतिषश्यामसंग्रह ।
(जातकभाग)

वंशावरेलिकस्थ पण्डित श्यामलालकृतक—
‘श्यामसुंदरी’ भाषाटीका सहित ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष—“ श्रीबेङ्गटेश्वर ” स्टीम्—प्रेस,

बर्मबई.

श्रीः ।
भूमिका ।

ज्योतिर्विनोदरसिकान् विज्ञापयामि ।

देखना चाहिये इस संसारमें परब्रह्म परमेश्वरने ज्योतिषशास्त्ररूपी एक कैसा रत्न पैदा किया है कि जिसके द्वारा सम्पूर्ण शाणिमात्रोंके पूर्वजन्म इस जन्म परजन्मका हाल और उनका प्राप्त होनेका समय अच्छी तरह जान सकते हैं। मनुष्योंके जन्ममरणका समय कोई शास्त्र नहीं जान सकता है परंतु इस शास्त्र के द्वारा भलीभांतिसे उक्त बातें साचित होती हैं। जिस मनुष्यने होराशास्त्ररूपी अंजनको नेत्रोंमें दिया है वह त्रिकालदर्शी देवता-ओंके समान संसारमें पूजनीय होता है। सृष्टिकर्ताने जिस वक्त वेदके चार भाग किये उसी समय छः अंग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष बनाये हैं। व्याकरणको वेदका मुख, ज्योतिषको नेत्र, निरुक्तको कर्ण, कल्पको हस्त, शिक्षाको नासिका, छंदको दोनों पैर बनाये हैं, क्योंकि सिद्धांतशिरोमणिमें ऐसा लिखा है—“शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोतमुक्तं निरुक्तं च कल्पं करौ ॥ या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका पादपञ्चद्वयं छंद आद्यैर्बुधैः ॥” परंतु इन अंगोंमें मुख्यता नेत्रोंको ही दी है, क्योंकि कर्ण नासिकादि सब अंगोंसहित मनुष्य नेत्रोंके हीन होनेसे कुछ नहीं कर सकता है—“संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिभिश्चक्षु-षांगेन हीनो न किंचित्करः” सो ऐसा अद्वितीय रत्न इस संसारमें लोप हुआ जाता है इसका कारण यह है कि जो ज्योतिषी लोग इस विद्याको जानते हैं वे दूसरेको नहीं बतलाते हैं केवल श्लोकका अर्थमात्र पढ़ा देते हैं इस शास्त्रका गूढ लक्ष्य नहीं समझते हैं, यह शास्त्र गुरुलक्ष्य कहाता है जब उन विद्याधियोंको इसका लक्ष्य नहीं मालूम हुआ तो उनका फलादेश कव ठीक मिलेगा ऐसी सबबसे इस शास्त्रकी और पण्डितलोगोंकी निंदा होने लगी; ऐसी व्यवस्था देखकर मुझको सोच पैदा हुआ कि हमारे ब्राह्मणभाइयोंका अपमान न हो और इस शास्त्रका प्रकाश पहलेकी तरह किस तरह

होना चाहिये इसलिये मैंने ज्योतिषश्यामसंग्रह नामक ग्रंथ ज्योतिष-
की बहुत २ पुस्तकोंसे चार वरसमें बहुत परिश्रम करके एकत्रित किया ।
इसमें संस्कृत मूल और भाषाटीका चक्र उदाहरणसहित है और जिस
जगह गुरुलक्ष्य थे उनको भी खुलासा कर दिया कि जिससे जो लोग थोड़ी
विद्या भी जानते हैं अथवा इस शास्त्रका गूढ़ लक्ष्य नहीं जानते हैं उनके
लिये अच्छीतरहसे सुगमतापूर्वक फलादेश जन्मपत्रिका भूत भविष्यत्
वर्तमान कहनेके लिये इस ग्रंथके पठनेसे मनुष्यको प्राप्त होगा सो केवल
इस एक ही ग्रंथके द्वारा जातकका सम्पूर्ण फलादेश कह सकेगे । जो कुछ
फल कहेंगे सो ठीक ठीक समयानुसार मिलेगा और विनयपूर्वक प्रार्थना
करता हूँ जो विद्वज्जन पुरुष इस ग्रंथको पढ़ेंगे वा पढ़ावेंगे सो दया करके
जिस जगह अशुद्ध हो उसको शुद्ध कर लेंगे । इस ग्रंथकी श्यामसुंदरी
नामक भाषाटीका सचक्र उदाहरण सहित सरल वाणीमें कर दी है । इस
पुस्तकको छब्बीस अध्याय कर सुशोभित किया है तिसमें जपदानविधि
पहिला अध्याय है । इसमें मंगलाचरण, शुक्र भृगुजीका प्रश्नोत्तर, जप
करनेवालेको क्या विधि करनी चाहिये, यजमान कौन विधिसे कैसे
आह्वानसे जप करवावे, दान किस प्रकारके आह्वानको दे । अध्याय दूसरा—
इसमें चालीस योग हैं इन योगोंमें पूर्वजन्मका भी कुछ संक्षेप हाल कहा
है उन पूर्वजन्मार्जित कर्मोंका फल वर्णन किया है और निःसंतानादि
दुयोगोंके दूर करनेके लिये तंत्रोक्त मंत्र और दान भलीभांतिसे निर्णय
किया है, उन यत्नोंके करनेसे मनुष्यका दुष्ट फल दूर हो जाता है, शुभ
फलकी प्राप्ति होती है । अध्याय तीसरा—इसमें राजयोगसहित उदाहरणको
कुंडलियोंसहित बनाया है । इन योगोंमें उत्पन्न हुए मनुष्य अवश्य
ही राजसिंहासनको प्राप्त होते हैं । चौथा स्त्रीजातकाध्याय है—इसमें
स्त्रियोंके सुलक्षण और कुलक्षण कहे हैं और स्त्रियोंके राजयोग
भी बताये हैं ऐसे योगोंमें पैदा हुई स्त्रियां अवश्य ही महारानी
होती हैं । पांचवां सूर्यचंद्रयोगाध्याय है, इसमें सूर्यसे उत्पन्न हुए वेशी,

वोशी, उभयचरी, कर्तरी योग उनका फल कहा है. चंद्रमासे सुनफा, अनफा, दुरुधरा, केमद्रुम, अधियोगसहित केमद्रुम भंग कहा है. छठा मिश्रकाध्याय है, इसमें मिले हुए योग जल, दरिद्र, नीचबृत्ति, चांडाल, म्लेच्छ, सहस्राधिपति, द्वयसहस्राधिपति, त्रयसहस्राधिपति, अष्टसहस्राधिपति, अयुताधिपति, लक्षाधिपति, द्विलक्षाधिपति इसी तरह कोट्याधिपतितक, ज्योतिष, न्याय, शब्द, वेदांत, वैद्य, तंत्र, काव्य, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, शिल्प, जैन, अनेक विद्याओं-के योग, कणदाता, कणयस्त, धर्माध्यक्ष, दानाध्यक्ष, दास, गुरुमात्रि, गुरुदारगामीजी ऐसे अनेक योगोंका वर्णन किया है. सातवां शरीरदोषाध्याय है, इसमें अंध, काण, बधिर, कुष्ठ, दद्धु, खांस, क्षयी, गुल्म, हृदोदर, मूत्रलच्छ, प्रमेट, वातपित्तकफादिजनित बहुतसे रोगोंके योग अलग अलग बनाये हैं. आठवां प्रब्रज्यायोगाध्याय है, इसमें संन्यासयोगसहित भेदोंका वर्णन किया है. नौवां नाभसयोगाध्याय है, गाभसयोग, रज्जु, मुशल, नल, दल, अहि, माला, गदा, पाश, शकट, विंहग, शृंगाटक, हल, वज्र, कमल, वापी, कूप, शर, शक्ति, दंड, नौका, कूट, छत्र, चाप, अर्द्धशरी, चक्रदामिनी, समुद्र, वल्लकी, दामिनी, केदार, शूलयुग, गोलादियोग उनका फलभी कहा है. दशवां पंचमहापुरुषाध्याय है, इसमें रुचक, भद्र, हंस, मालव्य, शशक ये महाराजयोग हैं इनमें पैदा हुए मनुष्य महाराजा होते हैं. एकादशवां लघप्रभेदाध्याय है, इसमें कालपुरुषको अंग, राशियोंकी संज्ञा, स्वरूप, रंग, पुरुष, स्त्री, कूराकूर, चर, स्थिर, द्विस्वभाव, केंद्रबल, शीषोदय, पृष्ठोदय, पड़वर्ग, द्वादशवर्ग, द्वादशभावसंज्ञा, सम्पूर्ण उदाहरणसहित चक्र बनाये हैं. द्वादशवां घहप्रभेदाध्याय है, इसमें घहोंका स्वरूप संज्ञा, पाप, शुभ, पुरुष, स्त्री, नपुंसक, रस, लोक, सार, स्थान, वस्त्र, धातु, क्रतु, दृष्टि, ऊर्ध्व, सम, अधोद्वष्टि सहित राहुकेतुके, उच्च, नीच, स्वक्षेत्र, मूलविक्रोण, बलसहित उदाहरणके सचक, तात्कालिक, पंचधा, नैसर्गिक मैत्री, स्थानबल, दिग्बल, रात्रिदिनबल, चेष्टाबल बनाये हैं. बारहवां नष्टजातकाध्याय है, इसमें नष्टजन्मपत्र बनानेकी रीति उदाहरणके सहित बनाई है जो मनुष्य

केवल गुण भाग देना जानता होगा निःसंदेह इस ग्रंथके द्वारा नष्ट जन्म-पत्र बना लेगा। चौदहवाँ गर्भाधानाध्याय है—इसमें श्लियोंको क्तु होनेका कारण वा गर्भका धारण, कन्या वा पुत्रोत्पत्ति, दिव्यादि उत्पत्ति, प्रभूतसंततियोग, गर्भलघ्से वा प्रश्वलघ्से प्रश्वकुंडलीका बनाना याने अमुकदिन बालक पैदा होगा उसको उदाहरणसहित बताया है। जो इस उदाहरणकी रीतिसे बनावेंगे निश्चय गर्भकुंडलीसे प्रसवकुंडली बना लेंगे। पंद्रहवाँ प्रसवाध्याय है इसमें बालकके पैदा होनेका हाल, सूतिकागृहनिर्णय आदि बहुत हाल वर्णन किया है। सोलहवाँ अष्टवर्गाध्याय है—इसमें सूर्यादि सब ग्रहोंकी रेखासहित राहुकेतुकी दशा भी बनायी है। सत्रहवाँ द्विग्रहयोगाध्याय है—इसमें सूर्यादि दो दो ग्रहोंके योग हैं। अठारहवाँ त्रिग्रहयोगाध्याय है—इसमें सूर्यादि तीन ग्रहोंके योग हैं। उन्नीसवाँ चतुर्ग्रहयोगाध्याय है—इसमें चार २ ग्रहोंके योग हैं। बीसवाँ पञ्चग्रहयोगाध्याय है—इसमें पांच ग्रहोंके योग हैं। इक्कीसवाँ षड्ग्रहयोगाध्याय है—इसमें छः वा सात ग्रहोंके योग हैं। बाईसवाँ पाकाध्याय है—इसमें विंशोन्नरी अष्टोन्नरी योगिनी दशा बनानेकी रीति सचक उदाहरणसहित बतायी है। तेईसवाँ अंतरदशाध्याय है—इसमें तीनों प्रकारकी दशाओंके अन्तर स्पष्ट करके सबके चक्र बनाये हैं। चौबीसवाँ प्रत्यंतरदशाध्याय है—इसमें इक्यासी चक्र स्पष्ट करके विंशोन्नरी दशाके प्रत्यंतर बनाये हैं। पच्चीसवें अध्यायमें भावफल आयुर्दीयसहित बताया है और छब्बीसवें अध्यायमें ग्रंथकर्त्ताके वंशका वर्णन किया है। जो महाशय इस ग्रंथका पठन पाठन करेंगे वे बहुतलाभ उठावेंगे व संसारमें यशको प्राप्त होंगे, अतः सदैव मुझ चरणसेवकको आशीर्वाद दिया करेंगे। इस ग्रंथका सर्व हक्क सेठ श्रीखेमराज श्रीकृष्णदासको दे दिया है। विना सेठ श्रीखेमराज श्रीकृष्णदासकी आज्ञाके कोई न छापे यह निवेदन है।

द्विजचरणारविंदानुरागी—राजज्योतिषी पंडित श्यामलाल,
बरेलीवासी, पश्चिमोत्तर,

॥ श्रीः ॥

अथ ज्योतिषश्यामसंग्रहविषयानुक्रमणिका ।



विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.
अध्यायः १ ।		श्रीनन्दयोगः ...	२४	राजयोगचक्राणि ...	४७
जपदानविधिः ...	१	विपत्तियोगः ...	"	छब्योगः ...	५९
जापकविधिः ...	"	चक्रदामिनीयोगः ...	"	सिंहासनयोगः ...	६६
दानविधिः ...	३	संताननाशयोगः ...	२५	राज्यप्राप्तिकालः ...	६७
अध्यायः २ ।		विपरीतयोगः ...	२६	अध्यायः ४ ।	
योगवर्णनम् ...	५	कूटयोगः ...	२७	स्त्रीजातकम् ...	६८
निरपत्ययोगः ...	"	राजयोगः ...	२८	विशांशवशात्स्त्रीफलम्	"
मृत्युप्रजायोगः ...	६	अनुभावयोगः ...	"	स्त्रीस्त्रीमैथुनयोगः ...	७०
महासागरयोगः ...	८	कपालयोगः ...	"	कापुरुषयोगः ...	"
महिषाकृतियोगः ...	९	पिशाचयोगः ...	३०	मात्रा सह व्यभिचा-रणीयोगः ...	७१
मातृघातकयोगः ...	१०	विनाशयोगः ...	३२	बुद्धिपतियोगः ...	७२
दृश्ययोगः ...	११	वाग्भवयोगः ...	३३	लग्नस्थग्रहफलम् ...	७३
विद्यातयोगः ...	१२	आनन्दयोगः ...	"	वैधवयोगः ...	"
त्रिषुधातियोगः ...	१३	अनुज्ञातयोगः ...	३४	बहुपुरुषगामिनीयोगः	"
शक्तयोगः ...	१४	वैद्यात्वहरउपायः ...	"	ब्रह्मवादिनीयोगः ...	७४
विलासहानियोगः	१५	गर्भस्नावहरं यज्ञोपवीतदानम् ...	३७	संन्यासिनीयोगः ...	"
शून्ययोगः ...	"	पूजोन्तरकृत्यम् ...	३८	स्त्रीणां राजयोगः ...	"
इलाख्यस्तर्पयोगः ...	१७	मृतपुत्रत्वहरम् ...	३९	अध्यायः ५ ।	
विफलनामयोगः ...	"	निरपत्यत्वहरम् ...	"	सूर्यचन्द्रयोगः ...	७६
आमयोगः ...	१८	मृतपुत्रत्वगर्भकीलत्वएकापत्यत्व-		बोशियोगफलम् ...	"
दारूणयोगः ...	१९	काकवंध्यात्वकन्याप्रजात्ववंध्या-		वेशियोगफलम् ...	"
चन्द्रयोगः ...	२०	त्वहरम् ...	४०	उभयचरीयोगफलम्	७७
अद्भुतसागरयोगः ...	२१	मृतपुत्रत्वकन्याप्रजात्वहरम् ...	"	सुनफानकादुरुधरा-	
अद्वाद्भुतयोगः ...	"	अद्यायः ३ ।		केमद्रुमयोगः ...	"
सागरनामयोगः ...	"	राजयोगः ...	४३	सुनफायागफलम् ...	७८
विपाकयोगः ...	२२			अनकायोगफलम् ...	"
पातयोगः ...	२३			दुरुधरायोगफलम् ...	"
नंदयोगः ...	"			केमद्रुमयोगफलम् ...	७९
ऐन्द्रवाहुयोगः ...	"				

अनुक्रमणिका ।

विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.
अन्यप्रकारेण केम- दुमयोगः ...	७९	विशधवंसयोगः ...	९१	वैद्यशास्त्रविद्योगः	१०२
केमदुमभंगः ...	८०	शिलिपयोगः ...	९२	मंत्रशास्त्रविद्योगः ...	”
केमदुमभंगयोगः ...	”	दासीजातज्ञानयोगः ”	”	फारसीभरवीयोगः ...	”
प्रकारांतरेण दुरुधरायोगः ”	”	नीचकर्मकृयोगः ...	”	गोरुंडविद्यायोगः ...	१०३
विशेषेण दुरुधरायोगः ८१	”	चांडालयोगः ...	”	जैनशास्त्रविद्योगः ...	”
उक्तयोगकारकग्रहफलम् ”	”	कुलपांसुयोगः ...	९३	गारुडीविद्याविद्योगः ”	”
लग्नचंद्रोपचयस्थशुभ-	”	तस्य फलम् ...	”	धर्माध्यक्षयोगः ...	”
ग्रहफलम् ...	८२	पिशाचयोगः ...	”	दानाध्यक्षयोगः ...	१०४
जातस्वभावज्ञानम् ...	”	अन्धयोगः ...	”	महादानकृयोगः ...	”
थनसौख्ययोगः ...	”	म्लेच्छयोगः ...	”	गुरुभक्तियोगः ...	१०५
अधियोगः ...	८३	कास्त्रीसंयोगयोगः ”	”	गुरुदारगामियोगः ...	”
अध्यायः ६ ।	”	कस्मिन् गृहे संयोगः ”	”	अध्यायः ७ ।	”
मिश्रयोगवर्णनम् ...	८४	शूद्रोऽपि विप्रवद्योगः ”	”	शरीरदोषवर्णनम् ...	१०६
निजभुजार्जितथन-	”	विप्रवातियोगः ...	”	काणयोगः ...	”
प्राप्तियोगः ...	”	बालघातियोगः ...	”	मूकयोगः ...	”
दरिद्रयोगः ...	”	गोमृगजातिघातियोगः ९६	”	स्खलद्रीर्योगः ...	”
ज्ञातिच्युतदरिद्रयोगः	”	पक्षिहन्त्रयोगः ...	”	अन्धयोगः ...	१०७
स्त्रीमरणयोगः ...	८५	दासयोगः ...	”	निशान्धदोषः ...	१०८
स्त्रीसहितकाणयोगः	”	भृतकयोगः ...	”	जन्मान्धयोगः ...	”
जितेन्द्रिययोगः ...	”	सहस्राधिपतियोगः ९७	”	पित्रादिकानामन्धयोगः ”	”
कुलश्रेष्ठयोगः ...	”	सहस्रद्वयाधिपतियोगः ”	”	नेत्रोगयोगः ...	१०९
वैध्यापतियोगः ...	८६	निरुचहस्राधिपतियोगः ”	”	कफदोषः ...	”
स्त्रीपुत्रविहीनयोगः	”	अष्टसहस्राधिपतियोगः ”	”	कामान्धशास्त्रान्धदोषः ”	”
तीर्थकृयोगः ...	”	वयुताधिपतियोगः ९८	”	कर्णरोगः ...	”
जलयोगः ...	८७	लक्षाधिपतियोगः ...	”	दृष्टिदोषः ...	”
जलयोगफलम् ...	”	द्विलक्षाधिपतियोगः ”	”	मन्दाक्षिदोषः ...	११०
चौरयोगः ...	”	विलक्षाधिपतियोगः ... ”	”	कर्णनाशदोषः ...	”
चौराधिपतियोगः ...	८८	तदूर्ध्वं धनपतियोगः ९९	”	रसनाविद्यातयोगः ”	”
भिक्षाटनयोगः ...	८९	कोट्याधिपतियोगः ... ”	”	गुणस्वरदोषः ... ”	”
धनहीनयोगः ...	”	ऋणदात्रयोगः ... ”	”	जिह्वाविद्यातयोगः ”	”
कृपणयोगः ...	”	ऋणग्रस्तयोगः ... १००	”	दन्तरोगः ...	१११
नीचवृत्तियोगः ...	९०	ज्योतिषशास्त्रविद्योगः १०१	”	शीतदोषः ... ”	”
स्त्रीसहुंश्वलयोगः ”	”	न्यायशास्त्रविद्योगः ”	”	कर्णदोषः ... ”	”
भार्यासुतहीनयोगः ९१	”	शृङ्गशास्त्रविद्योगः ... ”	”	सामान्यधिरयोगः ११२	”
वृद्धास्त्रीशुद्धपुरुषयोगः ”	”	वेदान्तविद्यीयः ... ”	”	विकृतदन्तयोगः ... ”	”
दुःखियोगः ... ”	”	काव्यशास्त्रविद्योगः ”	”	खल्वाटयोगः ... ”	”
		पद्मशास्त्रविद्योगः ... १०२	”	कुष्ठदोषः ... ”	”

अनुक्रमणिका ।

९

विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.
लूतकुष्टयोगः ...	११३	पांडुकुष्टयोगः ...	१२१	अध्यायः ८ ।	
दक्षकुष्टस्वेतकुष्टयोगः "	"	खर्जूरकुष्टयोगः ...	१२२	प्रब्रज्यायोगवर्णनम् ...	१३१
कुञ्जदोषः ...	११४	पातकियोगः ...	"	प्रवज्याभेदः ...	१३२
उन्मादयोगः ...	"	अंगशूलयोगः ...	"	संन्यासयोगः ...	"
पातकियोगः ...	११५	उदरहच्छूलदोषः ...	"	योगिप्रब्रज्यायोगः	१३३
अपस्मारयोगः ...	"	उष्णशीतस्लीहरोगः	१२३	चतुर्ग्रहाणां प्रब्रज्या-योगः ...	"
सत्यमद्वाख्ययोगः	"	कफरोगयोगः ...	"	पंचग्रहाणां प्रब्रज्या-योगः ...	"
गदायोगः ...	११६	पित्तरोगः ...	"	षडग्रहाणां प्रब्रज्या-योगः ...	"
नेत्रकर्णदोषः ...	"	कृष्णपित्तवणदोषः	"	प्रब्रज्याभक्तयोगः ...	"
संग्रहणीरोगयोगः	"	खंडयोगः ...	१२४	राजप्रब्रज्यायोगः ...	१३४
श्वासक्षयगुलमलीह-विद्रधियोगः ...	"	कामातुरयोगः ...	"	अध्यायः ९ ।	
मंदाग्निशुदरोगः ...	११७	मृताल्पसूतियोगः	"	नाभसयोगवर्णनम्	१३५
क्षयदोषः ...	"	अर्शदोषः ...	"	रज्जूयोगः	"
गुद्धरोगयोगः ...	"	व्रणरोगयोगः ...	१२५	मुशलयोगः	"
हीनांगयोगः ...	"	ददुदोषः ...	"	नलयोगः	"
शोषक्षयदोषः ...	"	अंडवृद्धियोगः ...	१२६	दलयोगः	"
क्षयीयोगः ...	११८	वामनदोषः ...	"	मालायोगः	"
कुष्टभग्नदराशीदोषयोगः "		देहकार्थयोगः ...	"	गदायोगः	"
क्षयीरोगयोगः ...	"	देहशोषणयोगः ...	"	शकटयोगः ...	१३६
भग्नदराशीनिलशूलदो०	"	श्वासक्षयादियोगः	१२७	विंगयोगः	"
अतीसारस्वेदविद्यरो०	"	जडवद्योगः ...	"	शृङ्गाटकयोगः	"
प्रमेहदोषयोगः ...	११९	कुलव्ययोगः ...	१२८	हलनामयोगः	"
मूवकुच्छरोगयोगः "	"	गुलमरोगयोगः ...	"	गदायोगफलम्	"
वातोदरयोगः ...	"	कंठरोगयोगः ...	"	शकटयोगफलम्	"
वातरोगयोगः ...	"	हच्छूलरोगयोगः ...	"	विंगयोगफलम्	"
मंदलोचनयोगः ...	१२०	वाहनाद्रीतियोगः	"	शृङ्गाटकयोगफलम्	१३७
हीनांगदोषयोगः ...	"	देहोषणयोगः ...	१२९	हलयोगफलम्	"
अनेकव्याधियोगः "	"	जले मृतियोगः ...	"	वज्रयोगः	"
बंधनयोगः ...	"	बद्रोगयोगः ...	"	जवयोगः	"
रज्जूबंधनयोगः ...	"	गुद्धरोगयोगः ...	१३०	कमलयोगः	"
निगडबंधनयोगः ...	"	श्वित्रियोगः ...	"	वापीयोगः	"
दुर्गे बंधनयोगः ...	"	हीनांगयोगः ...	"	यूपयोगः	"
भूमिबंधनयोगः ...	"	अंगच्छेदयोगः ...	"		
शोथरोगः ...	"	कियाविहीनयोगः	"		
गुसरोगयोगः ...	"	दीर्घजातुयोगः ...	"		
गंडमालारोगयोगः	"				

विषय:	पृष्ठम्	विषय:	पृष्ठम्	विषय:	पृष्ठम्
शरयोगः	... १३८	शूलयोगफलम्	... १४५	मकरराशिनामानि	१५६
शक्तियोगः	... "	युगयोगफलम्	... "	कुम्भराशिनामानि	"
दंडयोगः	... "	गोलयोगफलम्	... १४६	मीनराशिनामानि	"
नौकायोगः	... "	अध्याय १० ।		राशीनां वर्णः ...	१५७
कूटयोगः	... "	पंचमहापुरुषयोग-		राशीनां वर्णचक्रम्	"
छत्रयोगः	... "	वर्णनम्	... १४६	राशीनां पुंखीसंज्ञा	"
चापयोगः	... "	रुचकादियोगः	... "	चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञा,,	
अर्धचन्द्रयोगः	... १३९	भद्रयोगः	... १४७	राशीनां दिगीशाः १५८	
चक्रदामिनीयोगः	... "	हंसयोगः	... "	क्रूरसौम्यपुरुषस्त्री-	
समुद्रयोगः	... "	मालव्ययोगः	... "	चरस्थिरद्विस्व-	
बीणायोगः	... "	शशकयोगः	... "	भावसंज्ञाचक्रम्	"
दामिनीयोगः	... "	रुचकयोगफलम्	... "	दिगीशचक्रम्	"
पाशयोगः	... १४०	भद्रयोगफलम्	... १४८	चतुष्पदादिसंज्ञा	"
केदारयोगः	... "	हंसयोगफलम्	... १४९	कीटसंज्ञा	... १५९
शूलयोगः	... "	मालव्ययोगफलम्	१५०	चतुष्पदद्विपदजलचर-	
युगयोगः	... "	शशकयोगफलम्	..."	चक्रम्	..."
गोलयोगः	... "	पंचमहापुरुषभंगयोगः	१५१	राशीनां कालबलचक्रम्,,	
वज्रयोगफलम्	... "	अध्यायः ११ ।		राशीनां केंद्रबलम्	"
जवयोगफलम्	... "	राशिप्रभेदवर्णनम्	१५२	राशीनां दिनरात्रिबलम्,,	
कमलयोगफलम्	... १४१	कालनरस्यांगम्	..."	दिनरात्रिबलचक्रम्...	"
बापीयोगफलम्	... "	अंगविभागप्रयोजनम्	"	पृष्ठोदयः	..."
यूपयोगफलम्	... "	अंगचक्रम्	... १५३	पृष्ठोदयराशीषोदयच०	१६०
शरयोगफलम्	... "	भचक्रे राशिव्यवस्था	”	सप्तवर्गः	..."
शक्तियोगफलम्	... १४२	राशिस्वरूपम्	... १५४	होराकथनम्	..."
दंडयोगफलम्	... "	राशिस्वामिनः	... १५५	होराचक्रम्	... १६१
नौकायोगफलम्	... "	राशिस्वामिचक्रम्	”	द्रेष्काणः	..."
कूटयोगफलम्	... १४३	मेषराशिनामानि	..."	द्रेष्काणचक्रम्	१६२
छत्रयोगफलम्	... "	वृषराशिनामानि	..."	सप्तांशः	..."
चापयोगफलम्	... "	मिथुनराशिनामानि	”	सप्तांशचक्रम्	..."
अर्धचन्द्रयोगफलम्	..."	कर्कराशिनामानि	”	द्वादशांशः	... १६३
चक्रयोगफलम्	... १४४	सिंहराशिनामानि	”	द्वादशांशचक्रम्	”
समुद्रयोगफलम्	..."	कन्यराशिनामानि	”	नवांशविधिः	... १६४
बीणायोगफलम्	..."	तुलराशिनामानि	”	नवांशचक्रम्	... १६५
दामिनीयोगफलम्	..."	वृश्चिकराशिनामानि	”	विंशांशविधिः	”
पाशयोगफलम्	... १४५	धनराशिनामानि	”	विंशांशचक्रम्	... १६६
केदारयोगफलम्	..."	भावनामानि		भावनामानि	”

विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.
केन्द्रस्थानम्	१६६	केतुनामानि	१७४	ग्रहाणां ऋतुचक्रम्	१८२
पण्फरनाम	१६७	सूर्यस्वरूपम्	“	ग्रहाणामूर्धवस्त्रमद्विष्टः	“
आपोङ्गिमनाम	“	चंद्रस्वरूपम्	“	ज्यर्द्वस्त्रमधोद्विष्टिच०	१८३
विकोणसंज्ञा	“	भौमस्वरूपम्	१७५	वृद्धिद्विष्टमाह	“
नामान्तरम्	“	बुधस्वरूपम्	“	तमस्यपादवृद्धिद्विष्टः	“
ग्रहाणां विकोणस्थानम्	“	गुरुस्वरूपम्	“	ग्रहाणां द्विष्टिचक्रम्	१८४
उपचयसंज्ञा	“	भृगुस्वरूपम्	“	सूर्यस्योच्चनीचस्वक्षेत्र-	
अपचयसंज्ञा	१६८	शनिस्वरूपम्	१७६	मित्रामित्राणि	“
विकसंज्ञा	“	ग्रहाणां वर्णाः	“	चंद्रस्योच्चनीचमित्रा-	
अपचयादिसंज्ञा	“	ग्रहाणां वर्णेशचक्रम्	“	मित्राणि	“
वर्गोन्तमसंज्ञकनवांशाः	“	ग्रहेशाः	“	भीमस्योच्चनीचस्वक्षेत्र-	
वर्गोन्तमनवांशचक्रम्	“	वर्णेशचक्रम्	“	मित्रामित्राणि	“
ततुभावनामानि	१६९	दिगीशाः	१७७	बुधस्योच्चनीचस्वक्षेत्र-	
धनभावनामानि	“	दिगीशचक्रम्	“	मित्रामित्राणि	१८५
व्ययभावनामानि	“	वेदनाथाः	“	जीवस्योच्चनीचस्वक्षेत्र-	
चतुर्थभावनामानि	“	ब्राह्मणादिवर्णेशाः	“	मित्रामित्राणि	१८६
तृतीयभावनामानि	“	ब्राह्मणादिवर्णेशचक्रम्	“	शुक्रस्योच्चनीचस्वक्षेत्र-	
अष्टमभावनामानि	“	पापग्रहसंज्ञा	१७८	मित्रामित्राणि	“
दशमभावनामानि	१७०	ग्रहाणां पुरुषादिसंज्ञा	“	मंदस्योच्चनीचस्वक्षेत्र-	
पञ्चमभावनामानि	“	ग्रहाणां पुरुषादिचक्रम्	“	मित्रामित्राणि	१८७
नवमस्थाननामानि	“	ग्रहाणां गुणेशाः	“	तमस उच्चनीचमित्रा-	
सप्तमस्थाननामानि	“	ग्रहाणां गुणेशचक्रम्	“	मित्राणि	“
षष्ठमस्थाननामानि	“	ग्रहाणां रसज्ञानम्	“	केतोरुच्चनीचमित्रा-	
एकादशस्थाननामानि	“	ग्रहाणां रसचक्रम्	१७९	मित्राणि	१८८
लग्नबलज्ञानम्	१७१	ग्रहाणां लोकाः	“	ग्रहोच्चनीचराश्येशाः	“
अध्यायः १२ ।		ग्रहाणां लोकचक्रम्	“	ग्रहाणामुच्चराश्येश-	
ग्रहप्रभेदवर्णनम्	१७२	ग्रहाणां सारम्	“	चक्रम्	१८९
ग्रहाणां चृपादिसंज्ञा	“	ग्रहाणां सारचक्रम्	१८०	ग्रहाणां नीचराश्येशच०	
ग्रहाणां संज्ञा	“	ग्रहाणां स्थानम्	“	नेसर्गिकमैत्रीचक्रम्	“
चन्द्रनामानि	१७३	ग्रहाणां स्थानचक्रम्	“	तात्कालिक मैत्री	“
भौमनामानि	“	ग्रहाणां वस्त्राणि	“	पंचधा मैत्री	१९०
बुधनामानि	“	ग्रहाणां वस्त्रचक्रम्	१८१	ग्रहाणामुच्चमूलचिकोण-	
गुरोर्नामानि	“	ग्रहाणां द्रव्यम्	“	स्वक्षेत्रभेदः	“
शुक्रनामानि	१७४	ग्रहाणां द्रव्यचक्रम्	“	तस्योच्चमूलचिकोणस्व-	
शनिनामानि	“	ग्रहाणां वस्त्रवर्णाः	“	क्षेत्रभेदः	१९१
राहुनामानि	“	ग्रहाणां वस्त्रवर्णचक्रम्	१८२	उच्चमूलचिकोणस्वक्षे-	
		ग्रहाणां ऋतवः	“	त्रांशभेदचक्रम्	“

विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.
अहाणा स्थानबलम्	१९१	स्त्रीणां मृतमजायोगः	२१२	प्रश्नलग्नाद्भगतमा-	
दिव्यबलम् ...	१९२	स्त्रीणां रजोवर्णाः ...	„	सज्जानम् ...	२२९
दृष्टिबलम् ...	१९३	स्त्रीणां वीर्यशीतोष्णम्	२१३	वर्षवयप्रसूतियोगः ...	„
चेष्टाबलम् ...	„	गर्भात् मातापित्रादि-		द्वादशाद्वे प्रसूतियोगः	„
अहयुद्धलक्षणम् ...	„	शुभाशुभज्ञानम्	„	अध्यायः १९ ।	
कालबलम् ...	„	गर्भिणीमरणयोगः ...	२१५	प्रस्ववर्णनम् ...	२३०
पक्षबलम् ...	१९४	गर्भिणीमरणयोगवयम्	„	प्रसूतिमासज्जानम् ...	„
अयनबलम् ...	„	शस्त्रेणगर्भिणीमरण-		प्रस्वप्रकारज्ञानम् ...	„
दिनरात्रिबलम् ...	„	योगः ...	२१६	नालवेष्टितजन्मज्ञानम्	२३१
नैसर्गिकबलम् ...	„	आधानान्मासक्रमः ...	„	कोशवेष्टितयमलयोगः	„
अध्यायः १३ ।		गर्भमासेशज्ञानम्	२१७	सदंतप्रसूतियोगः ...	„
नष्टजातकवर्णनम् ...	१९५	गर्भपुष्टियोगः ...	२१८	कुब्जयोगः ...	२३२
राशिगुणकविधिः ...	„	गर्भपतयोगः ...	„	मासेषु दंतोत्पत्तिकलम्	„
राशिगुणकचक्रम् ...	१९६	वामनयोगः ...	„	मूकयोगः ...	„
अहगुणकचक्रम् ...	१९७	भुजहीनयोगः ...	२१९	पंशुयोगः ...	२३२
नक्षत्रज्ञानम् ...	„	अंत्रिहीनयोगः ...	„	जडयोगः ...	„
वर्षज्ञानम् ...	१९९	शिरोविहीनयोगः ...	„	अंधयोगः ...	„
ऋतुज्ञानम् ...	२००	अधिकांशयोगः ...	„	विलोभजन्मज्ञानम् ...	२३४
पक्षज्ञानम् ...	२०२	मूकयोगः ...	२२०	क्लेशान्वितजन्मज्ञानम्	„
तिथिज्ञानम् ...	„	सामान्यमूकयोगः ...	„	जारजातज्ञानम् ...	„
दिनरात्रिकालज्ञानम्	२०३	सदंतोत्पत्तियोगः ...	„	अजारजातयोगः ...	२३५
इष्टकालज्ञानम् ...	२०५	कुब्जयोगः ...	„	कारागारगृहे जन्मज्ञा-	
अध्यायः १४ ।		पंशुलयोगः ...	„	नम् ...	२३६
गर्भाधानवर्णनम् ...	२०७	जडयोगः ...	२२१	गर्तस्थजन्मज्ञानम् ...	„
गर्भाधानऋतुयोगः	„	अंधयोगः ...	„	नौकाजन्मज्ञानम् ...	„
स्त्रीपुरुषसंयोगगर्भयोऽ०२०८		काणयोगः ...	„	ऊषरभूमिजन्मज्ञानम्	२३७
मैथुनप्रकारज्ञानम्	२०९	युवकन्याज्ञानम्	„	देवगृहे जन्मज्ञानम्	„
ऋतोरनंतरसंयोग-		यमलयोगः ...	२२२	क्रीडागृहे जन्मज्ञानम्	„
दिनानि ...	„	क्लीबयोगः ...	२२३	शमशाने जन्मज्ञानम् ...	„
गर्भसंभवयोगः ...	२१०	संतानद्रव्ययोगः ...	२२४	अरण्ये जन्मज्ञानम् ...	२३८
गर्भपुष्टियोगः ...	„	त्रयसंतानयोगः ...	२२५	नराणां समूहे जन्म-	
गर्भस्यमातापित्रादि	„	प्रभूतसंतानयोगः ...	„	ज्ञानम् ...	„
शुभाशुभम् ...	२११	प्रस्ववकालज्ञानम्	„	सलिले जन्मज्ञानम् ...	„
स्त्रीणां धन्धत्वयोगः	२१२	कालज्ञानम् ...	२२७	जन्मदेशज्ञानम् ...	२३९
		गर्भलग्नातप्रस्ववमास-		जन्मगृहज्ञानम् ...	„
		ज्ञानम् ...	२२८	द्विशालादिगृहे जन्म	२४०
				अंधकारे जन्मज्ञानम्	२४१

विषयः	पृष्ठम्	विषयः	पृष्ठम्	विषयः	पृष्ठम्
भूमिशयनज्ञानम् ...	२४२	मातृभोजनज्ञानम्	२५८	बुधानिष्टाष्टकवर्गांकच०	२६९
मातृकष्टज्ञानम् ...	२४३	प्रसवस्थाने धातुज्ञानम् „		गुरोरष्टकवर्गः	२७०
कष्टकालज्ञानम् ... „		दीपज्ञानम् ...	२५९	बृहस्पतिशुभाष्टकवर्गा-	
बहुदीपज्ञानम् ... „		दीपस्य तैलज्ञानम् „		कचक्रम् ...	२७१
तृणज्योतिर्ज्ञानम् ...	२४३	दीपस्य वर्तिज्ञानम्	२६०	गुरोः अनिष्टाष्टकवर्गा-	
मातृत्यक्तपुनज्ञानम् „		बालकस्य अंगन्यासः „		कचक्रम् „	
मातृत्यक्तमृत्युयोगः „		प्रथमद्रेष्काणचक्रम्	२६१	शुक्राष्टकवर्गः ... „	
पितृपरोक्षजन्मज्ञानम् २४४		द्वितीयद्रेष्काणचक्रम् „		शुक्रशुभाष्टकवर्गांक-	
पितृमृत्युज्ञानम् ... २४५		तृतीयद्रेष्काणचक्रम् „		चक्रम् ... २७२	
जन्मकाले पितृरोग- ज्ञानम् ... २४६		ब्रणमशकादिज्ञानम्	२६२	शुक्रानिष्टाष्टकवर्गांक-	
जन्मतः पूर्व पितृमृत्यु- ज्ञानम् ... „		ब्रणमशकादिकारणम्	„	चक्रम् ... „	
मातृपितृमृत्युज्ञानम् „		ब्रणमशकादिनिश्चय- ज्ञानम् ... २६३		शनेरष्टकवर्गः ... „	
विदेशस्थपितृवन्धन- ज्ञानम् ... २४७		अंतरिक्षेजन्मज्ञानम् „		शनिशुभाष्टकवर्गा-	
पितृमातृसम्बालज्ञानम् „		बालकस्य रोदनज्ञानम् „		कचक्रम् ... २७३	
बालकस्य हस्तवीर्याङ्ग- ज्ञानम् ... २४८		बालकस्य छिक्काज्ञानम् २६४		शन्यनिष्टाष्टकवर्गा-	
मात्रा सह मृत्युयोगः २५०		मातुलमृत्युज्ञानम् „		चक्रम् ... „	
पुत्रनष्टयोगः ... „		मातृमातामृत्युज्ञानम् २६५		लग्नशुभाष्टकवर्गांक-	
मातृनष्टयोगः ... „		अध्यायः १६ ।		चक्रम् ... २७४	
उपसूतिकासंख्याज्ञानम् „		अष्टकवर्गवर्णनम्	२६५	लग्नानिष्टाष्टकवर्ग- चक्रम् ... „	
द्विगुणत्रिगुणोपसूति० २५२		सूर्याष्टकम् ... „		राहोरष्टकवर्गः ... २७५	
गृहमध्ये गृहज्ञानम् „		सूर्यशुभाष्टकवर्गांकच० २६६		राहशुभाष्टकवर्गांक-	
सूतिकागृहचक्रम् ... २५३		सूर्यानिष्टवर्गांकचक्रम् „		चक्रम् ... २७६	
सूतिकागृहद्वारज्ञानम् „		चन्द्राष्टकवर्गः „		राहनिष्टाष्टकवर्गांक-	
वामदक्षिणे द्वारज्ञानम् „		चन्द्रशुभाष्टकवर्गांक-		चक्रम् ... „	
गृहस्वरूपज्ञानम् ... २५४		चक्रम् ... „		अष्टवर्गांकयोगः ... „	
सूतिकाशृद्याज्ञानम् २५५		भौमाष्टकवर्गः „		अष्टवर्गांकफलम् ... „	
खद्वांगज्ञानम् ... „		भौमानिष्टाष्टवर्गांक-		अध्यायः १७ ।	
खद्वांगचक्रम् ... २५६		चक्रम् ... २६८		द्विग्रहयोगवर्णनम् २७७	
खद्वांगथातज्ञानम् „		भौमानिष्टाष्टवर्गांक-		चन्द्रादित्ययोगफलम् „	
शध्योपरिवर्खज्ञानम् २५७		चक्रम् ... „		भौमादित्ययोग-	
लग्नवेशन उपसूतिका- ज्ञानम् ... २५८		बुधशुभाष्टकवर्गः „		फलम् ... २७८	
मातृवस्त्रज्ञानम् ... „		बुधाष्टकवर्गांक-		बुधादित्ययोगफलम् „	
		चक्रम् ... २६९		गुर्वादित्ययोगफलम् „	

विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.
भृगादियोगः		सूर्यमंदजीवयोगः ...	२८६	सूर्यचन्द्रशुक्रयोगः २९४	
फलम् ... २७८		सूर्यशुक्रार्कियोगः ...	२८७	सूर्यचन्द्रशुक्रशनियोगः २९५	
मंदादित्ययोगफलम् २७९		चन्द्रभौमबुधयोगः "		सूर्यचन्द्रशुक्रमंदयोगः „	
चंद्रारयोगफलम् ... "		चन्द्रभौमजीवयोगः ..	"	सूर्यबुधशुक्रभौमयोगः „	
चंद्रेदुजयोगफलम् ... "		भौमचंद्रशुक्रयोगः...	"	सूर्येदुभौमशुक्राणा योगः „	
जीवेदुयोगफलम् ... "		चंद्रभौमशनियोगः	२८८	सूर्यभौमबुधार्कियोगः २९६	
शुक्रेदुयोगफलम् ... २८०		चंद्रबुधजीवयोगः	"	सूर्यभौमजीवशुक्रयोगः „	
मंदेदुयोगफलम् ... "		चंद्रबुधशुक्रयोगः	"	सूर्यभौमजीवार्कियोगः „	
भौमेदुजयोगफलम् "		चंद्रबुधमंदयोगः ...	"	सूर्यभौमशुक्रमंदयोगः „	
भौमजीवयोगफलम् "		शुक्रचंद्रजीवयोगः	२८९	सूर्यबुधशुक्रयोगः „	
शुक्रारयोगफलम् ... २८१		चंद्रजीवशनियोगः	"	सूर्यबुधजीवमन्दयोगः „	
मंदारयोगफलम् ... "		चंद्रसितार्कियोगः	"	सूर्यबुधशुक्रार्कियोगः „	
बुधजीवयोगः ...		मंगलबुधजीवयोगः	"	सूर्यगुरुशुक्रार्कियोगः „	
बुधशुक्रयोगफलम् २८२		शुक्रभौमबुधयोगः	२९०	चन्द्रभौमबुधशुक्रयोगः २९८	
बुधार्कियोगः : "	"	भौमबुधार्कियोगः	"	चन्द्रभौमबुधजीवयोगः „	
जीवदैत्ययोगः... "	"	भौमजीवशुक्रयोगः	"	चन्द्रभौमगुरुशुक्रयोगः „	
जीवार्कियोगः ... "	"	भौमशुक्रार्कियोगः	२९१	चन्द्रमंगलगुरुशनियोगः २९९	
सितासितयोगः ... २८३		बुधजीवशुक्रयोगः	"	चंद्रभौमशुक्रार्कियोगः „	
अध्यायः १८ ।		बुधजीवार्कियोगः	"	चन्द्रबुधजीवशुक्रयोगः „	
विग्रहयोगवर्णनम् ... २८३		बुधशुक्रार्कियोगः ...	"	चंद्रबुधशुक्रयोगः „	
सूर्यचन्द्रभौमयोग-		जीवशुक्रार्कियोगः	२९२	चन्द्रबुधशुक्रशनियोगः ३००	
फलम् ... "		अध्यायः १९ ।		चन्द्रजीवशुक्रार्कियोगः „	
सूर्यचन्द्रबुधयोग-		चतुर्ग्रहयोगवर्णनम् २९३		भौमगुरुबुधशुक्रयोगः „	
फलम् ... "		सूर्यचन्द्रभौमबु-		भौमबुधजीवशनियोगः „	
सूर्यचन्द्रजीवयोग-		धयोगः ... "		भौमजीवशुक्रार्कियोगः „	
फलम् ... "		सूर्यचन्द्रभौमजी-		भौमबुधशुक्रार्कियोगः ३०१	
सूर्यभौमबुधयोगः...	"	वयोगः ... "		बुधगुरुशुक्रार्कियोगः „	
सूर्यभौमजीवयोगः २८५		सूर्यचन्द्रभौमभूगुयोगः „		अध्यायः २० ।	
सूर्यभौमशुक्रयोगः	"	सूर्यचंद्रभौमश-		पञ्चग्रहयोगवर्णनम् ३०१	
सूर्यभौमशनियोगः	"	नियोगः ... २९४		सूर्यचन्द्रमंगलबुधजीवयोगः	
सूर्यबुधजीवयोगः	"	सूर्यचंद्रबुधजीव-		सूर्यचन्द्रभौमशुक्रयोगः „	
सूर्यबुधशुक्रयोगः ... २८६		योगः ... "		३०२	
सूर्यबुधमंदयोगः ... "	"	सूर्यचंद्रबुधशुक्रयोगः „		सूर्यचन्द्रमंगलबुधश-	
सूर्यगुरुशुक्रयोगः...	"	सूर्यचन्द्रबुधशनियोगः „		नियोगः „	

विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.
सूर्यचन्द्रमंगलगुरुशु-		सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पति-		गुरोर्देशा ३२२
क्रयोगः	३०२	शुक्रशनियोगः	३०८	शनिदेशा ३२३
सूर्यचन्द्रभौमगुरुमंदयोगः	"	सूर्यमंगलबुधबृहस्पति-		बुधदेशा ३२४
सूर्येदुमंगलशुक्रार्किं०	३०३	शुक्रशनियोगः	"	केतुदेशा ३२५
सूर्यचन्द्रबुधगुरुशुक्रयोगः	"	चन्द्रमंगलबुधबृहस्पति-		शुक्रदेशा ३२६
सूर्यचन्द्रजीवार्कियोगः	"	शुक्रशनियोगः	"	अध्यायः	२६ ।
सूर्यचन्द्रबुधशुक्रार्कियोगः	"	सप्तग्रहयोगः	"	भाववर्णनम्	... ३२७
सूर्यचन्द्रगुरुशुक्रार्कियोगः	"	अध्यायः	२२ ।	ततुभावः	... "
सूर्यचन्द्रबुधगुरुशुक्रार्किं०	३०४	दशावर्णनम्	३०९	ततुभावस्थितराशि-	
सूर्यमंगलबुधगुरुशुक्रः	"	विशोन्तरीदशाक्रमः	"	फलम्	... ३३०
सूर्यमंगलबुधगुरुशुक्रनिं०	"	दशावर्षाणि	"	ततुस्वामिनो द्वादश-	
सूर्यमंगलबुधशुक्रार्कियोगः	"	विशोन्तरीदशाचक्रम्	३१२	भावस्थफलम्	... ३३२
चन्द्रमंगलबुधजीव-		अष्टोन्तरीदशाक्रमः	"	धनभावविचारः	... ३३४
शुक्रयोगः	"	दशावर्षाणि	"	धनभावविशेषफलम्	३३८
चन्द्रमंगलबृहस्पति-		अष्टोन्तरीक्रमज्ञानम्	३१३	धनभावस्थितराशि-	
शुक्रार्कियोगः	"	देशभेदेन दशा	"	फलम्	... ३४१
चन्द्रभौमबुधशुक्रा-		अष्टोन्तरीदशाचक्रम्	"	धनभावस्वामिद्वादश-	
र्कियोगः	३०६	योगिनीदशाक्रमः	"	भावफलम्	... ३४३
चन्द्रबुधबृहस्पतिशु-		मंगलादिदशास्वामिनः	"	निर्याणाध्यायस्थमृत्यु-	
क्रार्कियोगः	"	योगिनीदशाप्रकारः	३१४	विचारः	... ३४५
भौमबुधगुरुशुक्रा-		मंगलादिवर्षक्रमः	"	मरणदेशज्ञानम्	... ३४६
र्कियोगः	"	योगिनीदशाचक्रम्	३१५	लोभान्मृत्युः	... "
अध्यायः	२१ ।	अंतर्देशावर्णनम्	३१५	तुरंगान्मृत्युः	... ३४७
चहूग्रहयोगवर्णनम्	३०७	नवग्रहदशाचक्राणिः	"	अग्निकारणान्मृत्युः	...
सूर्यचन्द्रभौमबुधजीव-		अष्टोन्तरीदशांतरम्	३१६	भग्नदरान्मृत्युज्ञानम्	...
शुक्रयोगः	"	मंगलादियोगिनीदशां-		गजान्मृत्युज्ञानम्	३४८
सूर्यचन्द्रमंगलबुध-		तरम्	३१७	बंधुकारणान्मृत्युः	..."
जीवार्कियोगः	"	भद्रिकांतर्दशाचक्रम्	३१८	शूलिकामृत्युयोगः	..."
सूर्यचन्द्रमंगलबुध-		अध्यायः	२४ ।	परदाराध्यमृत्युः	..."
शुक्रशनियोगः	"	प्रत्यन्तर्दशावर्णनम्	३१८	जलोदरेण मृत्युः	..."
सूर्यचन्द्रभौमजीव-		रविदेशा	"	स्त्रीकारणान्मृत्युः	३४९
र्कियोगः	"	चन्द्रदेशा	३१९	शब्दुहस्तान्मृत्युः	..."
भौमदेशा	३२०	भौमदेशा	३२०	शैलभागान्मृत्युः	..."
राहुदेशा	३२१	राहुदेशा	३२१	कूपे मृत्युः	३५०

विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.	विषयः	पृष्ठम्.
जलोदरेण मृत्युयोगः	३५०	विष्मध्ये मृत्युः	३५३	मृतकप्राणिगम्यलोक-	
शस्त्राश्रितो मृत्युयोगः	„	गुह्यरोगशस्त्रदाहेन मृत्युः”		ज्ञानम्	३६१
रक्तविकारेण मृत्युः	„	खगेन मृत्युः	३५४	मोक्षयोगः	३६२
रज्जवस्त्रिपातेन मृत्युः	३५१	अशनिकुडचपातेन मृत्युः”		मोक्षहेतुज्ञानम्	„
कारागारे मृत्युः	„	अष्टमभावे विशेषफलम्”		तीर्थस्थानज्ञानम्	„
स्त्रीद्वारा मृत्युः	„	अष्टमभावे विशेषफलम्	३६४	अष्टमभावेशफलम्	३६४
कण्टकेन मृत्युः	„	अष्टमभावगतराशि-		भाग्यभावविचारः	३६६
काष्ठप्रहारेण मृत्युः	३५२	फलम्	३५७	भाग्यभावस्थे गुरौ	
लकुटेन मृत्युः	„	मरणभूमिज्ञानम्	३५९	रव्यादिदृष्टिफलम्	३७०
धूमाश्रिवंधनेन मृत्युः	”	मरणसमये मोहज्ञानम्	३६०	धर्मभावविशेषफलम्	३७२
शस्त्राश्रिताजकोपेन मृत्युः”		शवपरिणामज्ञानम्	”	धर्मभावस्थितराशिफ०	३७५
कृमिविकारेण मृत्युः	३५३	त्यक्तलोकज्ञानम्	३६१	नवमभावेशफलम्	३७६
यानप्रपातान्मृत्युयोगः”		उक्तलोके श्रेष्ठादि-		अध्यायः	२६।
यन्त्रोत्पीडनेन मृत्युः”	”	ज्ञानम्	„	वंशवर्णनम्	३७७

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।



श्रीगोवर्द्धनधारिणे नमः ।

ज्योतिषश्यामसंग्रहः । भाषाटीकासहितः ।

वासुदेवं नमस्कृत्य श्रीगुरुं दिननायकम् । क्रियते श्यामलालेन
ज्योतिषश्यामसंग्रहः ॥ १ ॥ ब्रह्माणं विष्णुरुद्रौ च उमासूरुं च
खेचरान् । पूर्वकर्मोद्भवान् कांश्चिज्ञातयोगान् वदाम्यहम् ॥ २ ॥

श्रीकृष्णचंद्रको, अपने गुरु और सूर्यको नमस्कार करके मैं जो श्याम-
लाल हूँ सो ज्योतिषश्यामसंग्रह नाम ग्रंथको करता हूँ ॥ १ ॥ ब्रह्मा, विष्णु,
महेश, गणेश, सूर्यादि नवग्रहोंको नमस्कार करके पूर्व कर्मोंके अनुसार
पैदा हुए भनुष्योंके योगोंको मैं कहता हूँ ॥ २ ॥

त्रिशद्र्दर्षसहस्राणि लक्षण्यश्वाः शतत्रयम् । त्रेतायुगगताब्देषु
भृगुणा वै प्रकाशितान् ॥ ३ ॥ निरपत्यादिदुर्योगबाधकान्विवि-
धान् विधीन् । आदौ लोकोपकारार्थं समासादर्शयाम्यहम् ॥४॥

सात लाख तीस हजार तीन सौ वर्ष त्रेतायुगके व्यतीत होनेपर तिन
योगोंको भृगुजीने प्रकाशित किया ॥ ३ ॥ तिन निःसन्तानादि बुरे योगोंकी
नाश करनेवाली अनेक विधियोंको पहिले संसारके उपकारके लिये संक्षेप
रीतिसे मैं दिखाता हूँ ॥ ४ ॥

अथ जापकविधिः ।

शुक उवाच-आदौ च जापकं सम्यग्विधानं कथय प्रभो ।
किं क्रिया वा सुमुद्रा च यस्य कृत्वा भवेत्सुखम् ॥५॥

शुक्रजी बोले, हे प्रभो ! पहिले जप करनेवालेका विधान अच्छी तरह कहिये । कौन क्रिया अथवा मुद्रा करे जिसके करनेसे सुख होय॥५॥ भृगुरुवाच-महीज्योतीति षट्कोणं यंत्रं मंत्रेण कारयेत् ।

खेटमंडलमीशाने कृत्वा वै तद्रुतं प्रति ॥ ६ ॥

तब भृगुजी बोले महीज्योति इस मंत्र करके षट्कोण यंत्र बनावे ईशान दिशाको ग्रहोंका मंडल निश्चय करके बनावे, तिस यंत्रके प्रति ग्रहोंका स्थान करे ॥ ६ ॥

आकारं वेदमंत्रेण स्थाप्या ग्रहक्रमात्ततः । गोमये भूमिलिपायां तन्मध्ये स्थापयेद्दृष्टम् ॥ ७ ॥ चंदनैर्धूपपुष्पैश्च दीपनैवेद्यमेव च । द्रव्यतो भावतः सम्यक्कर्तव्यं ग्रहपूजनम् ॥ ८ ॥

उस यंत्रका वेदके मंत्रों करके स्वरूप बनावे और ग्रहोंको क्रमसे स्थापन करे, गौके गोबरसे धरती लीपकर तिसके बीचमें घट स्थापन करे ॥ ७ ॥ चंदन अक्षत फल चढाय आरती कर मिठाई भोग धर पान सुपारी चढाय यथाशक्ति द्रव्य भेट कर भले प्रकारसे ग्रहोंका पूजन करे ॥ ८ ॥

शंखधेन्वाभिधां मुद्रां कृत्वांगन्यासमेव च । प्राणायामे कृते पश्चाज्जपकर्म समाचरेत् ॥ ९ ॥ यथाशक्ति कृतं जाप्यं ततो ग्रह-विसर्जनम् । अक्षतान् यजमानस्य दद्यादाशीर्विशेषतः ॥ १० ॥

शंख धेनुमुद्रा कर अंगन्यास कर प्राणायाम करे, पीछे जप करना आरंभ करे ॥ ९ ॥ यथाशक्ति जप करके ग्रहोंका विसर्जन कर यजमानको अक्षतसे विशेष कर आशीर्वाद देना चाहिये ॥ १० ॥

जापकेन च कर्तव्यं भोजनं लवणं विना । भूशायी ब्रह्मचर्यं च कर्तव्यं जापकैः सदा ॥ ११ ॥ एवं विधिं नैव कृत्वा ब्रह्मप्रमध-माप्नुयात् । न भवेद्वचसः सिद्धिर्न पुण्यं कार्यसाधनम् ॥ १२ ॥ जाप्यप्रासंभतः कार्यं यावत्कारोपकाङ्गया । कविना च कृतं प्रश्नं भृगुणा वै प्रभाषितम् ॥ १३ ॥

जप करनेवाला भोजन नोनके विना करे, धरतीपर सोवे, ब्रह्मचर्यसे
शुद्ध रहे॥ ११॥ जो कही हुई विधिके माफिक नहीं करे तो उस जप करनेवा-
लेको ब्रह्महत्याका पाप होता है और न तो उसकी वाणी सिद्ध होती, न कार्य-
सिद्धि होती न पुण्य होता है ॥ १२॥ आदिसे जप करे जबतक यजमानकी
आज्ञा हो । यह शुक्रजी करके पूछा गया भृगुजी करके कहा गया है॥ १३॥

अथ दानविधिः ।

शुक उवाच—जापकेन विना दानं दद्याद्वान्यद्विजाय वै ।

खेट एकं च विविधं विप्रेभ्यो दानमाचरेत् ॥ १४ ॥

भृगुरुवाच—अन्येनापि कृतं जाप्यं दानमन्याय दीयते ।

अन्यस्य मंत्रिणं दत्तं यथान्ये दत्तभोजनम् ॥ १५ ॥

जप करनेवालेके विना दान दूसरे ब्राह्मणको न दे, एक ग्रहका दान
बहुत ब्राह्मणोंको न दे ॥ १४ ॥ भृगुजी बोले—जप अन्य मनुष्योंन
किया हो और दान दूसरे ब्राह्मणको दे तो दोष है, जैसे अन्य पुरुषको
निउता देकर दूसरेको भोजन कराना ऐसा जानना ॥ १५ ॥

खेटैकस्य यदा दानं भिन्नं भिन्नं प्रदापयेत् । शस्त्रघातं तिरस्कारं
कृतं तेन ग्रहान्प्रति ॥ १६ ॥ गते मृते जापकर्ता तस्य कोऽपि
न विद्यते । स्वगुरवे प्रदातव्यमलाभे अन्यदीयतः ॥ १७ ॥

एक ग्रहका दान अलग अलग ब्राह्मणोंको दे तो ग्रहोंको हथियार
मारा जानो ॥ १६ ॥ जप करनेवाला मरजाय तो उसका और कोई
भी नहीं होय तो जपकी दक्षिणा और दान अपने गुरु वा पुरोहितको दे
इनके न मिलनेपर अन्य ब्राह्मणको दे ॥ १७ ॥

(४)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

ग्रहार्थेन कृतं दानं दैवज्ञं विना दीयते । ततो रोषातुरं दुःखं खेटाः
कुर्वति नान्यथा ॥ १८ ॥ ग्रहस्थापनमाह्नानन्यासमुद्राविसर्ज-
नम् । जपसंस्कारयोज्ञातुस्तस्य विप्राय दीयते ॥ १९ ॥

ग्रहोंके अर्थ करा जो दान है सो ज्योतिषीके विना और किसीको
दे तो ग्रह क्रोध करके बड़ा दुःख करते हैं ॥ १८ ॥ ग्रहोंका स्थापन,
आह्नान, न्यास, मुद्रा, विसर्जन, जप, संस्कारको जो ब्राह्मण जानता
हो तिस ब्राह्मणको दान देना चाहिये ॥ १९ ॥

कृते द्वापरत्रेतायां वेदमंत्राः सुसिद्धिदाः । कलौ सिद्धिकराः
खेटाबीजमंत्रयजां ततः ॥ २० ॥ जपस्यारंभणे कुर्याद्विरणी
दक्षिणायुता । जापको दिनतो नित्यं आमान्नं द्रव्यसंयुतम्
॥ २१ ॥ भृगुणोक्तान् कुयोगागपवीन् नानाविधान् विधीन् ।
बलदेवात्मजो गौडः श्यामलालद्विजोऽलिखत् ॥ २२ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्म-
जराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिष-
श्यामसंग्रहे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सतयुग द्वापर तेत्रामें वेदके मंत्र सिद्ध होते थे, कलियुगमें सिद्ध किये
बीजमंत्रोंका जप करनेसे ग्रह शांत होते हैं ॥ २० ॥ जपके पहिले दिन वरनी
दक्षिणासहित करे जप करनेवालेको दिन दिन भोजन द्रव्य सहित दे ॥ २१ ॥
भृगुप्रोक्त कुयोग पर्वतके समान तिनके नाश करनेको वज्रसमान अनेक
विधि बलदेवप्रसादके पुत्र गौड ब्राह्मण श्यामलाल करके लिखी ॥ २२ ॥

इति श्रीराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषा-
टीकायां जपदानविधिर्नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

१ इसमें कहीं कहीं श्लोकमें विभक्तिका दोष पाया जाता है परंतु आर्ष होनेसे निर्दोष है

अथ योगाध्याये निरपत्ययोगानाह ।

पंचमेश त्रिकस्थाने अस्ते वा रविसंयुते । निरपत्याभिधो योगो भाषितो मुनिसत्तमैः ॥ १ ॥ पंचमे भवने पापा अथवा सौम्यसुर्यजौ । रोहिणीरमणो वापि तमसा सह वै भवेत ॥ २ ॥

पहिले निरपत्ययोग कहते हैं—पंचम घरका स्वामी ६ । ८ । १२ इन घरोंमें हो । एको योगः । अथवा पंचम घरका स्वामी किसी स्थानमें अस्त हो, सूर्य करके सहित बैठा हो । द्वितीययोगः । इन योगों करके मनुष्य पुत्रहीन होता है, यह उत्तम मुनियोंने कहा है ॥ १ ॥ पंचम घरमें पापयह सं. मं. रा. श. इनमेंसे एक वा दो वा तीन वा चारों हों । एको योगः । वा पंचम घरमें बुध शनि हों । द्वितीययोगः । अथवा चंद्रमा राहुयुक्त पंचम घरमें हो । तृतीययोगः । ऐसे योग होनेसे भी मनुष्य पुत्रहीन होता है ॥ २ ॥

सुते च दशमे कोशे भूमिनंदनसंस्थितिः । अष्टमे च तृतीये च संस्थितो भास्करात्मजः ॥ ३ ॥ सहजे सहजाधीशे लग्ने वित्ते सुतेऽपि वा । चन्द्रेदुजौ पंचमस्थौ द्विजदोषः कृतः पुरा ॥ ४ ॥

पांचवें, दशवें दूसरे मंगल हो तो । एको योगः । आठवें, तीसरे शनि बैठा हो तो । द्वितीययोगः ॥ ३ ॥ तीसरे घरका मालिक तीसरे, लग्न धन, पंचम इन घरोंमें हो तो । तृतीययोगः । ऐसे योग होनेसे मनुष्य पुत्रहीन होता है वा पंचम घरमें चंद्र वृद्ध हो तो भी पुत्रहीन हो और जानना चाहिये इन योगोंमें उत्पन्न हुए मनुष्यने पूर्वजन्ममें ब्राह्मणका दोष किया है ॥ ४ ॥

सुतेशे स्त्रीग्रहे केन्द्रे प्रमदाग्रहसंयुते । निरपत्याभिधो योगो भवेत्पुत्रविनाशकृत् ॥ ५ ॥ धनधान्ययुतो नित्यं पुत्रहीनो भवेन्नरः । शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि तस्य यत्रं लभेन्नरः ॥ ६ ॥

पंचम घरका स्वामी स्त्रीग्रह हो केंद्र १ । ४ । ७ । १४ । इन घरोंमें चं. बु. श. रा. युक्त होकर बैठा हो तो पुत्रहीन जानना, कदाचित् पैदा

(६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

हो तो मर जाय ॥ ५ ॥ ऐसे योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य धनधान्य करके
सुखी और पुत्रकरके हीन होता है भृगुजी कहते हैं । हे पुत्र ! सुन, इन
यत्नोंके करनेसे उसको पुत्रका लाभ होता है ॥ ६ ॥

अथ मंत्रः ।

ॐ ह्नां ह्नीं ह्नुं ह्नः ॐ क्षीं क्षां क्षीं क्षं क्षः इति मंत्रः ॥ सुवर्णमाषपं-
चाशद्रौप्यं तद्विगुणं ददेत् ॥ विष्णुमूर्तिः प्रदातव्या अरुंधत्या
सह प्रभून् ॥ ७ ॥ घृतकुम्भः प्रदातव्यो दैवज्ञाय विशेषतः ॥
अमायां चैव संक्रांतौ व्यतीपाते च पूर्णिमा ॥ ८ ॥ विशेषतः
प्रदातव्यो मंत्रजाप्यमथो भवेत् । एवंकृते मनुष्याणां पुत्रप्रा-
तिर्भविष्यति ॥ पंचलक्ष्म द्विलक्ष्म वा लक्ष्मेकं मनोत्सवात् ।
जाप्यमेवं निगदितं कुर्वन्वै फलभाक् भवेत् ॥ ९ ॥

मूलमें कहे हुए मंत्रोंका जप करतावे पछि दान पचास मासेकी सुवर्ण-
मय विष्णुकी मूर्ति, सौ मासेकी चांदीकी वसिष्ठ अरुन्धतीका मूर्तिका दान
करे ॥ ७ ॥ वी भरके कलश दान करके ज्योतिषीको अमा वा पूर्णिमा
वा संक्रांति व्यतीपातमें दे ॥ ८ ॥ विशेष करके मंत्रका जप हो जो इस
विधिके माफिक मनुष्य करेंगे तो उनको पुत्रकी प्राप्ति होगी । मंत्रका जप
पांच लाख वा दो लाख वा एक लाख मनके उत्साहसे करे तौ फलकी
प्राप्ति हो इसमें संशय नहीं है ॥ ९ ॥

अथ मृत्युप्रजायोगा लिख्यन्ते ।

पंचमस्थो यदा सूर्यस्तमोमंदध्वजैर्युतः । स्वर्भानुभूमितनयौ
भवेतां तनुजेऽथ वा ॥ १० ॥ मृत्युयोगं विजानीयाद् बालकानां
न संशयः । अंते सुतीर्थमरणं विष्णुभक्तिपरायणः ॥ ११ ॥ इह
जन्मनि संतानं भवेद्वा न तु जीवति । एको वा जीवति यदा अंते
दुःखमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥ दानभावाद्विलीयते मंदराहुकुजारुणाः ।
पंचत्रिनवबीजानि चैतेषां जपमाचरेत् ॥ १३ ॥

अब मृत्युप्रजायोग कहते हैं—पांचवें घरमें सूर्य, राहु, शनि वा केतु-युक्त बैठा हो । एको योगः । अथवा राहु मंगलसहित पंचम बैठा हो । द्वितीयो योगः ॥ १० ॥ तो मृत्युप्रजायोग जानना चाहिये । संतान होकर मर जावे, ऐसे योगमें उत्पन्न हुए मनुष्यकी मृत्यु अच्छे तीर्थपर होती है; विष्णुका भक्त होता है ॥ ११ ॥ कदाचित् एक पुत्र भी जीये तो अन्तमें उससे दुःख होता है ॥ १२ ॥ दान करनेसे इस योगका दोष दूर हो जाता है, शनि, राहु, सूर्य, मंगलका पांच तीन नौ बीजाक्षरोंसे जप करवावे ॥ १३ ॥

अथ मंत्रः ।

ॐ कुं ह्रीं ह्रीं हूं ह्रः शश्नो देवी० ॥ ॐ कुं ह्रीं श्रीं क्यानश्चित्रा० ॥ ॐ आं ग्रीं व्युं ह्रां ह्रीं ह्रः अग्निर्मूर्द्धा० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कुं कुं कुः क्षां क्षीं क्षं क्षः आकृष्णेति० ॥

शतपंचकजाप्यः स्यात्पश्चात्कृत्वा शिवार्चनम् । ततो दानं सुवर्णस्य चतुर्विंशतिमाषकान् ॥ १४ ॥ दद्यात्तद्विगुणं रौप्यं वस्त्रं त्रिंशत्करौमतम् ॥ ताम्रपात्रं सप्तपलं घृतेन परिपूरितम् ॥ १५ ॥

मूलम् कहे हुए मंत्रोंका जप पांच पांच सौ करावे उसके बाद शिवार्चन करवावे अनंतर २४ मासे सुवर्णका दान करे ॥ १४ ॥ ४८ मासे चांदी, ३० हाथ कपड़ा, तांबेका पात्र सात पाव धीसे भरके दान करे ॥ १५ ॥

धेनुदानं च कर्तव्यं तदोषः प्रशमं ब्रजेत् ॥ न करोति यदा दानं पंचजन्मनि यावतः ॥ १६ ॥ अपुत्रत्वमवाप्नोति मृते पश्चादपत्यवान् । अंते च सूकरी योनिर्मृत्युयोगफलं ततः ॥ १७ ॥

मौका दान तिस योगके दूर होनेके लिये करे तौ सम्पूर्ण दोष दूर हो जाता है जो दान नहीं करे तो पांच जन्मपर्यंत ॥ १६ ॥ निपुत्र हो मरनेके बाद भी निःसंतान होता है, अन्तमें सूकरकी योनि प्राप्त होती है । यह मृत्युप्रजायोगका फल है ॥ १७ ॥

अथ महासागरयोगो लिख्यते ।

चतुष्केन्द्रेषु सौम्याश्च बंधुषेषु तमःकुजौ । एकादशे शनिस्ति-
ष्टेन्महासागरयोगतः ॥ १८ ॥ महाराजोऽथवा मंत्री राजरोगी
कलेवरः । द्विजदेवार्चने प्रीतिः सर्पदोषकृतः पुरा ॥ १९ ॥
कृतं दानं महत्पुण्यादस्मिन्योगे समुद्भवः । सुवर्णमाषपञ्चाश-
द्वयं दानं सुखी भवेत् ॥ २० ॥

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम इनमें शुभग्रह बु. वृ. श. व चंद्रमा बैठे
हों तीसरे राहु, छठे मंगल ग्यारहवें शनि हों तो महासागर नाम योग होता
है ॥ १८ ॥ इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य महाराजा अथवा मंत्री होता है
राजरोगकरके शरीर दुःखी रहता है, देवता ब्राह्मणोंसे प्रीति करनेवाला है,
इसने पूर्वजन्ममें सर्पका दोष किया था ॥ १९ ॥ बहुतसे दान किये अधिक
पुण्यसे इस योगमें यह मनुष्य उत्पन्न हुआ. पचास मासे सोना और सब
विधि पहले योगके समान दान करे तो देहसे सुखी होता है ॥ २० ॥

अथ यमाकृतियोगः ।

मूर्तौ तमः कुजक्षेत्रे सहजे च रविर्भवेत् ॥ बुधशुक्रेण संयुक्तो
अष्टमे रविजाकुजौ ॥ २१ ॥ तदा यमाकृतियोगो ब्रह्महत्या
कृता पुरा । तस्मान्महादरिद्रित्वं अनपत्यो भवेत्तदा ॥ २२ ॥
राजरोगी तथा राहोः शनिभौमजपाच्छुभम् । अनेन दानं
कर्तव्यं पुत्रदेहः सुखी भवेत् ॥ २३ ॥

जन्मलग्नमें राहु मेष वृश्चिक राशिका होकर बैठा हो और तीसरे घरमें
सूर्य हो बुध शुक्रसहित अष्टम घरमें शनि मंगल बैठे हों ॥ २१ ॥ तौ
यमाकृति नाम योग होता है ऐसे योगमें उत्पन्न हुए मनुष्यने पूर्वजन्ममें
ब्रह्महत्या करी थी तिस कारणसे यह मनुष्य बहुत दरिद्री, संतान करके
हीन होय ॥ २२ ॥ इसका शरीर राजरोगकरके दुःखी संतानहीन होता
है । राहु, शनि, मंगल इनका जप करवानेसे शुभ होता है और इस
दानके करनेसे पुत्रकी देहको भी सुख वा पुत्रप्राप्ति होती है ॥ २३ ॥

अथ जपमन्त्रः ।

ॐ ह्रां ह्रीं हूं स्वाहा क्यानश्चित्रा० ॥ ॐ श्रां श्रीं श्रैं श्रौं श्रः शत्रो
देवी० । ॐ क्षां क्षीं क्षः स्वहा अग्निमूर्द्धा० । जपं पञ्चशते कुर्या-
त्ततो दानं प्रदापयेत् । पञ्चमाषसुवर्णस्य दद्याद्गौप्यं गुणाष्टकम् ॥
॥ २४ ॥ महिषीं तिलतैलं च दद्यादोषप्रशांतये । रक्तवस्त्रं नीलं-
शुभ्रमष्टाविंशत्करैर्मितम् ॥ २५ ॥ जपकर्त्रे प्रदातव्यं सर्वविश्व-
प्रशांतये । इति यमाकृतियोगो भाषितः पूर्वसूरिभिः ॥ २६ ॥

मूलमें कहें हुए मंत्रोंका जप पांचसौ करे तदनंतर दान करे । पांच
मासे सोना; चालीस मासे चांदी ॥ २४ ॥ भैंस, तिलतेल दान करे । सब
दोषकी शांतिके लिये लाल कपड़ा नीला सफेद अद्वाईस हाथ दान करे
॥ २५ ॥ जप करनेवाले ब्राह्मणको सम्पूर्ण विश्वशांतिके अर्थ दे । यह
यमाकृति नाम योग पूर्व विद्वानोंने कहा है ॥ २६ ॥

अथ महिषाकृतियोगमाह ।

शनिराहू चतुर्थस्थौ दशमे केतुमूसुतौ । षष्ठेदुः शुक्रविणा
युतः स्यान्महिषाकृतिः ॥ २७ ॥ आद्यत्रातुर्न संतानं भवेद्रोगः
पुनः पुनः । तथा मातुर्महाकष्टं जायते नात्र संशयः ॥ २८ ॥
शनिराहुभूसुतेदुजपं कृत्वा प्रयत्नतः । सार्द्धशतद्वयमिति तदो-
षः शांतिमाप्नुयात् ॥ २९ ॥

शनि राहु चाँथे बैठें हों, दशममें केतु मंगल हों, छठे चन्द्रमा शुक्र
सूर्य हों तो महिषाकृति नाम योग होता है ॥ २७ ॥ बड़े भाईके संतान न
हों, बारंबार देहको रोग हो, तैसे ही माताको भी बड़ा कष्ट हो इसमें
संशय नहीं है ॥ २८ ॥ शनैश्चर, राहु, मंगल, चन्द्रमाका जप यत्न
करके हाई ढाई सौ करे तो वह दोष शांतिको प्राप्त होता है ॥ २९ ॥

अथ जपमन्त्रः ।

ॐ हूं हुं सः शत्रो देवी० । ॐ क्षीं क्षीं ह्रां हूं ह्रः क्यानश्चित्रा० ।

ॐ कुं श्रीं ह्रः अग्निर्मूर्द्धा० । ॐ कुं श्रीं श्रीं श्रीं इमं देवाभि-
मंत्रः जपं कृत्वा-

पाटली गौश्च दातव्या सुवर्णं माषविंशतिः । रजतं माषपंचा-
शद्व्यमष्टादशैः करम् ॥ ३० ॥ कांस्यपात्रं मसूरान्नं गोधूमं
च मणद्वयम् । एतद्वानात् प्रशमनं महिष्याकृतियोगतः ॥ ३१ ॥

लाल रङ्गकी गौ, सोना बीस मासे, चांदी पचास मासे, अठारह हाथ
कपड़ा ॥ ३० ॥ कांसीका पात्र, मसूर, गेहूं दो मन इस दानके करनेसे
महिषाकृति योगका दोष दूर होजाता है ॥ ३१ ॥ मंत्र जो मूलमें कह
आये हैं उनका जप कराना चाहिये ।

अथ मातृकघातकयोगः ।

लग्नस्थिते यदा जीवे धने सौरियदा भवेत् । सहजे च यदा राहु-
माता तस्य न जीवति ॥ ३२ ॥ अष्टमस्थो यदा जीवः कर्मस्थाने
महीसुतः । सिंहे शौरिर्भवेद्यस्य तस्य माता न जीवति ॥ ३३ ॥

जन्मलग्नमें बृहस्पति, धनस्थानमें शनैश्चर और तीसरे घरमें राहु बैठा
हो ऐसे योगवाले मनुष्यकी माता नहीं जीती है ॥ ३२ ॥ जिसके आठवें
घरमें बृहस्पति, दशवें घरमें मङ्गल हो और सिंहराशिमें शानि हो तिसकी
माता नहीं जीती है ॥ ३३ ॥

महार्णवे भूगुमते योगोऽयं मातृघातकः । दैत्याचार्यकृतः प्रश्नो
भूगुणा वै प्रकाशितः ॥ ३४ ॥ गुरुशौरितमो भौमस्त्रिभिर्बी-
जाक्षरं जपेत् । द्विसहस्रजपं कुर्यात्पञ्चादानं प्रदापयेत् ॥ ३५ ॥

अथ जपमन्त्रः ।

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रः बृहस्पते० । ॐ श्रां श्रीं शूं श्रः शत्रो देवी० ।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्यानश्चित्रा० । ॐ ह्रां ह्रीं हूं अग्निर्मूर्द्धा इति भौमः ।

महार्णव नाम करके भूगुजीका बनाया अन्थ है तिसके भत्से यह
मातृघातक योग हुआ, शुक्रजीने प्रश्न किया श्रीभूगुजीने निश्चय करके इन

योगेंको प्रकाश किया ॥ ३४ ॥ बृहस्पति, शनि, राहु, मंगल इन ग्रहोंका तीन वीजाक्षरोंसे दो दो हजार जप करे पछिसे दान देवे ॥ ३५ ॥

एभिर्मैत्रैर्जपं कृत्वा सुवर्णं माषविंशतिः । द्वात्रिंशन्माषरजतमश्वं
वाप्यथ सौरभिः ॥३६॥ कपिला गाश्च दातव्या वस्त्रं त्रिंशत्क-
रैर्मितम् । सार्द्धद्विशेतात्रिपात्रं घृतपूर्णं प्रदापयेत् ॥ ३७ ॥ जाप-
काय प्रदातव्यं यदि शक्तिर्न जायते । पूर्वपापविनाशाय चतुर्थी-
शेन कारयेत् ॥ ३८ ॥

मूलमें कहे हुए मंत्रोंका जप कराना । वीस मासे सोना, बत्तीस मासे चांदी, घोड़ा या गैया ॥ ३६ ॥ कपिला गौ, तीस हाथ कपड़ा ढाई सेर तामेका पात्र धीसे भरके दान करे ॥ ३७ ॥ जप करनेवालेको दे जो इतना करनेकी सामर्थ्य नहीं हो तौ पहिले किये हुए पाप दूर करनेके लिये चौथाई दान करे ॥ ३८ ॥

मातृपित्रोर्हतः पूर्व यज्ञाते मातृघातके ।

एतद्वानात्यशमनं मातृदोषः कृतः पुरा ॥ ३९ ॥

इस मनुष्यने पहिले जन्ममें मातापिताका वध किया था इस दानके करनेसे पहले किया हुआ माताका दोष नाशको प्राप्त होता है ॥ ३९ ॥

अथ दरिद्रयोगः ।

कूरश्चतुर्थकेद्रस्थो धने कूरोऽथवा गतः । दरिद्रयोगं जानीयाद्वा-
जपुत्रोऽपि यो नरः ॥ ४० ॥ पञ्चत्रिनववीजानि ग्रहणां जप-
माचरेत् । सुवर्णं माषद्वाविंशद्व्याघ्रेणुं सुतैर्युताम् ॥ ४१ ॥
रौप्यं तद्विगुणं दद्याद्वस्त्रं त्रिंशत्करौर्मितम् । माषसत्तमणं दद्यात्
जापकाय विशेषतः ॥ ४२ ॥

पापग्रह चारों केंद्रमें बैठे हैं । एको योगः । अथवा धनस्थानमें सब पापग्रह बैठे हैं तो दरिद्रयोग जानना । जो राजाका पुत्र हो तो भी दरिद्री है ॥ ४० ॥ पांच तीन वौजाक्षरोंसे श्रहोंका जप करवावे । वाईस मासे

सोना तथा बछड़ा सहित गौ दान करे ॥ ४१ ॥ चांदी सोनेसे दूनी चबालीस मासे दान करे । तीस हाथ कपड़ा सात मन उरद दान करके विशेषतासे जप करनेवालेको दे ॥ ४२ ॥

कुर्यादोषविनाशाय यदि शक्तिर्न जायते । चतुर्थीशेन कर्तव्यं जाह्नवीस्नानमाचरेत् ॥ ४३ ॥ तस्मादस्मिन्योगजातं बालकस्य न संशयः । न करोति यदा दानं दुःखदारिद्रभाग्भवेत् ॥ ४४ ॥

दोषके विनाशके अर्थ दान करे । जो इतना दान करनेकी ताकत न हो तो चौथा हिस्सा दान करे और गंगास्नान करे ॥ ४३ ॥ इस कारणसे इस योगमें पैदा हुए बालकको संदेह नहीं है । जो दान नहीं करे तो मनुष्य दुःखी दरिद्री हो ॥ ४४ ॥

अथ विघातयोगमाह ।

लग्ने चैकादशे शौरी रिपुस्थाने निशापतिः । भूमिपुत्रो सप्तमस्थो मातृपित्रो न जीवति ॥ ४५ ॥ लग्ने तिष्ठति चेत् क्रूराः पापाः सप्तमगा यदि । मातापित्रोऽतिदुःखार्तः दारा तस्य न जीवति ॥ ४६ ॥ लग्ने त्रिकस्थिते क्रूरास्तदा पुत्रो न जीवति । अस्मिन् योगे नरो जातो राजमान्योऽतिदुर्बलः ॥ ४७ ॥

जन्मलग्न वा ग्यारहवें शनैश्चर हो, छठे घरमें चन्द्रमा हो, भंगल सातवें घरमें हो तो उसके माता पिता नहीं जीते हैं ॥ ४५ ॥ जन्मलग्नमें जो पापग्रह हो और सातवें भी पापग्रह हो तौ उसके माता पिता बड़े दुःखीहों और उसकी श्री नहीं जीती है ॥ ४६ ॥ जन्मलग्न, छठे, आठवें, बारहवें जो सब पापग्रह बैठे हो तो उसकी सन्तान नहीं जीती है । इसयोगमें जो मनुष्य पैदा हो तो राजमान्य और अतिदुर्बल शरीरवाला होता है ॥ ४७ ॥

राहकेंद्रुकुजाकीणां पंचबीजाक्षरं जपेत् । पश्चाद्वानं प्रदातव्यं जापकाय न संशयः ॥ ४८ ॥ मुक्ताविद्वमदानेन सर्वदोषो विनश्यति । त्रिशन्माषसुवर्णस्य पुष्परागसमन्वितम् ॥ ४९ ॥

आज्यं मधु सलवणं दानं दत्त्वा सुखी भवेत् । दुग्धकर्पूरपुष्पैश्च
ताम्रपात्रं प्रपूरयेत् ॥ ५० ॥ तस्य दोषस्य शांत्यर्थं कुर्यान्नात्र
विचारणा । न करोति यदा दानं वै भवति ध्रुवम् ॥ ५१ ॥

राहु, सर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, शनैश्चर इन ग्रहोंका पञ्च वीजाक्षरों करके
जप करवावे पीछेसे निःसंशय जप करनेवाले ब्राह्मणको दान करे ॥ ४८ ॥
मोती मूँगाके दानकरनेसे सम्पूर्ण दोषोंका नाश होता है । तीस मासे
सोना पुष्पराज मणि कर सहित ॥ ४९ ॥ वीसहित नोनका दान देनेसे
सुखी होता है । दूध कपूर पुष्पकरके तांबेका बर्तन भरे ॥ ५० ॥ तिस दोषकी
शांतिके अर्थ दे कुछ विचार नहीं करना चाहिये । अगर दान नहीं करे
तो निश्चय करके वैर होता है ॥ ५१ ॥

अथ त्रिषुधातीयोगः ।

रविराहू कुजः शौरिल्लिं वा पंचमे स्थितः । आत्मानं हंति पितरं
मातरं च न संशयः ॥ ५२ ॥ योगोऽयं त्रिषुधातारो जन्मकाले
भवेन्नृणाम् । पितृदोषः कृतः पूर्वं पुत्रहीनो नरो भवेत् ॥ ५३ ॥

सर्य, राहु, मङ्गल, शनैश्चर ये जिस मनुष्यके लग्नमें अथवा पञ्चम
घरमें हों तो वह पुरुष अपना और मातापिताका नाश करता है ॥ ५२ ॥
यह त्रिषुधातीयोग मनुष्योंके जन्मकालमें हो तो उस मनुष्यने पूर्वजन्ममें
पितरोंका दोष किया है इससे सन्तानहीन भी होता है ॥ ५३ ॥

अथ अन्यप्रकारः ।

सूर्यक्षेत्रे गतः शौरिभौमक्षेत्रे यदा अग्नः । राहुक्षेत्रे दिवानाथो
मंदक्षेत्रे धरासुतः ॥ ५४ ॥ सुते लग्नचतुर्थस्थौ पंचमे संस्थि-
तेऽपि वा । शनिराहू धरासूतुः पुत्रनाशं करोति वै ॥ ५५ ॥
अस्मिन् योगे नरो जातः त्रिषुधाती भवेद्ध्रुवम् । राजपुत्रो-
ऽथवा मंत्री पापकर्मान्वितः सदा ॥ ५६ ॥ षष्ठिमाषसुवर्णस्य
रौप्यं पष्ठिचतुर्गुणम् । शकटो वृषसंयुक्तो दद्यादोषस्य

शांतये ॥ ५७ ॥ गोधूमशक्तिराक्षीरं वस्त्रं विंशत्कर्तैर्मितम् ।
दैवज्ञाय प्रदातव्यं भृगुणा वै प्रभाषितः ॥ ५८ ॥

अब अन्य प्रकारसे योग कहते हैं। सूर्यकी सिंहराशिमें शनैश्चर बैठा हो और मंगलके स्थान मेष या वृश्चिकराशिमें राहु हो राहुका क्षेत्र कन्या राशिमें सूर्य बैठा हो, शनैश्चरके स्थान मकर वा कुंभमें मंगल बैठा हो। एको योगः ॥ ५४ ॥ पञ्चम, लग्न, चौथे शनि, राहु, मंगल बैठे हों। द्वितीयो योगः । वा तीसरे, छठे, दशर्वे, ग्यारहवें बैठे हों। तृतीयो योगः। इन योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य पुत्रनाशको प्राप्त होता है ॥ ५५ ॥ इस योगमें पैदा हुए मनुष्य निश्चय करके त्रिषुधाती होते हैं, राजाका पुत्र हो चाहे मन्त्री हो पापकर्मोंमें सदा रहता है ॥ ५६ ॥ साठ मासे सोना और दोसौ चालीस मासे चांदी, बैलों करके सहित गाड़ी दोषकी शांतिके अर्थ दे ॥ ५७ ॥ गेहूं, खांड, दूध, बीस हाथ कपड़ा ज्योतिषीके अर्थ दान करके दे। यह भृगुजीने कहा है ॥ ५८ ॥

अथ शक्रयोगः ।

मेषे मार्त्तण्डलाभस्थो कक्षे जीवधनस्थितः । कर्मस्थितो दत्यपूज्यः शक्रयोगो भृगुदितः ॥ ५९ ॥ इन्द्रयोगे नरोत्पन्नः सुललाटः सुविक्रमः । द्विजदेवार्चने प्रीतिर्द्युतिमान्कीर्तिमान् वशी ॥ ६० ॥ द्रव्यं न स्थीयते गेहे सदा चिंतासमाकुलः । साधुसेवीति विख्यातो नराणा च नराधिपः ॥ ६१ ॥

मेषराशिका सूर्य ग्यारहवें घरमें बैठा हो और कर्कराशिका वृहस्पति द्वूसरे घरमें हो, दशर्वे घरमें शुक्र बैठा हो तो भृगुप्रोक्त शक्र नाम योग होता है ॥ ५९ ॥ इस योगमें उत्पन्न हुए मनुष्यका ललाट अच्छा होता है और उत्तम पराक्रम होता है। ब्राह्मण देवताओंके पूजनमें प्रीति होती है, कांतिमान् बड़ा यशस्वी तथा नेमी होता है ॥ ६० ॥ उसके घरमें द्रव्य नहीं ठहरता है, हमेशा फिकरसे व्याकुल रहता है, साधुओंकी सेवा करनेवाला विख्यात मनुष्योंमें राजा होता है ॥ ६१ ॥

अथ विलासहानियोगः ।

जायेशः पापसंयुक्तः शीषोदयगतोऽपि वा । कुजो राहुः सप्तम-
स्थो पापग्रहनिरीक्षितः ॥ ६२ ॥ सप्तमे भवने भौमः अथवा
राहुसूर्यजौ । दारानाथः त्रिकस्थाने पापग्रहयुतो भवेत् ॥ ६३ ॥
योगो विलासहानिः स्याद्गार्यादुःखी भवेत्रः । तमसः शशि-
केतूनां त्रिभिर्बीजाक्षरं जपेत् ॥ ६४ ॥

सातवें घरका स्वामी पापग्रहोंसे युत हो, शीषोदय राशिमें स्थित हो
तहाँ शीषोदय मि. सि. क. वृ. तु. कुम्भ इनको कहते हैं । एको योगः ।
मंगल, राहु सातवें बैठे हों, शनि सूर्यकरके देखे गये हों । द्वितीयो योगः ॥
॥ ६२ ॥ सातवें घरमें मंगल हो । तृतीयो योगः । वा सातवें घरमें राहु शनैश्चर
हों । चतुर्थो योगः । वा सातवें घरका स्वामी पापग्रहोंसहित छठे, आठवें, बारहवें
हो । पंचमो योगः ॥ ६३ ॥ इस योगका नाम विलासहानि है । खीसे दुःख
होता है राहु, चंद्रमा, केतु इनका तीन बीजाक्षरोंसे जप करवावे ॥ ६४ ॥

जपं क्षिप्रं ततः कुर्याद्याहानं सुखाय वै । सुवर्णं रजतं दत्त्वा
ताम्रपात्रे घृतान्वितम् ॥ ६५ ॥ न करोति यदा दानं भार्या-
दुःखी नरो भवेत् । क्रोधपाशेन संयुक्तो दारहत्या कृता पुरा
॥ ६६ ॥ यावत्र दीयते दानं तावद्गार्या न जीवति । वियोगं
प्राप्यते पुंसां भृगुणा वचनोदितः ॥ ६७ ॥

जप जल्दीसे करे तिसके बाद दान दे सुखके अर्थ सोना, चांदी,
तांबेका बर्तन वीं सहित दान करे ॥ ६५ ॥ जो दान नहीं करे तो खीकरके
मनुष्य दःखी हो, क्रोधकी फांसी करके सहित पूर्वजन्ममें खीकी हत्या करता
हुआ ॥ ६६ ॥ जबतक दान नहीं दे तबतक खी नहीं जिये अगर जिये तो
रोगी रहे, मनुष्यको खीसे वियोग प्राप्त रहे । यह भृगुने कहा है ॥ ६७ ॥

अथ शून्ययोगमाह ।

देहाधीशे पापयुक्ते षष्ठाष्टमव्ययस्थितः । कुजतो राहुदुश्चिक्ये

(१६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

योगोऽयं शून्यनामकः ॥ ६८ ॥ शून्या मर्तिर्ब्रमचिता तथा
रोगान्वितः सदा । निशीथे शोकसंतप्तो उदासीनो भवेन्नरः ॥
॥ ६९ ॥ विंशतिंशद्वर्षमध्ये बहुरोगान्वितो नरः । सुदानाद्वि-
लयं याति अदाने शून्यवर्द्धते ॥ ७० ॥ शनिराहुकुजसौम्या-
स्त्रिभिर्बीजाक्षरं जपेत् । सप्तनन्दशतं कुर्यात्सहस्रमयुतं जपेत्
॥ ७१ ॥ हविः पंचामृते कुर्यादश्वं च विधिना सह ॥ दातव्यं
वृषभं शुभ्रं गोधूमं च मणद्वयम् ॥ ७२ ॥

लघुका स्वामी पापयहयुत होकर छठे, आठवें बारहवें बैठा हो मंगलसे
राहु तीसरे घरमें हो तो शून्य नामक योग होता है ॥ ६८ ॥ बुद्धि शून्य हो
अम चिंता तैसे ही हमेशा रोगकरके सहित रहे । उस मनुष्यको रातके समय
शोकसे संताप हो उदासी हो ॥ ६९ ॥ बीससे लेकर तीस बरसके बीचमें बहुत
रोग हों अच्छे दान करनेसे इस योगका दोष दूर होता है । दानके न कर-
नेसे इस योगकी वृद्धि होती है ॥ ७० ॥ शनि, राहु, मंगल, बुध इनका तीन
बीजाक्षरोंसे सात, नौ, हजार, दश हजार जप करे ॥ ७१ ॥ पंचामृतसे हवन
करे, विधिसहित घोडेका दान, सफेद बैल, और गेहूं दो मन दान करे ॥ ७२ ॥

जापकाय प्रदातव्यो माषतंदुलसंयुतः । सुवर्णमाषपंचाशद्रौप्यं
तत्रिगुणं कृतम् ॥ ७३ ॥ कांस्यपात्रे मसूरान्नं भोजनं दक्षि-
णायुतः । राहुभौमर्किशांत्यर्थं दद्यादानं सुखी भवेत् ॥ ७४ ॥
एतद्वानप्रभावेण शून्ययोगो विलीयते । यदा न कुरुते दानमा-
धिव्याधियुतो नरः ॥ ७५ ॥ वृद्धकाले च संप्राप्ते सत्त्विपा-
तान्वृतिर्भवेत् । अन्ते कैवल्यमाप्नोति एतद्वानप्रभावतः ॥ ७६ ॥
पुरा जन्म नरः कृत्वा तनुजाक्रयविक्रयः । तस्मादेतेषु योगेषु
जन्म जातं न संशयः ॥ ७७ ॥

जप करनेवालेको चावलसहित उर्द्द, सोना पचास मासे, चांदी एक सौ
पचास मासे दे ॥ ७३ ॥ कांसीका पात्र, मसूर भोजन दक्षिणासहित, राहु,

मंगल, शनिकी शांतिके अर्थ दान दे तो सुखी हो ॥ ७४ ॥ इस दानके प्रभावसे शून्ययोग नाश होता है जो दान नहीं करे तो बहुतसी बाधाआसे दुःखी होता है ॥ ७५ ॥ वृद्धावस्थामें सन्निपातसे मृत्यु हो किंतु इस दानके प्रभावसे अंतर्में मुक्तिको प्राप्त हो ॥ ७६ ॥ पहिले जन्ममें इस योगमें जन्मे मनुष्यने अपनी कन्याका क्रयविक्रय किया था इस कारणसे इस योगमें जन्म हुआ इसमें संशय नहीं ॥ ७७ ॥

अथ इलाख्यसर्पयोगमाह ।

त्रिषु केद्रेषु पापस्थ इलाख्यः सर्पयोग—तत् । तदा च नवधीजानि जपेद्ध्रीं ह्रौं शतत्रयम् ॥ ८८ ॥ ततः पुत्रसुखो भूत्वा वस्त्रं द्वादशभिः करैः । सवत्सां च सुवर्णस्य माषा एकोनविंशतिः ॥ ८९ ॥ तंदुलस्य कृतः सर्पो जापकाय प्रदापयेत् । एतदानप्रभावेन ह्ययं योगो विलीयते ॥ ८० ॥ अस्मिन् योगे नरो जातः परदारारतिर्भवेत् । दुष्टात्मा छिन्नपापश्च द्विजदेवविनिंदकः ॥ ८१ ॥

तीन केन्द्रोंमें पाप यह बैठे हों तो इलाख्य सर्प नाम योग होता है तो नौ बीजाक्षरोंसे हीं हीं तीन सौ जपे ॥ ८८ ॥ तो पुत्रका सुख हो, कपड़ा बारह हाथ, बछड़ा सहित गौ, उन्नीस मासे सोना ॥ ८९ ॥ तथा चावलका सप बनाय जप करनेवालेको दे इस दानके प्रभावसे यह योग दूर होता है ॥ ८० ॥ इस योगमें पैदा हुए मनुष्यकी पराई हीमें प्रीति होती है तथा यह दुष्टात्मा, पापी तथा ब्राह्मण और देवताओंका निंदक होता है ॥ ८१ ॥

अथ विफलनामयोगः ।

चतुष्केद्रेषु कूरस्थो रिपुरंधनिशापतिः । विफलाभिधो भवेयोगः फलं तस्य तथा शृणु ॥ ८२ ॥ विफले यो नरो जातस्तस्य यत्र वदाम्यहम् । ततः कूरग्रहाणां च जपं कृत्वा प्रयत्नतः ॥ ८३ ॥ रजतं माषफइविशद्वाद्येनुं सवत्सकाम् । सुवर्णमाष

द्वात्रिंशद्वृत्तं विशत्करैर्मितम् ॥८४॥ नवबीजाक्षरं जस्वा रविभौ-
मशनिस्तमः । मंत्रैरभिः प्रजाप्यश्च दत्वा दानं विशेषतः ॥८५॥

चारों केंद्रोंमें पाप ग्रह बैठे हों, छठे या आठवें चन्द्रमा हो तो विफल
नाम योग होता है इसका फल सुन ॥ ८२ ॥ विफलयोगमें जो मनुष्य
पैदा हो इसका मैं यत्न कहता हूं, इसके बाद पापग्रहोंके मंत्रका जप यत्नसे
करे ॥ ८३ ॥ छत्तीस मासे चांदी, बछडे सहित गौ, बत्तीस मासे सोना, बीस
हाथ कपडा इनका दान करे ॥ ८४ ॥ नौ बीजाक्षरोंका जप करे, सूर्य
मंगल शनि तथा राहुके मन्त्रोंसे जप करे और विशेष करके दान दो ॥८५॥

विफलाख्यफलं चैव तत्काले तद्विलीयते । कदाचित्त्र ददे-
दानं द्वात्रिंशद्वर्षतो सुखम् ॥ ८६ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातः
पश्चान्निर्धनतां ब्रजेत् । बहुदुःखान्वितश्चैव भूगुणा वै प्रका-
शितः ॥ ८७ ॥

विफलयोगका फल उसी समय नाश हो जाता है, कदाचिद्
दान नहीं करे तो बत्तीस वर्षतक सुखी रहे ॥ ८६ ॥ इस योगमें जो
मनुष्य उत्पन्न हो वह पछे निर्धनी होय, अनेक दुःखोंसे युक्त हो यह
भूगुजीने प्रकाश किया है ॥ ८७ ॥

अथ आमयोगः ।

लघ्ने मन्दोऽष्टमे राहु रविभौमौ सुखे स्थितौ । आमयोगे भवेत्कुष्ठी
धनहीनो महादुखी ॥ ८८ ॥ पृष्ठत्रिंशन्मिते वर्षे नरो वै निर्धनो
भवेत् । अस्मिन् योगे भवेद्रोगी दानाद्वोषो विलीयते ॥ ८९ ॥
शनी राहुश्च पापानां चतुर्थीणि दशस्त्रिषु । जपं कृत्वा ततो
दानं शकटं वृषसंयुतम् ॥ ९० ॥

लघ्नमें शनि, आठवें राहु और छौथे सूर्य, मंगल बैठे हों तो आम
नाम योग होता है, इसमें पदा हुआ कोढी, धनहीन तथा अधिक दुःखी
हो ॥ ८८ ॥ इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य छत्तीसव वर्षमें निर्धन

होता है तथा रोगी होता है, दान करनेसे दोष दूर होता है॥८९॥ शनिका ४००, सहुका ३००, सूर्यका १०००, मंगलका ३००, क्रमसे जप करवावे, दान करे, बैलोंकरके सहित गाड़ीका दान करे ॥ ९० ॥

सप्तधान्ययुतं तैलं सुवर्णं दशमाषकम् । द्वार्चिंशत्करं वस्त्रं दानं
दध्यात्सुखी भवेत् ॥ ९१ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातस्तदा वै
पूर्वजन्मनि । बालस्त्रीघातकः सोऽपि तेन पापेन कुष्ठभाक्
॥ ९२ ॥ यदा न कुरुते दानं तदा वै सप्तजन्मनि । बहुरोग-
युतो नित्यं भृगुणा वै प्रकाशितः ॥ ९३ ॥

सात नाज तैलातेल, दस मासे सोना, बत्तीस हाथ कपडा दान कर-
नेसे सुखी हो ॥ ९१ ॥ इस योगमें जो मनुष्य पैदा हो तो पहिले जन्मोंमें
वह पुरुष बालस्त्रीका घाती होता है, और उस पापसे कोढ़ी होता है
॥ ९२ ॥ जो दान नहीं करे तो सात जन्मोंतक बहुतसे रोगोंकरके
सहित सदैव रहे यह भृगुजी महाराजने प्रकाश किया है ॥ ९३ ॥

अथ दारुणयोगः ।

मूर्तिरंध्रस्थिते भानुवर्यये षष्ठे खलय्रहः । सौम्याः केन्द्रत्रिको-
णस्था योगोऽयं दारुणाभिधः ॥ ९४ ॥ धर्मकर्मरतो नित्यं शा-
स्त्रज्ञो बहुसेवकः । धनधान्ययुतः सोऽपि सभावक्ता गुणान्वितः
॥ ९५ ॥ आदौ च षोडशे वर्षे पीडा भवति निश्चितम् । षट्
त्रिंशन्मिते वर्षे महद्वःखं भविष्यति ॥ ९६ ॥

लग्न वा आठवें वर्षमें सूर्य हो, छठे बारहवें पापय्रह हों, शुभ यह केंद्र
त्रिकोणमें बैठे हों तो दारुणनाम योग होता है ॥ ९४ ॥ धर्मकर्ममें हमेशा
तप्तर, शास्त्रका जाननेवाला, बहुत नौकरोंवाला, धन अन्नकरके सहित,
सभामें बोलनेवाला, गुणी ॥ ९५ ॥ पहिले सोलह वर्षमें निश्चयकरके
पीडा होती है, छर्तीसवें वर्षमें बहुत दुःख होता है ॥ ९६ ॥

उत्कृष्टषड्वर्षाणि शत्रुपक्षान्तृपाद्यम् ॥

(२०)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

किं जपं कस्य पूजा च किं दानं च किमौषधम् ॥ ९७ ॥
भृगुरुवाच ।

सप्तविंशतिसूर्यस्य जपं कुर्यात्प्रयत्नतः । ततो दान प्रकर्तव्यं
रौप्यं द्वादशमाषकम् ॥ ९८ ॥ द्विगुणं हाटकं दद्यात् घृतं दुल-
संयुतम् । द्वादशकरैर्मितं वस्त्रं माषान्नं प्रस्थपञ्चमिः ॥ ९९ ॥

छः वर्षतक बहुत रोग शत्रु और राजासे भय रहता है. किसका जप,
किसकी पूजा, क्या दान और क्या दवा करे ॥ ९७ ॥ तब भृगुजी
बोले—सत्ताईस सौ सूर्यका यत्नकरके जप करे इसके बाद दान करे,
बारह मासे चांदी ॥ ९८ ॥ चावीस मासे सोना दे, धी चावलसहित,
बारह हाथ कपड़ा, तथा दो सेर उर्द दान करे ॥ ९९ ॥

यद्हिने पूजनं कृत्वा दानं दद्यात्प्रयत्नतः । जापकाय प्रदातव्यं
सर्वविघ्नस्य शांतये ॥ १०० ॥ चतुःषष्ठिमिदं यत्रं प्रक्षाल्यं
दिवसोदये । एतद्वानोपचारे च कष्टशांतिर्भविष्यति ॥ १ ॥ न
करोति यदा दानमते दुःखमवाप्नुयात् । अस्मिन् योगे नरो
जातो ब्रह्महत्या कृता पुरा ॥ २ ॥

जिस दिन पूजन करे उसी दिन सब विद्वाँकी शांतिके अर्थ यत्न-
करके जप करनेवालेको दान दे ॥ १०० ॥ चौसठके यंत्रको सूर्यके उद-
यके समय जलमें स्नान करावे, इस दानके करनेसे कष्ट शांत हो जाता
है ॥ १ ॥ जो दान नहीं करे तो अंतमें तकलीफ होती है । इस योगमें
पैदा हुए मनुष्यने पहिले ब्रह्महत्या की थी ॥ २ ॥

अथ चन्द्रयोगमाह ।

लग्नाद्वे पञ्चमे यावत् क्रूराः सौम्यास्तु खेचराः । चंद्रयोगे भवे-
द्धोगी अश्ववांश्च धनान्वितः ॥ ३ ॥ पुत्रपक्षे भवेचिता वातरो-
गकफान्वितः । सवत्सा धेनुर्दातव्या गुरवे च भृगूदितः ॥ ४ ॥

लग्नसे पाँचवें वरतक सब पापी तथा शुभ ग्रह बैठे हो तो चन्द्रयोग होता है, इसमें पैदा हुआ मनुष्य भोगी, घोड़ा सवारीमें रहे, धनवाला होता है ॥ ३ ॥ पुत्रकी चिंता रहती है, वातकफका रोग हो, बछडासहित गौका दान करके गुरुके अर्थ दे यह भृगुजीने कहा है ॥ ४ ॥

अथ अद्भुतसागरयोगः ।

चतुष्केद्रेषु सौम्याश्च पापास्तु त्रिषडायगाः । धनधान्यधरायुक्तो जातो अद्भुतसागरः ॥ ५ ॥ दशवर्षाणि पर्यंतं महदुःखं भविष्यति । ग्रहार्चनेन दानेन यदि जीवति मानवः ॥ ६ ॥ विश्वातो धुरि शूराणां स जातः कुलदीपकः । सुशीलो सुकलाविज्ञो नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ ७ ॥

चारों केंद्रोंमें शुभ ग्रह हों और तीसरे, छठे, बारहवें पाप ग्रह हों तो अद्भुतसागर योग होता है, इसमें पैदा हुआ धन अन्न पृथ्वीकरके युक्त होता है ॥ ५ ॥ दश वर्षकी उमरतक बहुत दुःख होता है, ग्रहोंके पूजन दान करनेसे जो यह मनुष्य जीता रहे तो ॥ ६ ॥ संसारमें धीर पुरुषोंका अग्रणी होता है, कुलमें दीपकके समान उत्तम शीलवाला, अच्छी कलाओंका जाननेवाला तथा राजाओंका सदृश होता है ॥ ७ ॥

अथ अर्धाद्भुतयोगः ।

मूर्तिस्थितो निशानाथः अन्ये सौम्यास्तु केद्रगाः ।

अर्द्धाद्भुतस्तदा योगो बलमर्दो भवेन्नरः ॥ ८ ॥

जन्मलग्नमें चन्द्रमा हो और बाकीके शुभग्रह केंद्रमें हों तो अर्द्धाद्भुत नामक योग होता है, इसमें पैदा हुआ मनुष्य फौजका मर्दन करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ सागरनामयोगः ।

यदा एकोऽपि केन्द्रस्थो भौमाद्याः पञ्च खेवराः स्वोच्चे स्वक्षे त्रगाश्चापि योगोऽयं सागराभिधः ॥ ९ ॥ चतुश्चत्वारि वर्षाणि

पर्यंतं सुखमुच्यते । ततो गोदानं कर्तव्यं ताप्रपात्रे घृतान्वितम् ॥ ११० ॥ धनधान्ययुतो नित्यं धराधीशो प्रतापंवान् । अंते दुःखमवाप्नोति देवदोषः कृतः पुरा ॥ ११ ॥

मंगलको आदि लेकर शनिपर्यंत इनमेंसे एक भी केंद्रमें बैठा हो तो सागरनाय योग होता है । जो अपने उच्चमें वा क्षेत्रके होकर बैठे तब ॥ ९ ॥ चवालीस वर्षकी उमरतक सुखी रहे, तिसके बाद गोदान करे, तावेका बर्तन धीसे भरके दान करे ॥ ११० ॥ तो धन अन्नकरके सहित, हमेशा पृथ्वीका मालिक तथा बड़ा प्रतापी हो, अंतमें दुःखको प्राप्त हो इसने पाहल देवताका दोष किया है ॥ ११ ॥

अथ विपाकयोगः ।

चतुष्केदेषु शून्याश्च त्रिकोणे अष्टमे स्थितः । कूरा विपाकयो-
गोऽयं वेदनिंदा कृता पुरा ॥ १२ ॥ तस्माद्विपाकयोगेषु जन्म
जातं न संशयः । राजर ति विख्यातो म्लेच्छबुद्धिर्भवेदिति
॥ १३ ॥ जपं पंचशतं कुर्याद्व्यात् हेमवृषोऽरुणः । पंचाश-
न्माषरजतं वस्त्रं त्रिंशत्करौर्मितम् ॥ १४ ॥

चारों केन्द्र शून्य हों, नौवें, पांचवें, आठवें सब पापग्रह बैठे हों तो विपाकनामक योग होता है, इस योगमें पैदा हुए मनुष्यने पहिले जन्ममें वेदकी निंदा की थी ॥ १२ ॥ तिस कारणसे विपाकयोगके विषे जन्म मनुष्यका हुआ इस योगमें उत्पन्न हुआ, मनुष्य महाराजाकरके विख्यात म्लेच्छ बुद्धि होता है ॥ १३ ॥ पांच सौ मंत्रका जप करे, सोना, लाल बैल, पचास मासे चांदी तथा तीस हाथ कपड़ा दान करे ॥ १४ ॥

सप्तधान्यं तिलं तैलं लोहपात्रं घृतान्वितम् । एलालवंगकस्तूरी
दीवते श्रद्धयान्वितः ॥ १५ ॥ पञ्चादात्मजबन्धुभ्यो महत्सौ-
ख्यं भविष्यति । अन्तकाले निशायां वै धनचिंता प्रजायते ॥
॥ १६ ॥ शत्रुपक्षान्वृपाच्चिता संतसो मनुजः सदा । प्रभावा-
त्पूर्वदानस्य चिंताकष्टो विनश्यति ॥ १७ ॥

सात नाज, तिलतेल, लोहेका बर्तन धीकरके साहित, इलायची, लौंग, कस्तूरी श्रद्धासहित दे ॥ १५ ॥ पीछे पुत्र भ्राताओंका बहुत सुख होता है। अन्तरमें निश्चयकरके धनकी चिंता पैदा होती है ॥ १६ ॥ शत्रुओंसे राजासे चिंताकरके संतापको प्राप्त होता है, पहिले कहे हुए दानके प्रभावसे चिंताकष्ट दूर होता है ॥ १७ ॥

अथ पातयोगः ।

मूर्तौ चैवाष्टमे षष्ठे शनिराहुकुजा यदा । पाताभिधस्तदा योगो
धनधान्यविनाशकः ॥ १८ ॥ पंचत्रिनवबीजानि जपं कुर्याद्वि-
शेषतः । तुरंगः कांचनं रौप्यं दानं देयं भृगूदितम् ॥ १९ ॥

लग्नमें वा आठवें वा छठे शनि, राहु, मंगल हों तो पातनाम योग होता है धन अन्नका विनाश करता है ॥ १८ ॥ पांच तीन नौ बीजाक्षरोंसे जप करे, विशेषकरके घोड़ा, सोना, चांदीका दान करे यह भृगुजीकरके कहा गया है ॥ १९ ॥

अथ नंदयोगः ।

युग्मं युग्मं भवेत्त्रीणि चैकत्र त्रिग्रही भवेत्
नंदयोगः स विख्यातश्चिरायू राजपूजितः ॥ १२० ॥

दो दो यह तीन जगह हों और तीन यह एक जगह हों तो नंदयोग होता है। इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य बड़ी उमरवाला राजोंकरके पूजनीय होता है ॥ १२० ॥

अथ ऐंद्रबाहुयोगः ।

लग्नाच्च हिबुके यावत् कूराः सौम्यास्तु खेचराः ।
ऐंद्रबाहुस्ततो योगो धनी मानी सुविक्रमः ॥ २१ ॥

जन्मलघ्नसे चौथे घरतक जो सब यह हों तो ऐंद्रबाहु योग होता है इसमें पैदा हुआ सनुष्य धनी, मानी, उच्चम पराक्रमी होता है ॥ २१ ॥

अथ श्रीनन्दयोगः ।

मीने शशिस्थिते शुक्रः कर्कस्थे त्रिदशार्चितः । तृतीयका-
दशे पापः श्रीनंदाख्यो यशःप्रदः ॥ २२ ॥ धनी मानी सुखी
भोगी मंत्रोपासनतत्परः । श्रीनंदे तु नरो जातः शांतोऽत्यंत-
गुणी भवेत् ॥ २३ ॥

मीनराशिम चन्द्रमा तथा शुक्र हों, कर्कराशिमें बृहस्पति हो, तीसरे
ग्यारहवें पापग्रह हों तो श्रीनंद नाम योग यशका देनवाला होता है
॥ २२ ॥ जो श्रीनन्दयोगमें पैदा हो वह धनी, मानी, सुखी, भोगी
मंत्रोपासनामें तत्पर, शांत स्वभाव तथा अधिकगुणी होता है ॥ २३ ॥

अथ विपत्तियोगः ।

लभे राहुः सुते शौरः कर्मस्थाने महीसुतः । विलोकिते रविः
शुक्रो योगो विपत्तिनामकः ॥ २४ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातो
बालहत्या कृता पुरामंदराह्रकंभौमानां नवबीजाक्षरो जपः ॥ २५ ॥

ग्यारहवें राहु, पांचवें शनि दशममें मंगल बढ़ा हो, सर्व शुक्र देखते
हों तो विपत्तिनामक योग होता है ॥ २४ ॥ इस योगमें जो मनुष्य पैदा हो
उसने पहिले बालककी हत्या की है। शनि राहु मंगलका नौ बीजाक्षरोंसे
जप करवावे ॥ २५ ॥

द्विसहस्रजपं कुर्यात्पश्चादानं प्रदापयेत् । दानाद्विलीयते पीडा
पुत्रसौख्यं भविष्यति ॥ २६ ॥ सर्वविग्रहविनिर्मुक्तो धनपुत्रा-
न्वितो भवेत् । सुवर्णं रजतं चाज्यं दद्यादानं प्रयत्नतः ॥ २७ ॥

दो हजार जप करवाके पीछेसे दान दे दान करनेसे पीडा दूर होती है
और पुत्रका सुख होता है ॥ २६ ॥ सम्पूर्ण विघ्नोंकी शान्तिअर्थ दान करे तो
धन पुत्रकरके सहित हो, सोता, चांदी, धीका यत्करके दान करे ॥ २७ ॥

अथ चक्रदामिनीयोगः ।

बुधक्षेत्र यदा जीवो जीवक्षेत्र यदा भृगुः । शुक्रक्षेत्रे निशानाथो

योगोऽयं चकदामिनी ॥ २८ ॥ चातुर्युगुणसंपन्नः कामाल्पो पद्म-
लोचनः । स च वै दीर्घजीवी स्याद्धरानाथः प्रतापवान् ॥ २९ ॥

बुधके घरमें बृहस्पति बैठा हो बृहस्पतिके घरमें शुक्र हो और शुक्रके
घरमें चंद्रमा बैठा हो तो चकदामिनी नामक योग होता है ॥ २८ ॥ इस योगमें
पैदा हुआ मनुष्य चतुरतामें निपुण होता है थोड़ा कामी, कमलसे नेत्र, निश्च-
यकरके बड़ी उमरवाला, धरतीका मालिक और प्रतापी होता है ॥ २९ ॥

अथ संताननाशयोगः ।

सुखस्थितो यदा राहुः पंचमेशः शनिर्युतः । आदौ पुत्रीद्युं
त्रीणि पश्चात्पुत्रं प्रसूयते ॥ ३० ॥ यशस्वी क्षीणकांतिः
स्यात्कुटिलो बहुभृत्यवान् । प्रपञ्चरचने दक्षो बालहत्या कृता
पुरा ॥ ३१ ॥ अपुत्रत्वमवाप्नोति मंत्रराहुकुजोऽर्कजः । जपं
क्षिप्रं ततः कुर्यात्पश्चादानं प्रदापयेत् ॥ ३२ ॥

चौथे घरमें राहु हो पंचम घरका स्वामी शनिसहित हो तो पहिले
दो तीन कन्या हों पीछेसे पुत्र पैदा होय ॥ ३० ॥ यशस्वी, क्षीणकांति
हो, कुटिल, बहुत नौकरोंसहित, प्रपञ्च रचनेमें चतुर, तथा पहिले जन्मका
बालघाती होता है ॥ ३१ ॥ पुत्रहीन होता है, राहु, मंगल, शनिका मंत्रजप
जल्दीसे करावे पीछेसे दान दे ॥ ३२ ॥

परदाररतो नित्यं पुत्र एको न जीवति । स्थूलदेहो धनी दानी
लज्जासंयुक्तमानुषः ॥ ३३ ॥ सप्तत्रिनवबीजानि जपं कुर्या-
त्सुखी भवेत् । कृष्णां गां महिषीं दद्यात्स्वर्णनीलसितां-
बरम् ॥ ३४ ॥

पराई छियोसे रमण करनेवाला, एक पुत्र भी नहीं जाता है शोदा
शरीर, धनवान्, दान करनेवाला, लज्जाकरके सहित मनुष्य होता है ॥ ३३ ॥

सात, नौ, तीन बीजाक्षरोंसे जप करे तो सुखी हो काली गौ और भैस,
सोना, नीला और सफेद कपड़ा, दान करे तो पुत्र जिये ॥ ३४ ॥

अथ विपरीतयोगः ।

जीवक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा भृगुः । मंदारचंद्रा मेष-
स्था रिःफे वा अष्टमे गताः ॥ ३५ ॥ तदा विपरीतयोगोऽयमु-
त्पन्नो दुःखभाग् भवेत् । अस्मिन् योगे नरो जातो ब्रह्मधाती
भवेद् ध्रुवम् ॥ ३६ ॥

बृहस्पतिका घर ९ । १२ में सूर्य हो; सूर्यके ५ घरमें शुक्र
हो, शनि, मंगल, चंद्रमा मेषराशिके होकर छठे वा आठवें हों ॥ ३५ ॥
तो विपरीत नामक योग होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य दुःखको प्राप्त हो
पहिले जन्ममें निश्चय करके ब्रह्मधाती हो संतानहीन होता है ॥ ३६ ॥

अन्यप्रकारमाह ।

लग्नेशो व्ययलाभस्थः कूरसंयुतवाहशः । मध्यमांसरतो नित्यं
पूर्वजन्मद्विजोऽभवत् ॥ ३७ ॥ तातस्य दुःखितं कृत्वा त्रयो पुत्रा
विनश्यति । इयं उभौ च योगेऽस्मिन् जातः पुत्रदुखी नरः
॥ ३८ ॥ किं जपं कस्य पूजां च किं विधानं किमौषधम् ।
भृगुरुवाच । मंदार्ककुजजीवस्य सप्तबीजाक्षरं जपः ॥ ३९ ॥

जन्मलक्षका स्वामी बारहवें या न्यारहवें घरमें हो पापग्रहों करके
सहित हो वा देखा गया हो तो मनुष्य मध्यमांसको खानेवाला पूर्वजन्ममें
ब्राह्मण था ॥ ३७ ॥ पिताको बहुत दुःख देता था, इससे तीन पुत्र उसके
नाश हों । इन दोनों योगोंमें पैदा हुए मनुष्य पुत्रसे दुःखी होते हैं ॥ ३८ ॥
यह क्या जप किसकी पूजा, क्या दान, कौन विधान और क्या
औषध करे । तब भृगुजीं बोले—शनि, सूर्य, मंगल, बृहस्पतिका सात
बाजाक्षरासे जप करे ॥ ३९ ॥

सहस्रमेकं कर्तव्यं ततो दानं प्रदापयेत् । प्रवालहेमगोधूमान्
रौप्यं द्वादशमाषकम् ॥ १४० ॥ पंचविंशत्कर्वैष्णं सप्तान्नं च
मणद्वयम् । पंचभिस्ताम्रपात्रेषु घृतेन परिपूरितम् ॥ ४१ ॥
विपरीतनरो जातो दद्याद्वेनुं सवत्सकाम् । जापकाय प्रदातव्य-
मन्यैरपि न दीयते ॥ ४२ ॥ कर्पूरं महिषीं दद्यात् कांस्यपीता
म्बरोऽबुजम् । चतुःषष्ठिमिदं यंत्रं विधिवद्वार्यते कटौ ॥ ४३ ॥
दानाद्विलीयते पीडा भृगुणा वै प्रकाशितः । पूर्वकर्मार्जितं पापं
क्षिप्रं शांतिर्भविष्यति ॥ ४४ ॥

एक हजार जप करे, इसके पीछे मूँगा, सोना, गहू, बारह मासे
चांदी ॥ १४० ॥ पैतीस हाथ कपडा, साता अन्न दो मन, तांबेके पांच
पात्रामें धी भर दान दे ॥ ४१ ॥ विपरीत योगमें पैदा हुआ मनुष्य बछडस-
हित गौ दान करे । दान जप करनेवालेको दे दूसरेको नहीं दे ॥ ४२ ॥
कपूर, भैंस, कांसा, पीला कपडा, कमल दान करे, चौसठका यंत्र विधिपू-
र्वक कमरमें बंधि ॥ ४३ ॥ दान करनेसे पाप जल्दीसे दूर हो जाता है, दूसरे
जन्मका भी पाप दूर होता है यह भृगुजीने प्रकाश करा है ॥ ४४ ॥

अथ कूटयोगः ।

संतानेशो महीपुत्रो रिपुरंघव्यथस्थितः । शनिक्षेत्रे गते चंद्रे
योगोऽयं कूटनामकः ॥ ४५ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातस्तदा वै
पूर्वजन्मनि । स्वकुलस्य हृतं वित्तं कुलघाती भवेत्तरः ॥ ४६ ॥

पंचम यरका स्वामी और मंगल छठे, आठव बारहवें बैठा हो शन-
श्वरके घरमें चन्द्रमा हो तो कूटनामक योग होता है ॥ ४५ ॥ इस योगमें
पैदा हुए मनुष्यने पूर्वजन्ममें अपने कुलके भाइयोंका धन हरण करा
था और अपने कुलका घात किया था ॥ ४६ ॥

चंद्रभौमजपं कुर्यात् सप्तवीजनवत्रयम् । सपादलक्षकर्तव्यं पश्चा-

(२८)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

दानं प्रदापयेत् ॥ ४७ ॥ गोधूमा वृषभः शुभ्रो हेम माषचतुर्दश । रौप्यं तद्विगुणं दद्याद्वस्त्रं विशत्करैर्मितम् ॥ ४८ ॥

चन्द्रमा और मंगलका सात नौ तथा तीन बीजाक्षरोंसे सवा लाख जप करे पछि दान दे ॥ ४७ ॥ गेहूँ, सफेद बैल, चौदह मासे सोना, अडाईस मासे रौप्य तथा बीस हाथ कपडा दे ॥ ४८ ॥

दंताम्बुजं ताम्रपात्रं घृतेन परिपूरितम् । जापकाय प्रदातव्यं तडागे वा सरित्तटे ॥ ४९ ॥ डामरोक्तं तथा यंत्रं विधिवद्वार्यते कटौ । दानाद्विलीयते पापं पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति ॥ ५० ॥

हाथीदंत, कमल तथा तांबेका पात्र धीसे भरके जप करनेवालेको दे । तालाबके पास वा नदीके किनारे ॥ ४९ ॥ डामरतंत्रोक्त मंत्रको कमरमें धारण करे, दान करनेसे पाप दूर हो जाते हैं और पुत्रकी प्राप्ति होती है ॥ ५० ॥

अथ राजयोगः ।

कर्कस्थितः सुराचार्यो धर्मस्थो भृगुनंदनः । सप्तमे भूमिजः शौरी राजराजो भवेन्नरः ॥ ५१ ॥

कर्कराशिमें बृहस्पति, नववें घरमें शुक्र बैठा हो और सातवें घरमें मंगल और शनि हो तो मनुष्य राजाओंका राजा महाराजा होता है ॥ ५१ ॥

अथ अनुभावयोगः ।

लाभे राहुः सुते शौरिः कर्मस्थः क्षितिनंदनः । रंध्रस्थितो निशानाथः षष्ठ्यस्थौ रविचंद्रजौ ॥ ५२ ॥ अनुभावस्तदा योगो भाषितो मुनिपुंगवैः । पुत्रास्तस्य न जीवन्ति गर्भस्त्रावो भवेत्सदा ॥ ५३ ॥

ग्यारहवें राहु, पांचवें शनि, दशवें मंगल, आठवें चन्द्रमा और छठे सूर्य बुध हों ॥ ५२ ॥ तो अनुभाव नामक योग होता है । यह श्रेष्ठ मुनी-शरोंकरके कहा गया है, इसमें पैदा हुए मनुष्यके पुत्र नहीं जीते हैं हमेशा गर्भ भी गिर जाता है ॥ ५३ ॥

दुष्टस्वप्रवती भार्या कुजराहुशनैश्चराः । त्रिबीजाक्षरमंत्रेण पंच-
पंचाशतं जपः ॥ ५४ ॥ ततस्तु दानं दातव्यं पंचाशन्माष-
हाटकम् । रौप्यं तद्विगुणं दद्याद्वस्त्रं च करविंशतिः ॥ ५५ ॥
रक्तांबरं कांस्यपात्रं तैलेन परिपूरितम् । एतदानोपचारेण
शिशुर्जीविति निश्चितम् ॥ ५६ ॥

उसकी स्त्रीको बुरे सुपने होते हैं । मंगल, राहु, शनि इनके तीन
बीजाक्षरोंकरके पचपन सौ जप करे ॥ ५४ ॥ फिर पचास मासे सोना, सौ
मासे चांदी, बीस हाथ कपड़ा ॥ ५५ ॥ लाल वस्त्र तथा कासीका पात्र तेल
भरके दान करे इस दानके करनेसे निश्चय पुत्र जीते हैं ॥ ५६ ॥

अथ श्रीमुखयोगः ।

लग्नस्थितः सुराचार्यो धर्मस्थो भृगुनन्दनः । कर्मस्थितो दिवा-
नाथो योगोऽयं श्रीमुखो भेवेत् ॥ ५७ ॥ विंशतिवर्षपर्यन्तं राज-
मान्यो भवेन्नरः । गजाश्वधनसंयुक्तः शक्तुल्यपराक्रमः ॥ ५८ ॥

जन्म लग्नमें बृहस्पति, नवम शुक्र, दशवें सूर्य हो तो श्रीमुख नामक
योग होता है ॥ ५७ ॥ बीस वर्षकी उमरतक राजाकरके मान पाता है, हाथी
घोड़ा, धनसहित इन्द्रके समान पराक्रमी होता है ॥ ५८ ॥

अथ कपालयोगः ।

पंचमेशः सुखस्थाने षष्ठलग्नपर्योत्रिकः । विलोकिते पुत्रभावे
भास्करिर्भूसुतो रविः ॥ ५९ ॥ जातकं च यदा जातं सर्वे पुत्रा
विनश्यति । ग्रहार्चनेन दानेन पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति ॥ ६० ॥

पंचम घरका स्वामी चौथे हो, छठे घरका स्वामी लग्नेशसहित छठे,
आठवें या बारहवें हो, पांचवें घरको शनि, मंगल और सूर्य देखते हों
॥ ५९ ॥ ऐसे योगमें पैदा हुए मनुष्यके सब पुत्र नष्ट हो जाय और
ग्रहोंके पूजन दानसे पुत्रकी प्राप्ति हो ॥ ६० ॥

त्रिसासे अष्टमासेऽपि गर्भस्वावो भविष्यति ॥ तस्मात्कपालयो-
गेषु जन्म जातं न संशयः ॥ ६१ ॥ पुत्रपक्षाद्वेत्कष्टं दुष्टक-
मान्वितः सदा । शनिराहू कुजो भानुः पंचबीजाक्षरं जपेत् ।
॥ ६२ ॥ पञ्चाहानं प्रकर्तव्यं माषविंशतिकांचनम् । रौप्यं
तत्रिगुणं दद्यादस्त्रं त्रिशत्करैर्मितम् ॥ ६३ ॥

कपालयोगमें जन्म होनेसे निःसंदेह तीसरे आठवें मासमें गर्भ पतित
हो जाय ॥ ६१ ॥ पुत्रपक्षसे कष्ट हो, बुरे कर्मोंका करनेवाला पुत्र हो ।
शनि; राहु मंगल सूर्यका पंच बीजाक्षरोंसे जप करे ॥ ६२ ॥ पीछे बीस
मासे सोना, साठ मासे चांदी, बीस हाथ कपडा दान करे ॥ ६३ ॥

सप्ताहं च तिलं तैलं दद्यादेनुं प्रयत्नतः । जापकाय प्रदातव्यं
ताम्रपात्रं दृतान्वितम् ॥ ६४ ॥ न करोति यदा दानं तदा वै
पंचजन्मनि । अपुत्रत्वं भवेद्बांते शृगालीं योनिमाप्नुयात् ॥ ६५ ॥

सार्वो अन्न तिलतेल तथा गौ यत्नकरके जप करनेवालेको दे, धीस-
हित तांबेका पात्र ॥ ६४ ॥ दान नहीं करे तो निश्चय करके पांच जन्म
तक संतानहीन हो और अंतमें स्यारकी योनिको प्राप्त होता है ॥ ६५ ॥

अथ पिशाचयोगः ।

रविक्षेत्रे गतो जीवो जीवक्षेत्रे रविर्बुधः । पंचमस्थः कुजो राहु-
भृगुणा सह वै भवेत् ॥ ६६ ॥ तदा पैशाचिको योगो भवि-
ष्यति न संशयः । धनलोभवशात्सोऽपि भगिनीपुत्रहा पुरा
॥ ६७ ॥ पूर्वपापप्रभावेन संतर्तिनं भविष्यति ।

सूर्यके घरमें बृहस्पति और बृहस्पतिके घरमें सूर्य बुध हीं पांचवें
घरमें शुक्रसहित मंगल राहु हो ॥ ६६ ॥ तो पिशाच नामक योग होता है
इस योगमें पैदा हुए मनुष्यने धनके लोभसे पहिले जन्ममें अपनी बहिनके
पुत्र मारे थे ॥ ६७ ॥ पहिले जन्मके पापके प्रवाहसे संतान न होय,

शुक्र उवाच ।

किं जपं किं विधानं च किं दानं च किमौषधम् ॥ ६८ ॥
श्रोतुमिच्छामि तत् सर्वं यस्य कृत्वा भवेत्सुखम् ।
महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवं विधि शुभम् ॥ ६९ ॥

तब श्रीशुक्रजी बोले कौन जप कौन विधि तथा कौन औषधी करे ॥ ६८ ॥ जिसके करनेसे सुख हो सो सम्पूर्ण मेरे सुननेकी इच्छा है । हे ऋषे । आप समर्थ हो, इस प्रकार शुभ विधिको आप जानते हैं ॥ ६९ ॥

भृगुरुवाच ।

रथ्यार्किराहुजीवस्य सप्तपञ्चाशतं जपः । ततो दानं प्रदातव्यं
मुवर्णं पष्ठिमाषकम् ॥ ७० ॥ रजतं द्विगुणं दद्याद्वस्त्रं पष्ठि-
कर्मितम् । गोयुगं महिषीं दद्यात् जापकाय विशेषतः ॥ ७१ ॥
विधिवत्पूजनं कुर्यात् भगिनीपुत्रयुतस्य वै । वस्त्राभरणपक्वान्नं
भगिन्यर्थं प्रदापयेत् ॥ ७२ ॥

श्रीभृगुजी बोले—सूर्य, मंगल, राहु तथा बृहस्पतीका सत्तावन सौ
मंत्र जपे इसके बाद सोना साठ मासे ॥ ७० ॥ एक सौ बीस मासे चांदी,
साठ हाथ कपड़ा, गौ, बछिया और भैंस इनका दान जप करनेवालेको विशेष
करके दे ॥ ७१ ॥ विधिसहित पुत्रकरके सहित वहिनका पूजन करे और
उसको कपड़े गहना, पक्वान्न दे ॥ ७२ ॥

गंधपुष्पार्चितो नित्यं मासमेकं स भक्तिः । ऋतौ शुद्धचतुर्थे-
ऽहिं धेनुदुग्धस्य पायसम् ॥ ७३ ॥ उपभुक्ते यदा नारी तदा
पुत्रवती भवेत् । भगिनीकृपया सापि पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति
॥ ७४ ॥ यदुक्तं पूर्वकैः सर्वं न करोति महर्षये । अपुत्रत्वम-
वाप्रोति भृगुणा वै प्रकाशितः ॥ ७५ ॥

वहिनका एक महिना भक्तिसहित गंधपुष्पकरके पूजन करे जिस
दिन स्त्री क्रतुमती हो उस दिनसे चार दिन पछि गौके दूधकी स्त्रीर मंत्रोंसे
सिद्ध करी हुई ॥ ७३ ॥ जो स्त्री भोजन करे तो पुत्रवती हो वहिनकी

(३२)

ज्योतिषश्यामसंयहः ।

कृपासे पुत्रकी प्राप्ति हो ॥ ७४ ॥ हे महर्ष ! जो पहिले कहा हुआ सम्पूर्ण नहीं करे तो अपुत्रताको प्राप्त हो यह भृगुजीने प्रकाश करा है ॥ ७५ ॥

अथ विनाशयोगः ।

सहजे सहजाधीशे कूरग्रहयुतो दृशः । मंदक्षेत्रे यदा जीवे विनाशो योग उच्यते ॥ ७६ ॥ तस्य योगस्य शांत्यर्थमुपायं कथयाम्यहम् । करवीरगुडकर्पूरं ताम्रं वा सारुणं वृषभम् ॥ ७७ ॥ शुक्रारशनिजीवस्य त्रिभिर्बीजाक्षरैर्जपेत् । वस्त्राभरणसंयुक्तां शय्यां दद्याद्विशेषतः ॥ ७८ ॥

तीसरे घरका स्वामी तीसरे घरमें पापग्रहोंसे युत वा देखा गया हो, शनिकी राशिमें बृहस्पति हो तो विनाश नामक योग कहाता है ॥ ७६ ॥ तिस योगकी शांतिके अर्थ मैं उपाय कहता हूं । कनेरके फूल, गुड, कपूर, लाल कपड़ा तथा बैल दान दे ॥ ७७ ॥ शुक्र, मंगल, शनि तथा बृहस्पतिका तीन बीजमंत्रोंसे जप करवावाविशेषकरके कपड़े गहनासहित शय्यादान दे ॥ ७८ ॥

सवत्सा महिषीं दद्यात्सुवर्णं माषद्वादशम् । रौप्यमेकादशं माषा वस्त्रं करचतुर्दशम् ॥ ७९ ॥ एलाषष्टीमधूशीरं ताम्रपात्रं वृतान्वितम् । मोदकं च तथापूर्णं पायसं शर्करान्वितम् ॥ ८० ॥ शिवार्चनं ततः कुर्यात्पश्चाद्वाह्नणभोजनम् । शिशुहस्तात्प्रदातव्यं ब्राह्मणाय विशेषतः ॥ ८१ ॥

बछडा सहित गौ, भैस, बारह मासे सोना, र्यारह मासे चांदी चौदह हाथ कपड़ा ॥ ७९ ॥ इलायची, सहत, साँठीके चावल, खसखस तांबेका पात्र वृतसहित, लड्डू, मालपुए, खीर, मिठान्न सहित दान दे ॥ ८० ॥ शिवार्चन करवावे पीछे ब्राह्मणोंको भोजन करावे, बालकके हाथसे विशेषकरके ब्राह्मणके अर्थ दे ॥ ८१ ॥

ब्राह्मणं सर्वशास्त्रार्थकुशलं धर्मवेदिनम् । विद्याविनयसंपन्नं शातं चैव जितेद्रियम् ॥ ८२ ॥ अलोलुपं सर्वजनप्रियं कल्म-घवर्जितम् । आदूय भत्त्या संपूज्य दद्याद्वानं प्रयत्नतः ॥ ८३ ॥

सब शास्त्रमें कुशल, धर्मका जाननेवाला, विद्या, नम्रताकरके सहित,
शांत, जितेन्द्रिय ॥ ८३ ॥ व्यधिचारी न हो, सब मनुष्योंको प्यारा
पापरहित, ऐसे शास्त्रणको शुलाकर पूजत कर यत्नकरके दान दे ॥८३॥

अथ लाभस्वयोगः ।

तुर्ये सुते व्यये लाभे पुण्य सर्वखगा यदि ।

राजमान्यो धनात्मः स्याद्वाग्भवे पंडितः सुखी ॥ ८४ ॥

चौथे, पांचवे बागहवे, म्यारहवे, नौवे जो सब ग्रह हों तो वाग्भव-
योग, होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य राजीं करके माननीय, धनवान्
तथा पंडित होता है ॥ ८४ ॥

अथ आनन्दयोगः ।

मंदक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे गतः शनिः । अन्ये सर्वे खगाः
कूराः सौम्या लाभस्थिता यदि ॥ ८५ ॥ तदा आनन्दको
योगो बाल्ये दुःखी युवा सुखी । वेदचत्वारि वर्षाणि पर्यंतं
सुखमुच्यते ॥ ८५ ॥

शनिके घरमें बृहस्पति और बृहस्पतिके घरमें शनि हो, बाकीके
शुभ पापग्रह ग्यारहवे घरमें बैठे हों ॥ ८५ ॥ तो आनन्द नाम योग होता
है इसमें पैदा हुआ मनुष्य बालपनवे दुःखी और जवानीमें सुखी तथा
चौबालीस वर्षकी उम्रतक आनन्द भोगता है ॥ ८५ ॥

विष्णुनिंदा कृता पूर्वं पश्चाद्क्षिपरायणः । स्वत्सा महिषी
दद्यात्कांस्यपात्रं घृतान्वितम् ॥ ८६ ॥ सुवर्णवधून्तं दद्यादो-
षप्रशान्तये । एवं सकृन्मनुष्यो वै सौख्यं प्राप्नोति निवृतम् ॥ ८६ ॥

पाहिले यह विष्णुकी निंदा करता हुआ पीछेसे भक्तेदें तंत्रर होता
हुआ दोषकी शांतिके लिये बछडे सहित भैस, कांसीका पात्र घृतसहित
॥ ८६ ॥ सोना, कपडे, चांदी इनको दे इस तरह करे तो मनुष्य निश्चय
करके जरूर सुख प्राप्त हो ॥ ८६ ॥

(३२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

रूपासे पुत्रकी ग्राहि हो ॥ ७४ ॥ हे महर्ष ! जो पहिले कहा हुआ सम्पूर्ण नहीं करे तो अपुत्रताको ग्राह हो यह भृगुजीने प्रकाश करा है ॥ ७५ ॥

अथ विनाशयोगः ।

सहजे सहजाधीशे क्रूरग्रहयुतो दृशः । मंदक्षेत्रे यदा जीवे विनाशो योग उच्यते ॥ ७६ ॥ तस्य योगस्य शांत्यर्थमुपायं कथयाम्यहम् । करवीरगुडकपूरं ताम्रं वा सारुणं वृषभम् ॥ ७७ ॥ शुक्रारशनिजीवस्य त्रिभिर्बीजाक्षरैर्जपेत् । वस्त्राभरणसंयुक्तां शय्यां दद्याद्विशेषतः ॥ ७८ ॥

तीसरे घरका स्वामी तीसरे घरमें पापग्रहोंसे युत वा देखा गया हो, शनिकी राशिमें वृहस्पति हो तो विनाश नामक योग कहाता है ॥ ७६ ॥ तिस योगकी शांतिके अर्थ मैं उपाय कहता हूं । कनेरके फूल, गुड, कपूर, लाल कपड़ा तथा बैल दान दे ॥ ७७ ॥ शुक्र, मंगल, शनि तथा वृहस्पतिका तीन बीजमंत्रोंसे जप करवो वाविशेषकरके कपड़े गहनासहित शध्यादान दे ॥ ७८ ॥

सवत्सां महिषीं दद्यात्सुवर्णं माषद्वादशम् । रौप्यमेकादश माषा वस्त्रं करचतुर्दशम् ॥ ७९ ॥ एलाषष्टीमधूशीरं ताम्रपात्रं वृतान्वितम् । मोदकं च तथापूर्णं पायसं शर्करान्वितम् ॥ ८० ॥ शिवार्चनं ततः कुर्यात्पश्चाद्वाह्निभोजनम् । शुहस्तात्प्रदातव्यं ब्राह्मणाय विशेषतः ॥ ८१ ॥

बछडा सहित गौ, भैंस, बारह मासे सोना, ग्यारह मासे चांदी, चौदह हाथ कपड़ा ॥ ७९ ॥ इलायची, सहत, साँठीके चावल, खसखस, तांबेका पात्र वृत्सहित, लड्डू, मालपुए, खीर, मिठान्न सहित दान दे ॥ ८० ॥ शिवार्चन करवावे पीछे ब्राह्मणोंको भोजन करावे, बालकके हाथसे विशेष करके ब्राह्मणके अर्थ दे ॥ ८१ ॥

ब्राह्मणं सर्वशास्त्रार्थकुशलं धर्मवेदिनम् । विद्याविनयसंपन्नं शातं चैव जितेद्वियम् ॥ ८२ ॥ अलोलुपं सर्वजनप्रियं कल्म-घर्वांजितम् । आहूय भत्त्या संपूज्य दद्यादानं प्रयत्नतः ॥ ८३ ॥

सब शास्त्रमें कुशल, धर्मका जाननेवाला, विद्या, नम्रताकरके सहित, शांत, जितेन्द्रिय ॥ ८२ ॥ व्यभिचारी न हो, सब मनुष्योंको प्यारा पापरहित, ऐसे वाहणको बुलाकर पूजन कर यत्नकरके दान दे ॥८३॥

अथ भाष्मवयोगः ।

तुर्ये सुते व्यये लाभे पुण्य सर्वखगा यदि ।

राजगान्धी धनात्मः स्याद्वाग्भवे पंडितः सुखी ॥ ८४ ॥

चौथे, पांचवें बारहवें, ग्यारहवें, नौवें जो सब यह हों तो वाभवयोग, होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य राजों करके माननीय, धनवान् तथा पंडित होता है ॥ ८४ ॥

अथ आनन्दयोगः ।

मंदक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे गतः शनिः । अन्ये सर्वेखगाः कूरा: सौम्या लाभस्थिता यदि ॥ ८५ ॥ तदा आनन्दको योगो बाल्ये दुःखी युवा सुखी । वेदचत्वारि वर्षाणि पर्यतं सुखमुच्यते ॥ ८६ ॥

शनिके घरमें बृहस्पति और कृष्णातिके घरमें शनि हो, बाकीके शुभ पापग्रह ग्यारहवें घरमें बैठे हों ॥ ८५ ॥ तो आनन्द नाम योग होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य बालपनमें दुःखी और जवानीमें सुखी तथा चौवालीस वर्षकी उम्रतक आनन्द भोगता है ॥ ८६ ॥

विष्णुनिंदा कृता पूर्वं पश्चाद्विपरायणः । स्वत्सां महिषी दद्यात्कांस्यपात्रं घृतान्वितम् ॥ ८७ ॥ सुवर्णीकृतात्म दद्यादोषप्रशातये । एवं सकृन्मनुष्यो वै सौख्यं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ ८८ ॥

पाहिले यह विष्णुकी निंदा करता हुआ पीछेसे भाँक्केर राघव होता हुआ दोषकी शांतिके लिये बछडे सहित भैस, कांसीका पात्र बृत्सहित ॥ ८७ ॥ सोना, कपडे, चाँदी इनको दे इस तरह करे तो मनुष्य निश्चय करके जहर सुख प्राप्त हो ॥ ८८ ॥

अथ अनुज्ञातयोगः ।

भौमक्षेत्रे यदा शुक्रः शुक्रक्षेत्रे गतः कुजः । शशी तुये अजे सौम्या अनुज्ञातस्तदुच्यते ॥ ८९ ॥ वर्षषोडशपर्यंतं धनधा-
न्यसमन्वितः । त्रिंशद्वर्षगते पश्चात्पृथ्वीपतिसमो भवेत् ॥
॥ ९० ॥ कंदर्परूपो मतिमान् द्विजदेवपरायणः । पूर्वपु-
ण्यप्रभावेन पुत्रपौत्रयुतो नरः ॥ ९१ ॥

मंगलके घरमें शुक्र, शुक्रकी राशिमें मंगल, चौथे चन्द्रमा और मेषमें बुध बृहस्पति होनेसे अनुज्ञात योग होता है ॥ ८९ ॥ इसमें पैदा हुआ मनुष्य सोलह वर्षकी उमरतक धन अन्नकरके सहित तथा तीस वर्षकी उमरके बाद राजाके समान हो ॥ ९० ॥ कामदेवके समान रूपवान् बुद्धिमान्, ब्राह्मण देवताओंका भक्त, पहिले जन्मके पुण्यके प्रभावसे पुत्रपौत्र सहित होता है ॥ ९१ ॥

अथ वंध्यात्वहर उपायो लिख्यते ।

तत्र वंध्या चतुर्विधा प्रोक्ता ॥ वंध्या च काकवंध्या च स्त्रीप्रसूता
मृतप्रजा ॥ ९२ ॥ इति पुराणांतरात् ॥ सूर्यारुणसंवादेतु पंच-
विधा उक्ताः ॥ एकापत्यमृतापत्यकन्यापत्यानपत्यता । मृत-
पुत्रत्वमित्येवं पंचधापत्यजातयः ॥ ९३ ॥

तहाँ वंध्या चार तरहकी कही हैं । एक तो वंध्या, दूसरी काकवंध्या तीसरी स्त्रीनाम कन्या पैदा करनेवाली वंध्या, चौथी जिसके संतान होकर मर जावे सो भी वंध्या कहाती है ॥ ९२ ॥ यह पुराणांतरमें कहा है । सूर्यारुणसंवाद कर्मविपाकमें पांच प्रकारकी वंध्या कही हैं । एक पुत्रवती दूसरी जिसके कन्या पुत्र होकर मर जावे, तीसरी जिसके कन्या ही पैदा हो, चौथी जिसके संतान ही न हो, पांचवीं जिसके पुत्र मर जायें और कन्या जिये ॥ ९३ ॥

चतुर्विधवंध्यात्वस्यैकादश निदानानि कर्मविपाकसुधानिधौ ।
एकादश निदानानि वंध्यात्वं च चतुर्विधम् ॥ शुरुद्देषो बालवाती

परहिंसा तथैव चाप्राणिभक्षणमन्येषां प्राण्यंतरमुखेषु च॥९४॥

चार प्रकारकी वंध्याओंके ग्यारह तरहके निदान कर्मविपाकसुधा-निधिमें कहे हैं। ग्यारह तरहके निदान चार तरहकी वंध्या होती हैं। गुरुसे वैर करे वा बालकोंको मारे वा पराई हिंसा करे अथवा अन्य प्राणियोंका भक्षण करे वा गर्भगत प्राणियोंका नाश करे ॥ ९४ ॥

**द्वेषः प्राण्यंडजाभिश्च मृगशावहतिस्तथा । अष्टकादिषु काले-
षु पितृकर्माविधापि तु ॥ ९५ ॥ मातुर्वियोजनं वत्सैस्तेषां
निष्कृतिरुच्यते । पादोनद्वादशाब्दार्धं प्रत्येकं त्वाद्ययोः
स्मृतम् ॥ ९६ ॥**

पक्षियोंको मारनेवाला, मृगके बच्चोंको मारनेवाला, अष्टकादि कालोंमें पितृकर्मको न करे ॥९५॥ मातासे बालकको वियोग करनेवाले मनुष्योंका प्रायश्चित्त कहते हैं। साढे चार वर्ष हरएक पहिले कही हुई हिंसाओंका यत्न करे ॥ ९६ ॥

**कृच्छ्रातिकृच्छ्रं चांद्राणि शेषाणां निष्कृतिः पृथक् । आद्ययो-
र्गुरुदेषबालघातयोः । शेषाणां हिंसादिवत्सवियोजनानां कृ-
च्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रायणानां लक्षणानि परिभाषायां द्रष्टव्यानि ॥
माधवीये व्यासः ॥ ९७ ॥**

कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र चांद्रायण साढे चार वर्ष गुरुसे वैर करनेवाले वा बालघातियोंको करना चाहिये, शेष दोषोंका प्रायश्चित्त अलग कहते हैं हिंसा करनेवाले वा बालक वियोग करनेवालोंको कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, चांद्रायण एक ही वर्ष करना चाहिये। इसका लक्षण माधवीमें व्यासजीने कहा है॥९७॥

**प्राण्यंगं मृगशावं बालं हत्वा वंध्या मृतप्रजा इति हेमाद्रौ महा-
र्णवे च॥वायुपुराणे तु वत्सवियोजनमात्रनिदानं प्रतीकारश्चो-
क्तः ॥ ९८ ॥ चतुर्विधा तु या वंध्या भवेद्वत्सवियोजनात् ।
वक्ष्यै तस्याः प्रतीकारं तत्स्वरूपं निबोध मे ॥ ९९ ॥**

प्राणीको वा मृगके बच्चोंके या बालकोंके मारनेसे मृतप्रजा वंध्या होती हैं । हेमाद्रि महार्णव वायुपुराणमें वत्सवियोगमात्र वंध्याका निदान प्रायश्चित्त कहा है ॥१८॥ वत्सवियोगसे चार तरहकी वंध्या होती हैं तिसका प्रायश्चित्त स्वरूप समझाकर कहता हूँ ॥ १९ ॥

हिरण्येन यथाशत्त्या सवत्सां कारयेहृढाम् । धेनुं पलेन वत्सं च पादेन गुरुरब्रवीत् ॥ २०० ॥ धेनुं रौप्यखुरां रत्नं तस्याः पुच्छे नियोजयेत् । धंटां गले च बधीयात्सवत्सां प्राङ्मुखः शुचिः ॥ १ ॥ चंदनागरुकपूरगंधमाल्यैः सुशोभनैः । उपचारैः पौडशभिन्नैवेद्यं पायसं भवेत् ॥ २ ॥ मोदकं च तंथापूर्पं गुडं लवणमेव हि । पडष्टौ दश वा दद्यात्तदनंतरमेव च ॥३॥

यथाशक्ति बछडे करके सहित मजबूत गौ एक पल सोनेकी बनावे, बछडा सात मासे सोनेका बनावे ऐसा बृहस्पतिजी कहते हैं ॥२००॥ गौके खुर चाँदीके बनावे और मोती उसकी पूछमें बाँधे, गलेमें धंटा बाधे, बछडे-करके सहित ऐसी गौका पूर्वको मुख करके पवित्र हो ॥१॥ चंदन, अगर, कपूर, शोभायमान फूलोंकी मालाकरके पौडशोपचार पूजन करे, खीरका नैवेद्य हो ॥ २ ॥ लड्डू, मालपुआ, गुड, नान, छः वा आठ वा दश दे, तिसके बाद इस प्रकार करके ॥ ३ ॥

ब्राह्मणं सर्वशास्त्रार्थकुशलं धर्मवेदिनम् । विद्याविनयसंपन्नं शांतं चैव जितेद्रियम् ॥४॥ अलोलुपं सर्वजनप्रियं कल्मषवार्जितम् । आहूय भत्त्या संपूज्य वस्त्रैर्गधैश्च पुष्पकैः ॥ ५ ॥ तेनैव कारयेत्पूजामाहतो धेनुवत्सयोः । होमं च कारयेत्तत्र समिदाज्यः चरुत्कटम् ॥६॥ सोमो धेनुरिति मंत्रं समुच्चार्य ततः पुनः । प्राङ्मुखायोपविष्टाय प्रदद्यात्तसुदङ्मुखः ॥ ७ ॥

सब शास्त्रोंमें अर्थकुशल, धर्मका जाननेवाला, विद्या नम्रतासहित, शांत, जितेद्रिय ॥ ४ ॥ ब्रह्मचारी, सबको प्यारा, पापरहित ऐसे ब्राह्मणकों

बुलाकर कपडे, गन्ध, पुण्यसे ॥ ५ ॥ पूजा करे, गौ बछडेकी भी पूजा करे होम करे सत्यिधा वी उत्तम शाकल्यसे ॥ ६ ॥ “सोमो धेनुः” इस मन्त्र करके हवन करे। पूर्व मुख बैठकर धेनुका उत्तरमुख करके दान करे ॥ ७ ॥

मंत्रेणानेन विधिवत्पुच्छे हस्तं सकांचनम् । नीरकं च सुवि-
स्तीर्णे शूर्पे वेणुमये हृषे ॥ ८ ॥ धेनुरेका प्रदातव्या ब्राह्मणाय
विशेषतः । पड़ष्टौ दश वा निधाय च ॥ पश्चात् स्तुतिः ॥
धेनुर्यांगिरसः सत्रे प्रतिष्ठां सुरभेश्व या ॥ ९ ॥ दुहिता या तथा
भानोर्यमस्य वरुणस्य च । याश्च गावः प्रवर्तते यमस्य वरु-
णस्य च ॥ २१० ॥ याश्च गावः प्रवर्तते वनेषूपवनेषु च ।
प्रीण्णतु ता मम सदा पुत्रपौत्रप्रदाः सुखम् ॥ ११ ॥ प्रयच्छन्तु
दिवारात्रमविच्छेदं च संततेः । एवं दत्त्वा तु तद्वानं प्रणिपत्य
विसर्जयेत् ॥ १२ ॥ इति वंध्यात्वहरं दानम् ॥

इस मन्त्रकरके विधिपूर्वक हाथमें सोना, जल, गौकी पूँछ पकड़कर गौके आगे बाँसके मजबूत चौडे सूपमें मोदक, मालपुआ, गुड, लवण, छः वा आठ वा दश धरकर एक गौ दान करके ब्राह्मणके अर्थ दे, पीछेसे मूलमें कहे हुए श्लोकसे स्तुति कर इस तरह दान कर दण्डवत् करके छोड दे ॥ ८ ॥ ९ ॥ २१० ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथ गर्भस्तावहरं यज्ञोपवीतदानम् ।

स्वद्वर्भा भवेत्सा तु बालकं हंति या विषेः॥वायुपुराणे ॥ यज्ञो-
पवीतं कुर्वीत कांचनं च स्वशक्तिः ॥ १३ ॥ अत्यंतवर्णयु-
क्तेन कांचनं चोत्तरीयकम् । पलाद्धेन तद्धेन तद्धर्द्धेन वा
पुनः ॥ १४ ॥ ग्रंथिप्रदेशे देयं तु मौक्तिकं वज्रमेव च । प्रक्षा-
ल्य पंचगव्येन गायत्र्या तात्रभाजने ॥ १५ ॥ द्रोणप्रमाणं
तस्मिस्तु निक्षिपेददधिमध्यतः । आज्यस्योपरि संस्थाप्य उप-
वीतं मुपूजितम् ॥ १६ ॥

जो स्त्री जहर खायकर बालकोंको मारती है, सो स्त्री गर्भके गिरानेवाली होती है । वायुपुराणमें कहा है यथाशक्ति सोनेका जनेऊ बनावे ॥ १३ ॥ सोना बहुत अच्छा हो पलभरकी वा आधे पल वा उससे आधे चौथाई पलका अथवा उससे आधे पलका आठवां हिस्सा सोनेका यज्ञोपवीत बनावे ॥ १४ ॥ अन्थिकी जगह हीरा मोती लगावे पञ्चगव्यमें तांबिके पात्रमें गायत्रीमन्त्र करके स्नान करावे ॥ १५ ॥ सोलह टके भर दहीमें धरके घकिए ऊपर स्थापित करे, पूजन करा हुआ यज्ञोपवीत १६ ॥

गंधपुष्पाक्षतैधूपैनैवेद्यैरपि भक्तितः ।

पूजितं हुतवते देयं भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ १७ ॥

गन्ध पुष्प अक्षतसे तथा नैवेद्यपूर्वक पूजन करके भक्ति श्रद्धासहित हवन करनेवाले ब्राह्मणको दे ॥ १७ ॥

अथ पूजोत्तरकृत्यमाह ।

ततो ब्राह्मणमाहूय होमं तेनैव कारयेत् । होममंत्रस्तु समस्ता व्याहृतिः ॥ तिलराज्येन मधुना मिश्रैरष्टोत्तरं शतम् ॥ १८ ॥ तस्मै हुतवते देयं वस्त्राद्यैः पूजिताय तु । मंत्रेणानेन विधिवत्प्राङ्मुखाय प्रदापयेत् ॥ १९ ॥ भवतोऽस्य प्रदानेन गर्भ संधारये ह्यहम् । अनुब्रज्य तथाचार्ये प्रणिपत्य क्षमापयेत् । गर्भस्नावकराद्दोषादेवं कृत्वा विमुच्यते ॥ २२० ॥ इति गर्भस्नावहरं यज्ञोपवीतदानम् ॥

पूजन करनेके बाद ब्राह्मणको बुलायकर अन्तमें इस प्रकार होम करे, होमके मन्त्र सम्पूर्ण व्याहृति हैं । “ॐ भूर्भुवःस्वः” तिल,घी,सहित मिलाकर एक सौ आठ आहुति दे ॥ १८ ॥ तिस होम करनेवाले ब्राह्मणका इस मंत्रकरके विधिपूर्वक पूर्वको मुख करके पूजन करके वस्त्रादिक सब चर्जिं उसको दान दे ॥ १९ ॥ आप दान करके मेरे यहां गर्भ धारण होवे,

उस आचार्यके पीछे थोड़े दूरतक जाय दंडवत् करके क्षमापन करावे इस प्रकार करनेसे गर्भस्नावदोष दूर होता है ॥ २२० ॥

अथ मृतपुत्रत्वहरम् ।

बालधाती च पुरुषो मृतवत्सः प्रजायते । ब्राह्मणोद्धाहनं चैव कर्तव्यं तेन शुद्ध्यति ॥२१॥ श्रवणं हरिविंशस्य कर्तव्यं च यथाविधि । महारुद्रजपं चैव कारयेच्च विशेषतः ॥ २२ ॥ जुहुयात्तदशांशेन दूर्वामाज्यपरिप्लुताम् । एकादश स्वर्णनिष्काः प्रदातव्याश्च दक्षिणाः ॥ २३ ॥ एकादश पश्चुं चैव दद्याद्वित्तानुसारतः । अन्येभ्योऽपि यथाशत्त्या द्विजेभ्यो दक्षिणां दिशेत् ॥ २४ ॥ स्नापयेदंपती पश्चान्मंत्रैर्वरुणदैवतैः । आचार्याय प्रदेयानि वस्त्रालंकारणानि च ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यने बालकोंका घात किया है सो पुत्रहीन होता है उनके पुत्र मर जाते हैं । ब्राह्मणोंके बालकोंका जनेऊ करानेसे शुद्धि होती है ॥२१॥ यथाविधि हरिविंशपुराण श्रवण करे । विशेषकरके महारुद्रका जप करवावे ॥२२॥ दूब धीमें मिलाकर जपका दशांश हवन करे, ग्यारह निष्क सुवर्ण दक्षिणा दे ॥ २३ ॥ ग्यारह बैल वा गैया अपने वित्तमाफिक दे और ब्राह्मणोंको यथाशक्ति दक्षिणा दे ॥ २४ ॥ पीछे स्त्रीपुरुष वरुणके मंत्रकरके स्नान करें, आचार्यको वस्त्र गहने दें ॥ २५ ॥

अथ निरपत्यत्वहरम् ।

विप्ररत्नापद्मारी यः सोऽनपत्यः प्रजायते । तेन कार्यं विशुद्ध्यर्थं महारुद्रजपादिकम् ॥ २६ ॥ मृतवत्सोदितः सर्वो विधिस्तत्र विधीयते । दशांशहोमः कर्तव्यः पालाशेन यथाविधि ॥२७॥

ब्राह्मणके रत्नोंका हरण करनेवाला पुरुष निःसन्तान होता है, तिसकी शुद्धिके लिये महारुद्र जप करवावे ॥ २६ ॥ इसकी विधि जो

पहिले मृतवत्सादोषमें कह आये हैं सो विधि सम्पूर्ण करे । पलाशक-
रके यथाविधि दशांश होम करे ॥ २७ ॥

**अथ मृतपुत्रत्वकर्मकीलत्वएकापत्यत्वकाकवन्ध्या-
त्वकन्याप्रजात्ववंध्यात्वहरं कर्मविपाकसंग्रहे ।**

अष्टकादिपितृश्राद्धे हीनो निःशंकघातकः । प्राणिनां सततं द्वेषी
गुरुद्वेषी तथापरः ॥ २८ ॥ भक्षको मृगशावस्य नरकांतेऽन्यज-
न्मनि । मृतपुत्रो कर्मकीलो व्याधियुक्तो भवेच्च सः ॥ २९ ॥ दुम-
नाश्रैव जायेत तस्येयं निष्कृतिः पुरा । कृच्छ्रचांद्रायणे कुर्या-
द्धोमः कूष्मांडकस्तथा ॥ २३० ॥ गुडहोमं स्वर्णदानं भूमिदानं
तथापरम् । कन्यादानं पञ्चमं च श्राद्धं कुर्वीत यत्ततः ॥ ३१ ॥

अष्टकालोंमें जो पितृश्राद्ध करे तो निःशंक जीवोंको मारनेवाला हो ।
सब प्राणियोंका वैरी और गुरुका वैरी हो ॥ २८ ॥ हिरनके बच्चेको खानेवाला
ऐसा पुरुष और जन्मोंमें नरकभोग करके मृतपुत्र होता है । उसकी
संतान पैदा होते ही मर जाती है, सो इस व्याधिसे युक्त होता है ॥ २९ ॥
उसका मन खोटा होता है । उसका प्रायश्चित्त कृच्छ्र वा अतिकृच्छ्र चांद्रायण
करे पेठेका होम कर ॥ २३० ॥ गुड मिलायकर होम करे । सोनेका दान करे
तैसे ही पृथिवीका दान करे कन्यादान दे और पांचवां श्राद्ध यत्नसे करे ॥ ३१ ॥

सहस्रनामजापी च भवेदेवं विमुच्यते ।

इति मृतपुत्रत्वविशिष्टचर्मकीलत्वहरम् ।

सहस्रनामका पाठ करे तो इस दोषसे छूट जाय ।

अथ मृतपुत्रत्वकन्याप्रजात्वहरम् ।

तस्य शांतिहेमाद्रौ भविष्योत्तरपुराणे ॥ मृतवत्सा तु या नारी
दुर्भगा ऋतुवर्जिता । या सूते कन्यका वंध्या तासां स्नानं
विधीयते ॥ ३२ ॥ अष्टम्या वा चतुर्दश्यामुपवासपरायणा ।

ऋतौ शुद्धे चतुर्थेऽहि प्राप्ते सूर्यदिनेऽथवा ॥ ३३ ॥ नद्योस्तु
संगमे कुर्यान्महानद्योर्विशेषतः । शिवालये तथा गोष्ठे विविक्ते
वा गृहांगणे ॥ ३४ ॥

जो स्त्री मृतपुत्रा या दुर्भिगा, जिसको क्रतु न होता हो या जो स्त्री
कन्या ही पैदा करती हो तिसकी स्नानविधि विधान करते हैं ॥ ३२ ॥
अष्टमी वा चतुर्दशीको उपवास करे । क्रतु शुद्ध होनेके बाद चौथे दिन
अथवा क्रतुके चौथे दिन रविवारके दिन ॥ ३३ ॥ नदियोंके संगममें
स्नान करे वा गंगादि महानदियोंके संगममें वा शिवालयमें वा गोशालामें
या एकांत वा घरके आंगनमें स्नान करे ॥ ३४ ॥

आहिताभिं द्विजं शांतं धर्मज्ञं सत्यवादिनम् । स्नानार्थं प्रार्थ-
येदेवं निपुणं रुद्रकर्मणि ॥ ३५ ॥ ततस्तु मंडपं कुर्याच्चतुर-
स्मुदकपुष्टम् । शुच्छच्चंदनेनालं च गोमयेनानुलेपनम् ॥ ३६ ॥

अग्निहोत्री शान्त, धर्मका जाननेवाला, सच बोलनेवाला, रुद्रकर्ममें
कुशल हो ऐसे ब्राह्मणसे स्नानके वास्ते प्रार्थना करे ॥ ३५ ॥ चौकोर
मण्डप बनवावे । सफेद चन्दनकी लकडीसे मण्डप बनावे ॥ ३६ ॥

तन्मध्ये श्वेतरजसा संपूर्णं पद्ममालिखेत् । मध्ये तस्य महादेवं
स्थापयेत्कर्णिकोपरि ॥ ३७ ॥ दद्वाहलेषु नंदादीन् चतुर्षु
विधिपूर्वकम् । इन्द्रादिलोकपालांश्च दलेष्वष्टुषु विन्यसेत्
॥ ३८ ॥ देवीं विनायकं चैव स्थापयेत्तत्र पार्थिवः । दत्त्वाद्य-
गंधपुष्टं च धूपं दीपं गुडौदनम् ॥ ३९ ॥

तिसके बीचमें सफेद रजकरके सम्पूर्ण कमल लिखे, तिसके बीचमें
कर्णिकाके ऊपर भहादेवको स्थापित करे ॥ ३७ ॥ कमलके दलोंपर
नन्दादि चारों कानोंपर विधिपूर्वक स्थापित करे । नन्द्यादीत्यादि भृंगि-
महाकालगणेशानंयादिगृह इत्यर्थः । आठों दलोंपर इन्द्रादि लोकपाल
बनावे ॥ ३८ ॥ देवी, गणेश, महादेवके पास स्थापित करे इनके अर्थ
गन्ध, पुष्ट, धूप, दीप, गुड और भात दे ॥ ३९ ॥

भृत्यान्नानाविधान् दायात्कलानि विविधानि च । चतुष्कोणेषु
शृंगारमश्वत्थदलपूरितम् ॥२४०॥ एकैकं विन्यसेद्वल्लन् सर्वौ-
षधिसमन्वितम् । मंडपस्य चतुर्दिशु द्वाद्वृतवल्लिं तथा
॥ ४१ ॥ आश्रेय्यां दिशि कर्तव्यं मंडपस्य समीपतः । मंड-
पस्य समीपस्थो जपेद्वद्रान्विमत्सरः ॥ ४२ ॥

नाना प्रकारके भोजन और फल दे, चारों काणोंमें शृंगार करे
पीपलके पत्तोंसे चारों तरफ पूरित करे ॥ २४० ॥ एक एक पत्तेपर
ब्रह्माको स्थापित करे, सम्पूर्ण औषधसहित मण्डप बनाय चारों तरफ
भूतोंकी बलि दे ॥ ४१ ॥ मण्डपके अमीप आश्रेयदिशामें महदेवका जप
अभिमान त्यागकर करे ॥ ४२ ॥

यावदेकादश गुणास्तावत्कुर्याद्विशेषतः । द्वितीयस्याग्रिका-
र्यस्य कर्ता च ब्राह्मणो भवेत् ॥ ४३ ॥ अग्रिकार्यं शुभे कुण्डे
पत्रपुष्पैरलंकृते । लवणं पयसा युक्तं घृतेन मधुना सह ॥ ४४ ॥

जबतक ग्यारह गुण मन्त्र होवे तबतक विशेषकरके मन्त्र जप करे
दूसरा होमका करनेवाला ब्राह्मण हो ॥ ४३ ॥ उत्तम पत्रपुष्पसे शोभित
कुण्डमें नोन, दूध, धी सहतसे हवन करे ॥ ४४ ॥

मानस्तोकेन यजुषा कृते होमे नवग्रहे । रुद्रजाप्यकृताचार्यं
सितचंदनचर्चितम् ॥ ४५ ॥ सितवस्त्रपरीधानं सितमाल्यविभू-
षितम् । शोभयेत्कंकणं रुक्मं स्वर्णं चेष्टांगुलीयकैः ॥ ४६ ॥
सर्वमंडलवत्कार्यं द्वितीयं मंडलं शुभम् । विष्णुनामसहस्रस्य
जपादेवं विमुच्यते ॥ ४७ ॥ इति मृतप्रजात्वकन्याप्रजात्वहरम् ॥

यहोंका हवन करे, रुद्रका जप करे, सफेद चंदनसे पूजन करे ॥ ४५ ॥
सफेद वस्त्र पहिरे, सफेद माला धारण करे, शोभायमान चांदीके कडे हाथोंमें
सौनेकी अंगूठी उंगलीमें धारण करे ॥ ४६ ॥ पहिले मंडलकी तरह दूसरी

मंडल करे, विष्णुके हजारनामको जपे यों करनेसे पापसे छूट जाता है ॥ ४७ ॥ इति मृतप्रजात्वकन्याप्रजात्वहरम् ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु पूर्वकर्म शुभाशुभम् । चत्वारिंशन्मिते योगे तत्सर्वे कथयामि ते ॥४८॥ भृगुणोक्तान् कुयोगागपवीन् नानाविधीन्सह । कृता वै श्यामलालेन श्रीबलदेवसूनुना ॥४९॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजः-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसं-
ग्रहे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इस अध्यायके बीचमें मनुष्योंके पहिले जन्मका अच्छा बुरा फल चालीस योगोंकरके सम्पूर्ण मैंने कहे ॥४८॥ श्रीभृगुजी करके कहे गये, पर्वतसमान कुयोगतिनको वज्रसमान अनेक विधियोंसहित श्रीबलदेवप्रसादके पुत्र श्यामलालने निश्चयकरके प्रकाश किया ॥ २४९ ॥

इति श्रीराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-
भाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ राजमान्ययोगमाह ।

लग्ने वृषे तत्र युते शशांके पद्मभिर्गैरुच्चगतैर्नृपः स्यात् ।

कस्मिन् गृहे स्वोच्चयुते तु सर्वैः स्वक्षेत्रगैर्भूपतितुल्यजातः ॥१॥

मूलत्रिकोणांकितराशियुक्तौर्मित्रक्षेत्रगैर्वा यदि वक्रयुक्तैः ।

कस्मिन् गृहे स्वोच्चयुते तु शेषैर्नीचांशहीनैर्नृपतुल्यजातः ॥२॥

जन्मलघ वृष हो, तिसमें चंद्रमा स्थित हो, उः उच्चके यह किसी घरमें हों तो राजा हो और वृष लघमें चंद्रमा और सब यह अपने घरमें हों तो राजाके तुल्य हो ॥१॥ सब यह मूलत्रिकोण राशिमें बैठे हों या मंगल करके सहित मित्रोंकी राशिमें हों वा किसी घरमें उच्चके हों परंतु नवांशमें नीचगत न हों तो राजोंके समान होता है ॥२॥

लग्ने चंद्रे गुरौ सौख्ये कर्मस्थे भृगुनंदने । स्वोच्चस्वक्षेत्रस्थिते

मंदे नृपतुल्यो भवेन्नरः॥३॥ दशमैकादशी रिःफे लग्नवित्तसहो
त्थभे । ग्रहास्तिष्ठन्ति चेत्सौम्या नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥४॥

लग्नमें चंद्रमा, बृहस्पति, दशवें शुक्र, तुला, मकर, कुम्भमें शनि
हो तो मनुष्य राजोंके समान होता है ॥३॥ दशवें, ग्यारहवें, लग्न, दूसरे,
तीसरे जो सम्पूर्ण शुभ ग्रह वैठे हों तो मनुष्य राजाओंके समान होता है ॥४॥

केद्रत्रिकोणगाः सौम्याः पापाः षड्लाभसोदराः । लग्नाधिपे
बलवति नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥५॥ दृश्यते युज्यते वापि चंद्रजे-
न बृहस्पतिः । शिरसा शासनं तस्य धारयन्ति नृपास्तथा ॥६॥

केद्र वा त्रिकोणमें शुभ ग्रह हो, तीसरे, छठे, ग्यारहवें पापग्रह
हो, लग्नका स्वामी बलवान् हो तो मनुष्य राजाके सदृश होता है ॥५॥
बृहस्पति बुधसहित हो या बुधसे देखा गया हो परंतु बृहस्पति मीन वा
धनराशिका होकर केद्रमें हो तो उस मनुष्यकी आज्ञाको राजे अपने शिर-
पर धारण करते हैं ॥६॥

निशाकरे केद्रगते विलग्नं त्यक्त्वा त्रिकोणे यदि जीवद्वैष्टे ।
शुक्रेण द्वैष्टे बलपूर्णयुक्ते जातो नरो भूपतिभाग्यतुल्यः ॥७॥
नीचस्थिता जन्मनि ये ग्रहेन्द्राः स्वोच्चांशगा राजसमानभाग्याः ।
उच्चस्थिता चेदपि नीचभागा ग्रहा न कुर्वति तथैव भाग्यम् ॥८॥

चंद्रमा केद्रमें हो, लग्नको छोड़कर नवम पंचम द्वाष्टिसे बृहस्पति देख-
ता हो, बलवान् द्वाष्टिसे शुक्र भी देखता हो तो मनुष्य राजाओंके भाग्यके
समान भाग्यवाला होता है ॥७॥ जन्ममें जो ग्रह नीचके वैठे हों और
नवांशमें उच्चके हों तो भी मनुष्य राजाओंके भाग्यके समान भाग्यवान् होता
है और जन्मकुंडलीमें जो ग्रह उच्चके वैठे हों और नवांशमें नीचके हों तो
मनुष्य भाग्यहीन होता है ॥८॥

त्रेधा विभज्य तु क्यःप्रमाणं खंडत्रयं तत्र वदंति संतः ।
व्यादिकं प्राथमिके च खंडे शुभग्रहाः शोभनमत्र दद्युः ॥९॥

अवस्थाके तीन भाग के और जन्मलग्नके भी तीन भाग के ये पूर्व

मुनियोंने कहा है। बत्तीस वर्षतक अवस्थाका पहिला भाग, बत्तीससे लेकर चौसठ वर्षतक अवस्थाका दूसरा भाग, चौसठसे सौ वर्षतक अवस्थाका तीसरा भाग होता है। जन्मकुण्डलीमें लग्नसे चौथे घरतक प्रथम खंड, पांचवेंसे आठवें घरतक द्वितीय खंड, नौवेंसे बारहवेंतक तृतीय खंड जन्मपत्रका हुआ, इसी तरह क्रमसे जान लेना चाहिये कि जिस खण्डमें जन्मपत्रमें राज्यकारक ग्रह बैठे हों वे क्रमसे उसी अवस्थाके भागमें शुभ फल देंगे ॥ ९ ॥

लग्ने गुरौ बुधे केंद्रे भाग्यनाथेन वीक्षितः । लग्नेशो वापि संहष्टो राजमान्यो भवेन्नरः ॥ १० ॥ सप्तमे जीवसंयुक्ते त्रिकोणे वा समन्विते । लग्नाधिपेन संहष्टो राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ११ ॥ केंद्रे शनौ त्रिकोणे वा स्वोच्चमूलत्रिकोणगे । राज्याधिपेन संहष्टो नृपमानसमन्वितः ॥ १२ ॥

लग्नमें बृहस्पति हो, बुध केंद्रमें हो, नवम घरके स्वामी करके इष्ट हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥ १० ॥ सातवें वा नौवें वा पांचवें बृहस्पति बैठा हो, लग्नेश करके दृष्ट हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥ ११ ॥ केन्द्रमें शनि अथवा नौवें पांचवें शनि हो, अपने उच्च राशिमें वा मूलत्रिकोणराशिमें हो दशवें शनिकरके दृष्ट हो तो राजाओंके मानसहित हो ॥ १२ ॥

नीचे गुरौ विलग्नस्थे रंग्रस्थे वाथ धर्मपे । तथा नवांशसंयुक्ते राजमान्यो भवेन्नरः ॥ १३ ॥ पूर्वषट्के ग्रहाः सर्वे यस्य तिष्ठति जन्मनि । भाग्याधिपे वनस्थे वा चंद्रे नृपसमो भवेत् ॥ १४ ॥

नीचका बृहस्पति लग्नमें हो, नवम घरका स्वामी आठवें चन्द्रमाके नवांशमें हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥ १३ ॥ लग्नसे छठे घरतक जो सब ग्रह बैठे हों तो मनुष्य राजमान्य होता है वा नौवें घरका स्वामी चन्द्रमा सहित दूसरे बैठा हो तो राजमान्य हो ॥ १४ ॥

चंद्राधिष्ठितराश्यंशे नाथे केंद्रायकोणगे । बुधेन सहितो वापि राजराजो भवेन्नरः ॥ १५ ॥ निशाकरः सभौमस्तु विते वा विक्रमेऽपि वा । पञ्चमे राहुसंयुक्ते राजतुल्यो भवेन्नरः ॥ १६ ॥

(४६)

ज्योतिषश्यामसंयहः ।

भाग्याधिपसमायुक्ते नवांशाधिपतौ सुखे । पुत्रनाथगते वापि
नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ १७ ॥

चंद्रमा जिस राशिमें बैठा हो उस राशिका नवांशनाथ केंद्र वा
त्रिकोणमें वा ग्यारहवें या बुधकरके सहित हो तो मनुष्य राजमान्य होता
है ॥ १५ ॥ चंद्रमा मंगलसहित दूसरे वा तीसरे हो अथवा राहुसहित पांचवें
हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥ १६ ॥ नवम घरके स्वामीकरके सहित
नवांशनाथ चौथे हो वा पंचम भावके स्वामी करके सहित हो तो पुरुष
राजमान्य होता है ॥ १७ ॥

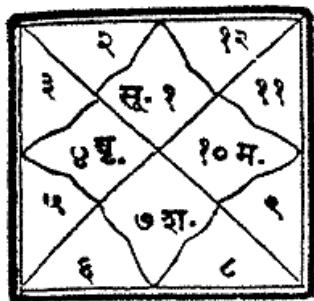
क्लूरे सकर्मभावेशो ग्रहस्तिष्ठंति चेत् क्रमात् । लग्नादिपूर्वषट्-
केऽस्मिन् राजमान्यो भवेन्नरः ॥ १८ ॥ मीने राहौ भवेन्मदे
भाग्यनाथेन वीक्षिते । लग्नेशो नीचखेटेन युते नृपसमो भवेत् ॥ १९ ॥

पाप श्रह दशमेशसहित क्रमसे लग्नसे छठे घरतक बैठे हों तो मनुष्य
राजमान्य होता है ॥ १८ ॥ मीनका राहु शनैश्चरसहित हो, नवमेश करके देखा
गया हो, लग्नेश नीचयहके सहित हो तो मनुष्य राजाके समान होता है ॥ १९ ॥

वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिः च स्वोच्चेषु षोडशनृपाः कथि-
तैकलग्ने । द्वेकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने स्वक्षेत्रगे शशिनि
षोडश भूमिपाः स्युः ॥ २० ॥

मंगल, शनि, सर्य, बृहस्पति ये चारों श्रह अपनी उच्च राशियोंमें बैठे
हों, एकके एक सन्मुख हों, केंद्रमें बैठे हों तो चार राजयोग होते हैं,
बाकी श्रह चाहे जहाँ बैठे हों इन्हीं चार श्रहोंमेंसे तीन श्रह अपने उच्च राशियोंमें
बैठकर सन्मुख केंद्रमें हों तो बारह राजयोग होते हैं, पहिलेके चार मिलकर
सोलह राजयोग हुए, उन्हीं चारों श्रहोंमेंसे दो श्रह अपनी उच्च राशियोंमेंबैठकर
केंद्रमें हों चंद्रमा कर्कराशिमें बैठा हो तो बारह राजयोग होते हैं, उन्हीं चार
श्रहोंमेंसे एक श्रह अपनी उच्च राशिका होकर लग्नमेंबैठा हो, चंद्रमा कर्कमें हो
बाकीके श्रह कहीं बैठे हों तो चार राजयोग होते हैं । पहिलेके बारह मिलकर
सोलह हुए सब चत्तीस राजयोग हुए । नीचे लिसी कुंडलियोंमें देखो ॥ २० ॥

राजयोगः



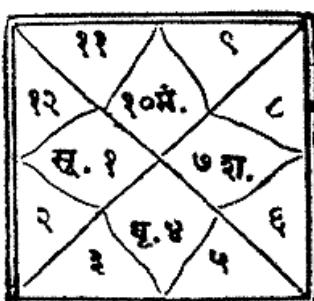
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



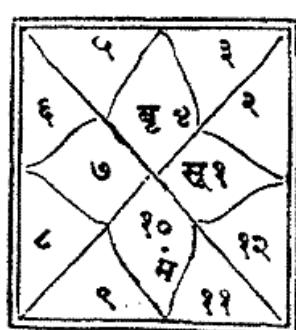
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



(४८)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



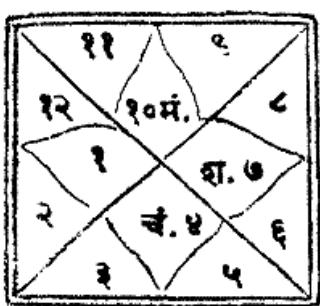
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



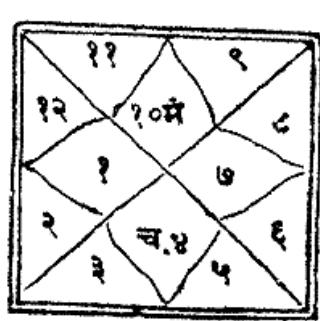
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



वर्गोत्तमगते लघु चंद्रे वा चंद्रवर्जिते ॥

चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वार्विशतिः स्मृताः ॥ २१ ॥

जन्मका लघु वर्गोत्तम हो यानी मेष, कर्क, तुला, मकर ये हीं लघु हों इनके पहले नवांशमें जन्म हो, अगर वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ लघु हों तो इनके पांचवें नवांशमें जन्म हो अगर मिथुन, कन्या, धन, शीन लघु हों तो इनका नौवें नवांशमें जन्म हो तो चंद्रमा लघुमें हो चाहे व

(५०)

ज्योतिषशास्त्रं ग्रहः ।

हो चंद्रमाको छोडकर चार या पांच या छः यह लग्नको देखते हों तो चौवालीसि राजयोग होते हैं इनकी कुंडली नीचे लिखी हैं ।

राजयोगः



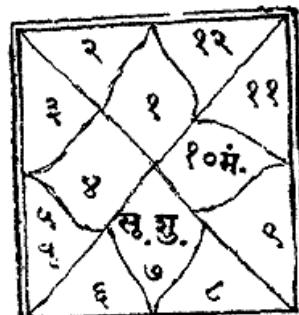
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



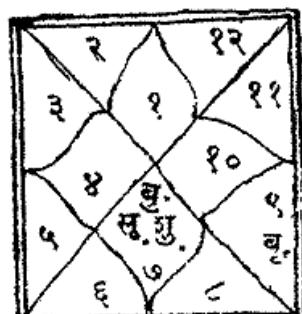
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः

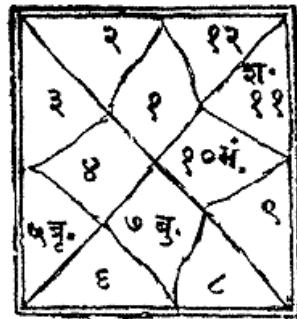


ये योग चंद्रमा लग्नमें हो ये यह देखते हों तो बाईस राजयोग होते हैं चंद्रमा लग्नमें न हो यही यह देखते हों तो भी २२ राजयोग होते हैं अगर चंद्रमा देखता होगा तो योगभंग होजायगा ॥ २१ ॥

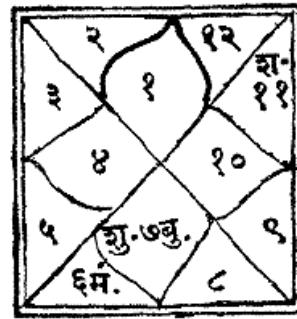
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



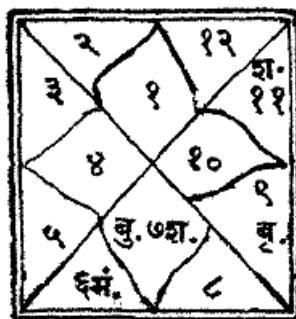
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



कदाचिद् सब राशियोंके योग बनाये जायें तो पांच सौ अडाईस होते हैं ।

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स च सार्वभौमः ॥

त्रयः स्वतुंगादिगताः सराजाराजात्मजो अन्यसुतोऽत्र मंत्री ॥ २२ ॥

जिसके जन्मकालमें पांच ग्रह उच्चके हों सो मनुष्य चकवर्ती राजा होता है, और किसीके पढ़ें तो वह मनुष्य मंत्री होता है ॥ २२ ॥

स्वोच्चे मूर्तिगतेमृतांशुतनये नके सवके शनौ चापे वागधि-
पेदुभार्गवयुते स्याज्जन्म भूमीपतेः ॥ स्वस्थाने ननु यस्य भूमि-
तुर्गो मत्तेभमालामिलत्सेनांदोलितभूमिगोलकलनं दिग्दंति-
नः कुर्वते ॥ २३ ॥

राजयोगः



जन्मलघ्नमें बुध उच्चराशिका हो मकर
राशिमें मंगल शनैश्चर हों, धनराशिमें बृहस्पति
चन्द्रमा शुक्र मिले हुए बैठे हों तो उस राजा के
राज्यमें धोंडे मतवाले हाथियोंकी पंक्ति तथा
सेना करके मिले हुए पृथिवीके ऊपर आनंदको
दिक्पाल करते हैं ॥ २३ ॥

दिनाधिराजं मृगराजसंस्थे नके सवके कलशेऽर्कसूनौ ॥

पाठीनलघ्ने शशिना समेते महीपतेर्जन्म महौजसः स्यात् ॥ २४ ॥

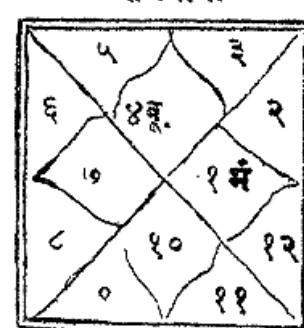
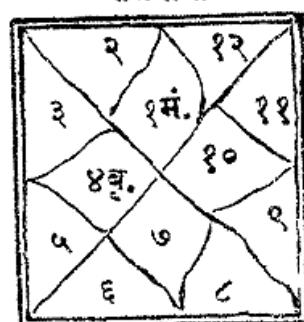
सर्य सिंहमें बैठा हो, मकरमें मंगल, कुम्भमें शनैश्चर, मीन लघ्न हो
उसमें चन्द्रमा हो ऐसे योगमें पैदा हुआ मनुष्य महाराजा होता है ॥ २४ ॥

राजयोगः

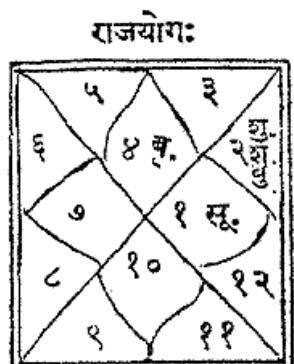


महीसुते मेषगते ततुस्थे
बृहस्पतौ वा ततुगे स्वतुंगे ।
योगद्वयेऽस्मिन् न नृपती भवेतां
जितारिपक्षौ नृपनीतिदक्षौ ॥ २५ ॥

मंगल मेषराशिका लघ्मे बैठा हो, बृहस्पति कर्कका चौथा हो (एको योगः) या बृहस्पति कर्कका लघ्मे हो और मंगल मेषका दशम हो इन दोनों योगोंमें पैदा हुए मनुष्य राजा, शत्रुओंको जीतनेवाले तथा नीतिमें चतुर होते हैं ॥ २५ ॥



वाचस्पतिः स्वोच्चगतो विलग्ने मेषे दिनेशः शनिशुक्रसौम्याः ।
लाभालयस्थाः किल भूमिपालं तं भूतलास्याभरणं गृणन्ति ॥२६॥



बृहस्पति उच्चका लघ्मे, दशममें मेषका सूर्य तथा शनि शुक्र बुध म्यारहवें हों तो वह मनुष्य धरतीके ऊपर आभरण तथा बड़ा पराक्रमी राजा होता है ॥ २६ ॥

मंदो यदा नक्विलग्नवर्ती मृगेन्द्रयुग्माज-
तुलाकुलीराः । स्वस्वामियुक्ता जनयंति
नाथं पाथोनिधिप्रांतमहीतलस्य ॥२७॥

शनैश्चर मकरका लघ्मे हो, सिंहका सूर्य, मिथुनका बुध, मेषका मंगल, तुलाका शुक्र, कर्कका चंद्रमा ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य समुद्रपासतककी धरतीका स्वामी होता है ॥ २७ ॥

(५४)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

द्वद्वे दैत्यगुरौ निशाकरसुते मूर्तौ स्वतुंगस्थिते नके वक्शनैश्चरैश्च
सफरे चंद्रामरेज्यौ स्थितौ । योगोऽयं प्रभवेत्प्रसूतिसमये यस्याव-
नीशो महान् वैरिवातमहोद्धतेभदलने पंचाननः केवलम् ॥ २८ ॥

राजयोगः



मिथुनमें शुक्र, कन्याका बुध लघ्नमें हो, मकर
राशिमें मंगल शनैश्चर हों, मीनमें चंद्रमा वृहस्पति
हों ऐसा योग जिसके जन्मकालमें हो वह मनुष्य
बड़ा राजा धरतीका मालिक होता है, बलवान्
वैरियोंके नाश करनेवाला जैसे हाथियोंके समूहको
एक सिंह हो तिस प्रकार होता है ॥ २८ ॥

राजयोगः



सिंहोदयेऽर्कस्त्वजगो मृगांकः शनैश्चरः कुं-
भधरे सुरेज्यः । धनुर्धरे चेन्मकरे महीजो
राजाधिराजो मनुजो भवेत्सः ॥ २९ ॥

सिंहका सर्य लघ्नमें हो, मेषमें चंद्रमा, कुंभमें
शनि, धनमें वृहस्पति तथा मकरमें मंगल हो
तो वह मनुष्य राजाओंका राजा होता है ॥ २९ ॥

मेषस्थितो मूर्तिगतः प्रसूतौ वृहस्पतिश्चास्तगतः कलावान् ।
रसातले व्योमगते सितश्चेन्महीपतिर्गीतदिगंतकीर्तिः ॥ ३० ॥

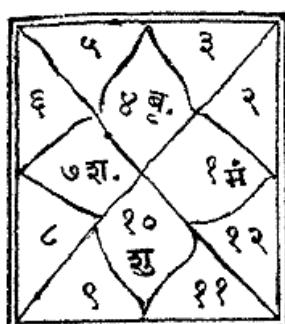
राजयोगः



मेषका वृहस्पति जन्मलघ्नमें हो,
चंद्रमा चौथे, दशममें शुक्र हो तो पृथ्वीमें उस
राजाका यश दिशाके अंततक मनुष्य गान
करते हैं ॥ ३० ॥

गुरुः कुलीरोपगतः प्रसूतो स्मरांबुखस्था भृगुमंदभौमाः ।
तद्यानकाले जलधेर्जलानि भेरीनिनादोच्छलनं प्रयांति ॥ ३१ ॥

राजयोगः



बृहस्पति कर्कका लघ्नमें हो, सातवें चौथे दशवें शुक्र शनैश्चर मंगल हों तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी यात्राके समय समुद्रका जल भेरी निनादकी तरह शब्द करता हुआ उछलता है ॥ ३१ ॥

वृषे शशी लघ्नगतोऽबु सप्तखस्था रवीज्यार्कसुता भवति ।

तदंडयात्रासु रजोंधकाराद्विनेऽपि रात्रिं कुरुते प्रवेशम् ॥ ३२ ॥

राजयोगः

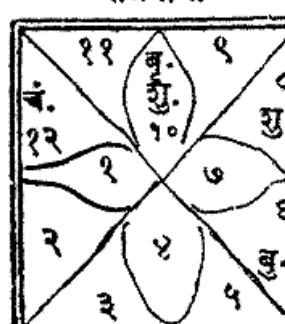


वृषराशिका चन्द्रमा लघ्नमें बैठा हो, चौथे सातवें दशवें सर्य बृहस्पति शनैश्चर बैठे हों ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी एक घडीमात्रकी यात्रामें धूरसे अन्धकार हो जाता है यानी दिनमें रात्रि प्रवेश कर देती है ॥ ३२ ॥

गुर्विन्दुसौम्यास्फुजितश्च यस्य मूर्तित्रिधर्मायगता भवति ।

मृगेऽक्षसूत्रस्तनुगोञ्जनून मेकातपत्रां स भुनक्ति धात्रीम् ॥ ३३ ॥

राजयोगः



बृहस्पति, चंद्रमा, बुध, शुक्र जिसके लघ्न, तीसरे, नौवें ग्राहरवें बैठे हों, मकरका शनैश्चर लघ्नमें बैठा हो तो वह राजा एक छत्रधारी होकर सम्पूर्ण पृथ्वीका भोग करता है ॥ ३३ ॥

तुंगस्थितौ शुक्रबुधौ विलग्ने नके च चक्रे धनुषीज्यचन्द्रौ ।

प्रसतिकाले किल तौ भवेतामाखंडलौ भूमितलेऽपि संस्थौ ३४ ॥

(५६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

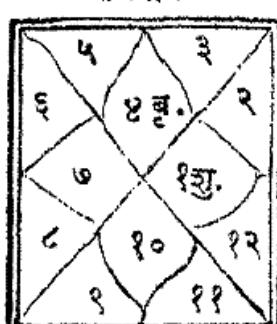
राजयोगः



जिसके जन्म कालमें मीन राशिका शुक्र वुध सहित लगभग हो, मवर राशिका मंगल, यन राशिका बृहस्पति चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य समय पृथ्वीका राजा इन्द्रके समान धरतीपै होता है ॥ ३४ ॥

गुरुर्निजोच्चे यदि केन्द्रशाली राज्यालये दानवराजपूज्यः ।
प्रसूतिकाले किल तस्य मुद्रा चतुःसमुद्रावधिगामिनी स्यात् ३५ ॥

राजयोगः



जिसके जन्मकालमें बृहस्पति उच्चका होकर केंद्र यानी लगभग बैठा हो, दशर्वे शुक्र बैठा हो, उस राजाकी मुहर वा सिक्का चारों समुद्रपर्यन्त चलता है ॥ ३५ ॥

देवाचार्यदिनेश्वरी क्रियगतौ मेषूरणे क्षोणिजः पुण्ये भार्गवसौ-
म्यशीतकिरणा वस्य प्रसूतौ स्थिताः । त्रूनं दिग्विजये प्रया-
णसमये सैन्यैरिला व्याकुला चिंतामुद्रहतीति का गतिरहो सर्व
सहायाः स्थितैः ॥ ३६ ॥

राजयोगः



बृहस्पति और सूर्य मेषराशिमें स्थित लग्नवर्ती हों, दशर्वे स्थानमें मंगल, नौवें घरमें शुक्र बुध चन्द्रमा हों ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी दिग्विजयकी यात्राके समय सेनाकरके पृथ्वी व्याकुल हो जाती है कि सम्पूर्ण मनुष्य आश्वर्यकरके चिंताको करते हैं कि धरतीके ऊपर अब कौन राजि होनेवाली है ॥ ३६ ॥

मेषोदयेर्कश गुरुः कुलीरे तुलाधरे मंदविधू भवेताम् ।
भवेन्नृपालोऽमलकीतिशाली भूपालमालापरिपालिताज्ञः ॥३७॥

राजयोगः



राजयोगः



मेषमें सर्य, कर्कमें वृहस्पति, तुलामें शनैश्चर, चन्द्रमा हों तो ऐसे योगमें मनुष्य शरद्वंश्की चांदनीके समान यशस्वान् महाराजा हो, जिसकी आज्ञाको राजा पालन करते हैं ॥ ३७ ॥

मीने निशाकरः पूर्णः सर्वग्रहनिरीक्षितः ।
सार्वभौमं नरं कुर्यादिङ्द्रतुल्यपराक्रमः ३८॥

मीनराशिका चंद्रमा जन्मलघ्नमें बैठा हो परंतु लघ्न वर्गोत्तम हो, चंद्रमा बलवान् हो, संपूर्ण ग्रह देस्वते हों तो मनुष्य सम्पूर्ण पृथ्वीका राजा तथा इंद्रके समान पराक्रमी होता है ॥ ३८ ॥

धने दिनेशो भृगुजीवचंद्रा नास्तंगता नो रिपुहृष्टियुक्ताः ।

स्यात्कंटकं तत्कटके रिपुणां यशःपटो दिग्वसनायं नूनम् ॥३९॥

स्वोच्चेषु वाचस्पतिसूर्यशुक्राः शनीक्षितः शीतरुचिर्निजोद्ये ।

यद्यानकाले रजसा वितानं रुणद्वि सूर्याश्विलोचनानि ॥४०॥

धनस्थानमें सर्य हो, शुक्र, वृहस्पति, चन्द्रमा केऽमें हों परंतु न तो अस्त हों और न शत्रुओं करके देखे गये हों ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ जो राजा सो शत्रुओंकी फौजके यशके वस्त्रोंको दिग्वसन कर दे अर्थात् नंगे कर दे ॥ ३९ ॥ कर्कमें वृहस्पति, मेषमें सूर्य, मीनमें शुक्र, वृषमें चन्द्रमा स्थित हो, शनैश्चरकरके हृष्ट हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी यात्राकालमें धूरसे आकाशमें सामियाना हो जाता है और सूर्यके रथके घोड़ोंके नेत्र रुक जाते हैं ॥ ४० ॥

नास्तं याताः सुतगृहगताः सौम्यशुक्रामरेज्या नके वको रविर-
हितगो धर्मगो यस्य मंदः । यात्राकाले किल कमलिनीपुष्पस-
कोचकर्ता श्रीमूर्योऽपि प्रचलितदलोद्भूतधूलीकृतास्तः ॥४१॥

पंचम घरमें बुध, शुक्र, बृहस्पति प्राप्त हों परंतु अस्तके न हों. मक-
रका मंगल सूर्यकरके रहित, नवे घरमें शनैश्चर हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए
राजाकी यात्राके समय कमलिनीका पुष्प संकोच करता है उस राजाकी
फौजके चलनेसे श्रीमूर्यनारायण धूलसे अस्त होते हैं ॥ ४१ ॥

सुरासुरेज्यौ भवतश्चतुर्थेऽत्यर्थं समर्थः पृथिवीपतिः स्यात् ।
कर्कस्थितो देवगुरुः सचंद्रो काश्मीरदेशाधिपति करोति ॥४२॥
पश्येन्मृगांकात्मजमिद्रमंत्री विचित्रसंपन्नपूर्तिं करोति । एको-
ऽपि खेटो यदि पंचमांशे प्रसूतिकाले कुरुते नृपालम् ॥ ४३ ॥

बृहस्पति, शुक्र चौथे हों तो मनुष्य धनवान् पराक्रमी पृथिवीका
पति होता है, कर्कराशीमें गुरु चन्द्रमासहित हो तो मनुष्य काश्मीरदेशका
स्वामी होता है ॥४२॥ बृहस्पतिको बुध देखता हो तो अनेक तरहकी संपत्
करके सहित राजा होता है. जन्मकालमें एक ग्रह जो पांचवे नवांशमें
बैठा हो तो राजा करता है ॥ ४३ ॥

नक्षत्रनाथोऽप्यधिमित्रभागे शुक्रेण दृष्टो नृपतिं करोति स्वांशा-
धिमित्रांशगतोऽथ वा स्याज्जीवेन दृष्टो कुरुते नृपालम् ॥४४॥ स्वोच्च-
स्थितः सोमसुतः ससोमः कुर्यात्वरं मागधदेशराजम् । कलाधि-
शाली बलवान् कलावान् करोति भूपं शुभधामसंस्थम् ॥४५॥

चन्द्रमा अपने आधिमित्रके नवांशमें बैठा हो शुक्रकरके दृष्ट हो तो
राजा करे है, वही चन्द्रमा अपने नवांशमें वा मित्रके नवांशमें हो बृह-
स्पति देखता हो तो राजा होता है ॥ ४४ ॥ उच्चराशीमें बैठा हो, बुध
चन्द्रमासहित हो तो मनुष्यको मगधदेशका राजा करे, चन्द्रमा बलवान्
पूर्णकला हो तो अच्छे स्थानका राजा हो ॥ ४५ ॥

जन्मेश्वरो जन्मविलगपो वा केन्द्रे बली नीचकुलेऽपि भूपम् ।
कुर्यादुदारं सुतरां पवित्रं किमत्र चित्रं क्षितिपालपुत्रम् ॥ ४६ ॥
मेषे दिनेशः शशिना समेतो यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात् ।
कर्णाटकद्राविडकेरलान्ध्रदेशाधिपानामनुकूलवर्ती ॥ ४७ ॥

जन्मराशिका स्वामी जन्ममें हो और लघ्नेश बली होकर केद्रमें हो तो नीच कुलमें उत्पन्न हुआ भी मनुष्य बड़ा उदार निरंतर पवित्र राजा होता है क्या आश्र्वय है जो राजाका पुत्र हो ॥ ४६ ॥ मेषका सूर्य चंद्रमा-सहित जिसके जन्मकालमें हो सो राजा कर्णाटक, द्राविड, केरल, आंध्र-देशके स्वामियोंके अनुकूलवर्ती होता है ॥ ४७ ॥

स्वतुंगगेहोपगतौ सितेज्यौ केद्रत्रिकोणेषु गतौ भवेताम् ।
प्रसूतिकाले कुरुते नृपालं नृपालजातं सचिवेद्रमान्यम् ॥ ४८ ॥

राजयोगः



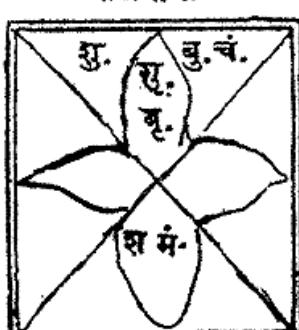
जिसके जन्मकालमें अपने उच्चराशिमें स्थित वृहस्पति शुक्र केद्र और त्रिकोणमें बैठे हों सो मनुष्य राजाका पुत्र हो तो राजा हो, अन्य किसीका पुत्र हो तो राजमान्य मंत्री हो ॥ ४८ ॥

अथ छत्रयोगः ।

प्रसूतिकाले मंदने धने च व्यये विलग्ने यदि संति खेटाः । तेष्वत्र योगो जनयंति तस्य प्राक्पुण्यपाकाभ्युदयो हि यस्य ॥ ४९ ॥

जिसके जन्मकालमें सातवें, दूसरे, बारहवें तथा लग्नमें सब ग्रह बैठे हों तो इस छत्रयोगमें पैदा हुआ मनुष्य पूर्वके पुण्यसे भाग्यवान् राजा होता है ॥ ४९ ॥

राजयोगः



(६०)

ज्योतिषश्यामसंभ्रहः ।

पापा विलग्ने यदि यस्य सूतौ दृष्टो भवेच्चित्रशिखंडिजेन ।
कर्के गुरुब्राह्मणदेवभक्तः प्रासादवापीयुरकुम्भरः स्यात् ॥ ६० ॥

राजयोगः



जिसके जन्मकालमें पापव्रह लग्नमें हो बृहस्पति करके देखे गये हों, कर्कका बृहस्पति हो तो वह मनुष्य मकान, बावडी, नगरका बनानेवाला होता है ॥ ५० ॥

मृगराशि परित्यज्य स्थितो लग्ने बृहस्पतिः ।
करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ॥ ५१ ॥

बृहस्पति मकरराशिको छोड़के लग्नमें बैठा हो याने कर्कराशिगत कर्कके नवांशमें हो तो वह मनुष्य मतवाले हाथियों करके सहित पृथिवी-का नाथ होता है ॥ ५१ ॥

केद्रगः सुरगुरुः सशशांको यस्य जन्मनि च भार्गवदृष्टः ।
भूपतिर्भवति सोऽतुलकीर्तिर्नीचगो न यदि कोपि ग्रहः स्यात् ॥ ५२ ॥

जिसके जन्ममें बृहस्पति चंद्रमा सहित केद्रमें हो और शुक्रकरके दृष्ट हो, जो नीचका कोई ग्रह न हो तो सो राजा बड़ा यशस्वी होता है ॥ ५२ ॥

धनस्थिताः सोऽस्यसितामरेज्या मंदारचंद्रा यदि सप्तमस्थाः ।
यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यादरातिदंतिक्षतिसिंह एव ॥ ५३ ॥

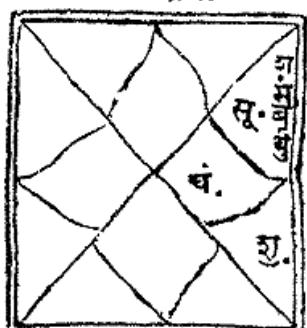
राजयोगः



जिसके जन्मकालमें दूसरे घरमें बुध, शुक्र, बृहस्पति बैठे हों, शनैऽचर, मंगल चंद्रमा जो सातवें बैठे हों तो सो राजा वैरीख्य हाथियोंके दाँतोंका तोड़नेवाला सिंहके समान होता है ॥ ५३ ॥

चेद्वागवो जन्मनि यस्य पुण्ये मेषूरणे पूर्णतनुः शशांकः ॥
अन्ये ग्रहा लाभगता भवेयुः पृथ्वीपतिः पार्थिववंशजातः ॥ ५४ ॥

राजयोगः



जिसके जन्ममें शुक्र भाग्य भवनमें हो दशम
धरमें पूर्ण चंद्रमा हो, वाकी अह संपूर्ण लाभस्था-
नमें हों सो राजाके वंशमें उत्पन्न हुआ पृथ्वीका
राजा होता है ॥ ५४ ॥

उपचयभवनस्थाः सर्वखेटाः शशांकाद्विगुरुशशिनश्चेदभूमि-
सूनोर्भवन्ति । त्रितनयनवमस्थाः कुर्वते ते नरेन्द्रं गजतुरगरथानां
संपदा राजमान्यम् ॥ ५५ ॥

संपूर्ण अह चंद्रमासे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें बैठे हों तो (एको-
योगः) अथवा सूर्य, बृहस्पति, चन्द्रमा, मंगलसे तीसरे, पंचम, नौवें हो तो
हाथी, घोड़ा, रथ, सब संपदासहित राज्यमान्य राजा करते हैं ॥ ५५ ॥

बुधः कर्कटमारुढो वाक्पतिश्च धनुर्धरैरविभूतसुतद्वष्टौ तौ कुरुतः
पृथिवीपतिम् ॥ ५६ ॥ कृत्तिकारेवतीस्वातीपुष्यस्थायी भूगोः
सुतः । करोति भूमुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः ॥ ५७ ॥

बुध कर्कमें हो, धनमें बृहस्पति हो, बुधको सूर्य, बृहस्पतिको मंगल
देखते हों तो राजा करते हैं ॥ ५६ ॥ कृत्तिका, रेवती, स्वाती, पुष्य
इन नक्षत्रोंका शुक्र हो तो उसको धरतीका नाथ करता है, अश्विनीको
शुक्र हो तो भी राजा करे ॥ ५७ ॥

षष्ठस्थ आसुरो भौमः कर्मस्थौ बुधभास्करौ । राजयोगे नरोत्पन्नो
विश्वातः पृथिवीपतिः ॥ ५८ ॥ जीवमंदद्वयोर्मध्ये सर्वे तिष्ठन्ति
खेचराः । करोति धरणीनाथं मत्तेभतुरगान्वितम् ॥ ५९ ॥

छठे धरमें राहु मंगल हो, दशवें धरमें बुध सूर्य हों तो इस राजयोगमें मैदा

हुआ मनुष्य धरतीका पति होता है ॥ ५८ ॥ वृहस्पति, शनैश्चर दोनोंके बीचमें सब यह बैठे हों तो मतवाले हाथी घोड़ेसहित धरतीका नाथ हो ५९॥

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने यदा भृगुः । सर्वेस्थिताग्रहामध्ये राजा भवति विक्रमी ॥ ६० ॥ जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः । सिंहे भवति शौरिश्च कन्यायां बुधभास्करौ ॥ ६१ ॥ तुलायामसुराचार्यों राजयोगे भवेन्नरः । अस्मिन् योगे समुत्पन्नो महाराजो नरो भवेत् ॥ ६२ ॥ अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः । सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः ॥ ६३ ॥

तीसरे घरमें वृहस्पति आठवें और शुक्र श्रह इनके बीचमें बैठे हों तो वह मनुष्य पराक्रमी राजा होता है ॥ ६० ॥ वृषमें वृहस्पति, मिथुनमें चन्द्रमा, मकरका मंगल, सिंहका शनि, कन्याके सूर्य, बुध ॥ ६१ ॥ तुलाके शुक्र हो तो मनुष्य महाराजा होता है ॥ ६२ ॥ आठवें, बारहवें वर्षमें यह मनुष्य जीता रहे तो सार्वभौम राजा विश्वका पालनेवाला होता है ॥ ६३ ॥

एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा शुभाः । दीर्घजीवी राजमान्यो जायते भटनायकः ॥ ६४ ॥ धनुष्यारश्च शुक्रश्च मीने जीवस्तुले बुधः । नीचस्थौ शनिचन्द्रौ च राजा स्याद्वनवर्जितः ॥ ६५ ॥

एक वृहस्पति जो लग्नमें उच्चका हो और चाहे सम्पूर्ण योग बुरे हों मनुष्य दीर्घ अवस्थाका, राजमान्य, सेनाका पति होता है ॥ ६४ ॥ धनके मंगल और शुक्र, मीनका वृहस्पति, तुलाका बुध, नीचके शनि चन्द्रमा हों तो धनराहित राजा हो ॥ ६५ ॥

दाता भोक्ता च विस्वातो मान्यो मण्डलनायकः ।

मीने शुक्रो बुधश्चति धने राहुस्तनौ रविः ॥ ६६ ॥

मीनका शुक्र वा बुध, दूसरे राहु, लग्नमें सर्व हो तो मनुष्य दानी, भोगा, विस्वात, राजमान्य, धरतीका मालिक होता है ॥ ६६ ॥

सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने निशाकरः । स राजा राजमध्यस्थो विख्यातः पृथिवीपतिः ॥६७॥ उच्चस्थानगताः सौम्याः केंद्रेषु च भवन्ति चेत् । ध्रुवं राज्यं भवेत्स्य स्ववंशानां च पोषकः ॥ ६८ ॥

तीसरे बृहस्पति ग्यारहवें चन्द्रमा हो तो सो राजा राजोंके बीचमें विख्यात धरतीका पति होता है ॥६७॥ शुभग्रह उच्चके होकर केन्द्रमें बैठे हों तो उसका अचल राज्य हो, अपने वंशका पालनेवाला हो ॥ ६८ ॥

धने व्यये तथा लरने सप्तमे च यदा ग्रहाः । छन्नयोगस्तदा द्वयो नराणां नायको भवेत् ॥६९॥ पंचमस्थो यदा जीवो दशमस्थो निशापतिः । राज्यवान्स महाबुद्धिस्तपस्वी विजितेंद्रियः ॥७०॥

दूसरे, बाहरवें, लघु, सातवें जो सम्पूर्ण ग्रह बैठे हों तो छन्ननाम योग जानना, उस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजा नरोंका नायक होता है ॥६९॥ पांचवें बृहस्पति और दशवें चंद्रमा हो तो राजा बड़ा बुद्धिमान् तपस्वी तथा जितेंद्रिय होता है ॥ ७० ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटकोदंडमकरेषु च । ग्रहस्तिष्ठति चेत्सर्वे देशभोगी धराधिपः ॥७१॥ तुलाकोदंडमीनस्थो लग्नगो भास्करात्मजः । करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ॥ ७२ ॥

सिंहका बृहस्पति, तुला, कर्क, धन, मकर इन राशियोंमें सब ग्रह हों तो मनुष्य देशका भोगनेवाला, पृथिवीका मालिक होता है ॥ ७१ ॥ तुला, धन, मीन लघुका शनैश्चर हो तो मतवाले हाथियोंसहित पृथिवीमें नाथ होता है ॥ ७२ ॥

विद्यास्थाने यदा सौम्यः कर्मस्थाने निशापतिः । धर्मस्थाने महीसून् राजराजो भवेन्नरः ॥ ७३ ॥ मकरे कार्मुके मीने वृषे च मिथुने क्रिये । ग्रहास्तिष्ठति चेत्सर्वे स राजा विश्वपालकः ॥७४॥

पांचवें बुध, दशवें चन्द्रमा, नवें मंगल हो तो मनुष्य राजाओंका

(६४)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

राजा होता है ॥ ७३ ॥ मकर, धन, मीन, वृष, मिथुन, मेषमें जो सब
अह हों तो मनुष्य विश्वका पालनेवाला राजा होता है ॥ ७४ ॥

चतुर्थे भवने शुक्रो गुरुश्चद्वौ धरासुतः । रविशौरियुताः संति
महाराजो प्रतापवान् ॥ ७५ ॥ अष्टमे द्वादशे यापा मध्यस्था
कूरसौम्यकाः ॥ करोति धरणीनाथमतिकामी सुराप्रियः ॥ ७६ ॥

चौथे घरमें शुक्र, बृहस्पति, मंगल, सर्य, शनिसहित छैठे हों तो
मनुष्य महाराजा प्रतापी होता है ॥ ७५ ॥ आठवें बारहवें जो पापभ्रह हों
बीचमें सब शुभ कूर यह हों तो धरतीका मालिक होता है, बड़ा कार्मी,
शराबका पीनेवाला होता है ॥ ७६ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चंद्रस्त्रिकोणे गुरुभास्करौ । कर्मस्थाने भवे-
द्वौमो जायते देशपालकः ॥ ७७ ॥ द्वित्रितुर्यसुते षष्ठे कर्मभावे
यदा ग्रहाः । राजयोगो विजानीयात् जायते नृपतिर्भवेत् ॥ ७८ ॥

लग्नमें शनि, चन्द्रमा, पांचवें, नौवें बृहस्पति, सर्य, दशवें मंगल हो
तो देशका पालनेवाला राजा हो ॥ ७७ ॥ दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें,
छठे, दशवें जो सब अह हों तो राजयोग होता है, इसमें पैदा हुआ मनुष्य
राजा होता है ॥ ७८ ॥

लग्ने कूरोद्वये सौम्यो धने कूरो यदा भवेत् । अस्मिन् योगे नरो
जातो दरिद्री धनवर्जितः ॥ ७९ ॥ चापे सौरिनिशानाथो मेषे चि-
त्रशिखंडिजः । दशमस्थौ राहुशुक्रौ राजयोगे नृपो भवेत् ॥ ८० ॥

लग्नमें पापभ्रह, बारहवें शुभभ्रह, दूसरे पापभ्रह हों तो धनरहित
दरिद्री हो ॥ ७९ ॥ धनमें शनि, चन्द्रमा, मेषमें बृहस्पति, दशवें राहु
शुक्र हो, तो राजा हो ॥ ८० ॥

सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवौ मिथुने शनिः । स्वक्षेत्रे हिकुके
भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ८१ ॥ शनिचंद्रौ च कन्यायां
भार्गवः शफरे गतः । मंकरे च कुजस्तत्र जातो विश्वस्य
पालकः ॥ ८२ ॥

सिंहमें बृहस्पति, कन्याम शुक्र, मिथुनमें शनि, स्वक्षेत्रका मंगल चौथे हो तो राजा हो ॥ ८१ ॥ शनि चंद्रमा कन्यामें, शुक्र मीनमें, मकरमें मंगल हो तो विश्वका पालनेवाला हो ॥ ८२ ॥

कर्कलग्ने जीवयुक्ते लाभे चंद्रज्ञभार्गवाः ।

मेषे भानौ च यो जातः स राजा भूमिपालकः ॥ ८३ ॥

लग्ने सौरिनिशानाथावष्टमे असुरार्चितः ।

यस्य प्रसूतौ भूपालो मानी वेश्यारतः स वै ॥ ८४ ॥

कर्कलग्नमें बृहस्पति, ग्यारहमें चन्द्रमा बुध शुक्र, मेषमें सूर्य हो तो सो भूमिका पालनेवाला राजा होता है ॥ ८३ ॥ जिसके जन्मलग्नमें शनि चंद्रमा आठवें शुक्र हो सो राजा मानी, वेश्याओंमें प्रीति करनेवाला हो ॥ ८४ ॥

मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनंदनः ।

अत्र जातः पितुद्रव्यं प्राप्नोति सकलं नृपः ॥ ८५ ॥

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणस्थो यदा भवेत् ।

अपि नीचकुले जातो राजा स्याद्वनपूरितः ॥ ८६ ॥

मिथुनमें राहु, सिंहमें मंगल इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य पिताका सम्पूर्ण द्रव्य प्राप्त करता है ॥ ८५ ॥ सूर्य उच्चाभिलाषी होकर श्रिकोणमें बैठा हो तो निश्चय करके धनसे पूर्ण राजा हो ॥ ८६ ॥

उत्पन्नकारके योऽपि नीचोऽपि नृपतां ब्रजेत् । राजवंशे समुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः ॥ ८७ ॥ धनस्थश्च यदा शुक्रो दशमस्थो बृहस्पतिः । षष्ठेऽष्टमे सिंहिकाजो राजा भवति विक्रमी ॥ ८८ ॥

जो नीच वंशमें भी उत्पन्न हो पर राजयोगमें पैदा हो तो राजा होता है और राजाके वंशमें उत्पन्न हो तो जरूर ही राजा हो ॥ ८७ ॥ दूसरे शुक्र, दशवें बृहस्पति, छठे आठवें राहु हो तो पराक्रमी राजा हो ॥ ८८ ॥

सर्वग्रहैर्यदा चन्द्रो विनालिं च निरीक्षितः ।

षष्ठेऽष्टमे च यामित्रे स दीर्घायुर्धराधिपः ॥ ८९ ॥

सम्पूर्ण ग्रह जो चन्द्रमाके विना वृश्चिकको देखते हा, छठे, सातवें, आठवें हो तो दीर्घायुष्यमान् पृथ्वीका पति हो ॥ ८९ ॥

अथ सिंहासनयोगः ।

षष्ठेऽष्टमे द्वादशे च द्वितीये संस्थिता ग्रहाः ।

सिंहासनाख्ये योगेऽस्मिन् राजा सिंहासने वसेत् ॥ ९० ॥

छठे, आठवें, बारहवें, दूसरे सब ग्रह वैठे हों तो सिंहासन नाम योग होता है सो राजा राजसिंहासनको प्राप्त होता है ॥ ९० ॥

मेषलग्ने यदा भानुश्रुतुर्थे च वृहस्पतिः ।

दशमे च कुजो जातो विश्वस्याधिपतिर्भवेत् ॥ ९१ ॥

केन्द्रे स्वोच्चस्थिते सौम्ये राजलक्ष्मीपतिर्भवेत् ।

केंद्रे पापे स्वोच्चसंस्थे राजा स्याद्वनवर्जितः ॥ ९२ ॥

मेष लग्नमें सूर्य हो, चौथे वृहस्पति हो, दशवें मंगल हो तो संसारका मालिक हो ॥ ९३ ॥ केन्द्रमें उच्चके शुभग्रह वैठे हों तो राज्यलक्ष्मीका पति हो । केन्द्रम पापग्रह उच्चके वैठे हों तो धन करके रहित राजाहो ॥ ९३ ॥

चतुष्केंद्रगताः सौम्याः पापाद्वादशषष्ठगाः । भवेत्स राजा विश्वातो लब्धच्छत्रो विभूषितः ॥ ९३ ॥ सूर्यः केंद्रे राजसेवी वैश्यवृत्तिनिशाकरे । शस्त्रवृत्तिः कुजे शूरो बुधे चाध्यापको भवेत् ॥ ९४ ॥

चारों केंद्रोंमें शुभग्रह हों, पापग्रह बारहवें, छठे हों तो प्राप्त किये छत्रसे शोभायमान विश्वात राजा हो ॥ ९३ ॥ सूर्य केन्द्रमें हो तो राजसेवी हो, चंद्रमा हो तो वैश्यवृत्ति करे, मंगल हो तो हथियारसे वृत्ति करे, वीर हो, बुध केंद्रमें हो तो लड़कोंको पढानेवाला हो ॥ ९४ ॥

स्वानुष्ठानरतो नित्यं दिव्यबुद्धिर्गुरौ नरः ।

शुक्रे विद्यार्थसंपन्नो नीचसेवी शनैश्चरे ॥ ९५ ॥

बृहस्पति हो तो अपने अनुष्ठानमें सदैव रत उत्तम बुद्धिका हो, शुक्र केंद्रमें हो तो विद्या धनकरके सहित हो, शनैश्चर होनेसे नीचसेवा करनेसे अपनी आजीविका करे ॥ ९५ ॥

राज्यप्राप्तिकालः ।

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम् ।
तयोरभावे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले॥९६॥

राज्यकरक ग्रहोंमेंसे जो ग्रह दशवें बैठा हो उसकी दशा अंतर्दशामें राज्यकी प्राप्ति कहना, अथवा लग्नमें बैठे ग्रहकी दशामें कहना चाहिये, अगर राज्ययोगकारक ग्रह दोनों स्थानोंमें हों तो उनमेंसे जो बलवान् हो उसकी दशामें राज्यकी प्राप्ति कहना और जो लग्न, दशवें बहुतसे राज्योगकारक ग्रह हों तो उनमेंसे बलीकी दशांतर्दशामें राज्यकी प्राप्ति कहनी चाहिये और कहे हुए स्थानोंमेंसे किसी स्थानमें ग्रह न हो तो राज्योगकारक ग्रहोंमेंसे जो सबसे बली हो उसकी दशांतर्दशामें राज्यकी प्राप्ति कहनी चाहिये। उस राज्योगकारक ग्रहकी बहुतसी अंतर्दशा होगी परंतु उनमें जिस दशा वा अंतर्दशाकालमें राज्य देनेवाला ग्रह गोचरबलमें हो उसी समय राज्यकी प्राप्ति होती है और जो ग्रह शत्रुस्थानमें वा नीचस्थानमें बैठा हो तो उसकी दशा अंतर्दशामें उक्त राज्य भी छूट जाता है ॥ ९६ ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु राज्योगः प्रकीर्तिः ॥

कृतो वै श्यामलालेन सर्वलोकोपकारकः ॥९७॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादा-

त्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते

ज्योतिषश्यामसंग्रहे राज्योगो नाम

तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

इस अध्यायमें श्यामलालकरके सम्पूर्ण मनुष्योंके उपकारके लिये राज्योग वर्णन किया गया ॥ ९७ ॥

इति श्रीराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषा-
टीकायां राज्योगवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ स्त्रीजातकाध्यायप्रारम्भः ।

युग्मेषु लग्नशशिनोः प्रकृतिस्थिता स्त्री सच्छीलभूषणयुता
शुभदृष्टयोश्च । ओजस्थयोश्च मनुजाकृतिशीलयुक्ता पापा च
पापयुतवीक्षितयोर्गुणानाम् ॥ १ ॥

जिस स्त्रीके जन्मलघ्नमें लग्न और चंद्रमा समराशिमें बैठे हों वह स्त्री
स्त्रियोंके आकार स्वभाववाली होती है और उसी लग्न चंद्रमाको शुभ
यह देखते हों तो वह स्त्री उत्तमशीलवती भूषणोंसहित होती है और जो
लग्न चंद्रमा विषमराशिके हों तो वह स्त्री पुरुषोंके समान आकार स्वभा-
ववाली होती है और वे ही लग्न चंद्रमा पापयहोंसे दृष्ट हों तो पापिनी बुरे
काम करनेवाली होती है । विषमराशिमें लग्न चंद्रमा हो, शुभ यह देखते
हों तो मध्यम स्वभाव कहना । समराशिमें लग्न चंद्रमा हो और पापयह
देखते हों तो भी मध्यम स्वभाव कहना । जो ज्योदेवली हों उसी माफिक
स्वभाव कहना चाहिये ॥ १ ॥

अथ त्रिशांशवशात्स्त्रीफलमाह ।

कन्येव दुष्टा व्रजतीह दास्यं साध्वीसमा या कुचरित्रियुक्ता ।
भूम्यात्मजक्षेऽक्षरशोऽशकेषु वक्रार्कजीवेदुजभार्गवानाम् ॥ २ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें लग्न अथवा चंद्रमा मेष या वृश्चिकराशिमें
हो और उसमें इन्हीं राशियोंका त्रिंशांश हो तो वह कन्या परपुरुषसे
विवाहके पहिले गमन करती है, पूर्वोक्तराशिमें स्थित लग्न व चंद्रमा हो,
शनैश्चरका त्रिंशांश हो तो दासी होती है और बृहस्पतिका त्रिंशांश हो
तो पतिव्रता होती है । बुधका त्रिंशांश हो तो भाया करनेवाली होती है
और शुक्रका त्रिंशांश हो तो खोटे कर्म करनेवाली होती है ॥ २ ॥

दुष्टा पुनर्भूः सगुणा कल्याणा स्याता गुणैश्चासुरपूजितक्षेऽ-
स्यात्कापटी छीबसमा सती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्णकामा ॥ ३ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें वृष वा तुला इन दोनोंमेंसे किसीमें लग्न अथवा चंद्रमा हो और मंगलका त्रिशांश हो तो वह स्त्री दुष्टस्वभाववाली होती है, शनैश्चरका त्रिशांश हो तो वह स्त्री विवाहके पीछे दूसरेके घरमें रहे, जो बृहस्पतिका त्रिशांश हो तो गुणवती हो, जो बुधका त्रिशांश हो तो वह स्त्री गाने बजानेकी कलामें चतुर होती है, शुक्रका त्रिशांश हो तो गुणाकरके नामी होती है। वही लग्न वा चंद्रमा मिथुन वा कन्या राशिका हो उसमें मंगलका त्रिशांश हो तो वह स्त्री कपट करनेवाली होती है, शनैश्चरका त्रिशांश हो तो वह स्त्री नपुंसक पुरुषके समान हिजडी होती है, जो बृहस्पतिका त्रिशांश हो तो पतिव्रता होती है, बुधका त्रिशांश हो तो वह स्त्री गुणवती होती है और जो शुक्रका त्रिशांश हो तो बहुत जातिके पुरुषोंसे गमन करती है ॥ ३ ॥

स्वच्छंदा पतिधातिनी बहुगुणा शिल्पन्यसाध्वीदुभे-

स्वाचारा कुलटार्कभे नृपवधूः पुंश्चेष्टितागम्यगा ।

जैवैनैकगुणाल्परत्यतिगुणा विज्ञानयुक्ता सती

दासी नीचरतार्किभे पतिरता दुष्टा प्रजा स्वांशकैः ॥ ४ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें लग्न या चंद्रमा कर्कराशिका हो और उसी समय मंगलका त्रिशांश हो तो वह स्त्री इच्छाचारी गमन करती है, शनिका त्रिशांश हो तो पतिको मारनेवाली होती है, बृहस्पतिका त्रिशांश हो तो बहुत गुणवती होती है, जो बुधका त्रिशांश हो तो तसवीर स्त्रीचनेमें वा राजगिरीमें कुशल होती है, जो शुक्रका त्रिशांश हो तो व्यभिचारिणी होती है। तैसे ही सिंहलग्न वा सिंहमें चंद्रमा हो और मंगलका त्रिशांश हो तो पुरुषोंकेसे काम करे, जो शनिका त्रिशांश हो तो परपुरुषगामिनी हो, जो बृहस्पतिका त्रिशांश हो तो वह स्त्री राजवधू हो। जो बुधका त्रिशांश हो तो पुरुषस्वभाववाली होती है, जो शुक्रका त्रिशांश हो तो वह स्त्री अपने पिता आता ज्येष्ठ देवर इत्यादि पुरुषोंसे गमन करती है तैसे ही लग्न

व चंद्रमा धन मीन दोनोंमें से किसी राशिके हों और मंगलका त्रिशांश हो तो वह स्त्री बहुत गुणोंकरके युक्त होती है, जो शनिका त्रिशांश हो तो अल्परति करनेवाली हो, जो बृहस्पतिका त्रिशांश हो तो बहुत गुणोंवाली हो, जो बुधका त्रिशांश हो तो ज्ञानवती हो; जो शुक्रका त्रिशांश हो तो परपुरुषसे प्रीति करनेवाली हो, ऐसे ही लग्न व चंद्रमा मकर कुम्भ इन दोनों राशिमें से किसी राशिके हों और मंगलका त्रिशांश हो तो वह स्त्री दासी हो, जो शनिका त्रिशांश हो तो वह स्त्री नीच मनुष्यसे गमन करती है, जो बृहस्पतिका त्रिशांश हो तो वह स्त्री पतिसे प्रीति करनेवाली होती है, जो बुधका त्रिशांश हो तो वह स्त्री खोटी होती है और जो शुक्रका त्रिशांश हो तो वह स्त्री बांझ होती है ॥ ४ ॥

शशिलग्नसमायुक्तैः फलं त्रिशांशकैरिदम् ।

बलाबलविवेकेन तयोरुक्तं विचितयेत् ॥ ५ ॥

लग्न और चंद्रमा इन दोनोंसे त्रिशांशका फल कहा है उसको बलाबल विचार करके कहना, लग्नमें या चंद्रमामें जो बलवान् हो उसके मुताबिक फल कहना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ स्त्रीस्त्रीमैथुनयोगमाह ।

**दृक्संस्थावसितासितौ परस्परांशे शौके वा यदि घटराशि-
संभवोऽशः । स्त्रीभिः स्त्री मदनविषानलं प्रदीप्तं संशान्तिं
नयति नराकृतिस्थिताभिः ॥ ६ ॥**

जिस स्त्रीके जन्मकालमें शनैश्चर शुक्रके नवांशमें हो, शुक्र शनै-शरके नवांशमें हो, परस्पर देखते ऐसा हों एक योग अथवा वृष तुलाजन्मकी लग्न हो उसमें कुंभके नवांशका उदय हो तो वह स्त्री अन्य पुरुषाकार स्त्रीके संग किसी वस्तुके लिंग बनाकर उससे कामदेवकी अग्निको शांत करती है ॥ ६ ॥

अथ कापुरुषयोगः ।

**शून्ये कापुरुषोऽबलेऽस्तभवने सौम्यग्रहावीक्षिते
क्षीबोऽस्ते बुधमंदयोश्चरणहे नित्यं प्रवासान्वितः ।**

उत्सृष्टा रविणा कुजेन विधवा बाल्येऽस्तराशिस्थिते
कन्यैवाशुभवीक्षितेऽर्कतनये द्यूने जरां गच्छति ॥ ७ ॥

स्त्रियोंके जन्मलघसे अथवा चंद्रमासे सातवें घरमें कोई व्रह न हो अथवा निर्बल हो या शत्रुघ्नोंकी हाथि सातवें घरमें न हो तो उस स्त्रीका पति निरुद्यमी होता है। जो सातवें घरपर बुध शनैश्चर हों तो उसका पति नपुंसक होता है, जो उसी सातवें घरमें चरराशि हो तो उसका पति हमेशा परदेशमें रहे,स्थिर हो तो घर ही रहे,द्विस्वभावराशि हो तो घर और परदेश दोनोंमें रहे,उसी सातवें घरमें सर्व हो तो वह स्त्री पतिसे त्यागी जाय और मंगल सातवें बैठा हो तो वह स्त्री बालविधवा होती है और उसी सातवें घरमें शनैश्चर हो,सब पापी व्रह देखते हों तो वह स्त्री विना व्याही रहती है वा विवाह होते ही पति नष्ट होता है ॥ ७ ॥

आग्रेयैर्विधवास्तराशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भूर्भवेत् ।

क्वरे हीनबलेऽस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्जिता ।

अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्तांगना ।

द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदानुज्ञया ॥ ८ ॥

जिस स्त्रीके सातवें घरमें सब पापव्रह स्थित हों तो वह स्त्री जरूर विधवा होती है और जो सातवें घरमें शुभव्रह बलहीन और पापव्रह दोनों हों तो वह स्त्री निज पतिको छोड़कर दूसरेको अंगीकार करती है और उसी सातवें घरमें एक पापव्रह बलरहित बैठा हो कोई शुभ व्रह नहीं देखता हो तो भी पतिकरके त्यागी जाय। जो किसी घरमें शुक्रके नवांशमें मंगल हो, मंगलके नवांशमें शुक्र हो तो वह स्त्री परपुरुषसे भोग करती है। जो उसी सातवें घरमें चंद्रमासहित मंगल हो तो वह स्त्री पतिकी आङ्गासे परपुरुषरता होतीहै ॥ ८ ॥

अथ मात्रा सह व्यभिचारिणीयोगः ।

सौरारक्षे लग्ने सेंदुशुक्रके मात्रा साढ़े बंधकी पापहृष्टे । कौजेऽ-
स्तेऽशे सौरिणी व्याधियोनिश्चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे ॥ ९ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें मकर, कुम्भ, मेष, वृश्चिक इनमेंसे कोई लगभग हो, वहां चंद्रमा शुक्र दोनों बैठे हों पापग्रह देखते हों तो वह स्त्री माताकरके सहित परपुरुषगामिनी होती है । जिसके सातवें घरमें मंगलका नवांश हो उसको शनैश्चर देखता हो तो उस स्त्रीके भगमें रोग होता है । जो उसी सातवें घरमें शुभग्रहका नवांश हो और शुभग्रह देखते हों तो उस स्त्रीका भग बहुत सुंदर अपने स्वामीको प्यारी होती है ॥ ९ ॥

अथ वृद्धपतियोगः ।

वृद्धो मूर्खः सूर्यजक्षीशके वा स्त्रीलोलः स्यात् क्रोधनश्चावनेये ।
शौके कांतोऽतीव सौभाग्ययुक्तो विद्वान् भर्ता नैपुण्यश्चैवबोधे ॥१०

जिस स्त्रीके जन्मलघसे सातवें घरमें मकर कुंभके नवांशका उदय हो मकर कुंभ ही सातवें घर (लघ)में हों तो उस स्त्रीका पति बूढ़ा या मूर्ख होता है । जिस स्त्रीके सातवें घरमें मेष या वृश्चिक राशि हो इन्हींका नवांश हो तो उस स्त्रीका पति द्वियोंको प्यारा, क्रोधी होता है और उसी सातवें घरमें वृष वा तुला राशि हो और शुक्रके नवांशका उदय हो तो उस स्त्रीका पति स्वरूपवान् सबको प्यारा होता है । उसी सातवें घरमें मिथुन वा कन्या राशि हो और बुधका नवांश हो तो उस स्त्रीका पति पंडित तथा अतीव चतुर होता है ॥ १० ॥

मदनवशगतो मृदुश्च चंद्रे त्रिदशगुरौ गुणवान् जितेद्रियश्च ।

अतिमृदुरतिकर्मकृच्च सिंहे भवति गृहेऽस्तमयस्थितेऽशके वा ॥११

जिस स्त्रीके जन्मकालमें सातवें घरमें कर्कराशि हो, कर्कका ही नवांश ही तो उस स्त्रीका पति अतिकामी कोमलस्वभाववाला होता है और उसी सातवें घरमें धन या मीन राशि हो और वृहस्पतिका नवांश हो तो उस स्त्रीका स्वामी गुणवान् जितेन्द्रिय होता है और उसी सातवें घरमें सिंहराशि हो सिंहका ही नवांश हो तो उस स्त्रीका पति अतिकोमल स्वभाववाला व्यापारी होता है ॥ ११ ॥

अथ लग्नस्थग्रहफलम् ।

ईष्यान्विता सुखपरा शशिशुकलग्ने ज्ञेन्द्रोः कलासु निपुणा
सुखिता गुणाद्वा । शुक्रज्ञयोस्तु सुभगा रुचिरा कलाज्ञा
त्रिष्वप्यनेकवसुसौख्यगुणा शुभेषु ॥ १२ ॥

जिसं द्वाके जन्मकालमें चंद्रमा शुक्र लग्नमें हों तो वह द्वी ईर्षा करने-
वाली, दूसरेको संताप देनेवाली, सदा सुखी होती है। जो बुध चन्द्रमा लग्नमें
बैठे हों तो वह द्वी गाने वजानेमें चतुर, सुखी, गुणवती, सुंदरी, सबको
प्यारी होती है और शुक्र बुध बैठे हों तो वह द्वी सौभाग्यवती गीतवाद्यमें
निपुण होती है और उसी जन्मकालमें बुध, शुक्र, चंद्रमा तीनों बैठे हों तो
वह द्वी अनेक प्रकारके धन सुखसहित गुणवती होती है ॥ १२ ॥

अथ वैधव्ययोगः ।

झूरेऽष्टमे विधवता निधनेश्वरोऽशे यस्य स्थितो वयसि तस्य
समे प्रदिष्टा । सत्वर्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः कन्यालि-
गोहरिषु चाल्पसुतत्वमिन्दोः ॥ १३ ॥

जिस द्वाके जन्मकालमें आठवें घरमें पापग्रह बैठे हों और आठवें
घरका स्वामी जिस ग्रहके नकांशमें बैठा हो उस ग्रहकी दशांतर्दशामें वह
द्वी विधवा होती है और जो लग्नसे आठवें स्थानमें पापग्रह बैठा हो और
दूसरे घरमें कोई शुभग्रह बैठा हो तो वह द्वी स्वामीसे पहिले मृत्युको
प्राप्त होती है और जिस द्वाके कन्या, वृश्चिक, वृष, सिंह इनमेंसे किसी
राशिमें चन्द्रमा हो तो वह द्वी अल्पपुत्रवती होती है ॥ १३ ॥

अथ बहुपुरुषगामिनीयोगः ।

सौरे मध्यबले बलेन रहितैः शीतांशुशुक्रेदुजैः ।

शेषवीर्यसमन्वितः पुरुषणी यद्योजराश्युद्गमे ।

जिस द्वाके जन्मकालमें शनैश्चर मध्यबली हो, चन्द्रमा, शुक्र बुध,

(७४)

ज्योतिषश्यामसंश्रहः ।

बलराहित हों, सूर्य, मंगल, बृहस्पति बलवान् हों और विषम राशि लघ्मे हो तो वह स्त्री बहुत पुरुषगामिनी होती है ॥

अथ ब्रह्मवादिनीयोगः ।

जीवारास्फुजिदेवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे ।

विख्याता भुवि नैकशास्त्रनिपुणा स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि ॥ १४ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें बृहस्पति, मंगल, शक, बुध ये बली हों और समराशिमें लग्न हो तो वह स्त्री धरतीमें विख्यात, अनेक शास्त्रकी जानने वाली, ब्रह्मविद्या यानी मोक्षशास्त्रमें कुशल होती है ॥ १४ ॥

अथ संन्यासिनीयोगः ।

पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्यां प्रव्रज्यां युवतिरूपैत्यसंशयेन ।

उद्ग्राहे वरणविधौ प्रदानकाले चितायामपि सकलं विधेयमेतत् ॥ १५ ॥

जिस स्त्रीके जन्मसमयमें पापग्रह सातवें बैठा हो और नववें स्थानमें जो ग्रह बैठा हो उसीकी प्रव्रज्या यानी संन्यासको वह स्त्री प्राप्त होती है। जैसे सूर्य बली हो तो तप करनेवाली हो, चन्द्रमासे कपालिनी, मंगलसे लाल कपड़े धारण करनेवाली, बुधसे दंडिनी, बृहस्पतिसे यति, शुक्रसे चक्र धारण करनेवाली, शनैश्चरसे नंगी होती है ऐसे यह योग विवाहके समय वा कुण्डली मिलानेके समय अथवा सगाईके समय वा कन्यादानसे पहिले विचारना चाहिये ॥ १५ ॥

अथ स्त्रीणां राजयोगः ।

केद्रे च सौम्या यदि पृष्ठभाजः पापाः कलत्रे च मनुप्यगाशी ।

राज्ञी भवेत्स्त्री बहुकोशयुक्ता नित्यं प्रशांता च सुपुत्रिणी च ॥ १६ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें शुभग्रह केन्द्रमें बैठे हों और पापग्रह ६। ९। १२। में हों, सातवें घरमें पुरुषराशि हो तो वह स्त्री बहुत धनसाहित शांत स्वभाववाली पुत्रवती रानी होती है ॥ १६ ॥

बुधे विलग्ने यदि तुंगसंस्थे लाभस्थिते देवपुरोहिते च । नरेन्द्र-

पत्री वनिताप्रसंगे तदा प्रसिद्धा भवतीह भूमौ ॥ १७ ॥ एको-
ऽपि जीवो रसवर्गशुद्धौ केंद्रे यदा चंद्रनिरीक्षितश्च ॥ राज्ञी भवे-
त्खी सधना सुपुत्रा रूपान्विता पीननितंबविंबा ॥ १८ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें, जन्मलघ्नमें बुध उच्चराशिका बैठा हो और
ग्यारहवें घरमें बृहस्पति हो तो वह स्त्री राजपत्नी हो, खियोंकी गणनामें
अश्रणी पृथ्वीपर विख्यात होती है ॥ १७ ॥ जिस स्त्रीके जन्मकालमें
केवल षड्वर्गमें शुक्र केन्द्रमें बैठा हो, चन्द्रमासे दृष्ट हो तो वह स्त्री धनपुत्र-
सहित रूपवती, स्थूल नितंबवाली रानी होती है ॥ १८ ॥

कर्कोदये सप्तमगे पतंगे जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहा । विद्याधरी
चात्र भवेत्प्रधाना राज्ञी गतार्खिद्वपुत्रपौत्रा ॥ १९ ॥ षड्वर्ग-
शुद्धौ त्रिभिरेव राज्ञी चतुर्भिरंशैश्च तथैव पत्री । पंचादिभि-
दिव्यविमानभाजा त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ॥ २० ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें कर्कराशिका उदय हो, सातवें घरमें सूर्य
हो, बृहस्पतिकरके दृष्ट हो तो वह स्त्री रोगरहित, बहुत पुत्रपौत्रसहित, अप्स-
राओंमें प्रधान रानी होती है ॥ १९ ॥ जिस स्त्रीके षड्वर्गमें शुद्ध होकर
तीन ग्रह केंद्रमें हों वह रानी होती है, चार ग्रह नवांशमें शुद्ध केन्द्रवर्ती
पड़े तो वह महारानी होती है, पांच ग्रहोंसे सुन्दर विमानपर चढ़नेवाली
त्रैलोक्यनाथकी पत्नी होती है ॥ २० ॥

लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः ।
जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी रूप्याता धरायां सकलैः स्तुता च ॥ २१ ॥
अस्मिन्नध्यायमध्ये तु राज्ञीयोग उदीरितः ।

क्रियते श्यामलालेन लोकानां हितकाम्यया ॥ २२ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-

ज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके

नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जिस स्त्रीके ग्यारहवें घरमें चंद्रमा हो, शुक्र सातवें घरमें बुध सहित हो, बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो वह स्त्री रानी होती है, पृथ्वीमें सम्पूर्ण मनुष्यों-करके स्तुत होती है ॥ २१ ॥ इस अध्यायके बीचमें श्यामलालकरके संसारके हितके लिये महारानीयोग कहे ॥ २२ ॥

इति श्रीराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-
भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचंद्रयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ वोशीवेशीउभयचरीकर्तरीयोगानाह ।

सूर्यादंते १२ द्वितीये मृगधररहिते पापखेटः शुभो वा
योगोऽयं भूपतुल्योऽप्युभयचरिवरो भाषितो गर्गमुख्यैः ।

अंते वोशिप्रसिद्धो धननिलयगतो वेशियोगः प्रशस्त-
स्तस्य प्रांतो द्वितीयो भवति न खचरः कर्तरीशो न शस्तः ॥ १ ॥

सूर्यसे बारहवें दूसरे चंद्रमाके बिना और पापग्रह चाहे शुभग्रह हो तो उभयचरी योग होता है यह गर्गचार्यने कहा है । सूर्यसे बारहवें कोई ग्रह हो तो वोशीयोग होता है, सूर्यसे दूसरे कोई ग्रह हो तो वेशियोग जानना और सूर्यसे बारहवें दूसरे कोई ग्रह न हो तो कर्तरीयोग होता है ॥ १ ॥

अथ वोशियोगफलम् ।

स्यान्मंदहृष्टिरुक्मिकर्ता पश्यन्नधश्चोन्नतपूर्वकायः ।

असत्यवादी यदि वोशियोगो भवेद्यालुर्मनुजस्य यस्य ॥ २ ॥

जो वोशियोगमें उत्पन्न हो वह मन्दहृष्टि, बहुत कार्योंका करनेवाला, नीचेको देखनेवाला, ऊंचा शरीर,झूँड़ा बोलनेवाला,दयावान् होता है ॥ २ ॥

अथ वेशियोगफलम् ।

तिर्यग्दृष्टिः सत्त्वसत्यानुकंपी मत्योऽत्यर्थं दीर्घकायोऽलसश्च ।

सूतौ यस्य स्याद्यदा वेशियोगस्त्वल्पद्रव्यो वाग्विलासाधिशालीरे

जिसके जन्मकालमें वेशियोग हो सो टेढ़ी निगाह, पराक्रम और सत्यसहित, दयावान्, धनवान्, बड़ा शरीर, शोभायमान तथा वाणी विलासमें श्रेष्ठ होता है ॥ ३ ॥

अथ उभयचरीयोगफलम् ।

सर्वसहः स्थिरतरोऽतितरां समृद्धः सत्त्वाधिको समशरीरविराजमानः । नात्युच्चकः सरसद्वक् प्रबलामलश्रीयुक्तः किलोभयचरीप्रभवो नरः स्यात् ॥ ४ ॥

उभयचरीयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य निश्चय करके पृथ्वीके समान स्थिराचित्त, कुद्धियों सहित, बलवान्, समशरीर, शोभायमान, ऊँचा नहीं, समान दृष्टि तथा लक्ष्मी सहित हो ॥ ४ ॥

सूर्यस्य वीर्यं खचरानुसाराद्राश्यंशयोगात्प्रविचार्यं सर्वम् । न्यून समं वा प्रबलं नराणां फलं सुधीभिः परिकल्पनीयम् ॥ ५ ॥

सूर्यका बल व्रहोंके समान राशि अंश नवांशके योगसे सम्पूर्ण विचारकर न्यून सम पूर्ण मनुष्योंका फल बुद्धिमानोंकरके कहने योग्य है ॥ ५ ॥

अथ सुनफानफादुरुधराकेमद्रुमयोगानाह ।

शीतांशोद्रविणे स्थितैश्च सुनफायोगोऽनफांत्यस्थितैः

स्वांत्यस्थैः खचरैर्भवेदुरुधरा पंकेरुहेशोजिज्ञतैः ।

चेद्वित्तव्ययगा न चेद्विविचराः केमद्रुमः स्यात्तदा

प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिता योगाः शशांकोद्भवाः ॥ ६ ॥

सूर्यको छोड़कर चंद्रमासे दूसरे वरमें कोई व्रह स्थित हो तो सुनफा नाम योग होता है और चंद्रमासे बारहवें कोई व्रह होनेसे अनफायोग होता है और चंद्रमासे दूसरे बारहवें दोनों तरफ व्रह स्थित होनेसे दुरुधरा नाम योग होता है और चंद्रमाके दोनों तरफ कोई व्रह नहीं हो तो केमद्रुम योग होता है, ऐसा बहुत आचार्योंका मत है। कोई आचार्य कहते हैं चंद्रमासे चौथे सूर्यको छोड़कर कोई व्रह हो तो सुनफा योग होता है और चंद्रमासे

दशर्वे कोई ग्रह हो तो अनफा योग होता है और चौथे दशर्वे दोनोंमें ग्रह होनेसे दुरुधरा और चौथे दशर्वे दोनोंमें ग्रह न हों तो केमद्रुम योग होता है । कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि चंद्रमा नवांशकुंडलीमें जहां बैठा हो वहांसे सूर्यको छोड़कर कोई ग्रह दूसरे हो तो सुनफा, बारहवें हो तो अनफा; नौवें हो तो दुरुधरा और दोनों तरफ ग्रह नहीं हो तो केमद्रुम योग होता है, यह प्रसिद्ध नहीं है; बहुतसे आचार्योंका मानना ठीक है ॥ ६ ॥

अथ सुनफायोगफलम् ।

भूमीपतेश्च सचिवः सुकृती कृती च नूनं भवेन्निजभुजार्जितवित्युक्तः । स्वातः सदाखिलजनेषु विशालकीर्त्या बुद्धचाधिकश्च मनुजः सुनफाभिधाने ॥ ७ ॥

सुनफायोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजाका मंत्री, उत्तम कर्म करनेवाला, निश्चयकरके अपनी भुजाओंसे पैदा किये हुए धनसहित, मनुष्योंमें प्रसिद्ध, बड़े यशवाला तथा बुद्धिमान् होता है ॥ ७ ॥

अथ अनफायोगफलम् ।

प्रभुर्विनीतः शुभवाग्विलासः सच्छीलशाली गुणपूर्तियुक्तः ।

उदारकीर्तिः स्मरतुष्टचित्तो नित्यं नरः स्यादनफाभिधाने ॥८॥

जो मनुष्य अनफायोगमें पैदा हुआ वह मनुष्योंका स्वामी, नम्रतासहित, उत्तम वाणीका बोलनेवाला, शीलवान्, गुणसहित, उदार कीर्तिवान् तथा कामदेवसे संतुष्ट चित्त होय ॥ ८ ॥

अथ दुरुधरायोगफलम् ।

सद्वित्सद्वारणवाहधात्रीसौख्याभियुक्तः सततं हतारिः ।

कांतासुनेत्रांचललालसः स्याद्योगे सदा दौरुधरे मनुष्यः ॥९॥

जो मनुष्य दुरुधरायोगमें उत्पन्न हो वह अच्छा धन, सवारी, पृथिवीसहित, सुखयुक्त, हमेशा वैरियोंका नाश करनेवाला तथा अच्छे नेत्रवाली द्वीर्घ आसक्त हो ॥ ९ ॥

अथ केमद्वुमयोगफलम् ।

सद्वित्तसूनुर्वनितात्मजनावहीनः प्रेष्यो भवेत्तु मनुजो हि
विदेशवासी । नित्यं विरुद्धधिषणो मलिनः कुवेशः केम-
द्वुमे च मनुजाधिपतेः सुतोऽपि ॥ १० ॥

केमद्वुममें उत्पन्न हुआ मनुष्य धन, पुत्र, स्त्री, मित्र, लोग इन करके
हीन, दूत, हमेशा परदेशमें रहनेवाला, विरुद्ध वृत्ति, मलीन, कुवेशधारी होता
है । केमद्वुमयोगमें उत्पन्न हुआ राजाका पुत्र हो तो भी ऐसा हो ॥ १० ॥

अथान्यप्रकारेण केमद्वुममाह ।

भाग्याधिनाथव्ययभावसंस्थेऽवलोकिते वित्तगते व्ययेशे ।

दुश्चिक्यसंस्थे यदि पापखेटाः केमद्वुमो योग इति प्रदिष्टः ॥ ११ ॥

नौवें घरका स्वामी बारहवें हो, बलसहित बारहवें घरका स्वामी
दूसरे स्थानमें हो, तीसरे स्थानमें सब पाप श्रव बैठे हों तो केमद्वुम नाम
योग होता है ॥ ११ ॥

तस्य फलम् ।

परात्रकांक्षी मनुजो नितांतं कुर्धमकर्माभिरतोऽल्पवित्तः ।

परांगनासक्तिपरो गुणाद्यः केमद्वुमे जाततनुर्भवेत्सः ॥ १२ ॥

केमद्वुमयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य पराये अन्नकी इच्छा करनेवाला,
सदैव काल बुरे कर्माँका करनेवाला, थोडा धन, पराई स्त्रीमें तत्पर तथा
कर्जबन्द होता है ॥ २२ ॥

पुनः अन्यप्रकारेण केमद्वुमः ।

केन्द्रस्थितौ गीष्पतिमन्दचंद्रौ व्ययाष्टपुत्रोपगतौ यमारौ ।

केमद्वुमाख्यस्त्वपरोऽव्रजातःस्वजन्मभूमीरहितो नरःस्यात् ॥ १३ ॥

केद्रमें वृहस्पति, निर्बली चन्द्रमा हों बारहवें, आठवें, पञ्चम शनि, मंगल
प्राप्त हों तो केमद्वुम योग होता है । इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य
अपनी जन्मभूमिको त्यागनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ केमदुमभंगमाह ।

सर्वे खेटाः केन्द्रकोणे च संस्था दुष्टो योगश्चापि केमदुमोऽयम् ।

दुष्टं सर्वं स्वं फलं संविहाय कुरुः पुसां सत्कलं वै विचित्रम् ॥ १४ ॥

संपूर्णं ग्रह केन्द्रत्रिकोणमें बैठे हों और केमदुमयोग हो तो उसका दुष्ट फल दूर करके अच्छा विचित्र फल मनुष्यको देते हैं ॥ १४ ॥

पुनः केमदुमभंगसंयोगः ।

प्रालेयांशौ सूतिकाले यदा वा सर्वैः खेटैर्वीक्ष्यमाणः करोति ।

दीर्घायुष्यं सार्वभौमं मनुष्यं सत्कोशाढ्यं हंति केमदुमं च ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमाको सब ग्रह देखते हों तो उस मनुष्यकी दीर्घायु करते हैं । खजाने करके सहित राजा होता है । केमदुमको नाश करते हैं ॥ १५ ॥

सूतौ तुलाधरगते क्षितिजे सजीवे कन्यागते दिनकरेऽत्र
विधुः क्रियास्थः । नो वीक्षितोऽन्यखचरैर्जनयत्यवश्यं केम-
दुमं परिहरत्यवनीपतीद्रम् ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें तुलामें भंगल बृहस्पति हों, कन्यामें सूर्य मेषमें चंद्रमा हो और कोई ग्रह नहीं देखता हो तो जरूर ही केमदुमको दूर करके महाराजा करते हैं ॥ १६ ॥

अथ प्रकारांतरेण दुरुधरायोगमाह ।

रंधारौ रिःफलग्रे विगतशशिधरस्तस्य नेत्रे तवांशे

सौम्यो वा क्लूरखेटो दिनकररहितो यस्य जन्माधिकाले ।

योगोऽयं दुरुधराख्यो वदति मुनिवरो सर्वग्रन्थेषु धीरो

भूपो वा भूपतुल्यो भवति स पुरुषो दीनवंशेऽपि जातः ॥ १७ ॥

अष्टम, द्वादश, लघु, छठा इन स्थानोंको छोड़कर और किसी स्थानमें चंद्रमा हो, उसके बारहवें शुभ ग्रह चाहे पाप ग्रह दूसरे, सूर्यके बिना बैठे हों तो दुरुधरा नाम योग मुनीश्वरोंने कहा है, इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य दीनवंशमें पैदा हुआ भी राजा वा राजाके तुल्य होता है ॥ १७ ॥

विशेषण दुर्धरायोगमाह ।

सोमादंत्यद्वितीयगो गगनगो भानुं विना कोऽपि चे-
द्योगोऽयं खलु दुर्धराख्यकथितो जन्माधिकाले स चेत् ।
ते पूर्णेदुसमाननाब्जस्वदशां नाथा नरा योषितां

नानावाहवसुंधराश्च वसुभिर्युक्ताः सदा जातकाः ॥ १८ ॥

चन्द्रमासे दूसरे, बारहवें, दशवें सूर्यके विना कोई ग्रह हो तो दुर्धरा नाम योग होता है । जिसके जन्मकालमें यह योग हो सो पूर्ण चन्द्रमाकी दशामें खियोंका नाथ, सवारी, धरती, धनकरके सहित होता है ॥ १८ ॥

अथोक्तयोगकारकग्रहफलम् ।

अनफा वै सुनफा च दौर्धरश्च प्रवदाम्यत्र पृथक् फलानि सम्यक् ।

क्षितिजे तस्करकं तथा प्रचंडं कुरुते कूरतरं खलं मनुष्यः ॥ १९ ॥

निपुणं ज्ञानयुतं महाधनाठयं मनुजं वै कुरुते शशांकजन्मा ।

पूज्यं राजकुलेषु सद्गुणाठयं धर्मिष्टं च सुरार्चितं करोति ॥ २० ॥

अनफा, सुनफा, दुर्धरा इनके अलग अलग फलोंको भले प्रकार मैं निश्चय करके कहता हूँ । मंगल हो तो कहे हुए योगमें पैदा हुआ मनुष्य चोर, प्रचंड, दुष्टस्वभाव, थोड़े धनवाला तथा साहसी होता है ॥ १९ ॥ बुध हो तो चतुर, ज्ञानसहित, धनवान् होता है । बृहस्पति हो तो राजकुलमें पूज्य, अच्छे गुणोंसहित धर्मात्मा होता है ॥ २० ॥

ऐश्वर्यं च धनं जनप्रसिद्धं सौख्याठयं च नरं करोति शुक्रः ।

गुणवृद्धं बहुभृत्यकं च शूरं बहारं भकरं शनिः प्रपूज्यम् ॥ २१ ॥

पूर्वोक्त योग करनेवाला शुक्र हो तो ऐश्वर्यधनसहित मनुष्योंमें नामी सुखी होता है और शनैश्चर हो तो गुणवृद्ध, बहुत नौकर, शूर, बहुत काम कर-नेवाला होता है और जो कहे हुए योगकारक एक ग्रहसे अधिक हो तो सिर्फ योगकाही फल होता है, ग्रहोंका फल नहीं होता है और तिसका जन्म दिनमें हो और चंद्रमा सातवें स्थानसे उग्रपर्यंतकिसी घरमें हो तो अशुभ फल चंद्रमा

देता है और जो रात्रिमें जन्म हो और चंद्रमा लग्नसे सातवें स्थानपर्यंत हो तो शुभ फल देता है और रात्रिका जन्म हो चंद्रमा सातवें घरसे लेकर लग्नपर्यंत हो तो शुभ फल देता है और दिनमें जन्म हो और चंद्रमा लग्नमें सातवें घरतक हो तो अशुभ फल देता है ॥ २१ ॥

अथ लग्नचंद्रोपचयस्थशुभग्रहफलम् ।

लग्नादीतीव वसुमान् वसुमान् शशांकात्सौम्यग्रहैरुपचयोपगतैः
समस्तैः । द्वाभ्यां समोऽथ वसुमांश्च तदूनितायामन्येष्वसत्स्वपि
फलेष्विदमुत्कटेन ॥ २२ ॥

जिस किसीके जन्मसमयमें लग्नसे वा चंद्रमासे उपचय याने तीसरे, छठे, देशवें, ग्यारहवें जो सब शुभ ग्रह बैठे हों तौ यह मनुष्य धनवान् होता है, जो दो शुभग्रह उक्त घरोंमें बैठे हों तो मध्यम धनवाला होता है, एक शुभ ग्रह उन्हीं स्थानोंमें होय तौ थोड़े धनवाला होता है, उपचय-स्थानोंमें कोई शुभ ग्रह नहीं हो तो दरिद्री होता है । जो जन्मकुण्डलीमें बहुतसे कुयोग भी हों और यह योग पूरा हो तो इसीका फल होता है । किसी कुयोगका फल नहीं होता है ॥ २२ ॥

अथ जातस्वभावज्ञानमाह ।

अधमसमवरिष्ठान्यर्ककेद्वादिसंस्थे
शशिनि विनयवित्तज्ञानधीनैपुणानि ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यसे चंद्रमा केन्द्रमें बैठा हो उसके शील, धन, शास्त्र, ज्ञान, बुद्धि चातुर्यता यह अधम होती हैं और वही सूर्यसे चंद्रमा पण्फर स्थानोंमें स्थित हो तो पूर्वोक्त फल मध्यम होता है और सूर्यसे चंद्रमा आपोङ्गिमस्थानमें हो तो पूर्वोक्त फल उत्तम होता है ॥

अथ धनसौख्ययोगः ।

अहनि निशि च चंद्रे स्वेऽधिमित्राशके वा
सुरगुरुसितद्वष्टे वित्तवान्स्त्यात्सुखी च ॥ २३ ॥

जिस पुरुषके जन्मकालमें चंद्रमा दिनका हो और अपने अतिमि-
त्रके नवांशमें बैठा हो और वृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य धनवान्
सुखी होता है और चंद्रमा रात्रिका हो, अपने अतिमित्रके नवांशमें बैठा
हो, शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य धनवान्, सुखी होता है ॥ २३ ॥

अथ अधियोगः ।

सौम्ये स्मरारिनिधनेष्वधियोग इंदोस्तस्मिन्श्च भूपसचिवक्षिति-
पालजन्म । संपत्त्वसौख्यविभवा हतशत्रवश्च दीर्घायुषो विगत-
रोगभयाश्च जाताः ॥ २४ ॥

जिस स्थानमें चंद्रमा हो वहांसे छठे, सातवें, आठवें इन तीनों
घरोंमें या दोहीमें वा एक ही स्थानमें शुभ ग्रह बैठे हों, तो अधियोग होता
है । इसमें पैदा हुआ मनुष्य जो तीनों शुभग्रह बलवान् हों तो राजा होता
है । मध्यमबली हों तो मन्त्री होता है और जो हीनबली हों तो सेनापति
होता है । इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य ऐश्वर्य, सौख्य, सवारीसहित, शत्रु-
हीन, दीर्घायु, रोगविहीन प्रतापी राजा होता है ॥ २४ ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु चंद्रयोगः प्रकीर्तिः ।

क्रियते श्यामलालेन नराणां सुखहेतवे ॥ २५ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्या-
मसंग्रहे चंद्रयोगो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इस अध्यायके बीचमें श्यामलालकरके मनुष्योंके सुखके लिये निश्चय-
करके चंद्रयोग वर्णन किया गया ॥ २५ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां
श्यामसुंदरीभाषाटीकायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ मिश्रकाण्ड्यायः ।

अथ निजभुजार्जितधनप्राप्तियोगः ।

अजे शुप्ररश्मिर्घटे सूर्यजश्चेदभृगुर्नक्गच्छापगः पद्मिनीशः ।
न भुंक्ते धनं पैतृकानां कदाचित्स्वदोर्दवीर्येण स स्याद्वरेण्यः॥१॥

मेषमें चंद्रमा, कुम्भमें शनैश्चर, मकरमें शुक्र, धनमें सूर्य हो तो वह
मनुष्य पिताके द्रव्यका भोग नहीं करता है, अपने भुजाबलसे धन पैदा
करनेवाला श्रेष्ठ पुरुष होता है ॥ १ ॥

अथ दरिद्रियोगः ।

शुभग्रहाः केंद्रचतुर्थसंस्था धनस्थिताः पापनभश्चरेद्राः । सदा
दरिद्रो नितरं नरः स्याद्वीतिप्रदः स्वीयकुलोद्भवानाम् ॥ २ ॥
होराधिपे अंत्यगतेऽबरस्थे क्रूरे सराफे क्षणदाधिपे च । जातो
हि योगः परदेशनिष्ठः सदा दारिद्री मनुजो भवेत्सः ॥ ३ ॥

शुभ ग्रह चारों केंद्रोंमें बैठे हों और धनस्थानमें पापग्रह स्थित हों
तो वह मनुष्य हमेशा दारिद्री होता है । अपने कुलमें उत्पन्न हुए मनुष्यों-
को भय देनेवाला होता है ॥ २ ॥ जन्मलक्षका स्वाभी बारहवें हो दशवें
घरमें पापग्रह हो और चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य हमेशा दारिद्री
होता है ॥ ३ ॥

अथ ज्ञातिच्युतदरिद्रियोगः ।

खेनवांशे यदि यामिनीशः सरोजिनीशः शशिनो नवांशे ।
एकर्क्षसंस्थौ यदि तौ तदानीं दरिद्रभाजः सततं नरः स्यात्
॥ ४ ॥ सूतौ त्रिकस्थानगताः खलाख्या ज्ञातिच्युतिं ते मनु-
जस्य कुर्युः । चतुष्टयस्था यदि वापि दुःखं दारिद्रमात्मीयज-
नच्युतिं च ॥ ५ ॥

सूर्यके नवांशमें चंद्रमा हो और चंद्रमाके नवांशमें सूर्य हो और
सूर्य चंद्रमा दोनों एक राशिमें बैठे हों तो वह मनुष्य निरन्तर दारिद्री

होता है ॥ ४ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे,आठवें, बारहवें पापग्रह बैठे हैं तो वह मनुष्य जातिसे पतित होता है और वही पापग्रह केंद्रमें बैठे हैं तो वह मनुष्य दुःखी, दरिद्री तथा जातिसे पतित होता है ॥ ५ ॥

अथ स्त्रीमरणयोगः ।

उग्रग्रहैः सितचतुरस्संस्थितैर्मध्यस्थिते भृगुतनयेऽथ वोग्रयोः ।
सौम्यग्रहैरसहितेननिरीक्षिते वा जायावधोदहननिपातपाशजः॥६॥

पापग्रह शुक्रसे चौथे आठवें स्थित हों तो पुरुषकी स्त्री अग्निसे जल-
कर मरती है और पापग्रहोंके बीचमें शुक्र बैठा हो तो उसकी स्त्री ऊपरसे
गिरकर मरती है और शुक्रको कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो और न
शुक्रके संग हो तो उसकी स्त्री फांसीसे मरती है ॥ ६ ॥

अथ स्त्रीसहितकाणयोगः ।

लग्नाद्यारिगतयोः शशितिग्मरश्म्योः पत्न्या सहैकनयनस्य
वदंति जन्म । द्यूतस्थयोर्नवमपंचमसंस्थयोर्वा शुक्राक्योर्विक-
लदारमुशंति जातम् ॥ ७ ॥

जन्मलग्नसे बारहवें छठे चन्द्रमा सूर्य बैठे हैं तो वह स्त्रीसहित काना
होता है और सूर्य शुक्र ये दोनों लग्नसे सातवें, नौवें, पांचवें बैठे हैं तो
वह अंगहीन स्त्रीवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ जितेद्रिययोगः ।

लग्नस्थितो वात्मजभावसंस्थो वाचस्पतिव्योमगतः शशांकः ।

जितेद्रियः सत्यवचानुसक्तः सद्राजचिह्नश्च विराजमानः ॥ ८ ॥

लग्नमें वा पञ्चमभावमें वृहस्पति स्थित हो और दशवें घरमें चन्द्रमा
हो तो वह मनुष्य जितेद्रिय, सच बोलनेवाला, राजलक्षणसहित तथा
शोभायमान होता है ॥ ८ ॥

अथ कुलश्रेष्ठयोगः ।

जीवो जूके कन्यकायां च शुक्रो गोस्थः कर्मेशस्त्वलौ पूर्णदृष्टः।

(८६)

ज्योतिषश्यामसंघः ।

वंशश्रेष्ठोदारबुद्धिगुणज्ञो नित्यानंदो वित्तयुक्तोऽतिसुज्ञः ॥ ९ ॥

शुक्रो यदा ताबुरिसंस्थितश्चेत्सौम्यस्तदा वृश्चिकराशिसंस्थः ।

कथं भवेतामिति चिंतनीयं मुनिप्रणीतं कथनं मया स्यात् ॥ १० ॥

बृहस्पति तुलामें हो, कन्याराशिमें शुक्र स्थित हो, वृषमें बुध दशम-स्थानवर्ती होकर वृश्चिक राशिको पूर्ण इष्टिसे देखता हो तो वह मनुष्य अपने वंशमें श्रेष्ठ, उदारबुद्धि, गुणज्ञ, नित्य आनंदको प्राप्त धनके सहित चतुर होता है ॥ ९ ॥ शुक्र वृषराशिम और बुध वृश्चिकराशिमें बैठा हो तो उसका क्या विचार करना है, मुनीश्वरोंकरके जो पहिले कहा है वैसा ही वह पुरुष होता है ॥ १० ॥

अथ वंध्यापतियोगः ।

कोणोदये भृगुतनयेऽस्तचक्रसंधौ वंध्यापतिर्यदिनसुतर्क्षमिष्टयुक्तम् ॥

जिसके लघुमें शनैश्चर बैठा हो और कर्क वृश्चिक मीनके अत नवांशमें प्राप्त शुक्र सातवें स्थित हो और पञ्चम घरमें कोई शुभ ग्रह नहीं हो तो वह मनुष्य वंध्या स्त्रीका स्वामी होता है अर्थात् उसकी व्याही स्त्रिके पुत्र नहीं होता है ॥ ये योग मकर, वृष, कन्या लघुवालेको होता है ॥

अथ स्त्रीपुत्रविहीनयोगः ।

पापग्रहैर्व्ययमदलग्नराशिसंस्थैः ।

क्षीणे शशिन्यसुतकलघ्नजन्मधीस्थे ॥ ११ ॥

जिसके पापग्रह बारहवें, सातवें, लघुमें स्थित हों क्षीणचन्द्रमा पंचम घरमें हो तो वह मनुष्य पुत्रहीन होता है ॥ ११ ॥

अथ तीर्थकृद्योगः ।

यस्य सूतौ नैधनस्थः सौम्यः सौरनिरीक्षितः ।

तस्य तीर्थान्यनेकानि भवन्त्यत्र न संशयः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें अष्टम स्थानमें शुभ ग्रह स्थित हों और शुभ ग्रह देसते हों तिस पुरुषको अनेक तीर्थ होते हैं इसमें संशय नहीं है ॥ १२ ॥

अथ जलयोगः ।

केद्रस्थिताः सूर्यशशांकमंदा व्ययस्थिताः पुण्यगृहस्थिता वा ।

जलाभिधं तज्जनयति योगमन्ये ग्रहाश्चेदबला मनुष्यः ॥ १३ ॥

केद्रमें सूर्य, चंद्रमा, शनैश्चर बैठे हों अथवा नौर्वे बैठे हों पूर्वोक्तग्रहोंसे बाकीके हीन ग्रह सम्पूर्ण निर्बल हों तो जलनाम योग होता है ॥ १३ ॥

तस्य फलम् ।

ऐश्वर्यविज्ञानधनैर्विहीनः पराव्रकांक्षी चपलोऽतिदुःखी ।

लघ्विभवेन्नो च जलप्रकृत्या युक्तो भवेन्ना जलयोगजन्मा ॥ १४ ॥

जो मनुष्य जलयोगमें पैदा हो वह ऐश्वर्य, चतुराई, धनकरके हीन, पराये अन्नकी इच्छा करनेवाला, चपल, अतिदुःखी हो, प्राप्ति नहीं हो तथा जलकी प्रकृति हो ॥ १४ ॥

अथ चौरयोगः ।

सबलौ रिपुगौ सौम्यभौमौ चौर्यपरो नरः ।

भवेत्स्वकर्मसामर्थ्याच्छिनत्यंत्रिकरानरीन् ॥ १५ ॥

कर्केऽर्कजो मृगे भौमः सूतौ चौर्यप्रसंगतः ।

दंडाच्छाखादिखंडानि तस्य जन्तोर्भवन्ति हि ॥ १६ ॥

बलसहित उठे घरमें बुध मंगल प्राप्त हो तो चोर हो, अपने कर्ममें समर्थ होता है, हाथ पैर छिन हों शत्रु नष्ट हों ॥ १५ ॥ जिसके जन्मकालमें कर्कका शनैश्चर, मकरका मंगल हो उस मनुष्यके चोरोंके संगरके दंडसे शाखादिक खण्ड होते हैं ॥ १६ ॥

अन्यच्च ।

मूर्तौ कूरास्तृतीये च लाभे वापि विशेषतः । नीचग्रहेण संदृष्टो

जायते चौरमानवः ॥ १७ ॥ दुश्चिक्याधिपतिर्नीचो नीचग्रहसमा-

युतः । लग्नेशो यदि नीचस्थश्चौरो भवति मानवः ॥ १८ ॥

मूर्तिम् वा तीसरे कूर ग्रह हों वा विशेषकरके लाभमें हों नीचग्रह देखता हो तो मनुष्य चोर होता है ॥ १७ ॥ तीसरे घरका स्वामी नीचका हो पापग्रहसहित लघेशभी नीचमें हो तो मनुष्य चोर होता है ॥ १८ ॥

तृतीये यदि नीचस्थो मंदश्चापि विशेषतः । नीचग्रहेण संहृष्टो जायते चौरमानवः ॥ १९ ॥ तृतीयस्थो यदा नीचः कुजराहुश-नियुतः ॥ लग्नाधीशोऽपि नीचस्थो जायते चौरमानवः ॥ २० ॥

तीसरे घरमें पापग्रह हो, तिसमें विशेष करके शनैश्चर हो, नीचग्रहकरके देखा गया हो तो वह मनुष्य चोर होता है ॥ १९ ॥ तीसरे घरमें जो नीच ग्रह हो, मंगल राहु शनैश्चरसहित लघेश भी नीचका हो तो वह मनुष्य चोर होता है ॥ २० ॥

व्यये कूरो धने कूरो दुश्चिकये वा विशेषतः । भावानां स्वामिनो नीचाश्वौरजातो भविष्यति ॥ २१ ॥ सहजेशः स्थितो लाभे यदि नीचसमायुतः । लग्ननाथो व्यये भावे चौरो भवति मानवः ॥ २२ ॥

बारहवें घरमें दूसरे पापग्रह हों, तीसरे घरमें विशेषकरके पापग्रह हो इन भावोंका स्वामी नीचमें हो तो वह मनुष्य चोरसे उत्पन्न हुआ चोर होता है ॥ २१ ॥ तीसरे घरका स्वामी लाभस्थानमें स्थित हो नीचग्रहोंके सहित लग्नका स्वामी बारहवें हो तो वह मनुष्य चोर होता है ॥ २२ ॥

अथ चौराधिपतियोगः ।

लग्नाधिपो हि सकूरो लग्ने नीचग्रहः स्थितः । सहजाधिपतिर्नी-चो जातश्वौराधिपो नरः ॥ २३ ॥ लग्नलाभपतिर्नीचः कूरग्रहस-मन्वितः । लाभनाथस्तृतीयस्थो जातश्वौराधिपो नरः ॥ २४ ॥

लघेश पापग्रहसहित हो, लग्नमें नीच ग्रह बैठा हो, तीसरे घरका स्वामी भी नीचका हो तो वह मनुष्य चोरोंका राजा होता है ॥ २३ ॥ जन्मलग्नपति और लाभेश नीच होकर पापग्रहसहित हों, लाभनाथ तीसरा हो तो वह मनुष्य चोरोंका राजा होता है ॥ २४ ॥

अथ भिक्षाटनयोगः ।

नीचारिभागोपगतैः समस्तैर्भश्वरैश्चन्निजतुंगभेऽपि ।

सत्कर्महीनः सततं मनुष्यो भिक्षाटने नीचजनानुयातः ॥२५॥

सम्पूर्ण ग्रह शत्रुके नवांशमें पृष्ठमें नीचके हों, चाहे जन्मकुण्डलीमें अपने उच्चके हों तो भी वह मनुष्य अच्छे कर्मांसे हीन, हमेशा भीखमांगता हुआ फिरता है, नीच मनुष्योंकरके सहित होता है ॥ २५ ॥

सर्वैश्चर्हैर्नीचसप्तनभागैः कमान्यगैर्भिक्षुक एव जातः ।

होरेश्वरो रिःफगते तु पापकूरान्विते भौमयुते शशांके ॥२६॥

सम्पूर्ण ग्रह सतांशमें नीचके हों वा दशवें हों तो वह मनुष्य भिखारी होता है। लग्नका स्वामी बारहवें हो और दशम घरमें पापग्रहसहित भौमयुत चंद्रमा बैठा हो तो वह मनुष्य भिखारी होता है ॥ २६ ॥

गृहात्परिभ्रष्टविदारयुतो गुणेन हीनो यदि वा जडोऽसौ ।

केद्रे शनौ लग्नगते शशांके जीवे व्यये भिक्षुक एव जातः ॥२७॥

केद्रमें शनैश्वर स्थित हो, जन्मलग्नमें चंद्रमा हो और बारहवें बृहस्पति हो तो वह मनुष्य भिखारी, घरसे निकला हुआ, गुणहीन जड होता है ॥२७॥

मेषे शशांके रविसूनुहृष्टे भिक्षाशनी

मेषका चंद्रमा हो, और शनैश्वर देखता हो तो वह मनुष्य भीख मांगकर भोजन करनेवाला होता है ॥

अथ धनहीनयोगः ।

भूमिसुतेन हृष्टे । निश्रीर्विलग्नस्य निशाकरस्य

जो पूर्वोक्त चंद्रमाको मंगल देखता हो तो मनुष्य धनहीन होता है ॥

अथ कृपणयोगः ।

लुभ्यो दिनेशात्मजदृष्टियोगात् ॥ २८ ॥

और वही चंद्रमा लग्नमें बैठा हो और शनि देखता हो तो वह मनुष्य कृपण होता है ॥ २८ ॥

अथ नीचवृत्तियोगः ।

चेत्प्राग्विलग्रेऽर्कसुतस्य दृक्के केंद्रस्य चंद्रेण निरीक्षिते च । भूपा-
न्वये यद्यपि जातजन्मा स्याज्ञीचकर्मा पुरुषो भवेत्सः ॥ २९ ॥

पूर्वलघ्नमें शनैश्चर द्रेष्काणमें हो, केंद्र चंद्रमाकरके दृष्ट हो
तो यदि राजाके वंशमें भी पैदा हो तो भी नीच कर्माका करनेवाला पुरुष
हो ॥ २९ ॥

भाग्याधिपे सूर्यसुते धनस्थे सुतस्थिते वा अशुभप्रहृष्टे । यदा
स पापो रिपुभावसंस्थो स्याज्ञीवनं तस्य च नीचवृत्त्या ॥ ३० ॥
कलानिधी कर्मगतेऽर्कपुत्रे लग्नात् सुते धर्मगते धनस्थे । मृत्यु-
स्थिते पापनभश्चरेद्द्रैः स्याज्ञीवनं तस्य च नीचवृत्त्या ॥ ३१ ॥

नवमस्थानका स्वामी और शनैश्चर दूसरे घरमें बैठे हों या पंचम
घरमें स्थित हों, पापश्चर्होकरके दृष्ट हों अथवा पापश्चर्हसहित छठे भावमें
स्थित हों तो उस मनुष्यका जीवन नीचवृत्तिसे होता है ॥ ३० ॥ चंद्रमा
दशवें घरमें हो और लग्नसे पंचम, नवम, दूसरे शनैश्चर स्थित हो और
आठवें घरमें पापश्चर्ह बैठे हों तो उस मनुष्यका नीच वृत्तिकरके जीवन
होता है ॥ ३१ ॥

अथ स्त्रीसहपुंश्चलयोगः ।

असितकुजयोर्वर्गेऽस्तस्थे सिते तदवेक्षिते ।

परयुवतिगो तौ चेत्सेदू ख्यिया सह पुंश्चलः ॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर मंगलके षड्वर्गम स्थित होकर शुक्र
सातवें बैठा हो, शनैश्चर मंगल दोनोंमेंसे कोई देखता हो तो वह मनुष्य
परदारगामी होता है अथवा शनैश्चर मंगल एक राशिमें चंद्रमासहित स्थित हों
और शनैश्चर या मंगलक नवांशादि वर्गमें शुक्र सातवें स्थानमें स्थित हो और
शनैश्चर या मंगल कोई दोनोंमेंसे देखता हो तो वह मनुष्य परदारगामी होता
है उसकी स्त्री परपुरुषगामिनी होती है ॥

अथ भार्यासुतहीनयोगः ।

भृगुजशशिनोरस्तेऽभार्यो नरो विसुतोऽपि वा ।

जिसके जन्मलग्नमें शुक्र अथवा चंद्रमासे सातवें शनैश्चर मंगल हों तो वह पुरुष स्त्रीहीन वा पुत्रहीन होता है ॥

अथ वृद्धास्त्रीवृद्धपुरुषयोगः ।

परिणततनू नृस्थौ दृष्टौ शुभैः प्रमदापतिः ॥ ३२ ॥

जिसके जन्मकालमें स्त्री पुरुष ग्रह एक राशिमें बैठे हों उनसे सातवें स्थानमें शुभग्रहोंसे दृष्ट शनैश्चर मंगल बैठे हों तो वह पुरुष वृद्ध अवस्थामें वृद्ध स्त्रीको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

अथ दुःखियोगः ।

शुक्रे वीर्यादयः सुधांशुः प्रपश्येष्ठग्राधीशं दुर्बलं स्यात्पस्वी ।

निःस्वो मत्यो दुःखितः शोकतपः स्वात्महीनो नैकलब्धान्नपानः ॥ ३३ ॥

शुक्रपक्षमें बली चंद्र लग्नपतिको देखता हो तो वह मनुष्य दुर्बल, तपस्वी, दुःखी, शोकसे संतत अपने जनोंसे हीन तथा धनरहित होता है ॥ ३३ ॥

ताराधीशे सौम्यवर्गेऽधिवीर्ये वोच्चक्षस्थान्ये खगा वा यदि स्युः ।
पश्येच्चंद्रं सूर्यजः प्राप्तवीर्यः कुर्यान्मत्यं तापसं दुःखभाजम् ॥ ३४ ॥

चंद्रमा वृथके नवांशमें अधिक बली होकर स्थित हो और बाकीके ग्रह उच्च राशिमें हों चंद्रमाको शनैश्चर बलसहित देखता हो तो वह मनुष्य तप करनेवाला तथा दुःखका भोगी होता है ॥ ३४ ॥

अथ वंशाध्वंसियोगः ।

भाग्याधिनाथे व्ययभावसंस्थे पापान्वितौ जन्मपलग्ननाथौ ।

अस्तंगतौ जन्मनि वास्य वंशाध्वंसी भवेन्ना गतपुत्रदारः ॥ ३५ ॥

वंशाच्छेदकर सुधांशुभृगुजकूरैः खतुर्यास्तमैः ।

जिस पुरुषके जन्मकालमें नवम घरका स्वामी बारहवें स्थित हो

(९२)

ज्योतिषश्यामसंव्रहः ।

और जन्मराशिका स्वार्थी पापग्रहसहित हो और लग्नेश अस्त हो वह मनुष्य वंशका नाश करनेवाला पुत्रस्त्रीरहित होता है ॥ ३५ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा, शुक्र, सूर्य, मंगल, शनैश्चर दशवें, चौथे, सातवें स्थित हों तो वह मनुष्य वंशनाशक होता है ॥

अथ शिल्पियोगः ।

शिल्पी कंटकगार्किणेदुजयुतरूप्यर्थोऽथ संवीक्षिते ।

जिस राशिसंबंधी त्रिशांशमें बुध स्थित हो वह राशि केंद्रमें स्थित हो और शनैश्चरकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य चित्रकर्मादिके कामसे आजीविका करनेवाला होता है ॥

अथ दासीजातज्ञानयोगः ।

अंत्ये दानवपूजितेऽर्कतनयस्यांशे च दासीसुतः ।

जिसके जन्मकालमें शनैश्चरके नवांशमें शुक्र लग्नसे बारहवें स्थानमें स्थित हो तो वह पुरुष दासीका पुत्र होता है ॥

अथ नीचकर्मकृद्योगः ।

नीचे दूनगयोश्च हेत्युडुपयोर्मदेन संदृष्टयोः ॥ ३६ ॥

लग्नसे सातवें सूर्य चंद्रमा दोनों बैठे हों और शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य नीचकर्म करनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

अथ चांडालयोगः ।

केंद्रे यदैकत्र गताः सितज्ञसुधांशवो राहुयुते विलग्ने । चांडालयोगे खलु यः प्रसूतो भवेन्मनुष्यो निजकर्महीनः ॥ ३७ ॥ जीवे सकेतौ यदि वा सराहौ चांडालता पापनिरीक्षिते चेत् । नीचांशगे नीचसमन्विते वा जीवो द्विजश्चेदपि ताहशः स्यात् ॥ ३८ ॥

केंद्रमें एकत्र होकर शुक्र बुध स्थित हों और चंद्रमा राहुसहित लग्नमें बैठा हो तो चांडाल नाम योग होता है । इसमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपने कर्मसे हीन होता है ॥ ३७ ॥ बृहस्पति, केतु अथवा राहुसहित हो और पापग्रह देखते

हों तो चांडाल होता है और वृहस्पति नीचराशि अथवा नीच नवांशमें पापग्रहसहित हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ ब्राह्मण भी हो सो भी चांडाल होता है ॥ ३८ ॥

अथ कुलपांसुयोगः ।

चतुष्टयस्थे सदसन्नभोगैराधिपञ्चद्रमसा न दृष्टे । यद्वा शरांशोपगतैः शुभाख्यैर्योगः स्मृतोऽयं कुलपांसुलाख्यः ॥ ३९ ॥

जिसके जन्मकालमें केंद्रमें शुभ अशुभ यह बैठे हों और लघेश दश-मस्थानमें प्राप्त हो और चन्द्रमा नहीं देखता हो अथवा धनराशिके नवांशमें शुभग्रह प्राप्त हों तो कुलपांसु नाम योग होता है ॥ ३९ ॥

तस्य फलम् ।

विदेशवासी स्वगृहच्युतश्च सदा दरिद्री गतपुत्रदारः । नरो भवेद्वौषगणाभिभूतो यो वै प्रजातः कुलपांसुलाख्ये ॥ ४० ॥

कुलपांसुयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य विदेशवास करनेवाला अपने घरसे पतित, हमेशा दरिद्री, पुत्रस्तीरहित, दोषके समूहकरके सहित होता है ॥ ४० ॥

अथ पिशाचयोगः ।

ग्रस्ते लघ्ने संस्थितेदौ च पापा धीर्घमस्था मानवः स्यात् पिशाचः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहुकरके असित चन्द्रमा लघ्नमें स्थित हो और नवमें पांचवें स्थानमें शनैश्चर वा मंगल स्थित हो तो वह मनुष्य पिशाची अथवा उसका इष्टदेव पिशाच होता है ॥

अथांधयोगः ।

ग्रस्ते भानौ लघ्नसंस्थे तथैव चक्षुर्धातः सर्वथा कल्पनीयः ॥ ४१ ॥

वैसे ही राहुसहित सर्य लघ्नमें स्थित हो और नवमें पांचवें शनैश्चर अथवा मंगल स्थित हो तौ वह मनुष्य अन्धा होता है ॥ ४१ ॥

अथ म्लेच्छयोगः ।

लग्ने मंदे भास्करे द्यूनसंस्थे पुण्यस्थे वा संस्थितावेकराशौ ।
श्रेष्ठो मत्यों नीचयोषानुसंगान्म्लेच्छो नूनं जायते नान्यथात्र
॥ ४२ ॥ द्रेष्काणे वा नंदभागेऽर्कमंदौ त्रिंशाशे वा संस्थितावे-
कराशौ । श्रेष्ठो मत्यों नीचयोषानुसंगान्म्लेच्छो नूनं जायते
नान्यथात्र ॥ ४३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें शनैश्चर और सातवें सूर्य स्थित हो अथवा नवमस्थानमें एक राशिमें स्थित हों तो श्रेष्ठ मनुष्य भी नीच खियोंके संगसे जरूर म्लेच्छ हो जाता है ॥ ४२ ॥ जिसके जन्मकालमें सूर्य शनैश्चर द्रेष्काण वा नवांश अथवा त्रिंशांशमें, पूर्वोक्त स्थानोंमें एकराशिमें स्थित हों तो मनुष्य श्रेष्ठकुलमें उत्पन्न हुआभी नीच खियोंके संगसे मुसलमान हो जाता है ॥ ४३ ॥

अथ कास्त्रीसंयोगयोगः ।

वंध्यासंगो मदे भानौ चंद्रे दासीसमाः स्त्रियः । कुजे रजस्वला-
संगो वंध्यासंगश्च कीर्तितः ॥ ४४ ॥ बुधे वेश्यार्थहीना वा वणि-
कस्त्री च प्रकीर्तिता ॥ गुरौ ब्राह्मणभार्या च गर्भिणीसंगमो भृगौ
॥ ४५ ॥ हीना वा पुष्पिता वा स्यान्मंदराहुफणीश्वरैः । राहौ
च गर्भिणीसंगः कृष्णया कुञ्जया शनौ ॥ ४६ ॥

जिस मनुष्यके सप्तम सूर्य स्थित हों तो वंध्या स्त्रीका संयोग कहना । चन्द्रमासे दासीसमा स्त्रीका संयोग होता है । मंगलकरके रजस्वला स्त्रीका संग अथवा बांझका संग कहे ॥ ४४ ॥ बुधसे धनहीन वेश्याका संग जानना अथवा वैश्यवर्णकी स्त्रीका संयोग कहना चाहिये । बृहस्पति करके ब्राह्मणकी स्त्रीका संयोग कहना । शुक्रकरके ब्राह्मणकी स्त्री गर्भवतीका संगम कहना चाहिये ॥ ४५ ॥ शनैश्चर राहु केतुकरके हीनवर्णकी स्त्री वा पुष्पवती स्त्रीका संग कहना । केवल राहुकरके गर्भिणी स्त्रीका संग कहना । शनिकरके श्यामवर्ण वा कुबड़ी स्त्रीका संयोग कहे ॥ ४६ ॥

अथ कस्मिन् गृहे संयोगः ।

एवं सुखस्थितैरेतैरीहकसंगममूलताम् । सूर्यादैः सुखगैर्वाच्यो
वाहनश्रवणिण्यः ॥ ४७ ॥ वनं गेहं च कुडचं च विहारो देवता-
लयम् ॥ जलं हरिगजस्थानमिति स्थानं निरूप्यते ॥ ४८ ॥

इस प्रकार चौथे स्थानमें स्थित व्रहोंकरके संगम कहे, सूर्यको आदि
लेकरके चौथे स्थानसे कहना चाहिये । चौथे सूर्य हो तो वाहनघरमें संग
कहना ॥ ४७ ॥ चंद्रमा करके वनमें, मंगलकरके घरमें, बुधकरके विहारके
स्थानमें, बृहस्पतिसे देवालयमें, शुक्रकरके जलस्थानमें, शनिकरके धुडशा-
लमें, राहुकरके गजशालामें संग कहना चाहिये ॥ ४८ ॥

अथ शूद्रेऽपि विप्रवद्योगः ।

ध्वजाहिमदैः सहितेऽपूज्ये शुक्रेक्षिते वा शशिसूनुदृष्टे ।

शूद्रोऽपि चेद्विप्रसमानमेति विद्यां च सर्वामधिगम्य जातः॥४९॥

जिसके जन्मकालमें मकरराशिमें बृहस्पति स्थित हो और शुक्रकरके
वा बुधकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य शूद्र भी ब्राह्मणके सदश होता है,
सम्पूर्ण विद्याओंका जाननेवाला होता है ॥ ४९ ॥

अथ विप्रवातियोगः ।

नीचे भृगौ धर्मगते सपापे द्विजप्रहर्ता यदि पापदृष्टे ॥

नीचराशिका शुक्र नवम स्थानमें पापश्रव सहित स्थित हो और पाप-
श्रव देखते हों तो वह मनुष्य विप्रवाती होता है ॥

अथ बालघातियोगः ।

विकर्ततामेति फणींद्रयुक्ते माने तदा भौमयुते शिशुमः ॥

नीचे गुरौ वासरनायके वा केंद्रस्थिते पापयुते शिशुमः ॥५०॥

और जो सूर्य राहुसहित मंगलयुत दशवे स्थित हो तो वह मनुष्य
बालकोंका मारनेवाला होता है और नीचका बृहस्पति सूर्यसहित पापश्रहों
सहित केंद्रमें हो तो वह मनुष्य बालकोंका मारनेवाला होता है ॥ ५० ॥

अथ गोमृगजातिधातियोगः ।

केद्वे सपापे शुभदृष्टियुक्ते रथे भृगौ गोमृगजातिहंता ॥ ५१ ॥

केन्द्रमें पापग्रह स्थित हो और शुभग्रह देखते हों, अष्टम शुक्र स्थित हो तो वह मनुष्य गोमृगजातिके जीवोंका मारनेवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ पक्षिहंतृयोगः ।

शशांकसौम्यौ दशमस्थितौ वा पापेक्षितौ पापसमागमौ वा ।

नीचांशगौ सौम्यदृशा विहीनौ जातस्तु नित्यं खलु पक्षिहंता ॥ ५२ ॥

चंद्रमा, बुध दशमस्थानमें स्थित हों, पापग्रहोंकरके दृष्ट हों या पापग्रह सहित हों, नीचके नवांशमें स्थित हों और शुभग्रह कोई नहीं देखते हों तो वह मनुष्य सदैव काल पक्षियोंका मारनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथ दासयोगः ।

राश्यंशपोष्णकरशीतकरामरेज्यैर्नीचाधिपांशकगतैररिभागगर्वा ।

एभ्योऽल्पमध्यबद्धुभिः क्रमशः प्रसूता ज्ञेया स्युरभ्युपगमक्रयगर्भदासाः ॥ ५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा जिस नवांशमें बैठा हो उस राशिका स्वामी और सर्य, चन्द्रमा, मंगल, वृहस्पति अपने नीचराशिके नवांशमें अथवा अपने शत्रुके नवांशमें स्थित हो तो वह मनुष्य दास होता है । परंतु यहां तीन भेद हैं, पूर्वोक्त चारों ग्रहोंमेंसे एक हो तो वह मनुष्य अपनी आजीविकाके निमित्त दास होता है और दो ग्रह हों तो वह मनुष्य मोल खरीदा हुआ दास होता है और जो चारों ग्रह पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हों तो वह मनुष्य दासीका पुत्र दास होता है ॥ ५३ ॥

अथ भृतकयोगः ।

मंदारसूर्यैः शुभदृष्टिहीनैः कर्मस्थितैः स्याद्भृतको मनुष्यः ॥ श्रेष्ठः
खगैकेन च मध्यमश्च द्वाभ्यां त्रिभिश्चाधम एव नूनम् ॥ ५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, शनैश्चर, मंगल लग्नसे दशवें स्थानमें
स्थित हों और कोई शुभघ्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य दास होता है ।
परन्तु पूर्वोक्त तीनों ग्रहोंमें से एक हो तो वह मनुष्य दासोंमें श्रेष्ठ होता है ।
दो ग्रहोंके होनेसे मध्यम दास और तीन ग्रहोंके होनेसे दासोंमें अधम
दास होता है ॥ ५४ ॥

अथ सहस्राधिपतियोगः ।

सहस्रनिष्कभर्ता स्याल्लग्नेशस्य नवांशके ।

गोपुरांशगते कर्मनाथेन सति वीक्षिते ॥ ५५ ॥

जिस पुरुषके जन्मकालमें लग्नेश जिस नवांशमें स्थित हो उस
नवांशका स्वामी गोपुरांशमें स्थित हो और उसको दशमेश देखता हो तो
वह मनुष्य एक हजार रूपयोंका मालिक होता है ॥ ५५ ॥

अथ सहस्रद्वयाधिपतियोगः ।

कर्मेशसंयुक्तनवांशनाथसंयुक्तसप्तांशपती बलाढ्ये ॥

शुक्रंण देवेन्द्रपुरोहितेन दृष्टे सहस्रद्वयनिष्कभर्ता ॥ ५६ ॥

जिसके जन्मकालमें दशम घरका स्वामी नवांशपति और सप्तां-
शपति दोनों एकत्रित होकर बलवान् हों, शुक्र बृहस्पति देखते हों तो
वह मनुष्य एक हजार रूपयोंका मालिक होता है ॥ ५६ ॥

अथ त्रिसहस्राधिपतियोगः ।

सो नवांशसंयुक्ते धनलाभसमन्विते ।

तर्दाभासिप तथायुक्ते सहस्रत्रयनिष्कयुक्त ॥ ५७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधके पष्ठांशमें दूसरे ग्यारहवें युक्त
हो उन स्थानोंके स्वामी भी उन्हीं स्थानोंमें स्थित हों तो वह मनुष्य तीन
हजार रूपयोंका मालिक होता है ॥ ५७ ॥

अथ अष्टसहस्राधिपतियोगः ।

धनस्थेशद्वकाणेशसंयुक्तसुनिभागपः ।

सवोत्तमबलोपेतस्त्वष्टसाहस्रनिष्कयुक्त ॥ ५८ ॥

अथ गोमृगजातिवातियोगः ।

केद्वे सपापे शुभदृष्टियुक्ते रथे भूगौ गोमृगजातिहंता ॥ ५१ ॥

केन्द्रमें पापयह स्थित हो और शुभयह देखते हों, अष्टम शुक्र स्थित हो तो वह मनुष्य गोमृगजातिके जीवोंका मारनेवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ पक्षिहंतृयोगः ।

शशांकसौम्यौ दशमस्थितौ वा पापेक्षितौ पापसमागमौ वा ।

नीचांशगौ सौम्यदशा विहीनौ जातस्तु नित्यं खलु पक्षिहंता ॥ ५२ ॥

चंद्रमा, बुध दशमस्थानमें स्थित हों, पापयहोंकरके दृष्ट हों या पापयह सहित हों, नीचके नवांशमें स्थित हों और शुभयह कोई नहीं देखते हों तो वह मनुष्य सदैव काल पक्षियोंका मारनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथ दासयोगः ।

राश्यंशपोष्णकरशीतकरामरेज्यैनीचाधिपांशकगतैररिभागगैर्वा ।

एभ्योऽल्पमध्यबहुभिः क्रमशः प्रसूता ज्ञेया स्युरभ्युपग-
मक्रयगर्भदासाः ॥ ५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा जिस नवांशमें बैठा हो उस राशिका स्वामी और सर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अपने नीचराशिके नवांशमें अथवा अपने शत्रुके नवांशमें स्थित हो तो वह मनुष्य दास होता है । परंतु यहां तीन भेद हैं, पूर्वोक्त चारों ग्रहोंमेंसे एक हो तो वह मनुष्य अपनी आजीविकाके निमित्त दास होता है और दो ग्रह हों तो वह मनुष्य मोल स्वरीदा हुआ दास होता है और जो चारों ग्रह पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हों तो वह मनुष्य दासीका पुत्र दास होता है ॥ ५३ ॥

अथ भृतकयोगः ।

मंदारसूर्यैः शुभदृष्टिहीनैः कर्मस्थितैः स्याद्भृतको मनुष्यः ॥ श्रेष्ठः

खगैकेन च मध्यमश्च द्वाभ्यां त्रिभिश्चाधम एव नूनम् ॥ ५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, शनैश्चर, मंगल लग्नसे दशवें स्थानमें स्थित हों और कोई शुभयह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य दास होता है । परन्तु पूर्वोक्त तीनों ग्रहोंमें से एक हो तो वह मनुष्य दासोंमें श्रेष्ठ होता है । दो ग्रहोंके होनेसे अध्यम दास और तीन ग्रहोंके होनेसे दासोंमें अधम दास होता है ॥ ५४ ॥

अथ सहस्राधिपतियोगः ।

सहस्रनिष्कभर्ता स्याल्लग्नेशस्य नवांशके ।

गोपुरांशगते कर्मनाथेन सति वीक्षिते ॥ ५५ ॥

जिस पुरुषके जन्मकालमें लग्नेश जिस नवांशमें स्थित हो उस नवांशका स्वामी गोपुरांशमें स्थित हो और उसको दशमेश देखता हो तो वह मनुष्य एक हजार रूपयोंका मालिक होता है ॥ ५५ ॥

अथ सहस्रदयाधिपतियोगः ।

कर्मेशसंयुक्तनवांशनाथसंयुक्तसप्तांशपतौ बलाढ्ये ॥

शुक्रेण देवेन्द्रपुरोहितेन द्वष्टे सहस्रदयनिष्कभर्ता ॥ ५६ ॥

जिसके जन्मकालमें दशम घरका स्वामी नवांशपति और सप्तांशपति तीनों एकत्रित होकर बलवान् हों, शुक्र बृहस्पति देखते हों तो वह मनुष्य दो हजार रूपयोंका मालिक होता है ॥ ५६ ॥

अथ त्रिसहस्राधिपतियोगः ।

सौम्यषष्ठांशसंयुक्ते धनलाभसमन्विते ।

तर्दीशोऽपि तथायुक्ते सहस्रत्रयनिष्कयुक्त ॥ ५७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उपुष्टके षष्ठांशमें दूसरे ग्यारहवें युक्त हो उन स्थानोंके स्वामी भी उन्हीं स्थानामें स्थित हों तो वह मनुष्य तीन हजार रूपयोंका मालिक होता है ॥ ५७ ॥

अथ अष्टसहस्राधिपतियोगः ।

विनाशकर्त्ता विनाशकर्त्ता विनाशकर्त्ता विनाशकर्त्ता ॥ ५८ ॥

सप्तांशमध्यापतस्त्वष्टसाहस्रनिष्कयुक्त ॥ ५८ ॥

(९८)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे धरका स्वामी, द्रेष्काणका स्वामी, सप्तमांशपति तीनों एकत्रित होकर सम्पूर्ण बलसहित हों तो वह मनुष्य आठ हजार रूपयोंका स्वामी होता है ॥ ५८ ॥

अथ अयुताधिपतियोगः ।

लग्नेशस्थद्वकाणेशसंयुक्तमुनिभागपः ।

वैशषिकांशकगतस्त्वयुतं धनमाप्नुयात् ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नेश, द्रेष्काणेश और सप्तमांशपति ये एकत्रित होकर वैशषिकांशमें प्राप्त हों तो वह मनुष्य दश हजार रूपयों-का स्वामी होता है ॥ ५९ ॥

अथ लक्षाधिपतियोगः ।

कर्मेशस्थद्वकाणेशनाथसंयुक्तसप्तपः ।

ऐरावतांशसंयुक्तो धनलक्षं समश्नुते ॥ ६० ॥

कर्मेश, द्वकाणेश और सप्तमांशपति ये तीनों ऐरावतांशमें बैठे हों तो वह पुरुष लक्षाधिपति होता है ॥ ६० ॥

अथ द्विलक्षाधिपतियोगः ।

लक्षद्वयं धनं याति चतुष्केंद्रे शुभान्विते ।

सिंहासनांशसंयुक्ते सति पारावतांशके ॥ ६१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चारों केंद्रोंमें शुभग्रह सिंहासनांश अथवा पारावतांशमें हों तो वह पुरुष द्विलक्षाधिपति होता है ॥ ६१ ॥

अथ त्रिलक्षाधिपतियोगः ।

लक्षत्रयाधिकारी स्याल्लाभलग्नधनाधिपे ।

वैशषिकांशसंयुक्ते सुशीलो बुद्धिमान् भवेत् ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लाभ, लग्न, धन इन स्थानोंके स्वामी वैशषिकांशमें प्राप्त हों तो वह मनुष्य सुशील, बुद्धिमान्, तीन लक्षरूपयों-का स्वामी होता है ॥ ६२ ॥

अथ तदूर्ध्वं धनपतियोगः ।

तदूर्ध्वं वित्तपः स्यानु धनलाभपती यदा । वृद्धिकेद्रगतौ तौ
चेद्वलिनौ भाग्यपस्तथा ॥ ६३ ॥ केद्रत्रिकोणगे वीर्ये त्वथवा
भवनाथयुक्त । वैशेषिकांशगच्छेनु धनलक्षं समश्नुते ॥ ६४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे ग्यारहवें घरका स्वामी वृद्धिकेद्रमें
स्थित हो और नवम घरका स्वामी बली हो तो वह मनुष्य तीनलक्ष
रूपयोंसे अधिक धनपति होता है ॥ ६३ ॥ वही भाग्यस्थानपति केद्र वा
त्रिकोणमें बैठा हो, ग्यारहवें भावके स्वामीकरके सहित वैशेषिकांशमें स्थित
हो तो वह मनुष्य तीन लक्ष रूपयोंसे अधिक धनपति होता है ॥ ६४ ॥

अथ कोट्यधिपतियोगः ।

लग्नांशनाथभाग्येशाः परमोच्चांशसंयुताः ।

वैशेषिकांशे लाभेशो तदा कोटीश्वरो भवेत् ॥ ६५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नपति, नवांशनाथ और भाग्येश पर-
मोच्चांशस्थित हो, ग्यारहवें घरका स्वामी वैशेषिकांशमें प्राप्त हो तो वह
मनुष्य कोट्यधिपति योगका स्वामी होता है ॥ ६५ ॥

अथ ऋणदातृयोगः ।

ऋणप्रदो विलग्नेशः संयुक्तनवभागपः । दृष्टो देवेद्रगुरुणा केद्र-
कोणस्थितो भवेत् ॥ ६६ ॥ वित्तलाभपसंयुक्तरूपंशकेशन-
वांशकः । वैशेषिकः केन्द्रकोणे ऋणदाता भवेन्नरः ॥ ६७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नका स्वामी और नवांशपति दोनों
एकत्रित होकर केद्र अथवा त्रिकोणमें स्थित हों और वृहस्पति देस्तता हो
तो वह मनुष्य ऋणका देनेवाला होता है ॥ ६६ ॥ दूसरे ग्यारहवें घरके
स्वामीकरके सहित त्रिंशांश और नवांशपति दोनों केद्रत्रिकोणमें वैशेषिकां-
शमें प्राप्त हों तो वह मनुष्य ऋण देनेवाला होता है ॥ ६७ ॥

अथ ऋणदातृयोगः ।

ऋणग्रस्तो धने पापे लग्नेश व्ययसंयुते । कर्मेशलाभनाथेन
युते हृष्टे विशेषतः ॥ ६८ ॥ धनेशो नीचराशिस्थे कूर्मपृष्ठांशु-
संयुते ॥ लाभेशोऽपि तथा मुक्ते ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥ ६९ ॥
दिनेशकरलुतस्तु धनेशो नीचराशिगः । माषान्विते हृष्टे कूर्म-
ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥ ७० ॥

जिस मनुष्यके धनस्थानमें पापग्रह स्थित हों और लग्नेश वारहवें
स्थित हों, कर्मेश और लाभेशकरके युत अथवा हृष्ट हो तो वह मनुष्य
ऋणी होता है ॥ ६८ ॥ धनस्थानका स्वामी नीचराशिमें दैदा हो और
पापशत्रुके पृष्ठांशमें स्थित हो और लाभस्थानपति उसी पृष्ठांशमें हो तो
वह मनुष्य ऋणग्रस्त अर्थात् कर्जबंद होता है ॥ ६९ ॥ सूर्यकरके वासा
शनवरधानका स्वामी नीचराशिमें प्राप्त पापग्रह सहित दूसरे अष्टम हो तो
वह गण्डार्दणी होता है ॥ ७० ॥

अथ ज्योतिशास्त्रविद्योगः ।

केन्द्रे शुभे वागधिपे बालादये शुक्रे धने आतृगते च सौम्ये ।
स्वोच्छने जाने दानवपूजितो वा ज्योतिर्विदां श्रेष्ठतरो मनुष्यः ॥
॥ ७१ ॥ गणितज्ञो भवेजातो वाग्भावे भूमिनन्दनः । ससोमे
बुधसंहर्षे केन्द्रे वा सोमनंदने ॥ ७२ ॥

केन्द्रमें शुभ दैदा हो, शुहस्पति बलसहित हो, शुक्र धनस्थानमें हो,
तीसरे घरमें शुभग्रह स्थित हो अथवा धनस्थानमें उच्च राशिका शुक्र स्थित
हो तो वह मनुष्य ज्योतिर्विदोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ ७१ ॥ जो पंचम घरमें मंगल
स्थित हो, और चंद्रमात्मक बुध देखता हो अथवा बुध केन्द्रमें स्थित हो तो
वह मनुष्य गणितशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ७२ ॥

वाग्भावपे बुधे स्वोच्चे लग्ने देवेन्द्रपूजिते । शनावष्टमसंयुक्ते
गणितज्ञो भवेन्नरः ॥ ७३ ॥ केन्द्रे त्रिकोणगे जीवे शुक्रे स्वोच्च-
गते सति । वाग्भावपेंदुपुत्रे वा गणितज्ञो भवेन्नरः ॥ ७४ ॥

पंचम घरका स्वामी और बुध ये उच्च राशिमें स्थित हों और लग्नमें बृहस्पति बैठा हो, अष्टम शनैश्चर स्थित हो तो वह मनुष्य गणितशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ७३ ॥ केंद्र अथवा त्रिकोणमें बृहस्पति स्थित हो और शुक्र उच्चराशिका पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हो अथवा पंचम घरका स्वामी और बुध ये दोनों पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हों तो वह मनुष्य गणितशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ७४ ॥

अथ न्यायशास्त्रविद्योगः ।

गुरुशुक्रौ धनेशौ चेद्रविभौ मनिरीक्षितौ ।

मूलत्रिकोणे तुंगे वा तर्कशास्त्रविदांवरः ॥ ७५ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति और शुक्र और धनेश ये मूल त्रिकोण वा उच्चराशिमें स्थित केंद्रत्रिकोणवर्ती हों और रवि मंगल इनको देखेहों तो वह मनुष्य न्यायशास्त्रके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ ७५ ॥

अथ शब्दशास्त्रविद्योगः ।

संपूर्णबलसंयुक्ते गुरौ तद्वनेश्वरे ।

दिनेशभृगुसंहृष्टः शाब्दिकोऽयं भवेन्नरः ॥ ७६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बलकरके सहित बृहस्पति और पंचम घरका स्वामी हो उसको सर्य शुक्र देखते हों तो वह मनुष्य व्याकरणशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ७६ ॥

अथ वेदांतविद्योगः ।

वेदांतपरिशीलः स्यात्केद्रकोणे गुरौ सति ।

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें केंद्र अथवा त्रिकोणमें बृहस्पति हो तो वह मनुष्य वेदांतवेत्ता होता है ॥

अथ काव्यशास्त्रविद्योगः ।

बुधेन भृगुणा युक्तो काव्यशास्त्रविशारदः ॥ ७७ ॥

(१०२) ज्योतिषश्यामसंयहः ।

और वही बृहस्पति बुधशुक्रसहित हो तो वह मनुष्य काव्यशास्त्रमें प्रवीण होता है ॥ ७७ ॥

पंचमे भवने शुक्रः सुतेशो केंद्रकोणगे ॥

ससोमे गुरुसंहष्टे काव्यविद्यारतिर्भवेत् ॥ ७८ ॥

जिसके जन्मसमयमें पंचम घरमें शुक्र स्थित हो और पंचमेश केंद्र अथवा त्रिकोणमें स्थित हो, चंद्रमासहित उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य काव्यविद्यामें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ७८ ॥

अथ षट्शास्त्रविद्योगः ।

षट्शास्त्रवल्लभः केंद्रे जीवे दानवपूजिते ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केंद्रमें बृहस्पति और शुक्र बैठे हों तो वह मनुष्य षट्शास्त्रका जाननेवाला होता है ॥

अथ वैद्यशास्त्रविद्योगः ।

पंचमे रविणा भौमो वैद्यविद्यारतिः सदा ॥ ७९ ॥

जिसके जन्मसमयमें पंचम घरमें सर्यं मंगल स्थित हों तो वह मनुष्य वैद्यविद्या अर्थात् हकीमी जाननेवाला होता है ॥ ७९ ॥

अथ मन्त्रशास्त्रविद्योगः ।

गुरुः केंद्रत्रिकोणस्थः सकूरे तंत्रविन्नरः ॥

सपापे केंद्रकोणस्थे भौमेऽप्येवं विनिर्दिशेत् ॥ ८० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति केंद्र अथवा त्रिकोणमें पापग्रह-सहित स्थित हो तो वह मनुष्य तंत्रशास्त्रका जाननेवाला होता है और जो मंगल पापग्रहसहित केंद्र अथवा त्रिकोणमें स्थित हो तो वह मनुष्य तंत्रशास्त्रका वेत्ता होता है ॥ ८० ॥

अथ फारसीअरबीयोगः ।

लग्नस्थितो निशानाथः सुतेशो पापसंयुते ।

पंचमे भवने पापः फारसीमारबीं पठेत् ॥ ८१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उथमें चन्द्रमा स्थित हो और पापग्रहों-सहित पंचमेश हो और पंचम भवनमें पापग्रह हो तो वह मनुष्य फारसी अथवा अरबीका पाठी होता है ॥ ८१ ॥

अथ गोरुंडविद्यायोगः ।

पंचमे रविणा भौमे कविमंदतमा अपि ।

पापग्रहेण संदृष्टा विद्या ताम्रमुखी भवेत् ॥ ८२ ॥

जिस मनुष्यके पंचम घरमें सूर्य मंगल स्थित हों अथवा राहु, शनै-श्र, शुक्र इनमेंसे कोई स्थित हों और पापग्रह देखते भी हों तो वह मनुष्य अगरेजीविद्याका जाननेवाला होता है ॥ ८२ ॥

अथ जैनशास्त्रविद्योगः ।

रविशुक्रौ त्रिकोणस्थौ तमोमंदध्वजैर्युर्तो ।

शुभग्रहेण संदृष्टो जैनविद्याविशारदः ॥ ८३ ॥

जिस मनुष्यके त्रिकोणस्थानमें सूर्य, शुक्र, स्थित हों, राहु, शनि वा केतुसहित हों, शुभग्रह देखते हों तो वह प्राणी जैनशास्त्रमें प्रवीण होता है ॥ ८३ ॥

अथ गारुडीविद्याविद्योगः ।

शनिभौमगते लग्ने गुरौ चंद्रनवांशके ।

अहिनाथेन संयुक्तो गारुडीज्ञो भवेन्नरः ॥ ८४ ॥

जिसके लग्नमें शनैश्चर मंगल स्थित हों और बृहस्पति चन्द्रमाके नवांशमें बैठा हो, राहु वा केतुकरके सहित हो तो वह मनुष्य गारुडी-विद्या अर्थात् सांप पकड़नेमें चतुर होता है ॥ ८४ ॥

अथ धर्माध्यक्षयोगः ।

गुरौ वा भृगुपुत्रे वा स्वोज्ञे मित्रांशके शुभे ।

धर्माधिपे बलयुते धर्माध्यक्षो भवेन्नरः ॥ ८५ ॥

बृहस्पति अथवा शुक्र अपने उच्चकी राशिमें स्थित हों और शुभ-

(१०४)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

यह अपने मित्रके नवांशमें स्थित हो और नवम घरका स्वामी बलसहित हो तो वह मनुष्य धर्माधिकारी होता है ॥ ८५ ॥

अथ दानाध्यक्षयोगः ।

दानाधिपेन संहृष्टे लग्ने तन्नायकेऽपि वा । तस्मिन् केंद्रत्रिकोणस्थे दानाध्यक्षो भवेत्तरः ॥ ८६ ॥ जातः पुरोहितो वाथ ब्रह्मवंशस-
मुद्भवः । दानाध्यक्षस्तदा जातो वर्णभेदमिति क्रमात् ॥ ८७ ॥

बृहस्पति शुक्र ये केंद्रमें बैठे हों और नवमभावके स्वामीकरके हृष्ट हो तो (एको योगः) अथवा नवमभावका स्वामी लग्नमें स्थित हो और बृहस्पति वा शुक्र केंद्र वा त्रिकोणमें स्थित हों तो वह प्राणी दानाध्यक्ष होता है ॥ ८६ ॥ अब जो पुरोहितके वंशमें उत्पन्न हो वा ब्राह्मणोंके वंशमें उत्पन्न हो तो वह दानाध्यक्ष होता है, अन्य वंशमें उत्पन्न हुआ मनुष्य दान करनेवाला होता है । ये वर्णभेदसे जानना चाहिये ॥ ८७ ॥

अथ महादानकृद्योगः ।

भाग्ययोगे तु संप्राप्ते दानयोगे तथा भवेत् । राजयोगेऽ-
थवा प्राप्ते महादानकरो भवेत् ॥ ८८ ॥ चतुर्थे दानभावेश
कर्मेशो केंद्रमाश्रिते । व्ययेशो गुरुसंहृष्टे महादानकरो भवेत्
॥ ८९ ॥ भाग्येशेनापि संहृष्टः स्वोच्चस्थो भूमिनंदनः ॥
लाभेशो केंद्रभावस्थे महादानतरो भवेत् ॥ ९० ॥

भाग्यवान् योगमें पैदा हो, दानयोग भी तैसे ही हो और उसी कुण्डलीमें राजयोग भी हो तो वह प्राणी महादानका करनेवाला होता है ॥ ८८ ॥ जो नवम घरका स्वामी चौथे स्थानमें स्थित हो और दशमभावका स्वामी केंद्रमें स्थित हो और बारहवें घरके स्वामीको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य महादानका करनेवाला होता है ॥ ८९ ॥ भाग्येशकरके हृष्ट उच्चराशिमें बुध स्थित हो और लाभेश केंद्रमें बैठा हो तो वह मनुष्य महादान करनेवाला होता है ॥ ९० ॥

अथ गुरुभक्तियोगः ।

गुरुस्थानेशसंयुते नवांशाधिपतौ यदा । गुरुशुक्रेक्षिते वापि
गुरुभक्तियुतो नरः ॥ ९१ ॥ गुरुस्थाने सौम्ययुते गुरुसंबंध-
संयुते । तदीशे तनुभावस्थे गुरुभक्तियुतो भवेत् ॥ ९२ ॥

नवमभावके स्वामी नवांशनाथसहित हो और शुक्र, बृहस्पति देखते
हों तो वह प्राणी गुरुका भक्त होता है ॥ ९१ ॥ नवम धर्मे शुभग्रह
स्थित हो, बृहस्पति संबंध करता हो और नवमभावका स्वामी लग्नमें
स्थित हो तो वह मनुष्य गुरुका भक्त होता है ॥ ९२ ॥

अथ गुरुदारगामियोगः ।

चन्द्रे सपापे यदि धर्मराशौ भृगोः सुते वा गुरुदारगामी ।

धर्माधिपे ताहशखेचरेण युते सपापे गुरुदारगामी ॥ ९३ ॥

धर्माधिपे स्वांशपतौ तथैव युते तदा ताहशदारगामी ।

वयोधिकस्त्रीगमनं वदंति चन्द्रे सपापे यदि धर्मराशौ ॥ ९४ ॥

चन्द्रमा पापग्रहसहित जो नवमस्थानमें स्थित हो अथवा शुक्र पाप-
ग्रहसहित नवमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य गुरुदारगामी होता है ।
नवमस्थानका स्वामी पापग्रहसहित हो तो वह मनुष्य गुरुदारगामी होता
है ॥ ९३ ॥ नवमस्थानका स्वामी और नवांशपति पापग्रह हो तो वह
मनुष्य गुरुकी स्त्रीके सहश स्त्रियोंसे गमन करनेवाला होता है और चन्द्रमा
पापग्रहसहित नवमस्थानमें स्थित हो तो वह प्राणी अपनेसे ज्यादे
उमरकी स्त्रियोंसे गमन करनेवाला होता है ॥ ९४ ॥

क्षीणे निशीशे त्वथवा तदंशे शुक्रे तथैवं गुरुदारगामी ।

धर्माधिपे नीचगते तदंशे शुक्रेण युक्ते गुरुदारगामी ॥ ९५ ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु मिश्रयोगो विचित्रयुक्त ।

षष्ठाध्याय इदं प्रोक्तं श्यामलालेन धीमता ॥ ९६ ॥

इति श्रीविंशतिरेलिकस्थगौडवंशावतंस श्रीबलदेवप्रसादात्मज-

राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-

संग्रहे मिश्रयोगवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

(१०६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

क्षीणचंद्रमा शुक्रसहित हो अथवा चंद्रमाके नवांशमें शुक्र हो तो वह मनुष्य गुरुदारगामी होता है । नवमस्थानका स्वामी नीचराशिमें स्थित हो और उसके नवांशमें शुक्र स्थित हो तो वह मनुष्य गुरुदारगामी होता है ॥ ९५ ॥ इस अध्यायके बीचमें मिले हुए योग अद्भुत सहित हैं ऐसा यह छठा अध्याय श्यामलाल बुद्धिमान् करके कहा गया है ॥ ९६ ॥

इति वंशवरेलिकस्थराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसु-
दरीभाषाटीकायां पष्ठोऽध्यायः सम्पूर्णः ॥ ६ ॥

अथ शरीरदोषाध्यायप्रारंभः ।

अथ काणयोगः ।

धनस्थिते कूरयुते सिते चेत्काणोऽथवा मंदविलोचनेन ।

मूको द्वितीये त्रिलवे तृतीये स्खलद्विरःस्यान्मनुजस्तदानीम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके दूसरे घरमें पापग्रहसहित शुक्र बैठा हो तो वह मनुष्य काना होता है अथवा उसके छोटे नेत्र होते हैं ॥

अथ मूकयोगः ।

वही शुक्र पापग्रहसहित द्वितीय नवांशगत दूसरे स्थानमें हो तो मनुष्य गूंगा होता है ॥

अथ स्खलद्वीर्योगः ।

वही शुक्र पापग्रहसहित तीसरे घरमें तीसरे नवांशमें स्थित हो तो स्खलद्विर अर्थात् तोतला होता है ॥ १ ॥

द्रव्यव्यये तु कालस्य पुरुषस्य तु लोचने । ग्रहभावप्रकारेण अन्धकाणौ वदेद्बुधः ॥ २ ॥ वामं वा दक्षिणं चैव कूरयुक्तं तु लोचनम् । तत्स्वामिनो हृषिपाते तद्विनष्टं बुधैः स्मृतम् ॥ ३ ॥

दूसरे बारहवें स्थान कालपुरुषके दोनों नेत्र हैं सो इन स्थानोंमें ग्रहों-करके अंध अथवा काणयोग विद्वान् कहे ॥ २ ॥ वाम दक्षिण नेत्र जो पाप-

श्रहयुत हो और उसी भावके स्वामी करके दृष्ट हो तो उस नेत्रको पंडित
जन नष्ट कहा करते हैं ॥ ३ ॥

धनभं दक्षिणं नेत्रं व्ययभं वामनेत्रकम् ॥ यत्र तत्र स्थिताः
क्लरास्तद्वावे पीडनं स्मृतम् ॥४॥ धनगता रविराहुशनैश्चरा
धनपतिर्यदि वास्तमुपागतः ॥ खलयुतो नहि पश्यति तत्पदं
भवति चात्र नरो भुवि काणकः ॥५॥ व्ययगृहं रविराहुसमा-
युतं व्ययपतिर्यदि वास्तमुपागतः ॥ अथ यदा शनिनाथ-
युतो स वा भवति चात्र नरो भुवि काणकः ॥ ६ ॥

धनस्थान कालपुरुषका दहिना नेत्र है और बारहवां वामनेत्र है ।
इन स्थानोंमें जो पापश्रह स्थित हों उसी भावको पंडित कहना चाहिये
॥ ४ ॥ धनस्थानमें सूर्य, राहु, शनैश्चर स्थित हों, धनभावका स्वामी
अस्त होय, पापश्रह करके सहित हो और धनस्थानको देखता भी न हो
तो वह मनुष्य पृथिवीपै काणा होता है ॥ ५ ॥ बारहवें वरमें सूर्य राहु
स्थित हों और धनस्थानपति अस्तका हो अथवा शनैश्चर करके सहित
हो तो वह मनुष्य धरतीपै काणा होता है ॥ ६ ॥

अथ अंधयोगः ।

सिंहे विलगे रविशीतभानू मंदारदृष्टौ कुरुते नरोऽधः ॥ शुभा-
शुभैर्बुद्बुदनेत्रयुग्मो वामं हिनस्त्यज्ज इनोऽत्यगोऽन्यत् ॥७॥
धनारिरंध्रव्ययसंस्थिताश्चेत्सूर्यारसूर्यात्मजशीतभासः ॥ अंधं
प्रकुर्युः स्वबलानुसाराः खेटस्य दोषान्मनुजस्य नूनम् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें सिंह लग हो उसमें सूर्य चन्द्रमा स्थित
हो और शनैश्चर, मंगल देखते हों तो वह प्राणी अन्धा होता है और
शुभाशुभ दोनों श्रह देखते हों तो वह मनुष्य छोटे नेत्र, कम देखनेवाला
होता है और बारहवें स्थानमें सूर्य चन्द्रमाका योग हो तो वह मनुष्य वाम-
नेत्र करके हीन होता है ॥ ७ ॥ दूसरे, छठे अष्टम बारहवें सूर्य मंगल

शनैश्चर, चन्द्रमा स्थित हों तो अपने बलके माफिक श्रहोंके दोषसे मनुष्यको अन्धा करते हैं ॥ ८ ॥

दुश्चिक्यगो रविविधू यदि कंटकस्थौ केंद्रस्थितेऽवनिसुते खल-
वेशमगे वा ॥ दृष्टे खलैर्निधनपद्व्ययगः शुभाः स्युर्मेषूरणे
च भवने तपने तदांधः ॥ ९ ॥ सुतांबुगौ पापखगौ विशेषा-
चंद्रेऽष्टरिःकारिगतेऽधता स्यात् ॥ शुभग्रहाणामवलोकहीने
त्वंधोभवत्येव शुभैर्न दोषः ॥ १० ॥

सूर्य चन्द्रमा तीसरे स्थानमें प्राप्त हों अथवा केन्द्रमें स्थित हों और पापी श्रहकी राशिमें मंगल केंद्रमें स्थित हों और पापश्रह देखते भी हों और अष्टम, छठे, बारहवें शुभश्रह स्थित हा और दशवें स्थानमें सूर्य हो तो वह प्राणी अन्धा होता है ॥ ९ ॥ पापश्रह पञ्चम चतुर्थ प्राप्त हों विशेषकरके चंद्रमा अष्टम, बारहवें, छठे स्थित हो तो वह मनुष्य अंधा होता है और शुभश्रह हीनबलकरके देखते हों तो अन्ध होता है और जो शुभश्रह देखता हो तो दोष नहीं है ॥ १० ॥

अथ निशांधदोषः ।

त्रिकस्थितः सेन्दुसुतः प्रसूतौ भवेन्निशांधः ससितो दिनेशः ॥

स लग्ननाथो जननांधकोवा वाच्यो मनुष्यः किलदैवविद्धिः ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र बुधसहित जो त्रिकस्थान द । ८ । १२ में स्थित हो तो वह मनुष्य निशांध अर्थात् उसको रतांध आती है ॥

अथ जन्मांधयोगः ।

और वही शुक्र, सूर्य और लग्ननाथसहित त्रिकस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य जन्मका अन्धा होता है ॥ ११ ॥

अथ पित्रादिकानामंधयोगः ।

एवं निजो वा जनकात्मजस्त्रीसहोदरा मातुलकः पितृव्यः ॥
तत्स्थाननाथैः सहितो यदा स्यात्तेषां प्रवाच्यं हि तदांधकत्वम् ३२

इसी तरह अपने पिता, पुत्र, ब्री, भाई, मामा, चाचा, मातादि सबोंका अंधा कहना यानी शुक्र, सूर्य और इन पुरुषोंका स्थानपति त्रिकस्थान अर्थात् ६।८।१२ में स्थित हो तो उसी पुरुषको अंधा कहो ॥ १२ ॥

अथ नेवरोगयोगः ।

रिपुसदनपतौ चेद्वकत्सेऽक्षिरोगं तनुसदनगतेऽस्मिन् मंदहृष्टे कफात्मा । धरणिज इह जीवे भाग्यवज्जे सचंद्रे परितपनतशो-कान्कामतः शास्त्रतोऽधः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे वरका स्वामी मंगलकी राशिमें अथवा मंगलके साथ स्थित हो तो उस मनुष्यको नेत्रोंका रोग होता है ॥ १३ ॥

अथ कफदोषः ।

वही छठे स्थानका स्वामी लग्नमें स्थित हो और शनैश्चर देवता हो तो कफदोष करता है ॥

अथ कामांधशास्त्रांधदोषः ।

मंगल, बृहस्पति, शुक्र, चंद्रमासहित लग्नगत हो तो वह मनुष्य परायेसे संताप शोकको प्राप्त, कामांध अथवा शास्त्रांध होता है ॥ १४ ॥

अथ कर्णरोगः ।

धनव्ययस्थो भृगुजोऽथ वारः करोति पुंसां श्रवणप्रपीडाम् ।
तत्र स्थितः शीतमयूखमालीदृदोषकारी मुनिभिस्तथोक्तः ॥ १४ ॥

जिसके दूसरे बारहवें शुक्र मंगल स्थित हों तो वह मनुष्य कर्णरोग करके पीड़ित होता है ॥

अथ दृष्टिदोषः ।

आर पूर्वोक्त स्थानमें वही ग्रह चंद्रमासहित स्थित हो तो उस मनुष्यकी दृष्टिमें दोष अर्थात् कम दीख पड़ता है ॥ १४ ॥

अथ मंदाक्षिदोषः ।

चंद्रे व्यये वा यदि वा दिनेशे मंदे त्रिकोणे मदरंधभेदकें ।
मंदाक्षिरोगी स भवेत्तदानीं नीचारिन्द्रशगतास्तथैव ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें चंद्रमा अथवा सूर्य बारहवें स्थित हो और शनैश्चर नवम, पंचम, सप्तम, अष्टम हो, सूर्यकी राशिमें हों तो उस मनुष्यके नेत्र छोटे रोगसहित थोड़ी दृष्टिवाले होते हैं, नीच शत्रुके नवांशमें स्थित हो तो भी पूर्वोक्त फल करे ॥ १५ ॥

अथ कर्णनाशदोषः ।

दुश्चिक्यधर्मात्मजलाभसंस्थाः पापश्चान् नो शुभदृष्टियुक्ताः ।
कर्णप्रणाशं जनयन्ति नूनं जामित्रसंस्था रसनाविधातम् ॥ १६ ॥

जिसके जन्मसमयमें तीसरे, नवम, पंचम, चारहवें पापश्चान् हों, शुभ-दृष्टिरहित हों तो उस मनुष्यका कर्णनाश अर्थात् वह बधिर होता है ॥

अथ रसनाविधातयोगः ।

जो वही पूर्वोक्त श्च एव सप्तम स्थित हो तो उस मनुष्यकी जीभ कटी भई अथवा वह तोतला होता है ॥ १६ ॥

अथ गुंगस्वरदोषः ।

चंद्रात्मजे कर्क्यलिमीनसंस्थे भानोरधस्थे शशिनेक्षिते च ॥
सप्तमपे पापखगैः प्रदृष्टे गुंगस्वरः स्यान्मनुजस्तदानीम् ॥ १७ ॥

बुध कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियोंमें स्थित होकर पंचमस्थानमें प्राप्त हो और सूर्य अधस्थानमें बैठा हो, चंद्रमा देखता हो और सप्तमस्थानपति कस्के सहित पापश्चान् देखते हों तो वह मनुष्य गुंगस्वर होता है ॥ १७ ॥

अथ जिह्वाविधातयोगः ।

संवर्धमाने क्षणदाविनाथे लग्नस्थिते भूमिषुतेन युक्ते ।
गुंगस्वरः स्याद्यदि वारिनाथे सोमात्मजे स्याद्वसनाभिधातः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा मंगलसहित लघ्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य गुणस्वर(गूण) होता है, जो छठे घरका स्वामी और बुध लघ्नमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी जीभ कटी होती है अर्थात् तोतला होता है ॥ १८ ॥

अथ दंतरोगः ।

स्यादंतुरो दंतरुजार्दितो वा सिंहीसुते चेद्धनभावसंस्थे ।

चंद्रेण युक्ते खलु शीतदोषः स्यात्सन्निपाताश्रययुक् नरस्य ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके दूसरे घरमें राहु स्थित हो तो वह मनुष्य बड़े दांतोंबाला दांतोंसे रोगी होता है ॥

अथ शीतदोषः ।

वही राहु चंद्रमा करके सहित दूसरे स्थानमें हो तो उस मनुष्यको शीतका दोष अथवा सन्निपात होता है ॥ १९ ॥

वक्रक्षणे रिपुपतौ उदये च वक्रक्षें लग्नपे समुभयोरपि मंदह-
शृच्या । रथे सितार्कसुतयोरशुभान्वितेऽरौ तस्याधिपे द्वनगते
खलु दंतरोगः ॥ २० ॥

जिसके जन्मकालमें मंगलकी राशिमें छठे घरका स्वामी हो और लघ्नमें मंगल स्थित हो और जन्मलघ्नपति और शनैश्चरकी दृष्टि हो अथवा अष्टमस्थानमें शुक्र और शनैश्चर स्थित हों और अष्टमाधिपति सप्तम स्थित हो तो उस मनुष्यको दांतोंका रोग होता है ॥ २० ॥

अथ कणदोषः ।

सपत्नपे चंद्रसुते घटस्थे मार्तण्डपुत्रेण चतुर्थदृष्ट्या ।

विलोकिते द्रेष्यगृहे समानदर्शेक्षिते वा बधिरत्वयोगः ॥ २१ ॥

जिसके जन्मसमयमें सातवें स्थानके स्वामीकरके सहित बुध मंगलकी राशिमें हो, शनैश्चर एक चरण दृष्टिसे देखता हो, छठे घरके विषे स्थित हो वा देखता हो तो वह मनुष्य बधिर अर्थात् बहरा होता है ॥ २१ ॥

अथ सामान्यवधिरयोगः ।

शशांकज्ञ शत्रगते रजन्यां भृगोस्तम्बजे गगनेऽधिसंस्थे ।

उच्चस्वरेण शूले मनुष्यो दक्षेतरेण श्रवणेन नूनम् ॥ २२ ॥

जिसके जन्मसमयमें वृष्टि छठे स्थानमें स्थित हो, रात्रिमें शुक्र दशम स्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य ऊँची आवाजकरके सुनता है, बाल कर्णकरके निश्चय सुनता है ॥ २२ ॥

अथ विकृतदंतयोगः ।

वृषाजगे कूरखगे विलगे कूरेक्षिते वैकृतदंतकः स्यात् ॥

चापोदये कूरयुते खलक्षें खल्वाटकोऽत्ये खलवीक्षते वा ॥ २३ ॥

जिसके जन्मसमयमें वृष्टि, मंष, धन ये लक्ष हों इनमें पापश्वह स्थित हो तो उस प्राणीके दांत अच्छे नहीं होते हैं ॥

अथ खल्वाटयोगः ।

वही धन लक्ष पापश्वहसे युत हो और पापश्वह देखते हों तो वह मनुष्य गंजा होता है अर्थात् उसके शिरपर बाल नहीं होते ॥ २३ ॥

अन्यश्च खल्वाटयोगः ।

सिंहचापालिकन्यासु लगे कर्कटगे विधो ।

वीक्षितेऽवनिपुत्रेण भवेत्खल्वाटमस्तकः ॥ २४ ॥

सिंह, धन, वृश्चिक, कन्या, कर्क इनमेंसे कोई लक्ष हो और वहां चन्द्रमा स्थित हो और मंगलकरके दृष्टि हो तो उस मनुष्यके शिरमें खल्वाट अर्थात् गंज होता है ॥ २४ ॥

अथ कुष्ठदोषः ।

यागमध्यानवभागगे विधो मंदभौमयुतवीक्षितेऽध्यता ।

सेषाङ्गक्षेत्रकर्कटांशगे कुष्ठवानपि भवेत्तदा नरः ॥ २५ ॥

शेष, मंकर, भीन, कर्क इन नवांशोंमें चन्द्रमा पापश्वहोंके वीचमें स्थित हों और शनैश्चर मंगलकरके दृष्टि हो तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है ॥ २५ ॥

धीधर्मस्था गोकुलीरारिनक्राः क्रूरैः खेटैः संयुता वीक्षिता वा ।
ते वै तूनं सूतिकाले प्रकुयुर्निःसंदिग्धं मानवं कुष्टयुक्तम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नववें, पांचवें, वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर इनमेंसे कोई राशि हो और पापश्वरहोंसे सहित अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य निस्संदेह कुष्टी होता है ॥ २६ ॥

अथ लूतकुष्टयोगः ।

चंद्रावनेयासितसंयुतेषु चेदूशनाः सेवितवारिभेषु ।

कूरादिते तेष्वपि लूतकुष्टं भवेन्नराणां नियतं नराणाम् ॥ २७ ॥

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर मिलकर दूसरे बारहवें स्थानमें स्थित हो अथवा चंद्रमा और शुक्र दूसरे वा छठे स्थानमें स्थित हों, पापश्वरहों करके अर्दित हों तो उस मनुष्यको लूतकुष्ट होता है ॥ २७ ॥

निशाकरे कामुकमध्यभागे मृगांशकर्कीवृषभाजयुक्ते ।

मंदाग्नुकं तदवेक्षणं वा कुष्टी भवेत्सोम्यदशा विहीनः ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनके पांचवें नवांशमें चंद्रमा स्थित हो और शनैश्चर मंगल इन दोनोंसहित हो अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुष्टी होता है । अथवा किसी राशिमें मकर, कर्क, वृष, मंगल इनमेंसे किसीसे दृष्ट वा युत हो और शुभ वह नहीं दखते हों तो वह मनुष्य कुष्टी होता है और जो शुभश्वरहों करके दृष्ट हो तो कुष्टी नहीं किंतु कंडूरोगवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ ददुकंद्वेतकुष्टयोगः ।

लग्नाधीशो नैधनस्थे प्रसूतौ क्रूरैः खेटैः संयुते वीक्षिते वा ।

पुंसां काये मंदता ददुकण्डूपीडा वा स्याच्छ्रेत्कुष्टः शरीरे ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी अष्टम स्थित हो और पापश्वरहोंकरके सहित अथवा दृष्ट हो तो उस मनुष्यके शरीरमें दाद कंडूरोगकी पीडा होती है अथवा श्वेत कुष्ट होता है ॥ २९ ॥

अथ सामान्यवधिरयोगः ।

शशांकजः शत्रगते रजन्यां भृगोस्तनूजे गगनेऽधिसंस्थे ।

उच्चस्वरेण शृणुते मनुष्यो दक्षेतरेण श्रवणेन नूनम् ॥ २२ ॥

जिसके जन्मसमयमें बुध छठे स्थानमें स्थित हो, रात्रिमें शुक्र दशम स्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य ऊँची आवाजकरके सुनता है, वाम कर्णकरके निश्चय सुनता है ॥ २२ ॥

अथ वैकृतदंतयोगः ।

वृषाजगे कूरखगे विलगे कूरेक्षिते वैकृतदंतकः स्यात् ॥

चापोदये कूरयुते खलक्षें खल्वाटकोऽत्ये खलवीक्षते वा ॥ २३ ॥

जिसके जन्मसमयमें वृष, मंष, धन ये लघ हों इनमें पापश्रह स्थित हो तो उस प्राणीके दांत अच्छे नहीं होते हैं ॥

अथ खल्वाटयोगः ।

वही धन लघ पापश्रहसे युत हो और पापश्रह देखते हों तो वह मनुष्य गंजा होता है अर्थात् उसके शिरपर बाल नहीं होते ॥ २३ ॥

अन्यश्च खल्वाटयोगः ।

सिंहचापालिकन्यासु लगे कर्कटगे विधौ ।

वीक्षितेऽवनिपुव्रेण भवेत्खल्वाटमस्तकः ॥ २४ ॥

सिंह, धन, वृश्चिक, कन्या, कर्क इनमेंसे कोई लघ हो और वहां चन्द्रमा स्थित हो और मंगलकरके दृष्ट हो तो उस मनुष्यके शिरमें खल्वाट अर्थात् गंज होता है ॥ २४ ॥

अथ कुष्ठदोषः ।

पापमध्यनवभागगे विधौ मंदभौमयुतवीक्षितेऽथवा ।

मेषनक्षत्रपक्किटांशगे कुष्ठवानपि भवेत्तदा नरः ॥ २५ ॥

मेष, मकर, भीन, कर्क इन तीव्रांशोंमें चन्द्रमा पापश्रहके वीचमें स्थित हो और शनैश्चर मंगलकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है ॥ २५ ॥

धीधर्मस्था गोकुलीरारिनकाः क्रौः खेटैः संयुता वीक्षिता वा ।
ते वै नूनं सूतिकाले प्रकुयुर्निःसंदिग्धं मानवं कुष्ठयुक्तम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नववें, पांचवें, वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर इनमेंसे कोई राशि हो और पापग्रहोंसे सहित अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य निस्तंदेह कुष्ठी होता है ॥ २६ ॥

अथ लूतकुष्ठयोगः ।

चंद्रावनेयासितसंयुतेषु चेदूशनाः सेवितवारिभेषु ।

कूरादिते तेष्वपि लूतकुष्ठं भवेन्नराणां नियतं नराणाम् ॥ २७ ॥

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर मिलकर दूसरे बारहवें स्थानमें स्थित हों अथवा चंद्रमा और शुक्र दूसरे वा छठे स्थानमें स्थित हों, पापग्रहों करके अर्दित हों तो उस मनुष्यको लूतकुष्ठ होता है ॥ २७ ॥

निशाकरे कार्मुकमध्यभागे मृगांशकर्कीवृषभाजयुक्ते ।

मंदाग्रयुक्ते तदवेक्षणं वा कुष्ठी भवेत्सौम्यदृशा विहीनः ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनकं पांचवं नवांशमें चंद्रमा स्थित हो और शनैश्चर मंगल इन दोनोंसहित हो अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है । अथवा किसी राशिमें मकर, कर्क, वृष, मेष इन नवांशोंमें कहीं चंद्रमा स्थित हो, शनैश्चर, मंगल इनमेंसे किसीसे दृष्ट वा युत हो और शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है और जो शुभग्रहों करके दृष्ट हो तो कुष्ठी नहीं किंतु कंदूरोगवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ ददुकंदूरेतकुष्ठयोगः ।

लग्नाधीशे नैधनस्थे प्रसूतौ क्रौः खेटैः संयुते वीक्षिते वा ।

पुंसां काये मंदता ददुकण्डूपीडा वा स्याच्छ्वेतकुष्ठः शरीरे ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी अष्टम स्थित हो और पापग्रहोंकरके सहित अथवा दृष्ट हो तो उस मनुष्यके शरीरमें दाद कंदूरोगकी पीडा होती है अथवा भीत कुष्ठ होता है ॥ २९ ॥

अथ कुब्जदोषः ।

आद्यांत्येशोऽब्जे तृतीये खलेन दृष्टे भूमीसंस्थमंदोपरिस्थे ।

लग्नाधीशेथाल्पचकालयस्थे धात्रीपुत्रे मानवः स्यात्सकुब्जः ३० ॥

जिसके जन्मकालमें लग्न वारहवें स्थानका स्वामी तीसरे स्थानसे स्थित हो और पापग्रहोंकरके दृष्ट हो एको योगः १ । चतुर्थस्थानमें शनैश्चर स्थित हो, लग्नाधीश और मंगल अल्पचकालयमें स्थित हो तो वह मनुष्य कुब्ज अर्थात् कुबडा होता है ॥ ३० ॥

अथ उन्मादयोगः ।

उन्मादबुद्धिः स जडोऽथ वा स्याज्जातो हि चेच्चंचलबुद्धियुक्तः ।

लग्ने त्रिकोणे दिननाथचंद्रौ शौर्ये गुरौ केद्रसमन्विते वा ॥३१॥

उन्मादबुद्धिः स भवेत्तदानीं शन्यारवारो यदि जन्मकाले ।

केद्रस्थितौ सौम्यनिशाकरौ वा सौम्यांशहीने भ्रमसंयुतः स्यात् ३२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, नवम, पञ्चम सूर्य, चंद्रमा स्थित हों और शनैश्चर बृहस्पति केद्रमें स्थित हों तो वह मनुष्य विक्षिप्त होता है अथवा चंचल बुद्धिवाला जड होता है ॥ ३१ ॥ जिसका शनैश्चर वा मंगल जन्मका हो और केद्रमें बुध और चंद्रमा स्थित हों और सौम्यांशकरके हीन हो तो वह मनुष्य उन्मादबुद्धिवाला भ्रमसंयुक्त होता है ॥ ३२ ॥

चन्द्रे सपापे फणिनाथयुक्ते रिःफे शुभे रंध्रगते तथापि । उन्माद-

भाक् तत्र सरोषता च जातस्तु नित्यं कलहप्रियः स्यात् ॥३३॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा पापग्रहसहित तथा राहुयुक्त वारहवें बैठा हो और शुभग्रह अष्टम स्थित हो तो वह मनुष्य विक्षिप्त होता है, इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य क्रोधसहित सदैव कलहप्रिय होता है ॥ ३३ ॥

विलग्नधर्मात्मजगौ रवींदू केन्द्रे तृतीये यदि वा सुरेज्य । यमा-

रहोरादिवसे प्रजातो मर्त्यश्च सोन्माद इवाद्गुतः स्यात् ॥ ३४ ॥

जिसके जन्मकालमें लग्न, नवम, पञ्चम स्थानमें सूर्य, चंद्रमा स्थित

हों और केंद्रमें अथवा तीसरे बृहस्पति, शनैश्चर, मंगल स्थित हों और दिनके विषे जन्म हो तो वह मनुष्य विक्षिप्तकी तरह अद्भुत होता है ॥३४॥

अथ पातकियोगः ।

स्यात्पातकी लग्नगते सुरेज्ये द्यूनस्थिते भाग्नुसुते मनुष्यः ।
सोन्मादको लग्नगते सुरेज्ये जामित्रसंस्थे तपने विशेषात् ॥३५॥

जिसके जन्मकालमें लग्नमें बृहस्पति और सप्तम शनैश्चर स्थित हों तो वह मनुष्य पातकी होता है और जिसके लग्नमें बृहस्पति और सप्तम मंगल हो तो वह प्राणी विक्षिप्त होता है ॥ ३५ ॥

सोन्मादको लग्नगतेर्कपुत्रे मंदे त्रिकोणेऽवनिजे नरः स्यात् ।
क्षीणे विधौ मूर्यसुतेन युक्ते व्ययोपयाते धिषणेच यदा ॥ ३६ ॥

जिसके जन्मकालमें लग्नमें शनैश्चर स्थित हो और सातवें, नववें, पञ्चम इन स्थानोंमें मंगल स्थित हो तो वह मनुष्य विक्षिप्त होता है एको योगः । और क्षीण चन्द्रमा शनैश्चर सहित बारहवें स्थित हो अथवा बृहस्पति सहित बारहवें हो तो वह प्राणी विक्षिप्त होता है ॥ ३६ ॥

अथ अपस्मारयोगः ।

नक्षत्रेशादित्यवक्रास्तनुस्था मृत्युस्था वा क्रूरहृष्टाः प्रसूतौ ।
नानाव्याधिस्ते शरीरे प्रकुर्युः पीडां मर्त्यानामपस्मारजाताम् ॥३७॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा और सूर्य और मंगल तनु तथा अष्टम लग्नमें स्थित हों और पापश्वर्होकरके दृष्ट हों तो वह मनुष्य अनेक व्याधियुक्त और अपस्मार रोगकी पीडासे युक्त हो ॥ ३७ ॥

अथ सत्यमदाख्ययोगः ।

पापेक्षिती केन्द्रगती विशुद्धौ सुतेऽथ वा नैधनभे खलाख्यः ।
जातो नरः सत्यमदाख्ययोगे भवेदपस्मारहर्जार्दितश्च ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केन्द्रके बीचमें चन्द्रमा, बुध स्थित हों और

(११६)

ज्योतिषश्यामसंब्रहः ।

पापग्रहों करके दृष्ट हों पञ्चम अथवा अष्टम पापग्रह स्थित हों तो इस सत्यमदयोगमें पैदा हुआ मनुष्य अपस्माररोगसे दुःखी होता है ॥ ३८ ॥

सारे शनौ रंधनिग्रुस्थिते च जातो मनुष्यः परिवेषकाले ।

लघ्ने त्रिकोणे गुरुवर्जिते चेद्वेदपस्माररुजार्दितश्च ॥ ३९ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगलकरके सहित शनैश्चर अष्टम छठे स्थित हों और लघ्न, नवम, पञ्चम, बृहस्पति नहीं हों तो वह प्राणी अपस्माररोग करके आर्दित होता है ॥ ३९ ॥

अथ गदायोगः ।

रंधस्थिताः पापखगाश्च सर्वे निशाकरज्ञौ यदि केन्द्रयुक्तौ ।

योगे गदाख्ये स भवेत्तदानीं जातोऽप्यपस्मारयुतः सुतस्थः ॥४०॥

अष्टमस्थानमें सम्पूर्ण पापग्रह और चंद्र बुधयुक्त केंद्रमें स्थित हों तो गदानाम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपस्माररोगसे युक्त होता है और वही चंद्र बुध पंचमस्थित हों तो भी अपस्माररोगी होता है ॥ ४० ॥

अथ नेत्रकर्णदोषः ।

कूरैर्धनस्थैर्वदने नवांशे नेत्रे श्रुतौ वा ब्रणकं विधातः ।

जिसके जन्मकालमें पापग्रह धनस्थानमें स्थित हों वा लघ्नके नवांशमें स्थित हों तो उस मनुष्यके नेत्र वा कानोंमें ब्रण अर्थात् फोड़का घाव होता है।

अथ संग्रहणीरोगयोगः ।

विधुंतुदे वा सवितात्मजे वा तत्र स्थिते संग्रहणीरुजार्तः ॥४१॥

राहु वा शनैश्चर दोनों पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हों तो वह मनुष्य संग्रहणीरोगकरके दुःखी होता है ॥ ४१ ॥

अथ श्वासक्षयगुल्मप्लीहविद्रधियोगः ।

पापान्तरेऽब्जे तपने मृगस्थे यद्वार्कसूनौ मदनालयस्थे ।

श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः प्रपीडितो विद्रधिना मनुष्यः ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा शनैश्चर मंगलके बीचमें स्थित हों और मकरमें सूर्य स्थित हो अथवा दो पापयहोंके मध्यमें चंद्रमा स्थित हो और शनैश्चर सप्तम स्थित हो तो वह मनुष्य श्वासक्षयी, पुणीहा, विद्रधि वा गुल्म इन रोगोंसे युक्त होता है। पुणीहा तापतिष्ठीका नाम है, गुल्म गांठको कहते हैं, विद्रधि एक तरहके लंबे फोडेका नाम है ॥ ४२ ॥

अथ मंदाग्निगुदरोगयोगः ।

षष्ठाष्टमे चंद्रसितौ नरः स्यान्मंदानलो वै गुदरोगयुक्तः ।

जिसके जन्मकालमें छठे आठवें चंद्रमा और शुक्र बैठे हों तो वह मनुष्य मंदानल अर्थात् मंदाग्नि वा गुदरोगसहित होता है ॥

अथ क्षयदोषः ।

सारे विधौ लग्नपतीक्षिते वा विलोमबुद्धिः क्षयरोगयुक्त् स्यात् ४३ ।

जो मंगलसहित चंद्रमा छठे आठवें स्थित हो और लग्नपतिसे दृष्ट हो तो वह प्राणी उलटी बुद्धिवाला क्षयरोगसे पीडित होता है ॥ ४३ ॥

अथ गुह्यरोगयोगः ।

कुलीरकीटांशगते हिमांशौ पापान्विते गुह्यरुजार्दितः स्यात् ।

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा कर्क या वृश्चिकके नवांशमें स्थित पाप-यहकरके सहित हो तो वह मनुष्य गुह्यरोग अर्थात् गुप्तरोगी होता है ॥

अथ हीनांगयोगः ।

वेशिस्थिते सूर्यसुते कुजेऽस्ते स्वस्थे विधौ हीनकलेवरः स्यात् ४४ ।

जिसके जन्मकालमें सूर्यसे दूसरे स्थानमें शनैश्चर हो और सातवें मंगल, दशवें चंद्रमा हो तो वह मनुष्य हीनशरीरवाला होता है ॥ ४४ ॥

अथ शोषक्षयदोषः ।

सूतौ मिथः क्षेत्रगतौ रवीदू परस्पराशोषगतौ च यद्वा ।

शोषक्षयं तौ कुरुतो नराणामेकैकगेहोषगपते तथैव ॥ ४५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा ये परस्पर स्थित हों अर्थात्

(११८)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

सूर्यके स्थान वा नवांशमें चंद्रमा स्थित हो और चंद्रमाके स्थान वा नवांशमें सूर्य स्थित हो तो वह मनुष्य कृशशरीर क्षयीरोगवाला होता है अथवा एक ही स्थानमें यानी सिंह वा कर्कमें सूर्य चंद्रमा स्थित हो तो भी पूर्वोक्त फल कहना चाहिये ॥ ४५ ॥

अथ क्षयीयोगः ।

लाभस्थितेऽके रविजे सुतस्थे कूरेऽष्टमस्थे क्षयपीडितः स्यात् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें स्थानमें सूर्य स्थित हो और शनैश्चर पंचम स्थित हो और पापग्रह अष्टम स्थित हो तो वह मनुष्य क्षयरोगकरके पीडित होता है ॥

अथ कुष्ठभग्नदराशोदोषयोगः ।

सारे विधौ कुष्ठभग्नदराशोरोगान्वितो वै मनुजो नितांतम् ॥४६॥

मंगलकरके सहित चंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थित हो अथवा अन्यत्र हो तो भी कुष्ठ, भग्नदर, बवासीर मनुष्यको होते हैं ॥ ४६ ॥

अथ क्षयरोगयोगः ।

सूर्ये तनुस्थे चतुरस्त्रे वा खस्थौ यमारौ क्षयपीडितः स्यात् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य लघ्नमें स्थित हो अथवा चौथे आठवें स्थित हो और दशमस्थानमें शनैश्चर, मंगल स्थित हो तो वह मनुष्य क्षयरोगकरके पीडित होता है ॥

अथ भग्नदराशोऽनिलशूलदोषः ।

जामित्रसंस्थैस्तपनारम्दैर्भग्नदराशोऽनिलशूलरोगैः ॥ ४७ ॥

सप्तमस्थानमें सूर्य, मंगल, शनैश्चर, स्थित हों तो उस मनुष्यके भग्नदर, बवासीर, अनिलशूल, रोग होते हैं ॥ ४७ ॥

अथातीस्तारस्वेदबधिरयोगः ।

द्यूने यमारौ तनुगौ तमोज्ञौ पीडा नराणामतिसाररोगैः ।

स्वेदं च शैत्यं चरणे च पाणो बाधिर्यता स्याच्छ्रवणद्वयेऽपि ॥४८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमस्थानमें शनैश्चर और मंगल स्थित हों और लग्नमें राहु, बुध स्थित हों तो वह मनुष्य अतीसार रोगकरके पीडित होता है और हाथ पैरोंमें पसीना और सर्दी होती है और दोनों कानोंसे बधिर होता है ॥ ४८ ॥

अथ प्रमेहदोषयोगः ।

भानौ सुतस्थे ससितेऽर्कपुत्रे यदोदयेऽकेवनिजेऽस्तसंस्थे ।

व्योमेऽथ वारे शनियुक्तदृष्टे नरः प्रमेहामयपीडितः स्यात् ॥४९॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य पंचम स्थित हो और शुक्र शनैश्चरसहित हो तो एकोयोगः । अथवा लग्नमें सूर्य और मंगल सातवें अथवा दशम स्थानमें मंगल शनैश्चरयुक्त वा दृष्ट हो तो वह मनुष्य प्रमेहरोगसे पीडित होता है ॥४९॥

अथ मूत्रकृच्छ्ररोगयोगः ।

कुजेऽस्तसंस्थे खलु युक्तदृष्टे स्यान्मूत्रकृच्छ्री पुरुषोऽपि हीनः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल सातवें स्थित हो, पापश्चहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो उस मनुष्यको मूत्रकृच्छ्र नामक रोग होता है ॥

अथ वातोदरयोगः ।

जामित्रसंस्थे तपने सपापे वातोदरासुक्परिपीडितः स्यात् ॥५०॥

सप्तमस्थानमें सूर्य पापश्चहोंसहित स्थित हो तो उस मनुष्यकी देह वा उदर वातकरके पीडित होता है ॥ ५० ॥

अथ वातरोगयोगः ।

त्रिकोणयामित्रगते महीजे तनुस्थिते सूर्यसुते च यदा ।

क्षीणेदुमदौ व्ययभावयातौ भवेत्समीराधिकता नितांतम् ॥५१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम पंचम स्थानमें मंगल स्थित हो अथवा लग्नमें शनैश्चर स्थित हो और क्षीण चंद्रमा, शनैश्चर वारहवें स्थित हों तो उस मनुष्यको वातरोग होता है ॥ ५१ ॥

(१२०)

ज्योतिषश्यामसंब्रहः ।

अथ मन्दलोचनयोगः ।

धीर्घमगेऽके ह्यशुभैः प्रदृष्टे भवेन्नरो मन्दविलोचनेन ।

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें नवम पंचम सूर्य स्थित हो और पाप ग्रहोंकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य मंद नेत्रवाला होता है ॥

अथ हीनांगदोषयोगः ।

हीनांगको भूमिसुते च तद्वत् ।

नवम, पंचम, मंगल स्थित हो और पापग्रहोंसे दृष्ट हो तो वह मनुष्य हीनांग होता है ॥

अथ अनेकव्याधियोगः ।

सूर्यात्मजे चेद्विविधामयार्तः ॥ ५२ ॥

पापग्रहोंसे दृष्ट शनैश्चर नवम, पंचम स्थित हो तो वह मनुष्य अनेक रोगोंकरके पीडित होता है ॥ ५२ ॥

अथ बंधनयोगः ।

व्ययत्रिकोणार्थगतैरसौम्यैश्वेन्मानवो बंधनभाग् भवेत्सः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें, नौवें, पांचवें तथा दूसरे स्थानमें पापग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य बांधा जाता है, परंतु यह बंधन राशि-बोधक प्राणीके बंधन सहश होता है ॥

अथ रज्जुबंधनयोगः ।

लग्नेषु चापाजवृषस्थितेषु स्याद्वंधनं रज्जुसमुद्धवं तत् ॥ ५३ ॥

जो मेष, वृष, धन, इन लग्नोंके विषे जो पूर्वोक्त ग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य रसीक बंधनमें होता है ॥ ५३ ॥

अथ निगडबन्धनयोगः ।

नृयुग्मकन्यातुलकुम्भभेषु लग्नस्थिते वा निगडोद्धवं च ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ इन लग्नोंमें पापग्रह स्थित हो तो वह मनुष्य बेडी आदिके बंधनमें होता है ॥

अथ दुर्गे बन्धनयोगः ।

कर्के चरौ मीनग्रहे च दुर्गे ।

जो कर्क, सिंह, मीन इन लग्नमें पापग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य किला वा गदा आदिमें घिरा रहता है ॥

अथ भूमिबन्धनयोगः ।

रोधोऽथ कोटे किल भूग्रहे स्यात् ॥ ५४ ॥

जो वृश्चिक लग्नमें पापग्रह स्थित हो तो भूमि अथवा गडहे इत्यादिमें उन मनुष्यका बंधन कहना और जो जन्मकालमें द्रेष्काण संसारक निगड़संज्ञक वा पाशभृतसंज्ञक हो यानी ‘प्रथमपञ्चनवपानां’ इसी तरह जिस राशिसंबंधी द्रेष्काण हो वह राशि बली होकर किसी पापग्रहसे दृष्ट न हो तो उसी राशिके समान बन्धन होता है ॥ ५४ ॥

अथ शोथरोगः ।

सिते गीष्पतौ षष्ठे पापद्वृष्टे सशोथो ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र वृहस्पति छठे स्थानमें स्थित हों और पापग्रहकरके दृष्ट हों तो उस मनुष्यके सूजन होता है ॥

अथ गुप्तरोगयोगः ।

मुखेऽत्ये शनौ गुप्तदोषी ।

और पूर्वोक्त ग्रह छठे स्थानमें स्थित हों और शनैश्चर बारहवें स्थानमें बैठा हो तो वह मनुष्य गुप्तरोगी होता है ॥

अथ गंडमालारोगयोगः ।

षडेतेऽथवा भूमिपुत्रार्कियोगेशुभाऽदृष्टितो गंडमालावणाद्यम् ॥ ५५ ॥

जो छठे बारहवें शनैश्चर मंगलका योग और शुभग्रह नहीं देखते हों तो उस मनुष्यके गंडमाला रोग होता है ॥ ५५ ॥

अथ पांडुकुष्टयोगः ।

नीरे चरक्षें सितचंद्रयोगे खलैः समं स्यात्किल पांडुकुष्टम् ।

(१२२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चरराशियोंमें शुक्र चंद्रमा चतुर्थस्थानमें स्थित हो पापग्रह देखते हों तो उस मनुष्यको पांडुकुष्ठरोग होता है ॥

अथ खर्जूरकुष्ठयोगः ।

यद्वा विधौ वारिगृहे सपापे खर्जूरदोषं शनिवीक्षिते च ॥ ५६ ॥

अथवा पापग्रहसहित चंद्रमा चौथे घरमें स्थित हो और शनैश्चर देखता हो तो उस मनुष्यके खर्जूरकुष्ठ होता है ॥ ५६ ॥

अथ पातकियोगः ।

भौमाक्रांते लग्ननाथे प्रसूतौ पष्टे चंद्रे पातकी मानवः स्यात् ।

यद्वा चैकांशस्थितौ कुरहत्यश्चंद्रादित्यौ चेत्तदा पातकी सः ॥ ५७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल करके आक्रांत जन्मलग्नका स्वामी हो और छठे घरमें चंद्रमा हो तो वह मनुष्य पातकी होता है अथवा एक ही नवांशमें चंद्रमा और लग्ननाथ बैठे हों तो वह मनुष्य दुष्ट हत्यारा होता है अथवा चंद्रमा सूर्य दोनों एक नवांशमें स्थित हों तो वह मनुष्य पातकी होता है ॥ ५७ ॥

अथांगशूलयोगः ।

खलादिते रवौ लग्ने पड़ष्टांगारमंदयोः ।

विकर्त्तनक्षणे चन्द्रः सशूलं ह्यांगजा रुजः ॥ ५८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहसहित सूर्य लग्नमें स्थित हो और छठे मंगल शनैश्चर स्थित हों सूर्यके घरमें चंद्रमा स्थित हो तो उस मनुष्यके अंगमें दर्दका रोग रहता है ॥ ५८ ॥

अथोदरहच्छूलदोषः ।

क्षितिजसकलहष्टयाभ्यर्दिते देवपूज्यं यदि दिनजननेऽस्मिन् भूमिषुत्रे विनष्टे । अशुभशुभसमेते शत्रुनाथेऽलिङ्गेऽके प्रभवति किल शूलं चोदरे हत्प्रदेशे ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगलसे सम्पूर्ण दृष्टिकरके दृष्ट बृहस्पति

आर्द्ध हो, जन्म दिनमें हो, मंगल नष्ट बली हो, छठे गृहका स्वामी शुभ अशुभ ग्रहोंसहित होय, वृश्चिकमें सूर्य स्थित हो तो उस मनुष्यके उदर अथवा हृदयमें शूल उत्पन्न होता है ॥ ५९ ॥

अथोष्णशीतप्लीहरोगयोगः ।

षष्ठेऽब्जे पापयुक्ते विसौम्यैर्लग्नेऽस्ते वा यदा सूर्यपुत्रे ।

लग्ने तुयै कामगे वोष्णशीतपूर्णिहार्तः स्यात्कृष्णपक्षे निशायाम् ६०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे घरका स्वामी पापग्रहसहित हो और शुभग्रहहरहित हो, जन्मलग्नका स्वामी सप्तम हो अथवा शनैश्चर लग्न चतुर्थ सप्तम स्थित हो तो कृष्णपक्षकी रात्रिमें वह मनुष्य गर्मी, सर्दी, तापतिष्ठी-रोगकरके दुःखको प्राप्त होता है ॥ ६० ॥

अथ कफरोगयोगः ।

सकूरेऽब्जे कंशगे भूस्थिते च पापाकांते स्यात्कफाफेपसौ रुक् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके सहित चंद्रमा मंगलके नवांशमें स्थित हो, चतुर्थस्थानमें हो और पापग्रहोंकरके आकांत हो तो वह मनुष्य कफके रोगसे व्याप्त होता है ॥

अथ पित्तरोगः ।

शुक्रैरीशं भौममंदे च पित्तं सर्वत्रैवं तुर्यसम्पूर्णदृष्ट्या ॥६१॥

जो छठे स्थानका स्वामी शुक्र मंगल और शनैश्चरसहित हो और सम्पूर्ण ग्रह देखते हों तो वह मनुष्य पित्तरोगी होता है ॥ ६१ ॥

अथ कृष्णपित्तत्रणदोषः ।

पापान्विते रिपुपतौ दिवसाधिनाथे स्यादृष्टमे रिपुगतेषु शुभ-
ग्रहेषु । मंदावनेयधिष्णस्तनुगः सपापैः स्यात्कृष्णपित्तविकृ-
तत्रणकं तथांत्रिः ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके सहित छठे घरका स्वामी और सूर्य अष्टम स्थानमें स्थित हों और शुभग्रह छठे घरमें प्राप्त हों शनैश्चर

(१२४)

ज्योतिषशामसंयहः ।

मंगल, बृहस्पति पापश्रहसहित लग्नमें स्थित हों तो वह मनुष्य कृष्णपिता
विश्वत शरीर होता है वैसे ही उसके पैरोंमें वण (फोडे) होते हैं ॥६२॥

अथ खंडयोगः ।

भार्गवे शनियुतेऽबरस्थिते रंग्रो च शुभदृष्टिवर्जिते ।

षष्ठगे व्ययगतेऽथवा शनौ नीचमे च खलु खंडता भवेत् ॥६३॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्र शनैश्चरसहित दशम, अष्टम स्थानमें प्राप्त
हो, शुक्रश्रहोंकी दृष्टि न हो अथवा छठे या बारहवें स्थानमें शनैश्चर नीच-
राशिमें स्थित हों तो उस मनुष्यको निश्चयकरके खंडता होती है ॥६३॥

पुंस्त्रीखेटौ स्त्रीनवांशोपयातौ सूर्यस्याग्रे संस्थितावेकराशौ ।

ऊर्ध्वं तेजश्चेन्निं प्रक्षिपेत्तन्मत्थर्यो नूनं जायते छिन्नमेद्रः ॥६४॥

पुरुषश्रह खीयह दोनों खी नवांशमें सर्यके आगे स्थित हों अथवा
एक राशिमें स्थित हों तो वह मनुष्य अपना तेज ऊपरको फेंकता है
और निश्चयकरके खंड अर्थात् नपुंसक होता है ॥ ६४ ॥

अथ कामातुरयोगः ।

द्वंद्वपराद्वेभृगुजे निजांशे पूर्वार्द्धके सिंहगते कुर्गेहे ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनके पिछले भागमें शुक्र अपने
नवांशमें हो अथवा सिंहके पूर्वार्द्धमें मंगलके नवांशमें स्थित हो तो वह
मनुष्य कामातुर अर्थात् शिष्यी होता है ॥

अथ मृताल्पसूतियोगः ।

कामातुरो मीनगते त्वरीशे भौमादिति चैव मृताल्पसूतिः ॥६५॥

छठे घरका स्वामी मीनराशिमें प्राप्त तथा मंगलकरके अर्दित हो तो
वह मनुष्य मृताल्पसूति अल्पसंतातिवाला होता है ॥ ६५ ॥

अथ अशार्दोषः ।

क्रूरे खेटे मृत्युपे कामसंस्थे सौम्याद्वृष्टे सम्यगशरोविकारः ।

यद्वा मंडेऽस्ते श्यालौ पुण्यसंस्थे धात्रीपुत्रे वासरे वा तदार्थः ॥६६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह और अष्टमभवनस्वामी सप्तम स्थानमें स्थित हो और शुभग्रहोंकरके दृष्ट न हो तो भले प्रकार अर्श अर्थात् बवासीर रोग होता है अथवा शनैश्चर सप्तम स्थित हो, वृश्चिक नवम-स्थानमें प्राप्त हो तो मंगलके बारमें अर्शका विकार होता है ॥ ६६ ॥

मंदेऽत्यस्थे लग्ननाथारयोगे द्यूने यद्वा स्यात्तयोर्दृष्टितोऽर्शः ।

भौमेऽलौ कावेज्यदृष्ट्या विहीने भूतौ मंदेऽस्ते कुजेशोऽविकारः ६७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर बारहवें स्थित हो और लग्ननाथ और मंगलका योग हो, अथवा सप्तमस्थानके विषे मंगल और लग्ननाथ देखते हों तो उस मनुष्यको बवासीर रोग होता है । मंगल वृश्चिकराशिमें स्थित और वृहस्पतिकी दृष्टिविहीन हो, अथवा लग्नमें शनैश्चर और सातवें मंगल स्थित हो तौ भी अर्श अर्थात् बवासीररोग होता है ॥ ६७ ॥

अथ ब्रणरोगयोगः ।

लग्नेऽलिगे क्षितिसुते गुरुशुकदृष्ट्या दीने भवेत् पिटकाब्रणयुक्त मनुष्यः । भूमौ तदंशकगते रविजे सकेतौ यद्वा द्वयोर्युजि तथा मदने व्ययेऽरौ ॥ ६८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकलग्नके विषे मंगल स्थित हो और वृहस्पति शुक्र न देखते हों तो उस मनुष्यके पिटका फोडा होता है । चतुर्थ स्थानमें वृश्चिकके नवांशमें शनैश्चर केतुसहित स्थित हो अथवा पूर्वोक्त दोनों ग्रह एकत्रित होकर छठे, सातवें, बारहवें हों तो भी पिटका फोडा होता है ॥ ६८ ॥

अथ द्वुदोषः ।

रुक्षाः प्रोक्ता मेषगोसिंहनक्रकन्याकोदंडाह्वपामामयश्च ।

एवं स्त्रिघ्ना द्वंद्वकर्कलिजूकुंभांत्याख्ये यावनैः संप्रदिष्टाः ।

देहाधीशो स्त्रिघ्नभे द्यूनसंस्थे भूमीभागस्थार्किणा संयुते च ॥ ६९ ॥

रुक्ष राशि मेष, वृष, सिंह, मकर, कन्या, धन, मीन इसी तरह स्त्रिघ्न मिथुन, कर्क, वृश्चिक, तुला, कुंभका पिछला भाग ये यवनाचार्यकरके भले

(१२६)

ज्योतिषश्यामसंव्रहः ।

प्रकार दिखाये गये हैं। लग्नका स्वामी लिङ्घराशियोंमें सप्तम स्थित हो और चतुर्थस्थानमें शनैश्चर स्थित होतो वह मनुष्य दादरोगकरके दुःखी होता है। ६९।

अर्थांडवृद्धियोगः ।

आतो मत्यो ददुणाब्जारशुक्रैश्छद्रांशस्थैःकीटगैशांडवृद्धिः ७०॥

जो चंद्रमा, मंगल, शुक्र अष्टमस्थानमें वृश्चिकमें प्राप्त हों तो उस मनुष्यके अंडवृद्धि अर्थात् पोते बड़े होते हैं ॥ ७० ॥

अथ वामनदोषः ।

लग्ने प्रात्ये वा दिनेशो निशेशो द्वष्टे भास्वत्सूनुना तुर्यद्वष्टया ।

सौम्याद्वष्टे वामनत्वं नराणां लग्नाधीशो मेषराशौ गतेऽत्र ॥ ७१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न अथवा बारहवें सूर्य चंद्रमा बैठे हों और शनैश्चर चतुर्थद्वितीयसे देखता हो और शुभग्रह कोई नहीं देखता हो और जन्मलग्नका स्वामी मेषराशियों स्थित हो तो वह मनुष्य वामन अर्थात् बौना होता है ॥ ७१ ॥

अथ देहकाश्यर्ययोगः ।

मेषे शशांके शनिना समेते लग्नेऽन्तमेऽके मिथुनालिलग्ने ।

विमुक्तकेंद्रे धरणीतनूजे भवेन्नराणां कृशता शरीरे ॥ ७२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषका चंद्रमा शनैश्चरसहित स्थित हो लग्नमें या बारहवें सूर्य मिथुन या वृश्चिक लग्नमें स्थित हो, केंद्रके बिना अन्य स्थानोंमें मंगल स्थित हो तो उस मनुष्यके शरीरमें दुर्बलता होती है ॥ ७२ ॥

अथ देहशोषणयोगः ।

दिनेशचंद्रौ रविराशियुक्तौ चंद्रक्षणगौ वा यदि शोषणं तत् ।

रंधारिवित्तांत्यगता ग्रहेद्रा दिनेशचंद्रारयमाः क्रमेण ॥ ७३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा दोनों सिंहराशियों प्राप्त हों अथवा दोनों चंद्रमाकी कर्कराशियों स्थित हों तो उस मनुष्यकी देह सखती है

और अष्टम, छठे, दूसरे, बारहवें क्रमकरके सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर प्राप्त हो तो भी उस मनुष्यकी देह सखी होती है ॥ ७३ ॥

अथ श्वासक्षयादिरोगः ।

पापमध्ये गते चंद्रे सप्तमे मंदसंयुते ।

श्वासक्षयप्लीहगुल्मविद्रधिं भजते नरः ॥ ७४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंके वीचमें चंद्रमा स्थित हो सातवें शनैश्चर स्थित हो तो वह मनुष्य श्वास, क्षयी, तापतिष्ठी, गुल्मकी गांठ विद्रधि नाम एक लम्बा चौडा फोडा इन रोगोंकरके दुःखी होता है ॥ ७४ ॥

अथ जडवद्योगः ।

केन्द्रस्थिता मंदनिशाकराका जडो भवेदन्यवसूपभोक्ता ।

भाग्येश्वरे रिःफगते तदीशे वित्तस्थिते भ्रातृगतैश्च पापैः ॥ ७५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केंद्रके वीचमें शनैश्चर, चंद्रमा और सूर्य स्थित हों तो वह मनुष्य अन्य वस्तुओंका भोग करनेवाला जड होता है और नवम घरका स्वामी बारहवें स्थित हो और बारहवें घरका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित हो और तीसरे घरमें पापग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य मूर्ख होता है ॥ ७५ ॥

अथ कुलघ्रयोगः ।

नीचे विलग्नाधिपतौ तदंशे षष्ठाष्टमस्थैर्यदि पापखेटैः । मंदो

विलग्ने कुलनाशकः स्यादल्पायु राहौ शुभदृष्टिहीने ॥ ७६ ॥

माने स्थिता वा यदि वित्तराशौ पापस्तथा देवगुरौ च हीने ।

भाग्येश्वरे चांत्यगते सपापे जन्मोदयेशो रविगौ कुलघ्रः ॥ ७७ ॥

जिसके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी नीचमें स्थित हो वा उसके नवांशमें नीचका हो, छठे, आठवें स्थानमें पापग्रह स्थित हों, शनैश्चर लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य अपने कुलका नाश करनेवाला होता है और जो राहु शुभग्रहोंकी दृष्टिसे रहित हो तो वह मनुष्य थोड़ी आयुष्यका होता

है ॥७६॥ दशवें अथवा दूसरे स्थानमें पापयह स्थित हो, तैसे ही वृहस्पति हीन होय, नवमस्थानका स्वामी बारहवें स्थानमें पापयह सहित हो, जन्मलघटका स्वामी और सूर्य बारहवें स्थानमें हों तो वह मनुष्य कुलधाती होता है ७७॥

शुभाशुभैः केन्द्रगतैः शशांको लग्नेश्वरेणापि निरीक्षितश्चेत् ।

सौरांशके वा यदि संततश्चेज्ञातः कुलध्वंसकरो विदारः ॥७८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभ अशुभ ग्रह केंद्रमें स्थित हों, चंद्रमा लघपतिकरके दृष्ट हो अथवा शनैश्चरके नवांशमें स्थित हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य कुलका नाश करता है ॥ ७८ ॥

अथ गुल्मरोगयोगः ।

कुलीरकुभालिनवांशयुक्ते चंद्रे समंदे यदि गुल्मरोगी ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क, कुम तथा वृश्चिकके नवांशमें चंद्रमा शनैश्चरसहित स्थित हो तो उस मनुष्यके गुल्मरोग होता है ।

अथ कंठरोगयोगः ।

चंद्रे सुखे तद्वनांशयुक्ते पापान्विते स्याद्विजः कंठरोगी ७९॥

और वही चंद्रमा चतुर्थस्थानमें पूर्वोक्त नवांशमें पापयहसहित स्थित हो तो वह मनुष्य कंठरोगी होता है ॥ ७९ ॥

अथ हृच्छूलरोगयोगः ।

हृच्छूलभाक जातनरस्तु नित्यं सराहुचंद्रो यदि सप्तमस्थः ॥

केंद्रे शनौ जन्मनि येन हृष्टे जीवे शशांके यदि वा दिनेश ॥८०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु चंद्रमासहित सप्तमराशियुक्त हो और केंद्रमें शनैश्चर हो, वृहस्पति चंद्रमा अथवा सूर्यकरके दृष्ट हो तो उस मनुष्यके हृदयमें दर्द होता है ॥ ८० ॥

अथ वाहनाद्वीतियोगः ।

केंद्रे शशांके क्षितिसूनुयुक्ते रथस्थितो वा यदि कश्चिदस्ति ।

सवाहनाद्वीतिसुशाति तज्ज्ञाः सुखस्थिते क्षीणनिशाकरे तु ॥८१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केंद्रमें मंगलसहित चंद्रमा हो अथवा अष्टमस्थानमें स्थित हो जो कहीं हो तो उस मनुष्यको वाहनसे भय होता है । ऐसा ज्योतिषशास्त्रज्ञाता कहते हैं अथवा क्षीणचंद्रमा चतुर्थस्थानमें स्थित हो तो पूर्वोक्त फल कहना चाहिये ॥ ८१ ॥

अथ देहोष्णयोगः ।

रवौ सुखे पापदशा समेते देहोष्णमादुः सुखमादुरार्याः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थस्थानमें पापश्रहोंकी दृष्टिसहित सूर्य स्थित हो तो उस मनुष्यकी देह गरम तथा सुखी रहती है ॥

अथ जले मृतियोगः ।

रवेः शशांके नवमस्थिते तु जले मृतिस्तस्य पितुश्च वाच्या ॥ ८२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा नवम स्थित हों तो उस मनुष्यके पिताकी मृत्यु जलमें होती है ॥ ८२ ॥

पापेक्षितौ चंद्ररवी इषस्थौ जले मृतिस्तस्य पितुश्च वाच्या ।

कुजाहियुक्ते दिवसेशपुत्रे सुखे शनौ वा भयमस्य वाच्यम् ॥ ८३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापश्रहोंकरके दृष्ट चंद्रमा सूर्य मीनराशिमें स्थित हो तो मनुष्यके पिताकी मृत्यु जलमें होती है और मंगल राहुकरके सहित शनैश्चर स्थित हो अथवा चतुर्थस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो उस मनुष्यके पिताकी मृत्यु जलमें होती है ॥ ८३ ॥

अथ बदरोगयोगः ।

पापालोकितयोः सितावनिजयोरस्तस्थयोर्याध्यरुक् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापश्रहोंकरके दृष्ट शुक्र मंगल लघसे सातवें स्थानमें स्थित हों तो उस मनुष्यके बदरोग होता है ॥

अथ गुह्यरोगयोगः ।

चन्द्रे वृश्चिककर्कटांशकगते पापैर्युते गुह्यरुक् ।

(१३०)

ज्योतिषश्यामसंयहः ।

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा वृश्चिक कर्कके नवांशमें स्थित होकर पापग्रहयुक्त हो तो वह मनुष्य गुह्यरोगी होता है ॥

अथ शिवत्रयोगः ।

शिवी रिःफधनस्थयोरशुभयोश्चंद्रोदयेऽस्ते रवौ ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर, मंगल दोनों बारहवें तथा दूसरे स्थानमें स्थित हों और चंद्रमा लघमें बैठा हो और सातवें स्थानमें सूर्य स्थित हो तो उस मनुष्यके शिव अर्थात् श्वेतकुष्ठ होता है ॥

अथ हीनांगयोगः ।

चन्द्रे खेष्वनिजेऽस्तगे च विकलो यद्यक्जो वेशिगः ॥ ८४ ॥

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा दशवें, मंगल सातवें, शनैश्चर, सूर्य दूसरे स्थानमें स्थित हों तो वह मनुष्य हीनांग होता है ॥ ८४ ॥

अथांगच्छेदयोगः ।

चन्द्रभौमौ यदा लग्ने अंगच्छेदः प्रकीर्तिः ।

लग्नगदौ कलत्रस्थे भौमेऽगच्छेदवान्नरः ॥ ८५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें चंद्रमा, मंगल लग्नमें स्थित हों तो उसके अंगच्छेद होता है अथवा लग्नमें चंद्रमा और सातवें स्थानमें मंगल स्थित हो तो भी उसके अंगच्छेद होता है ॥ ८५ ॥

अथ क्रियाविहीनयोगः ।

पापो यदा नीचगतो विलग्ने शुभावसंस्थः शुभवर्जितश्च ।

स्याच्छयामरूपो मनुजोत्र जातः क्रियाविहीनः पिशुनस्वभावः ॥ ८६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें पापग्रह नीचराशिका लग्नमें स्थित हो और अपने स्वभावसे शुभग्रहहरहित हो तो वह मनुष्य काले स्वरूपवाला, क्रियाविहीन, व्यभिचारी स्वभाववाला होता है ॥ ८६ ॥

अथ दीर्घजानुयोगः ।

सूर्ये त्रिकोणे यदि भूमिपुत्रे शनैश्चरे सौम्यगृहाश्रिते च ।
तदा मनुष्यः स तु दीर्घजानुर्विरूपदेहः प्रियसाहसश ॥ ८७ ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु देहदोषा मनीषिणाम् ।

यदुकं पूर्वकैः सर्वे तत्तदेव मयाधुना ॥ ८८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-
संग्रहे देहदोषवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मंगल नवम पंचम स्थानमें स्थित हों और शनैश्चर बुधके घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य बड़ी जंघावाला, कुरुपवान् तथा साहस्रिय होता है ॥ ८७ ॥ इस अध्यायके बीचमें मनुष्योंके देहके दोष जो पहिले आचार्योंकरके कहे गये सो मैंने कहा ॥ ८८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-
ज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां
देहदोषवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ प्रव्रज्यायोगाध्यायः ।

चतुरादिभिरेकस्थैः प्रव्रज्यां स्वग्रहैः करोति बली ।

बहुवीर्यैस्तावद्भिः प्रथमवीर्याधिकस्यैवम् ॥ ९ ॥

जिन पुरुषोंके जन्मकालमें कहीं एक स्थानमें चार वा पांच वा छः वह स्थित हों तो वह मनुष्य संन्यासी होता है, परंतु उन व्यक्तिमें जो बली हो सो अपना संन्यास देता है और बहुत वह बली हों तो उतने ही प्रकारका संन्यासी होता है, परंतु जो वह सबमें बली हो वह पहिले अपना संन्यास देता है फिर दूसरे व्यक्ति संन्यास होता है ॥ ९ ॥

अथ प्रव्रज्याभेदमाह ।

प्रवाजिकोऽकार्दिबलक्ष्मेण वैखानसः खर्परधृक् च लिंगी ।

दंडी यतिश्वकधरश्च नग्रस्तत्प्रच्युतो जन्मपतौ जिते स्यात् ॥ २ ॥

संन्यासयोग सूर्यको आदि लेकर क्रमकरके जानना अर्थात् योगकारक ग्रहोंमें सूर्य बली हो तो वैखानस अर्थात् वनमें पैदा हुए फलोंका भोजन करनेवाला होता है । जो चंद्रमा बली हो तो खर्परधृक् अर्थात् कपाली संन्यासी होता है, मंगल बली हो तो लिंगी अर्थात् गेरुए वस्त्रधारण करनेवाला संन्यासी होता है, बुध बली हो तो दंडी अर्थात् दंड धारण करनेवाला संन्यासी होता है या मठपति संन्यासी हो, जो बृहस्पति बली हो तो यती अर्थात् ब्रह्मचारी संन्यासी हो अर्थात् भिक्षा मांगनेवाला होता है, शुक्र बली हो तो चक्रका धारण करनेवाला होता है और शनैश्चर बली हो तो नग्र अर्थात् नंगा संन्यासी होता है, जो उक्तयोगकारक ग्रहोंमेंसे कोई ग्रह बली नहीं हो तो संन्यास नहीं होता है और संन्यासयोगकारक ग्रह किसी ग्रहसे युद्धमें हार गया हो तो संन्यास ग्रहण करने पर भी छूट जाता है ॥ २ ॥

अथ संन्यासयोगः ।

जन्माधिराजो रविज्ञिभागे कुजार्कजांशेऽकर्जवीक्षितश्च ।

करोति जातं कुटिलं कुशीलं पाखंडिकं मंडनतत्परं वा ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें जन्मकालिक चंद्रमा चाहे जिस राशिसंबंधी शनैश्चरके द्रेष्काणमें स्थित होकर मंगल वा शनैश्चरके नवांशमें स्थित हो और शनैश्चर देखता हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य कुटिल, कुशील तथा पाखंडी होता है, अब योगांतरसे भी दिखाते हैं, जन्मकालिक चंद्रराशिके स्वामीको शनैश्चर देखता हो और किसी ग्रहकी दृष्टि न हो तो वह पुरुष चंद्रराशिके स्वामी वा शनैश्चर इन दोनोंसे जो बली हो उसी दशा अंतर्देशमें फकीरीको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

अथ योगिप्रब्रज्यायोगः ।

एकस्थाने स्थितैः खेटैः सर्वैश्च बलसंयुतैः ।
निरंतरं निराहारो योगमार्गपरायणः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके एक स्थानमें चार वा पाँच वा छः ग्रह पूर्ण बली होकर स्थित हों तो वह मनुष्य हमेशा भोजन बिना रहकर योगमार्गमें तत्पर होता है ४

अथ चतुर्ग्रहाणां प्रब्रज्यायोगः ।

एकस्थाने खेचराणां चतुणा योगश्चेत्स्यान्मानवानां प्रसूतौ ।
ते स्युर्भूमीपालवंशेऽपि जाताः कांतारांतर्वासिनः सर्वथैव ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें एक घरमें चार ग्रहोंका योग हो वह मनुष्य राजाके वंशमें भी उत्पन्न हुआ तो भी हमेशा एकांतमें वास करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ पंचग्रहाणां प्रब्रज्यायोगः ।

पंचखेचरपतिर्यदि सूतौ भूपतेरपि सुतः स च नित्यम् ।
कंदमूलभक्षणचित्तोऽत्यंतशांतिविजितेऽद्रियशत्रुः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पाँच ग्रह एक स्थानमें बलवान् स्थित हों तो वह मनुष्य राजाका पुत्र हो तो भी सैदैव काल कंद, मूल, फल इनका भोजन करनेवाला, अत्यंत शांत, इंद्रियरूपी शत्रुओंका जीतनेवाला अर्थात् जितेऽद्रिय होता है ॥ ६ ॥

अथ षड्ग्रहाणां प्रब्रज्यायोगः ।

एकत्र षण्णां गगनेचराणां प्रसूतिकाले मिलनं यदि स्यात् ।
ते केवलं शैलशिलातलेषु तिष्ठन्ति भूपालकुलेऽपि जाताः ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें छः ग्रह बली स्थित हों तो वे पुरुष पर्वतोंकी गुफामें वास करते हैं चाहे राजकुलमें क्यों न उत्पन्न हों ॥ ७ ॥

अथ प्रब्रज्याभक्त्योगः ।

दिनकरलुतमयूखैरदीक्षिता भक्तवादिनस्तेषाम् ।
याचितदीक्षाबलिभिः पराजितरन्यहृष्टवर्वा ॥ ८ ॥

जिस पुरुषोंके जन्मकालमें संन्यासयोगकारक ग्रह अस्त हो उतने प्रकारकी प्रवज्याको वे लोग अंगीकार नहीं करते हैं किंतु उन प्रवज्या ग्रहण करनेवालोंके भक्त होते हैं और जो वही प्रवज्यादायक ग्रह अन्य ग्रहोंसे युद्धमें हारे हों अथवा अन्य ग्रहोंसे दृष्ट हों तो वह मनुष्य उन ग्रहोंके फकीरीको ग्रहण करनेकी याचना तो करे परंतु गुरुसे पाते नहीं हैं और संन्यास योगकारक ग्रह किसी ग्रहसे युद्धमें हारा हो और कोई ग्रह नहीं देखता हो तो वह मनुष्य फकीरी ग्रहण करके त्याग देते हैं अर्थात् फिर गृहस्थ हो जाते हैं॥८॥

अथ राजप्रवज्यायोगः ।

प्रव्राजितानामथ भूपतीनां योगद्वयं चेत्प्रबलं प्रसूतौ ।

फल विरुद्धं ह्यनुभूय पूर्वं ततो व्रजेद्राजपदाधिकारम् ॥९॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु प्रवज्यायोगकीर्तिः ।

बलदेवसुतो गौडः श्यामलालेन धीमता ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजरा-
जज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे

प्रवज्यायोगवर्णनं नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें संन्यासयोग हो और राजयोग भी हो, दोनों योग बलवान् हों तो वह मनुष्य राजा होकरके भी संन्यासी होता है अथवा संन्यासी होकरके भी राजा होता है, जिस मनुष्यके जन्मकालमें कोई राजयोग हो और बृहस्पति, चंद्रमा, लघु इन तीनोंको शनैश्चर देखता हो और लघुसे नवम वा पंचमस्थानमें बृहस्पति स्थित हो तो वह मनुष्य शास्त्रका बनानेवाला होता है अर्थात् यम, यवन, मणित्थ, वराहमिहिरके समान होता है ॥ ९ ॥ इस अध्यायके बीचमें बलदेवप्रसादका पुत्र गौड-ब्राह्मण बुद्धिमान् श्यामलालकरके संन्यासयोग कहे ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिपंडितश्यामलाल-
कृतायां श्यामसुंदरीभाषार्टीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नाभसयोगाध्यायप्रारम्भः ।

अथ रज्जुयोगः ।

चरभवनादिषु सर्वैराश्रयजा रज्जुमुशलनलयोगः ।

ईषी मानी धनवान् क्रमेण कुलविश्रुताः सर्वे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चरराशियोंमें अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर इनम संपूर्ण ग्रह स्थित हों तो रज्जुनाम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य ईर्षा करनेवाला पराये वैभवको देखकर जलनेवाला होता है॥

अथ मुशलयोगः ।

स्थिरराशि वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ इनमें सब ग्रह स्थित हों तो मुशल नाम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य मानी होता है॥

अथ नलयोगः ।

जो द्विस्वभावराशि मिथुन, कन्या, धन, मीन इनमें सब ग्रह स्थित हों तो नल नाम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य धनवान् होता है॥ १ ॥

अथ दलयोगः ।

केद्रत्रयगैः पापैः शुभैर्दलाख्यो ह्यहिश्च माला च ।

सर्पेऽतिदुःखितानां मालायां जन्म सुखिनाम् ॥ २ ॥

तीन केद्रोंमें संपूर्ण पापी ग्रह पड़ें तो दल वा अहि नाम योग होता है। इसमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अत्यंत दुःखी होता है॥

अथ मालायोगः ।

तीन केद्रोंमें सब शुभ ग्रह पड़ें तो माला नाम योग होता है। इसमें पैदा हुआ मनुष्य अत्यंत सुखी होता है॥ २ ॥

अथ गदायोगः ।

द्विरन्तरकेद्रस्थैर्गदा विलग्नास्तसंस्थितैः शकटम् ।

खचतुर्थर्योर्विहंगः शृंगाटकमुदयः पुत्रनवगैः ॥ ३ ॥

(१३६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

पास पास दो केंद्रोंमें सब ग्रह पड़े तो गदा नाम योग होता है सो चार प्रकारका है अर्थात् लघु चौथे स्थानमें सब ग्रह पड़े तो एको योगः । चतुर्थ सप्तम स्थानमें सब ग्रह पड़े तो द्वितीयो योगः । सप्तम दशम स्थानमें सब ग्रह पड़े तो तृतीयो योगः । दशम लघुमें सब ग्रह पड़े तो चतुर्थो योगः॥

अथ शकटयोगः ।

लघु और सातवें स्थानमें सब ग्रह पड़े तो शकटयोग होता है ।

अथ विहंगयोगः ।

दशवें, चौथे स्थानमें सब ग्रह पड़े तो विहंगयोग होता है ॥

अथ शृंगाटकयोगः ।

लघु, पांचवें, नौवें स्थानमें सब ग्रह पड़े तो शृंगाटक योग होता है ॥ ३ ॥

अथ हलनामयोगः ।

शृंगाटके गतैहलमेतेषां क्रमात्फलोपनयः ।

यज्वा शकटाजीवी दूताश्वरसौख्यकृषिकृत् ॥ ४ ॥

शृंगाटक योगमें जो स्थान कहे हैं उनको छोड़कर बराबर त्रिकोण अर्थात् नौवें, पांचवें स्थानमें सब ग्रह पड़े तो हल नाम योग होता है । सो तीन प्रकारका है । जो दूसरे, छठे, दशवें स्थानमें सब ग्रह पड़े तो एको योगः । तीसरे, सातवें, ग्यारहवें स्थानमें पड़े तो द्वितीयो योगः । चौथे, आठवें बारहवें स्थानमें हों तो तृतीयो योगः ।

अथ गदायोगफलम् ।

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य यज्ञका करनेवाला होता है ॥

अथ शकटयोगफलम् ।

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य गाडीवान् अथवा गाड़ीसे आजीविका करनेवाला होता है ॥

अथ विहंगयोगफलम् ।

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य दूत अर्थात् हलकारा होता है ॥

अथ शृंगाटकयोगफलम् ।

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बुढ़ापेमें सुखी होता है ॥

अथ हलयोगफलम् ।

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य खेती करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ वज्रयोगः ।

लग्नस्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्च मेषूरणबंधुपातैः ।

वज्राभिधस्तैर्विपरीतसंस्थैर्यैश्च मिश्रैः कमलाभिधानः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न और सातवें स्थानमें सब शुभग्रह पड़े और चौथे दशवें स्थानम् सब पापग्रह पड़े तो वज्र नाम योग होता है॥

अथ जवयोगः ।

लग्न तथा सातवें स्थानमें सब पापग्रह पड़े और चौथे, दशवें स्थानमें शुभग्रह पड़े तो जवनाम योग होता है ॥

अथ कमलयोगः ।

चारों केंद्रोंमें किसीमें शुभग्रह किसीमें पापग्रह पड़े तो कमल नाम योग होता है ॥ ५ ॥

अथ वापीयोगः ।

त्यक्त्वा केन्द्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः ।

वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥ ६ ॥

केंद्रको छोड़कर अन्य स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो वापी नाम योग होता है ॥ ६ ॥

अथ यूपयोगः ।

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गग्नेचराणाम् ।

क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दङ्डः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः ॥ ७ ॥

लग्नसे चौथे स्थानतक जो सम्पूर्ण ग्रह पड़े तो यूप नाम योग होता है ॥

(१३८)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अथ शरयोगः ।

और चौथे घरसे लेकर सातवें स्थानपर्यंत जो सम्पूर्ण वह स्थित हों तो शरनाम योग होता है ॥

अथ शक्तियोगः ।

और सातवें घरसे लेकर दशम स्थानपर्यंत सम्पूर्ण वह स्थित हों तो शक्ति नाम योग होता है ॥

अथ दंडयोगः ।

जो दशवें स्थानसे लेकर छठपर्यंत संपूर्ण वह स्थित हों तो दंड नाम योग होता है ॥ ७ ॥

अथ नौकायोगः ।

नौकूटच्छवचापानि तद्वत्सप्तक्षसंरिथतैः ।

अर्धचन्द्रस्तु नावाद्यैः प्रोक्तस्त्वन्यक्षसंस्थितैः ॥ ८ ॥

लग्नसे लेकर सप्तमस्थानपर्यंत जो सम्पूर्ण वह स्थित हों तो नौका नाम योग होता है ॥

अथ कूटयोगः ।

और जो चतुर्थ स्थानसे लेकर दशमस्थानपर्यंत सम्पूर्ण वह स्थित हों तो कूट नाम योग होता है ॥

अथ छत्रयोगः ।

और जो सप्तम स्थानसे लेकर लग्नपर्यंत सम्पूर्ण वह स्थित हों तो छत्र नाम योग होता है ॥

अथ चापयोगः ।

और जो दशम स्थानसे लेकर चतुर्थ स्थानपर्यंत सम्पूर्ण वह स्थित हों तो चाप नाम योग होता है ॥

अथ अर्धचन्द्रयोगः ।

अर्धचंद्र योगके आठ भेद हैं । दूसरे स्थानसे अष्टम स्थान-पर्यंत जो सम्पूर्ण श्रह पड़े तो एको योगः । तीसरे स्थानसे नवम स्थान-पर्यंत सब श्रह हों तो द्वितीयो योगः । पंचम स्थानसे ग्यारहवें स्थानपर्यंत सम्पूर्ण श्रह स्थित हों तो तृतीयो योगः । छठे स्थानसे बारहवें स्थानपर्यंत सम्पूर्ण श्रह स्थित हों तो चतुर्थो योगः । अष्टम स्थानसे द्वितीय स्थानपर्यंत सब श्रह पड़े तो पंचमो योगः । नवमस्थानसे तृतीयस्थानतक सब श्रह पड़े तो सप्तमो योगः । बारहवें स्थानसे छठे स्थानपर्यंत सब श्रह पड़े तो अष्टमो योगः । ये ८ अर्धचंद्र योगके भेद हैं ॥ ८ ॥

अथ चक्रदामिनीयोगः ।

एकांतरे विलग्नात्वद्वनावस्थितैश्चक्रम् ॥

अर्थात् तद्दुदधिनौप्रभृतिफलानि सप्तानाम् ॥ ९ ॥

लग्नसे लेकर एक एक घर छोड़कर छः स्थानोंमें अर्थात् १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ । इन स्थानोंमें सब श्रह पड़े तो चक्रदामिनी योग होता है ॥

अथ समुद्रयोगः ।

जो पूर्वोक्त स्थानको छोड़कर शेष स्थानोंमें अर्थात् २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ इनमें सब श्रह पड़े तो समुद्र नाम योग होता है ॥ ९ ॥

अथ वीणायोगः ।

संख्यायोगः स्युः सप्तसप्तश्चसंस्थैरेका पापाद्वलकी दामिनी च । पाशः केदारः शूलयोगो युगं च गोलश्चान्यान्पूर्वमुक्तां विहाय १०

सप्त स्थानोंमें सब श्रह स्थित हों तो वीणा नाम योग होता है ॥

(१४०)

ज्योतिषश्यामसंव्रहः ।

अथ दामिनीयोगः ।

और जो छः स्थानोंमें सम्पूर्ण व्रह स्थित हों तो दामिनी नामक योग होता है ॥

अथ पाशयोगः ।

जो पांच स्थानोंमें सम्पूर्ण व्रह स्थित हों तो पाश नामक योग होता है ॥

अथ केदारयोगः ।

चार स्थानोंमें सब व्रह स्थित हों तो केदार नामक योग होता है ॥

अथ शूलयोगः ।

जो तीन स्थानोंमें सब व्रह स्थित हों तो शूल नामक योग होता है ॥

अथ युगयोगः ।

दो स्थानोंमें सम्पूर्ण व्रह स्थित हों तो युग नाम योग होता है ॥

अथ गोलयोगः ।

जो एक ही स्थानमें सम्पूर्ण व्रह पड़े तो गोल नाम योग होता है ।
अब पूर्वोक्त योग तिनमें संख्यायोगके सदृश हो तो संख्यायोग नहीं व्रहण करना चाहिये । पूर्वोक्त योग प्रमाण करना चाहिये ॥ १० ॥

अथ वज्रयोगफलम् ।

आद्ये भागे जीवितस्यांतिमे च सौख्योपेतो भाग्यवान्मानवः स्यात् ।
मध्ये भागे भाग्यहीनः प्रकामं कामकोधैरन्वितो वज्रयोगे ॥ ११ ॥

वज्रयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य पहली अवस्थामें और अंतमें अर्थात् बुढापेमें सुखसहित भाग्यवान् मनुष्य होता है और जीवनीमें भाग्य हीन तथा कामकोधसहित होता है ॥ ११ ॥

अथ जवयोगफलम् ।

नित्यं हर्षोत्कर्षशाली बलीयान् चंचत्कांतिः स्याद्विनीतो वदान्यः ।
नित्योत्साहः शुद्धवृत्तिः प्रशांतः शांतकोधो यः प्रसूतो यवाख्ये ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें यव नाम योग होता है सो पुरुष सदैव काल हर्षको प्राप्त, बलसहित, शोभायमान, नम्रतासंयुक्त, मिष्ठ वाणीका बोलनेवाला, सदैव उत्साहवाला, अच्छी वृत्तिका करनेवाला, शांतस्वभाव तथा कोधरहित होता है ॥ १२ ॥

अथ कमलयोगफलम् ।

मध्ये भागे धर्मकामार्थसंपत् चंचत्कांतिर्गीतकीर्तिर्मनुष्यः ।
योगे सूतिश्वेतसरोजे स राजा राज्ञो वंशे वा भवेद्वीर्घजीवी ॥ १३ ॥

जिसके जन्मकालमें कमल योग होता है सो मनुष्य जवानीमें धर्म, अर्थ, काम तीनों प्रकारके सुखसहित, शोभायमान स्वरूप, मनुष्य जिसकी प्रशंसा करे ऐसा और जो राजाके वंशमें उत्पन्न हो तो बड़ी उमरवाला राजा होता है ॥ १३ ॥

अथ वापीयोगफलम् ।

दीघायुः स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोऽत्यंतधीरो मनीषी ।
चंचद्वाक्यः सन्मनाः पुष्पवापी वापीयोगे यः प्रसूतः प्रतापी ॥ १४ ॥

वापी योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बड़ी उमरवाला, अपने वंशमें सूर्यके समान, सुखसहित, अत्यंतधीरजवाला, मनीषी, शोभायमान वाक्यवाला, उत्तम मनवाला, पुष्प बगीचा सहित तथा प्रतापी होता है ॥ १४ ॥

अथ यूपयोगफलम् ।

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारी नानाविद्यासद्विचारो नरो वै ।
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नूनम् ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें यूप योग होता है वह मनुष्य धीर, उदारयज्ञकमाँके अनुसार, अनेक विद्यासहित, अच्छा विचार करनेवाला होता है जिसके जन्मकालमें यूपयोग हो निश्चय तिसके आधीन लक्ष्मी होती है ॥ १५ ॥

अथ शरयोगफलम् ।

हिंसोऽत्यंतं शिल्पदुःखैः प्रतपः प्राप्तानन्दः काननांते शरज्ञः ।

मर्त्योयोगे यो शरे जातजन्मा जन्मारंभात्स्य नक्षपि सौख्यम् १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शर नाम योग होता है सो मनुष्य अत्यंत हिंसाका करनेवाला, चित्रकारीसे दुःखको प्राप्त, आनंदको प्राप्त वनके अंत-तक शरका जाननेवाला होता है । जो मनुष्य शरयोगमें उत्पन्न हो उसको जन्मसे आखिरतक सुख न हो ॥ १६ ॥

अथ शक्तियोगफलम् ।

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो निर्मलश्च ।

वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे १७

जिसके जन्मकालमें शक्तियोग होता है सो मनुष्य नीच ऊंच पुरुषोंसे प्रीति करनेवाला,आलस्यसहित,सुख और धनसे राहित,निर्मल होता है विवाद और युद्धमें उसकी बुद्धि विशाल, स्थानका सुख अल्प होता है ॥ १७ ॥

अथ दंडयोगफलम् ।

दीनो हीनोन्मत्तसंजातसौख्यः प्रेष्यद्वेषी गोत्रजैर्जातवैरः ।

कातापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्धया दंडयोगात्सजन्मा ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें दंड नाम योग हो वह मनुष्य दीन, हीन: उन्मत्त, सुखको प्राप्त,दूतसे वैर करनेवाला, गोत्रके पुरुष अर्थात् भाई बंधुसे वैर करनेवाला, स्त्री पुत्र धन मित्रसे राहित तथा बुद्धिहीन होता है ॥ १८ ॥

अथ नौकायोगफलम् ।

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनो नौकायोगे लब्धजन्मा मनुष्यः ।

क्लेशी शश्चञ्चलः शांतवृत्तिवृत्तिस्तोयोद्भूतधान्येन तस्य ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें नौका योग हो वह मनुष्य रूपण, भोग सुख करके हीन, सदैवकाल क्लेश भोगनेवाला, चञ्चल, शांतवृत्ति, तोयोद्भूतधान्यसे आजीविका करनेवाला होता है । कोई आचार्य नौका करके इसकी आजीविका होगी ऐसा कहते हैं ॥ १९ ॥

अथ कूटयोगफलम् ।

दुर्गारण्यावासशीलश्च मङ्गो भिष्णाद्रीतिनिर्धनो निंद्यकर्मा ।

धर्माधर्मज्ञानहीनश्च कूटः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥२०॥

इस कूटयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य घोर वनमें वास करनेमें शील जिसका, महिलवान्, भिष्णोसे भय माननेवाला, धनराहित, निंदित कर्म करनेवाला, धर्म अधर्मके ज्ञानसे हीन तथा कुटिल होता है ॥ २० ॥

अथ छत्रयोगफलम् ।

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वं पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः ।

यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिस्तस्य चामराद्यापि छत्रः ॥२१॥

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य पंडित, राजाओंके काम करनेवाला, दयावान्, पहली पिछली अवस्थामें सम्पूर्ण सुखसहित होता है । जिसके उत्पत्तिके समय छत्रयोगकी प्राप्ति हो उस मनुष्यको चमर आदि लेकर छत्र बगैरेकी प्राप्ति होती है ॥ २१ ॥

अथ चापयोगफलम् ।

आद्ये भागे चांतिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः ।

योगे जातः कार्मुकः सोऽतिगर्वो गर्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः ॥२२॥

जो मनुष्य चापयोगमें उत्पन्न होता है सो उमरके पहिले और अंतभागमें सुखसहित, वन और पर्वतोंमें प्रचार करनेवाला, अभिमानसे उन्मत्त तथा धनुषके बाणोंसे आपत्तिकरनेवाला अर्थात् गोली चलानेवाला होता है ॥२२ ॥

अथार्द्धचन्द्रयोगफलम् ।

भूर्मीपालात्प्राप्तचंचत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थीविराद्यः ।

चेदुत्पत्तौ यस्य योगार्द्धचंद्रश्चन्द्रः साक्षादुत्सवायें जनानाम् ॥२३॥

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य राजाओंसे उत्तम प्रतिष्ठाको प्राप्त, अच्छी सेना आभूषण धन वस्त्रादिसहित होता है, जिसके जन्मकालमें अर्द्ध-चंद्र योग हो सो मनुष्य जनोंमें चंद्रके समान स्वरूपवान् होता है ॥ २३ ॥

अथ चक्रयोगफलम् ।

श्रीमद्भूपोऽत्यंतजातप्रतापो भूपो भूपोपायनैरन्वितः स्यात् ।
योगे जातः पूरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथ्व्याः शालिनी तस्य कीर्तिः २४

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य लक्ष्मीवान्, स्वरूप, अधिक प्रताप-वाला, वारंवार सवारीकरके सहित होता है, जो मनुष्य चक्रयोगमें पैदा हो उसकी कीर्ति पृथिवी चक्रपर प्रगट होती है ॥ २४ ॥

अथ समुद्रयोगफलम् ।

दानी धीरश्वारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यप्रकामः ।
योगे जातो यः समुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण ॥ २५ ॥

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य दान करनेवाला, धीरजवान्, उत्तम स्वभावसहित, दयालु तथा राजाओंसे सुखको प्राप्त होता है, जो पुरुष समुद्रयोगमें पैदा हो सो धन्य होता है तथा उसका वंश भी धन्य होता है ॥ २५ ॥

अथ वीणायोगफलम् ।

अर्थोपेताः शास्त्रपारंगताश्च संगीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम् ।
नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणिनां जन्मकाले २६ ॥

जिस पुरुषके जन्मकालमें वीणा योग होता है वह मनुष्य धनसहित शास्त्रका जाननेवाला, गीतविद्याको जाननेवाला, बहुत मनुष्योंका पालन करनेवाला, अनेक सुखसहित तथा अनेक कार्मोंमें प्रवीण होता है ॥ २६ ॥

अथ दामिनीयोगफलम् ।

जातानंदो नंदनाद्यैः सुधीरो विद्वान् भूषाकोशसंजाततोषः ।
चंचच्छीलोदारबुद्धिः प्रशस्तः शस्तः सूतौदामिनी यस्य योगः २७

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य आनंदसहित, सम्पूर्ण सौख्ययुक्त, उत्तम बुद्धिवाला, विद्वान्, आभूषण खजाना करके सहित, संतोषको प्राप्त, उत्तम शील, जिसकी उदारबुद्धि तथा प्रशस्त हो । जिसके जन्मकालमें दामिनी योग हो सो मनुष्य अच्छा होता है ॥ २७ ॥

अथ पाशयोगफलम् ।

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बंधनार्ता भूरितल्पाः सदंभाः ।
नानानर्थाः पाशयोगे प्रजाता जातारण्यप्रीतयः स्युर्मनुष्याः २८॥

इस पाशयोगमें पैदा हुआ मनुष्य दीनस्वरूपवाला, बुराई करनेमें तत्पर, बंधनकरके दुःखी, बड़ा कृपण, क्रोधसहित, अनेक अनर्थ करनेवाला तथा जंगलमें उत्पन्न हुए जीवोंसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ केदारयोगफलम् ।

सत्योपेताश्चार्थवंतो विनीता भूपात्प्राप्तिश्चोपकारादरश्च ।
योगे केदारे नरास्तेऽपि जाता धीराचाराश्चापि तेषां विशेषात् २९

इस केदार योगमें पैदा हुआ मनुष्य सच बोलनेवाला, धनवान्, नम्रतासहित, राजासे प्राप्ति करनेवाला, आदरसे उपकार करनेवाला, धीर तथा विशेष आचार करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ शूलयोगफलम् ।

युद्धे वादे तत्पराश्चाति शूराः कूराः स्वार्थे निष्ठुरा निर्धनाश्च ।
योगे येषां सूतिकाले हि शूलाः शूलप्रायास्ते जनानां भवन्ति ३०॥

इस शूल योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य युद्ध और विवादमें तत्पर, दुष्ट, अपने काममें निष्ठुर तथा धनरहित होता है, मनुष्योंको शूलप्राय होता है ॥ ३० ॥

अथ युगयोगफलम् ।

पाखंडेनाखंडितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मप्रमुक्ताः ।

पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ॥३१॥

इस युगयोगमें पैदा हुआ मनुष्य पाखंडकरके खंडित प्रीति करनेवाला, निर्लज्ज, धर्मकर्मरहित, पुत्रधनकरके सदैवकाल रहित, युक्तियोंसे युक्त तथा ज्ञानशून्य होता है ॥ ३१ ॥

अथ गोलयोगफलम् ।

विद्यासत्त्वोदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः ।
 येषां योगे संभवे गोलनामा नानासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते ३२ ॥
 प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्मकाले ।
 तस्मादेते श्यामलालेन उक्ताः पूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदिष्टाः ॥३३॥
 इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंस श्रीबलदेवप्रसादात्मज-
 राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-
 संग्रहे नाभसयोगवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य विद्या, पराक्रम, उदारता तथा सामर्थ्यकरके हीन, अनेक आयास सहित, सदैव परदेश जानेवाला होता है। जिसके जन्मकालमें गोल नाम योग होता है वह मनुष्य अनेक झूठ व अनीतिमें प्रीति करनेवाला होता है ॥३२॥ ये नाभसाख्य योग सब प्राणियोंके जन्मकालमें होते हैं अत एव पूर्वाचार्योंने जातकमें इनका वर्णन किया है मैंने (श्यामलालने) भी उसीप्रकार यहां उनका वर्णन किया है ॥ ३३ ॥

इति वंशबरेलिकस्थराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां भाषाटीकायां
नाभासयोगवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ पंचमहापुरुषाध्यायप्रारंभः ।

ये वै महापुरुषसंज्ञकभूमिपालः पंचैव पूर्वमुनिभिः किल संप्रदिष्टाः । वक्ष्याम्यहं सुसरलामलकोक्तिभिस्तान्सद्वाजयोगविधिदर्शनलिप्सया च ॥ १ ॥

जो महापुरुषसंज्ञक पांच राजयोग पहिले मुनीश्वरोंने निश्चयकरके दिखाये उन योगोंको सरलप्रकारसे, निर्मल उक्तिसे, अच्छे राजयोगविधिदर्शनकी इच्छाकरके मैं कहता हूँ ॥ १ ॥

अथ स्त्रकादियोगः ।

स्वक्षर्मोच्चाश्रयकेद्रस्थैरुच्चगैर्वा कुजादिभिः ।
 कमाद्रुचकभद्राख्यहंसमालव्यशाशकाः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगलको आदि लेकर अपनी राशिके उच्चके आश्रयमें केंद्रमें स्थित हों अथवा आप उच्चके हों तो क्रमसे रुचकादि योग होते हैं अर्थात् जिसके केंद्रमें मंगल मेष, वृश्चिक या मकरका स्थित हो तो रुचक नामक योग होता है ॥

अथ भद्रयोगः ।

जिसके जन्मकालमें बुध कन्या वा मिथुनराशिमें स्थित होकर केंद्रमें बैठा हो तो भद्र नाम योग होता है ॥

अथ हंसयोगः ।

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति धन वा मीन वा कर्कराशिमें स्थित होकर केंद्रमें हो तो हंस नाम योग होता है ॥

अथ मालव्ययोगः ।

जिसके जन्मकालमें शुक्र वृष वा तुला वा मीन गाशिमें स्थित होकर केंद्रमें बैठा हो तो मालव्य नाम योग होता है ॥

अथ शशकयोगः ।

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर मकर वा कुंभराशिमें स्थित होकर केंद्रमें बैठा हो तो शशक नाम योग होता है ॥ २ ॥

अथ रुचकयोगफलम् ।

रक्तः श्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कंबुकंठो महौजाः
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजंघः ।
दीर्घायुः स्वच्छकांतिर्बद्धुरुधिरबलो साहसी वा ससिद्धि-
श्वारुभूर्निलकेशः समकरचरणो मंत्रविज्ञारुकीर्तिः ॥ ३ ॥

लाल और श्यामता लिये स्वरूप जिसका, शूर, शत्रुओंके बलका नाश करनेवाला, शंखकीसी गरदन, महान् यशस्वी, कूर, मनुष्योंका भक्त ब्राह्मण और गुरुसे नम्र, जानु और जंघा दुर्बल, बड़ी उमरवाला, निर्मल कांतिमान्,

रुधिर बल अधिक, साहसी, सिद्धियोंसहित, उत्तम भौहैं, श्यामकेशवाला, हाथ पैर एक समान, मंत्रका ज्ञाता तथा उत्तम कीर्तिमान् होता है ॥३॥

खदांगपाशवृषकार्मुकचक्रवीणावजांकहस्तचरणः सरलां-
गुलिः स्यात् । मंत्राभिचारकुशलस्तु लपेत्सहस्रं मध्यं च
तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥ ४ ॥ सहस्र्य विंध्यस्य
तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिजीवितोऽसौ । शस्त्राभि-
चिह्नो रुचकाभिधाने देवालये तन्निधनं प्रयाति ॥ ५ ॥

रुचक योगमें पैदा हुआ मनुष्य खदांग, पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, वज्र इनकरके अंकित हैं हाथ पैर जिसके, सीधी अंगुली, सलाह करनेमें चतुर हजारों मनुष्योंमें नामी, मध्यशरीर, चौड़ा मुख ॥४॥ सह्य, विंध्य, उज्जयिनीदेशोंका स्वामी, सत्तरवर्षतक जीये, शस्त्र अभिके चिह्नोंकरके युक्त होता है तथा यह देवताके स्थानमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भद्रयोगफलम् ।

शार्दूलप्रतिमानवो द्विपगतिः पीनोरुवक्षस्थलो लंबापीनसुवृत्त-
बाहुयुगलस्तुल्यमानोच्छ्रयः । कामी कोमलसूक्ष्मरोमनि-
चयैः संरुद्धगंडस्थलो प्राज्ञः पंकजगर्भपाणिचरणो सत्त्वाधिको
योगवित ॥ ६ ॥ शंखासिकुंजरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलांगल-
विचिह्नितपाणिपादः । यत्रागजेऽमदवारिकृताद्रभूमिः सत्कुंकुम-
प्रतिमगंधतनुः सुघोषः ॥ ७ ॥

भद्रयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सिंहके समान, गजकीसी चाल, ऊंचा वक्षस्थल, लंबी मोटी सुढार दोनों बाहें, तिसकेही समान ऊंचा, कामी, कोमल शरीर, महीन रोम, उत्तम कपोल, पंडित, कमलके समान हाथ पैर, बलवान् योगका ज्ञाता ॥६॥ शंख, तलवार, हाथी, गदा, पुष्पपताका, कमल, लांगल इन चिह्नोंसे अंकित हाथ पैर जिसके, मत्त हाथीकीसी चाल, पृथ्वीको शोभाय-मान, अच्छे कुंकुम और गंधमय शरीर तथा उत्तमवाणी होती है ॥ ७ ॥

सद्वप्नोऽतिमतिमान् खलु शास्त्रवेत्ता मानोपभोगसहितोऽति-
निगृदगुह्यः । सत्कुक्षिधर्मनिरतः सुललाटपट्टो धीरो भवेदसि-

तकुंचित्केशपाशः ॥ ८ ॥ स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनप्रतिम-
क्षमी । भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिज्ञैः परैः ॥ ९ ॥ भारं
तुलायां तुलयेत्सुरत्नैः श्रीकान्यकुञ्जाधिपतिर्भवेत्सः ॥ भद्रो-
द्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम् ॥ १० ॥

भद्रयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य उत्तमस्वरूप, अतिबुद्धिमान्, निश्चयकरके
शास्त्रका वेत्ता, मानभोगसहित, छिपा हुआ गुह्यस्थान, अच्छी कुक्षि, धर्ममें
तत्पर, मस्तक जिसका अच्छा, धैर्यवान्, अतिश्याम, धूधरवाले बाल जिसके
॥ ८ ॥ सम्पूर्ण कार्योंमें स्वतंत्र, अपने मनुष्योंपर दया करनेवाला, ऐश्वर्यका
भोगनेवाला, जिसके विभवको सदैव मनुष्य भोग करे ॥ ९ ॥ जिसकी
तुलाका भार रत्नोंकरके तौला जाय तथा कान्यकुञ्जदेशका स्वामी होता
है, पुत्र श्वाके सुखसहित राजा होता है और अस्सी बरस जीता है ॥ १० ॥

अथ हंसयोगफलम् ।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसे प्रसन्नेन्द्रियो गौरः पीनकपोलर-
क्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः । शंखाब्जांकुशमत्स्यदामयुगलैः
खट्टांगमालाघटैश्चंचत्पादकरस्थले मधुनिभैन्नेवे सुवृत्तिं शिरः ॥ ११ ॥

हंसयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य लाल मुख, ऊंची नासिका, अच्छे
पर, प्रसन्न चिन्त, गौर, मौटे कपोल, जिसके लाल नख, हंसकीसी वाणी
बोलनेवाला, शंख, कमल, अंकुश, युगल मच्छ, खट्टांग (शस्त्रविशेष),
माला, घट ये चिह्न जिसके हाथों पैरोंमें हैं, शोभायमान, सहतके समान
अरुण नेत्र, उत्तम शिर होता है ॥ ११ ॥

जलाशयप्रीतिरतीवकामी न याति तृतीं वनितासु नूनम् ।

उच्चोङ्गुलैर्वा षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिः समानाम् ॥ १२ ॥

बाह्नीकदेशांतरशूरसेनगांधर्वगंगायमुनांतरालम् । भुक्त्वा

वनांते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः ॥ १३ ॥

जलाशयसे प्रीति करनेवाला, अतिकामी, श्वियोंसे अतृप्त, छ्यासी
अंगुल शरीर ऊंचा होता है, छ्यानवे बरसकी उमर होती है ॥ १२ ॥ बाह्नीक,

(१५०)

ज्योतिषश्यामसंश्वेतः ।

शूरसेन, गंधर्व, गंगा, यमुनाका मध्य इन देशोंको भोग करनेवाला, वनके अंतर्में
मृत्युको प्राप्त होता है. प्राचीन मुनीश्वरोंने यह हंसयोग कहा है ॥ १३ ॥

अथ मालव्ययोगफलम् ।

अस्थूलोष्ठोऽथ विषमवपुर्नैव रित्तांगसंधिर्मध्यक्षामः शशिधर-
रुचिहस्तनासासुगंडः । सदीपाक्षः समसितरदो जानुदेशाप्त-
पाणिर्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ १४ ॥

इस मालव्य योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य मोटे होंठ, दुर्बल शरीर,
एकसी देह कहीं खाली नहीं कभर जिसकी, छीन चंद्रमाकीसी रुचि, हाथ
नासिका कपोल जिसके अच्छे, प्रकाशवान् नेत्र, बराबर सफेद दांत, आजा-
नुबाहु होता है । इस मालव्ययोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सत्र वर्षकी
उमरतक राजसुखको भोग करता है ॥ १४ ॥

वक्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं तिर्यक् दशाङ्गुलमितं
श्रवणांतरालम् । मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं लाटांश्च
मालवकसिंधुसुपारियात्रान् ॥ १५ ॥

मुख जिसका तरह अंगुल बड़ा हो और कानोंके बीचमें दश
अंगुल होता है । मालव्य नाम राजा निश्चयकरके लाट, मालवा, सिंधु,
पारियात्र इन देशोंको भोग करता है ॥ १५ ॥

अथ शशकयोगफलम् ।

लघुः शरीरोऽद्भुतगः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः । वना-
द्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः ॥ १६ ॥
नानासेनानिचयनिरतो दंतुरश्वापि किंचिद्धातोर्वादे भवति
कुशलश्वचलः कोलनेत्रः । स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः
सुजंघो मध्येक्षामः सुललितमती रंगदेषी परेषाम् ॥ १७ ॥

शशकयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य छोटा शरीरवाला, अद्भुत,
क्रोधसहित, अत्यंत शठ, शूर, जंगलमें प्रचार करनेवाला, वन, पर्वत, किला,
नदी इनके बीचमें आसक, अतिथियोंका प्यारा, अति छोटा नहीं, किंतु

प्रसिद्ध होता है ॥ १६ ॥ अनेक सेनाको इकडा करनेमें तत्पर, कुछ छिदरे दांत, धातुकी परीक्षामें कुशल, चंचल कंजे नेत्र, बीमें आसक्त, परधनका हरनेवाला, माताका भक्त, उत्तम जांघोवाला, बीचमें दुर्बल, शोभायमान बुद्धि, दूसरेके छिद्रोंको देखनेवाला होता है ॥ १७ ॥

पर्यक्षंखशरश्चमृदंगमालावीणोपमा खलु करे चरणे च
रेखा । वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं सम्यक्च्छशा-
ख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ १८ ॥

पर्यक्ष, शंख, बाण, तलवार, मृदंग, माला, वीणा इन चिह्नोंके समान निश्चय करके हाथ पैरोंमें रेखा होती है जिसके सत्र वर्षकी उमरतक भले प्रकार राज्य करता है यह शशक नाम योग मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १८ ॥

अथ पंचमहापुरुषभंगयोगः ।

केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवति ।
कुर्वति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छंति ते केवलसत्फलानि ॥ १९ ॥

महापुरुषयोगोऽयं पंचपूर्वमुनिः कृतः ।

तदुक्तं श्यामलालेन संदृशा जातकोत्तमैः ॥ २० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते पंचमहापुरुष-
योगवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

भामादि ग्रह सूर्य अथवा चंद्रमासहित केंद्रमें उच्चके प्राप्त हों तो अपनी दशामें पृथिवीका पति नहीं करते हैं, केवल उत्तम फलके दाता होते हैं ॥ १९ ॥ ये पांच महापुरुष योग पूर्वमुनीश्वरोंने किये सो योग उत्तम जातकको देखकर श्यामलालकरके कहे गये ॥ २० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यो-
तिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां
दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ राशिप्रभेदाध्यायप्रारंभः ।

कालनरस्यांगम् ।

शीषार्थ्यं मदनं च बाहुयुगलं हच्चोदरं कथ्यथो
बस्तिर्गुह्यमुहू च जानुजघने पादद्रव्यं वै क्रमात् ।
मेषाद्याः किल राशयः समुदिताः पूर्वे सुबोधाय य-
त्वेके लग्नभतश्च आद्यवयवा ज्ञेयास्तु निःसंशयाः ॥ १ ॥

मनुष्योंके जन्मकालमें नराकार चक्र बनाकर उसके शिरपर मेष राशि स्थापित करे । मुख वृष, दोनों बाहें और छातीमें मिथुन, यथा (मिथुनं तृतीयः प्रजायते स्कंधभुजांगदेशे) हृदयमें कर्क, पेटमें सिंह, कमरमें कन्या, नाभिके नीचे तुला, लिंग गुदा वृश्चिक, जंघा दोनों धन, पैरोंके बीचकी संधि मकर, पिंडली दोनों कुंभ, चरण दोनों मीन हैं । इसी तरह सब अंगोंमें सब राशियोंको स्थापित करके उनको कालपुरुषके अंग माने । इसका प्रयोजन यह है जिस राशिमें शुभाशुभयह स्थित हों वह राशि कालपुरुषके जिस अंगोंमें हो उस अंगको पुष्ट अथवा क्षीण कहे । मेषको आदिलेकर जो राशि कही है इनको लग्नभ आद्यवयव राशि क्षत्र क्षक्ष यह भवनादि कहते हैं । जहां जो नाम आवे उसको राशि जानना चाहिये ॥ १ ॥

अथांगविभागप्रयोजनम् ।

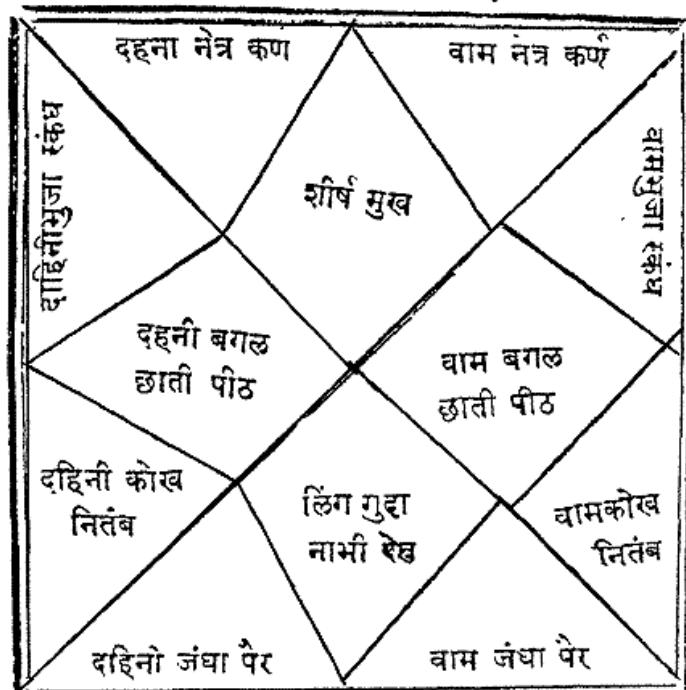
कालनरस्यावयवान् जंतूनां चिंतयेत्प्रसवकाले ।

सदसदूग्रहसंयोगात्पुष्टान् सोपद्रवांश्चापि ॥ २ ॥

कालपुरुषके अंग प्रत्यंग वा जीवोंके अंग जन्मकालमें जो राशि शुभग्रहसहित हो कालपुरुषके जिस अंगमें हो, सो अंग बलवान् कहना चाहिये और जो राशि पापग्रहसहित हो सो अंग घातसहित कहना अर्थात् इन अंगोंको निर्बल वा ब्रण तिल लसहन वहां जानना ॥ २ ॥

अब दूसरे प्रकारसे कुंडलीके अनुसार मनुष्य वा पशुपक्षीके अंगके स्थान लिखते हैं सो आगे चक्रमें देखना, उन स्थानोंको अच्छे ग्रहोंके संयोगसे अच्छा कहना पापग्रहके संयोगसे उस स्थानको धाती कहाना चाहिये॥

अथ अंगचक्रम् ।



अथ भचक्रराशिव्यवस्थामाह ।

अश्विनी भरणी मेषः कृत्तिकापाद एव च । तत्पादत्रितयं ब्राह्मं वृषः सौम्यदलं तथा ॥३॥ सौम्यार्द्धमार्द्र्मि मिथुनमादित्यचरणत्रयम् । तत्पादः पुष्यमाश्लेषा राशिः कर्कटकः स्मृतः ॥ ४ ॥ पित्र्यं भागमथार्यम्णो भागः सिंहः प्रकीर्तिः । तत्पादत्रितयं कन्या हस्तचित्रार्द्धमेव च ॥ ५ ॥

अश्विन, भरणी, कृत्तिकाके एक चरणतक मेष राशि होती है । और कृत्तिकाके तीन चरण, रोहिणी, मृगशिरके दो चरणतक वृषराशि होती है ॥३॥ मृगशिरके दो चरण और आर्द्रा, पुनर्वसुके तीन चरणतक मिथुन राशि होती है । पुनर्वसुका एक चरण, पुष्य, आश्लेषा नक्षत्रतक कर्कराशि होती है ॥४॥ मधा, पूर्वा, उत्तराके एक चरणतक सिंह राशि होती है । उत्तराके तीन चरण, हस्त और आधी चित्रातक कन्याराशि जाननी चाहिये ॥ ५ ॥

(१५४)

ज्योतिषश्यामसंघ्रहः ।

तुला चित्रादलं स्वाती विशाखाचरणत्रयम् । तत्पादं मित्र-
दैवत्यं ज्येष्ठा वृश्चिक उच्यते ॥ ६ ॥ मूलमाष्यं तथा धन्वि-
पादो विश्वेश्वरस्य च । तत्पादत्रितयं विष्णुर्मकरो वासवं
दलम् ॥ ७ ॥ तदलं वाहणं कुंभस्तथाजचरणत्रयम् ।
तत्पादमेकं मीनः स्यादहिर्बुध्यं च रेवती ॥ ८ ॥

चित्रार्द्ध, स्वाती, विशाखाके तीन चरणतक तुलाराशि होती है ।
विशाखाका एक चरण, अनुराधा, ज्येष्ठाके अंततक वृश्चिकराशि होती है
॥ ६ ॥ मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ाके एक चरणतक धनराशि होती है । उत्त-
राषाढ़ाके तीन चरण, श्रवण, धनिष्ठाके दो चरणतक मकर राशि होती
है ॥ ७ ॥ आधी धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपदाके तीन चरणतक कुंभराशि
होती है । पूर्वभाद्रपदाके एक चरण और उत्तरभाद्रपदा, रेवतीके अंततक
मीन राशि होती है ॥ ८ ॥

अथ राशिस्वरूपम् ।

झषद्वयं मीन इति प्रदिष्टो नक्तो मृगास्यो मिथुनो नृयुग्मम् ।
वीणागदाभृत्तुलाधरो ना धर्नुधरो ना धनुरश्वजंघः ॥ ९ ॥

तरिस्थिता तु कन्यका हुताशसस्यसंयुता ।

सरित्कुंभपूरुषो घटः स्वनामवत्परे ॥ १० ॥

दो मछली उसकी पूछ उसके मुहमें ऐसा मीन राशिका स्वरूप है । मक-
रराशिका मृगकासा मुख, देह मगरके समान है । मिथुनराशिका स्वरूप ली-
पुरुष दोनों जोड़ा हैं, वीणा धारण किये ली, गदा धारण किये पुरुषके सदृश
मिथुनराशि है । तराजू लिये पुरुषके समान तुलाराशिका स्वरूप है । धनुषको
धारण किये, घोड़ेके समान जंघवाले पुरुषके सदृश धन है ॥ ९ ॥ नावमें स्थित
एक हाथमें अग्नि, दूसरे हाथमें तृणको लिये ऐसा कन्याराशिका स्वरूप है । वाम-
कंधेपर खाली घडा धरे पुरुषके समान कुंभराशिका रूप है । शेषराशियोंका ना-
मके समान स्वरूप है अर्थात् मेषका मेष (मेड़े) के समान, वृषकावैलके सदृश,
सिंहका शेरके समान, कर्कका गिरचेके समान स्वरूप जानना चाहिये ॥ १० ॥

अथ राशिस्वामी ।

कुजः सितो बुधो विधुर्भृगुज्ञशुक्रभूमिजाः ।
सुरेज्यमन्दसूर्यजा गुरुः क्रमाच्च भेश्वराः ॥ ११ ॥

मंगल, शुक्र, बुध, चंद्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनै-
श्वर, शनैश्वर, बृहस्पति ये यह क्रमसे मेषादिराशियोंके स्वामी हैं, अर्थात्
मेषका मंगल, वृषका शुक्र, मिथुनका बुध, कर्कका चंद्रमा, सिंहका सूर्य,
कन्याका बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिकका मंगल, धनका बृहस्पति, मकरका
शनैश्वर, कुभका शनैश्वर, मीनका बृहस्पति स्वामी है ॥ ११ ॥

अथ राशिस्वामिचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	बृ.	ध.	म.	कु.	मी.
मेष	बुध	भृगु	ज्ञानी	शुक्र	विधु	तुला	बृश्चिक	धनु	मंगल	कुभ	मीन
मेष	बुध	भृगु	ज्ञानी	शुक्र	विधु	तुला	बृश्चिक	धनु	मंगल	कुभ	मीन

अथ राशिनामानि ।

छागः क्रियो मेष अविस्त्वजः स्याद्बृषोक्षगावो वृषभश्च तावुरिः ।
द्वंद्वो नृयुग्मो मिथुनोथ युग्मोथो वैणिकाख्योजितमोथजित्मः १२
कर्कः कुलीराह्यकर्कटौ च सिंहाख्यकण्ठीरवकेसगी च ।
लेयो मृगेन्द्रश्च हरिश्च कन्या बालाऽबला स्त्री प्रमदांगनाख्या १३ ॥
छाग, क्रिय, मेष, अवि, अज ये मेषराशिके नाम हैं ॥

अथ वृषराशिनामानि ।

वृष, उक्ष, गाव, वृषभ, तावुरि ये वृषराशिके नाम हैं ॥

अथ मिथुनराशिनामानि ।

द्वंद्व, नृयुग्म, मिथुन, युग्म, वैणिक, जित्म, जित्म ये मिथुन-
राशिके नाम हैं ॥ १२ ॥

(१५६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अथ कर्कराशिनामानि ।

कर्क, कुलीर, कर्कट ये कर्कराशिके नाम हैं ॥

अथ सिंहराशिनामानि ।

सिंह, कंठीरव, केसरी, लेय, मृगेद, हरि ये सिंहराशिके नाम हैं ॥

अथ कन्याराशिनामानि ।

कन्या,बाला, अबला, ब्री,प्रमदा, अंगना ये कन्याराशिके नाम हैं ॥३॥

पाथोननामाथ तुलाधरः स्यात्तुलाघटो जूकतुले च तौलिः ।

कौप्यश्च कीटश्च सरीसृपश्च स स्यादलिर्वृश्चिकसंज्ञा उक्तः॥१४॥

धनुर्धरो चापधरो धनुश्च कोदंडसंज्ञश्च शरासनश्च ।

चापो हयस्तौक्षिककार्मुकोऽथ धन्वी धनाख्यो धनुषस्तथोक्तः॥१५॥

अथ तुलाराशिनामानि ।

पाथोन,तुलाधर, तुलाघट, जूक, तुला, तौलि ये तुलाराशिके नाम हैं ॥

अथ वृश्चिकराशिनामानि ।

कौप्य, कीट, सरीसृप, अली,वृश्चिक ये वृश्चिकराशिके नाम हैं॥१४॥

अथ धनराशिनामानि ।

धनुर्धर, चापधर, धनु, कोदंड, शरासन, चाप, हय, तौक्षिक, कार्मुक, धन्वी, धन, धनुष ये धनराशिके नाम हैं ॥ १५ ॥

आकोकेरो मृगो नक्रो मकरो मृगवक्त्रकः । घटः कुम्भधरो कुम्भो हृद्रोगः कलशः स्मृतः॥१६॥ शफरी पृथुरोमांत्यो मत्स्यो मीनो झघस्तिमिः । राशिसंज्ञाः स्मृताः ह्येताः प्राचीनमुनिसंमताः॥१७॥

अथ मकरराशिनामानि

आकोकर, मृग, नक्र, मकर, मृगवन्मुख ये मकरराशिके नाम हैं ॥

अथ कुम्भराशिनामानि ।

घट, कुम्भधर, कुम्भ, हृद्रोग, कलश ये कुम्भराशिके नाम हैं ॥ १६ ॥

अथ मीनराशिनामानि ।

शफरी, पृथुरोम, अंत्य, मत्स्य, मीन, झष, तिमि ये मीन राशिके नाम हैं। ये राशिसंज्ञा पुराने मुनीश्वरोंकी संमतिसे कही है ॥ १७ ॥

अथ राशीनां वर्णः ।

रक्तः सितो हरितपाटलको ततश्च पांडुर्विचित्रस्त्वसितः पिशंगः ।
स्यात्पिगलः कर्बुरबधुभास्त्वान् वर्णास्त्वजादेः क्रमशो निरुलाः ॥८

मेषराशिका लाल वर्ण है, वृषका सफेद, मिथुनका हरा, कर्कका गुलाबी, सिंहका पीत धूसर वर्ण, कन्याके अनेक रंग हैं। तुलाका श्याम, वृश्चिकका सोनेके रंगके माफिक, धनराशिका पीला वर्ण, मकरका लाल सफेद, कुम्भका निउलेके समान, मीनका मछलीके सदृश वर्ण कहना चाहिये। ये नष्ट वस्तु इत्यादिमें विचार करना ॥ १८ ॥

अथ राशीनां वर्णचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	रा.
अं ल्ल.	वृ. श्व.	मि. श्व.	कु. ल्ल.	सि. श्व.	क.	तु. श्व.	वृ. श्व.	ध. श्व.	म. श्व.	कु. श्व.	मी. श्व.	रा. श्व.

अथ राशीनां पुंखीसंज्ञामाह ।

पुंखी कूराकूरौ चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाश्च ।

अजवृष्मिथुनकुलीराः पंचमनवमैः सहेन्द्राद्याः ॥ १९ ॥

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ ये राशि कूर हैं। वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर ये राशि सौम्य कहाती हैं ॥

अथ चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञामाह ।

मेष, कर्क, तुला, मकर ये राशि चरसंज्ञक कहाती हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ इन राशियोंको स्थिर कहते हैं। मिथुन, कन्या, धन, मीन

(१५८)

ज्योतिषश्यामसंश्रहः ।

इन राशियोंको द्विस्वभाव कहते हैं । मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ इनकी पुरुष संज्ञा है । और वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन इन राशियोंकी स्त्रीसंज्ञा है ॥

अथ राशीनां दिगीशमाह ।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क ये चारों राशि आप और अपनेसे पांचवें नवमी राशिसहित पूर्वादि दिशाओंमें रहती हैं अर्थात् मेष, सिंह, धन ये पूर्व दिशाके ईश हैं । वृष, कन्या, मकर ये राशि दक्षिणदिशाके ईश हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ ये राशि पश्चिमदिशाके ईश हैं और कर्क, वृश्चिक, मकर, मीन ये राशि उत्तरदिशाके स्वामी हैं ॥ १९ ॥

अथ कूरसौम्यपुरुषस्त्रीचरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मा.	रा.
क्र.	सा.	कू.	सौ.	कृ.	सौ.	कृ.	सौ.	कृ.	सौ.	कृ.	सौ.	कृ.
पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.
च.	स्थिर.	द्वि.	च.	स्थिर.	द्वि.	च.	स्थिर.	द्वि.	च.	स्थिर.	द्वि.	च.

अथ दिगीशचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मा.	रा.
क्र.	सा.	कू.	सौ.	कृ.	सौ.	कृ.	सौ.	कृ.	सौ.	कृ.	सौ.	कृ.
पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.
च.	स्थिर.	द्वि.	च.	स्थिर.	द्वि.	च.	स्थिर.	द्वि.	च.	स्थिर.	द्वि.	च.

अथ चतुष्पदादिसंज्ञामाह ।

नक्राधर्खंड धनुषः परार्द्धं गोसिंहमेषाश्च चतुष्पदाः स्युः ।

कन्यानृयुग्मं घटतूलभृत्य चापादिर्खंडं द्विपदा प्रदिष्टाः ॥ २० ॥

मकरका पूर्वार्द्ध और धनका परार्द्ध, वृष, सिंह, मेष इन राशियोंकी चतुष्पद संज्ञा है और कन्या, मिथुन, कुम्भ, तुला इन राशियोंकी द्विपदसंज्ञा है और धनका पूर्वार्द्ध भी द्विपदसंज्ञक है ॥ २० ॥

अथ कीटसंज्ञामाह ।

मृगो तदर्द्धं शफरीकुलीरौ नीरेचराः कीटक एव कीटः ।

संध्याद्युरात्रं बलिनो भवन्ति कीटा नराः साऽप्यचतुष्पदाख्याः २१

मकरराशिका पूर्वार्ध, मीन, कर्क, वृश्चिक इन राशियोंकी जलचर कीटक कीट संज्ञा है। कीट राशि सायंकालके समय बली और द्विपदराशि दिनमें बली और चतुष्पद राशि रात्रिमें बली होती हैं ॥ २१ ॥

अथ चतुष्पदचक्रम्.				द्विपदचक्रम्.				जलचरचक्रम्.							
म.	घ.	वृ.	सिं.	म.	क.	मि.	तु.	कु.	घ.	म.	क.	वृ.	मी.	रा.	
पूर्वार्द्धचतुष्पद.	परार्द्धचतुष्पद.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	पूर्वार्द्धचतुष्पद.	परार्द्धचतुष्पद.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	वृत्तार्द्ध.	

अथ राशीनां कालबलचक्रम् ।

मे.	वृ.	सिं.	घ.	म.	क.	मि.	तु.	कु.	घ.	म.	क.	वृ.	मी.	रा.	
त्रिवृत्तार्द्ध.															

अथ राशीनां केंद्रबलमाह ।

लग्नस्थिताः पूर्वगता नराख्याश्चतुष्पदा याम्यगताः खभस्थाः ।

कीटाः प्रतीच्यां बलिनोस्तसंस्था रसातलस्था जलजाश्र सौम्यैः २२

मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ, धनका पूर्वार्द्ध ये नरसंजक राशि जन्मलग्नमें मूर्तिकर्त्ता बली पूर्व दिशामें होती हैं। वृष, सिंह, मेष, मकरका पूर्वार्द्ध, धनका परार्द्ध ये चतुष्पदराशि दशमस्थानमें दक्षिणदिशामें बली होती हैं और वृश्चिकराशि कीटसंजक सप्तम घरमें पश्चिमदिशामें बली होती हैं और कर्क, मीन, मकरका परार्द्ध ये राशि जलचर चतुर्थस्थानमें उत्तरदिशामें बली होती हैं ॥ २२ ॥

(१६०)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अथ राशीनां दिनरात्रिवलम् ।

मेषो वृषो द्वंद्वकुलीरचापकुरंगवक्राश्च निशाबलाः स्युः ।

तुलाधरो वृश्चिककुम्भभृत्त्वा कन्यालिमीना दिवसात्मिकाः स्युः २३

मेष, वृष, मिथुन, कक, धन, मकर ये राशियाँ बलवान् होती हैं और कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन, कुम्भ, सिंह ये राशि सदैव काल दिनमें बली होती हैं ॥ २३ ॥

अथ दिनरात्रिवलचक्रम् ।

म.	वृ.	मि.	कर्क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
रात्रि.	रात्रि.	रात्रि.	रात्रि.	दिन.	दिन.	दिन.	दिन.	रात्रि.	रात्रि.	दिन.	दिन.	रात्रि.

अथ पृष्ठोदयमाह ।

अविर्वृषः कर्कधनुर्धराश्च पृष्ठोदयाख्यामकरः सदा ह्यः ।

कन्यातुलायुग्मघटालिसिंहाः शीषोदयाख्या ह्युभयोदयोत्यः २४॥

मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर ये राशि पृष्ठोदय हैं । कन्या, तुला, मिथुन, कुम्भ, सिंह, वृश्चिक ये राशि शीषोदय हैं और मीनराशि पृष्ठोदय शीषोदय दोनों हैं ॥ २४ ॥

अथ पृष्ठोदयशीषोदयचक्रम् ।

मै.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि.
पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीषो.										

अथ सप्तवर्गमाह ।

क्षेत्रं होरात्र्यंशसप्तांशकाश्च नन्दांशो वा द्वादशविंशदेशाः ।

पूर्वैः प्रोक्ताः सप्तवर्गाः समौजे होरे स्यातामिन्दुरव्यो रवींद्रोः ॥२५॥

जिस ग्रहकी जो राशि है उसको क्षेत्र कहते हैं और उसका होरा कहाता है और राशिके तीसरे भागको द्रेष्काण कहते हैं और सातवें भागका नाम सप्तांश और नौवें हिस्सेका नाम नवांश है और राशिके बारहवें हिस्से का नाम द्वादशांश होता है और तीसरे हिस्सेका नाम त्रिंशांश कहाता है ॥

अथ होराकथनम् ।

एक राशिके पंद्रह २ अंशके दो भाग किये उन हर एकको होरा कहते हैं । विष्मराशि अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ इनमें पहिले पंद्रह अंशतक सूर्यका होरा अर्थात् सिंहराशिका होता है और पंद्रहसे तीस अंशतक चंद्रमाका अर्थात् कर्क राशिका होरा होता है और समराशियोंका याने वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन इन राशियोंमें पहिले पंद्रह अंशतक चंद्रमाका अर्थात् कर्कराशिका होरा रहता है और पंद्रहसे तीस अंश तक सूर्य अर्थात् सिंहराशिका होरा होता है ॥ २४ ॥

अथ होराचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	कु.	ध.	म.	कु.	मा.	र.
सू.	चं.	अंश.										
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	१५
४	५	४	३	४	५	४	५	४	५	४	५	३०

अथ द्रेष्काणमाह ।

द्रेष्काणाः स्युः स्वीयपञ्चाङ्गपानाम् ।

एक राशि तीस अंशकी होती है उसका तीसरा भाग दश अंश हुए उनमें दश २ अंशका प्रत्येक द्रेष्काण होता है । पहिला द्रेष्काण उसी राशि का दूसरा द्रेष्काण उस राशिसे पंचम राशिका और तीसरा द्रेष्काण उस राशिसे नवमराशिका होता है । यथा मेषराशिमें पहिला द्रेष्काण मेषका दूसरा सिंहका, तीसरा धनका, वृषराशिमें पहिला वृषका, दूसरा कन्या का, तीसरा मकरका इत्यादि जानो ॥

(१६२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अथ द्रेष्काणचक्रम् ।

मे.	वृ.	नि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	मे.	कु.	मी.
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	मे.	कु.	मी.	मे.	वृ.	नि.	क.
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
ध.	मे.	कु.	मी.	मे.	वृ.	नि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०

अथ सप्तांशमाह ।

सप्तांशः स्युस्त्वोजराशौ स्वभाद्याः ॥ द्यूनाद्युग्मे ।

मेषसे लेकर मीनपर्यंत बारह राशिको सप्तांश कहते हैं । राशिका सातवां भाग सप्तांश होता है सो विषमराशि अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ इनमें पहिले इनका ही सप्तांश ४। १७। ८। ३४ चार अंश सत्रह कला आठ विकला चौतीस प्रतिविकलातक रहता है । इसके बाद फिर दूसरी राशिका फिर तीसरी राशिका । यथा मेषमें पहिले मेषका, फिर वृषका, मिथुनका, कर्कका, सिंहका, कन्याका, तुलातक होता है और समराशिमें पहिले सातवीं राशिका याने वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन इनमें पहिले सातवीं राशिका सप्तांश होता है । वृषराशिमें पहिला वृश्चिकादि सात राशियोंका होता है और कर्कराशिमें पहिले मकरादि सात राशियों का सप्तांश होता है ॥

अथ सप्तांशचक्रम् ।

मे.	वृ.	नि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	मे.	कु.	मी.	राशिसप्तांशः
मे.	वृ.	नि.	क.	सि.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	४ १७ ८ ३४
वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	नि.	म.	सि.	मी.	तु.	८ ३४ १७ ८
नि.	म.	सि.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	१२ ५१ २५ ४२
क.	क.	क.	क.	मे.	वृ.	नि.	म.	सि.	मी.	तु.	वृ.	१७ ८ ३४ १७
सि.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	नि.	म.	२१ २५ ४२ ५१
क.	मे.	वृ.	नि.	म.	सि.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	२५ ४२ ५१ २५
तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	नि.	म.	सि.	मी.	३० ० ० ०

अथ द्वादशांशमाह ।

द्वादशांशः स्वभाव्या विज्ञेयास्ते हौरिकैर्बुद्धिमद्भिः ॥ २६ ॥

मेषादि मीनपर्यंत द्वादश राशियोंमें एक राशिका बारहवां भाग द्वादशांश कहाता है और सब राशियोंमें क्रमसे पहिले अपनी ही राशिका द्वादशांश होता है तथा मेषमें पहिला मेषका फिर वृषका फिर मिथुन इत्यादि । और वृष राशिमें पहिला वृषका फिर मिथुन इत्यादिका जानो और मिथुन राशिमें पहिला मिथुनका फिर कर्कका इत्यादि रीतिसे सब राशियोंमें सब राशियोंके द्वादशांश होते हैं । एक द्वादशांश दो २ अंश तीस ३० कलाका होता है ॥ २५ ॥

अथ द्वादशांशचक्रम् ।

अथ नवांशविधिमाह ।

मेषे हरौ चापधरेष्वजाद्याः कन्योक्षनक्रेषु मृगा नवांशाः ।

जूके घटे वैष्णिकभे तुलाद्याः कर्कालिमीनेषु च कर्कटाद्याः २६

मेषादि मीनपर्यंत द्वादशराशियोंमें नवांश इस प्रकारसे होता है ।

मेष, सिंह, धन इन राशियोंमें पहिले मेषका नवांश होता है और धनराशिपर्यंत रहता है और कन्या, वृष, मकर इन राशियोंमें पहिले मकरका नवांश होता है सो कन्याराशिपर्यंत रहता है और मिथुन, कुंभ, तुला इन राशियोंमें पहिले तुलाका नवांश होता है और मिथुनराशिपर्यंत रहता है और कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियोंमें पहिले कर्कका नवांश होता है और मीन पर्यंत रहता है । एक राशिमें नौ नवांश भोग करते हैं और एकनवांश तीन ३ अंश बीस कलाका होता है । यथा—एक राशि तीस ३० अंशकी होती है । उसमें नौका भाग दिया लब्ध मिले तीन उनको अंश मानो शेष रहे तीन ३ उनको साठ ६० से गुणा किया तो हुए १८० एक सौ अस्सी । उसमें फिर नौका भाग दिया तौ लब्ध आये २० बीस शेष कुछ नहीं रहा तो तीन अंश बीस कला ३ । २० का एक नवांश हुआ सो मेषराशिमें पहिले तीन ३ अंश २० कलातक मेषका रहा फिर पीछे वृषका फिर मिथुन इत्यादिका जानो । वृषराशिमें पहिले तीन अंश २० कलातक पहिले मकरका नवांश रहता है फिर कुंभका इत्यादि जानो । मिथुनराशिमें पहिले तीन ३ अंश २० बीस कलातक पहिले तुलाका नवांश रहता है फिर वृश्चिक आदिका रहता है और कर्कराशिमें पहिले तीन ३ अंश २० कलातक पहिले कर्कराशिका ही नवांश रहता है फिर सिंह आदि राशिका नवांश कमसे होता है । इसी तरह सब जगह जानो और एक यह भी रीति है कि जितनी चरराशि हैं उनमें पहिले उन्हीं राशियोंका नवांश होता है और स्थिरराशियोंमें पहिले दशवीं राशिका नवांश होता है और द्विस्वभाव राशिमें पहिले पंचमराशिका नवांश होता है सो चक्रमें देखो ॥ २६ ॥

अथ नवांशचक्रम् ।

एक राशिमें नौ नवांश होते हैं एक नवांश ३ अंश २० कलाका
होता है ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	
मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	
३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	३१२०	
वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	
६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	६१४०	
मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	
क.	मे.	म.	तु.	कु.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	
१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	१३१२०	
सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	
१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	१६१४०	
क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	
तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	
२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	२३१२०	
वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	
२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	२६१४०	
ध.	क.	मि.	मा.	ध.	क.	मि.	मा.	ध.	क.	मि.	मी.	
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	

अथ त्रिशांशविधि ।

शरे ५ वा ५ नागा ८ द्वि ७ समीरणा ५ नां भौमार्किजी-
वज्ञसितास्त्वधीशाः । त्रिशांशकानां विषमे समर्क्षेषूक्ताद्वि-
लोमाः खलु जातकज्ञैः ॥ २७ ॥

मेषादि मीनपर्यंत द्वादशराशियोंमें त्रिशांश इस तरहसे होता है,
याने मेष, मिथुन, सिंह, धन, कुंभ, तुला इन राशियोंमें पहिले पांच ५ अंशतक
मंगलका अर्थात् मेषराशिका होता है फिर पांचसे लेकर दश अंशतक शनैश्च-
रकी कुम्भराशिका त्रिशांश रहता है फिर दशसे लेकर अठारह अंशतक
बृहस्पतिकी राशि धनका त्रिशांश होता है और अठारहसे लेकर पचीस
अंशतक बुधकी राशि याने मिथुनका त्रिशांश होता है फिर पचीससे लेकर

(१६६)

ज्योतिषश्यामसंश्लेषः ।

तीस अंशतक शुक्रकी तुला राशिका त्रिशांश होता है और समराशियोंमें वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन इन राशियोंमें पहिले उलटा समझना चाहियेगयथा—पांच अंशतक शुक्रकी राशि वृषका त्रिशांश रहता है। दूसरा पांच अंशसे लेकर बारह अंशपर्यंत बुधकी राशि कन्याका त्रिशांश होता है और बारह अंशसे लेकर बीस अंशपर्यंत बृहस्पतिकी राशि मीनका त्रिशांश होता है और बीस अंशसे लेकर पचीस अंशपर्यंत शनैश्चरकी राशि मकरका त्रिशांश रहता है और पचीस अंशसे लेकर तीस अंशपर्यंत मंगलकी राशि वृश्चिकका त्रिशांश रहता है सो आगे चक्रमें देखो ॥ २७ ॥

अथ त्रिशांशचक्रम् । अथ भावनामानि ।

मह	म.	श.	वृ.	बु.	शु.	स्वामी.
विषमराशि.	५	१०	१५	२५	३०	अंश. ३०
यह	शु.	बु.	वृ.	श.	मं.	स्वामी.
समराशि.	५	१२	२०	२५	३०	अंश. ३०

तनुर्धनं च भ्रातारं सुहृदपुत्रो
रिपुस्त्रियः । मृत्युश्च धर्मकर्माय
व्ययभावाः प्रकारितिताः ॥ २८ ॥

तनु, धन, भ्रातृ, सुहृद, पुत्र, रिपु, स्त्री, मृत्यु, धर्म, कर्म, आय, व्यय ये भाव कहे हैं अर्थात् लग्नका तनु, दूसरेका धन, तीसरेका भ्रातृ, चौथेका सुहृद, पांचवेंका पुत्र, छठेका रिपु, सातवेंकी स्त्री, आठवेंका मृत्यु, नौवेंका धर्म, दशवेंका कर्म, एयारहवेंका आय, बारहवेंका व्यय नाम है ॥ २८ ॥

अथ भावनामचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भवा
तनु	धन	भ्राता	सुहृद	पुत्र	रिपु	स्त्री	मृत्यु	धर्म	कर्म	आय	व्यय	नाम

अथ केन्द्रस्थाननाम ।

अथ च केन्द्रचतुष्टयकंटकं तनुसुखांबरसप्तमभे स्मृतम् ।

पणफरं धनलाभसुताष्टमं सहजशत्रुनवांत्यमपोक्लिमम् ॥ २९ ॥

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम इन स्थानोंको केंद्र, चतुष्टय, कंटक, लच्छसद ये चारों नाम हैं ॥

अथ पणफरनाम ।

द्वासरे, ग्यारहवें, पंचम, अष्टम इन स्थानोंको पणफर कहते हैं ॥

अथापोक्लिमनाम ।

तीसरा, छठा, नवम, बारहवां इनको आपोक्लिम कहते हैं ॥ २९ ॥

अथ त्रिकोणसंज्ञामाह ।

अथ त्रिकोणं नवपंचमक्षं स्यात्रित्रिकोणं नवमं च तद्वत् ।

षष्ठत्रिकोणं रिपुभं निरुक्तं तुर्याष्टमक्षं चतुरसंज्ञम् ॥ ३० ॥

नवम, पंचम स्थानको त्रिकोण कहते हैं और नवमसे तीसरे ग्यारहवें स्थानको भी त्रिकोण कहते हैं और ग्यारहवेंसे तीसरा लग्न होता है उसको भी त्रिकोण कहते हैं और लग्नसे तीसरा स्थान तृतीय हुआ उसको भी त्रिकोण कहते हैं और तीसरेंसे तीसरा स्थान पंचम हुआ उसको भी त्रिकोण कहते हैं और छठा त्रिकोण छठे घरका भी नाम है ॥

अथ नामान्तर ।

और चौथे आठवें घरका नाम चतुरस्त्र भी है ॥ ३० ॥

अथ ग्रहाणां त्रिकोणस्थानमाह ।

ये मंदाद्यात्मिखेटाः कलियुगबलिना विकमारित्रिकोणं

सूर्यस्य क्षोणिसूनोर्दशमभवगृहं कोणसंज्ञं पवित्रम् ।

अन्येषां खेचराणां नवमशिवमुखं तत्रिकोणं प्रसिद्धं

सर्वग्रंथेषु धीरा मुनिजनसहिता पांडुपुत्रा वदंति ॥ ३१ ॥

ये जो शनैश्चरको आदि करके तीन ग्रह याने शनि राहु केतु ये कलियुगमें बली हैं और तीसरे छठे स्थानमें त्रिकोणवर्ती कहलाते हैं और सूर्य, मंगल ये दोनों ग्रह दशम, ग्यारहवें घरमें त्रिकोणवर्ती होते हैं और शेष ग्रह बुध, चंद्रमा, शुक्र ये तीनों ग्रह नवम, एकादश, लग्न इन स्थानोंमें स्थित त्रिकोणवर्ती होते हैं । संपूर्ण ग्रंथोंमें धीर मुनीश्वरोंकरके सहित पाण्डुके पुत्र सहदेवजी कहते हैं ॥ ३१ ॥

(१६८)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अथोपचयसंज्ञामाह ।

दुश्चिक्यलाभावरषष्टगेहं प्रोक्तं तथैवोपचयं त्रिकं तु ।
 षडत्यरंध्रं च निजं नवांशं वर्गोत्तमाख्यं विबुधा वदन्ति ॥ ३२ ॥
 तीसरे, चारहवें, दशम, छठे इन स्थानोंकी उपचय संज्ञा है ॥

अथोपचयसंज्ञामाह ।

लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सातवां, अष्टम, नवम, द्वादश इन स्थानोंकी उपचय संज्ञा है ॥

अथ त्रिकसंज्ञामाह ।

छठे, आठवें, बारहवें इन स्थानोंकी त्रिकसंज्ञा होती है ॥

अथ उपचयादिसंज्ञाचक्रम् ।

१	४	७	१०	केद्र	कटक	चतुष्टय	लचसद	नाम
२	५	८	११	पञ्चकर				नाम
३	६	९	१२	आपोक्लिम				नाम
३	६	१०	११	उपचय				नाम
१	२	४	५	७	८	९	१२	अ. च.
६	८	२	त्रिक					न. म.
१	५	त्रिकोण						

अथ वर्गोत्तमसंज्ञकनवांशमाह ।

चर, स्थिर, द्विस्वभाव राशियोंमें पहिला, पांचवां, नववां नवांशक्रमसे वर्गोत्तम संज्ञक होता है अर्थात् मे. क. तु. म. इन राशियोंमें पहिला नवांश वर्गोत्तम होता है और स्थिर राशि वृ. सि. वृ. कुंभ इनमें पांचवां नवांश वर्गोत्तम होता है और मि. क. ध. मी. इन राशियोंमें नवम नवांश वर्गोत्तम होता है यह जन्मकालमें शुभफलका देनेवाला है ॥ ३२ ॥

अथ वर्गोत्तमनवांशचक्रम् ।

म.	क.	तु.	म.	द्व.	सि.	वृ.	कु.	भि.	क.	ध.	मी.	रा.
१	१	१	१	५	५	५	५	५	१	१	१	१

वर्गोत्तम
नवांश

अथ तनुभावनामानि ।

लग्नं मूर्तिः कल्पमाद्यं वपुः स्यादंगं देहश्चोदयाख्यं तनुश्च ।
स्वं कोशार्थाख्यं कुटुंबं धनं च प्रांत्यं रिः फश्चांतिमाख्यं व्ययं
स्यात् ॥ ३३ ॥

लग्न, मूर्ति, कल्प, आद्य, वपु, अंग, देह, उदय, तनु ये नव नाम
लग्नके हैं ॥

अथ धनभावनामानि ।

स्व, कोश, अर्थ, कुटुंब, धन ये पांच नाम धनभावके हैं ॥

अथ व्ययभावनामानि ।

प्रांत्य, रिःफ, अंतिम, व्यय ये चार नाम वारहवें स्थानके हैं ॥ ३४ ॥

अथ चतुर्थभावनामानि ।

अंबा तुर्यं वाहनं वेशं बंधुर्गेहं पातालं हिकुं सुहृत्त्वं क्षेत्रम् ।
भूक्षं नीरमंडु जलाख्यं संज्ञाः प्रोक्तास्तुर्यभावस्य तज्ज्ञैः ॥ ३५ ॥
अंबा, तुर्य, वाहन, वेश, बंधु, गह, पाताल, हिकु, सुहृत्त, क्षेत्र,
भू, नीर, अम्डु, जल ये नाम चतुर्थस्थानके ज्योतिषियोंने कहे हैं ॥ ३५ ॥

अथ तृतीयभावनामानि ।

दुश्चिक्यविक्रमपराक्रमभं तृतीयं आतुस्ततः सहजभं गदितः
पुराणैः । स्यादष्टमं निधनजीवितमायुरंधं छिद्रं ततो लयपदं
मृतियाम्यसंज्ञम् ॥ ३६ ॥

दुश्चिक्य, विक्रम, पराक्रम, तृतीय, आतृ, सहज ये छः नाम तीसरे
स्थानके हैं ॥

अथाष्टमभावनामानि ।

अष्टम, निधन, जीवित, आयु, रंध, छिद्र, लयपद, मृति, याम्य ये
नाम अष्टमस्थानके हैं ॥ ३७ ॥

अथ दशमभावनामानि ।

व्यापारमेष्ठूरणमध्यकर्ममानास्पदाज्ञाजनकं च राज्यम् ।

खमंबरं वै गगनं नभश्च व्योमाख्यमुक्तं दशमं पुराणैः ॥ ३६ ॥

व्यापार, मेष्ठूरण, मध्य, कर्म, मानास्पद, आज्ञा, जनक, राज्य, ख, अंबर गगन, नभ, व्योम, दशम इतने नाम आचार्योंने दशम घरके कहे हैं ॥ ३६ ॥

अथ पंचमस्थाननामानि ।

विद्यात्मजाख्यं तनयं तनुजं वाग्बुद्धिसंज्ञं किल पंचमं स्यात् ।

गुर्वाख्यमुक्तं नवमं तपश्च भाज्याभिधा धर्मक्रियाश्च पुण्यम् ॥ ३७ ॥

विद्या, आत्मज, तनय, तनुज, वाक्, बुद्धि ये नाम निश्चय करके पंचमस्थानके हैं ॥

अथ नवमस्थाननामानि ।

गुरु, नवम, तप, भाग्य, धर्म ये नाम नवमस्थानके मुनीश्वरोंने कहे हैं ॥ ३७ ॥

अथ सप्तमस्थाननामानि ।

जामित्रमस्तं मदनं द्युनद्यूनं स्मरं मदः ।

स्त्रीकामाख्यमिति प्रोक्तं सप्तमं पूर्वसूरिभिः ॥ ३८ ॥

जामित्र, अस्त, मदन, द्युन, द्यून, स्मर, मद, स्त्री, काम ये नाम सप्तमस्थानके पहिले विद्वानोंने कहे हैं ॥ ३८ ॥

अथ षष्ठमस्थाननामानि ।

षष्ठः शत्रु रिपुद्वेष्यः सपत्नाख्यं च वैरिभम् ।

भवलाभागमं प्राप्तिमायमेकादशं स्मृतम् ॥ ३९ ॥

षष्ठ, शत्रु, रिपु, द्वेष्य, सपत्न, वैरि ये छठे स्थानके नाम हैं ॥

अथ एकादशस्थाननामानि ।

भव, लाभ, आगम, प्राप्ति, आय ये नाम एकादशस्थानके हैं ॥ ३९ ॥

अथ लग्नबलज्ञानम् ।

स्वस्वामिना वीक्षितसंयुतो वा बुधेन वाचस्पतिना प्रहृष्टः ।
स एव राशिर्बलवान् किल स्याच्छेष्यर्थदा दृष्टयुतो न चात्र ॥४०॥
राशिर्यदा खेटयुतो न दृष्टः स्वीयस्वभावात्स फलं ददाति ।
दृष्टोऽथ युक्तो सदसद्ग्रहेण पापोऽपि सौम्यः शुभदोऽपि पापः ॥४१॥

अपने स्वामी करके देखी गई हो जो राशि अथवा अपने स्वामी करके सहित हो अथवा बृहस्पति करके दृष्ट हो सो राशि निश्चय करके बलवान् होती है और शेष ग्रहोंकरके दृष्ट या संयुक्त हो तो वह राशि निर्बल होती है ॥४०॥ और जो राशि किसी ग्रहकरके युक्त दृष्ट न हो तो वह राशि अपने ही स्वभावसे अपना फल देती है और शुभ ग्रह पापग्रहोंकरके दृष्ट अथवा युक्त हो तो भी पापराशि शुभ फलको देती है अगर पापग्रहोंसे दृष्ट युक्त हो तो सौम्यराशि भी पापफलको देती है ॥ ४१ ॥

यो यो हि भावः पतिदृष्टयुक्तोऽथवा शुभैस्तस्य च वृद्धिरस्ति ।
हानिस्त्वसौम्यैरथ तद्विलोमाच्चित्यं फलं रंध्रिपुव्ययानाम् ॥४२॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु राशिभदो मयोच्यते ।

बहुभिर्जातकैर्द्वांश्च श्यामलालेन धीमता ॥ ४३ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंस श्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-
संग्रहे राशिभेदो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

जो जो भाव अपने स्वामी करके दृष्ट वा युत हो अथवा शुभग्रहों-
करके दृष्ट वा युत हो तो उस स्थानकी वृद्धि कहनी चाहिये और पापग्रहों-
करके दृष्ट वा युत हो तो उस भावकी हानि कहनी चाहिये । अगर छठे
आठवें बारहवें पूर्वोंक ग्रह स्थित हों तो उलटा फल कहना चाहिये ॥४२॥

इस अध्यायके बीचमें बहुतसे जातकग्रन्थोंको देखकर श्यामलाल बुद्धिमान्-
करके राशिके भेद कहे ॥ ४३ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतसंश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-
ज्योतिषिपंडितश्यामलालरूपायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां
राशिभेदवर्णनं नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ ग्रहप्रभेदाध्यायप्रारंभः ।

आत्मा रविः शीतकरो मनस्तु सत्त्वं कुजौ भाषणमब्जसूनुः ।
वाचांपतिज्ञानसुखे मदश्च शुक्रो भवेदर्कसुतोऽतिदुःखम् ॥ १ ॥
कालपुरुषकी आत्मा सूर्य है, मन चंद्रमा, सत्त्व अर्थात् धैर्य मंगल
है, वाणी बुध है और ज्ञान सुख बृहस्पति है, कामदेव शुक्र है, और दुःख
शनैश्चर है इसका प्रयोजन यह है कि जो यह निर्बल अथवा पीडित होकर
जिस घरमें स्थित हो वालकके उसी स्थलको खंडित जानना चाहिये और
जो यह बली हो तो उसी स्थलको सुखी जानो ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां नृपादिसंज्ञा ।

दिनेशचंद्रौ नरपालमुख्यौ सेनाकुजः सोमसुतः कुमारः । शुक्रे-
ज्यपूज्यौ सचिवौ शनिश्च प्रेष्यस्तु तद्वृत्तिमुपैति जातः ॥ २ ॥
सूर्य चंद्रमा ये दो राजा हैं, मंगल फौजका मालिक अर्थात् सेनापति
है और बुध युवराज है, शुक्र बृहस्पति दोनों मंत्री हैं और शनैश्चर दास
अथवा दूत है । पूर्वोक्त जो यह जिस भावमें बली अथवा सुखी हो तो
वालकको उसी ग्रहकी वृत्ति याने आजीविका कहनी चाहिये यथा—सूर्य
चंद्रमा बली हों तो राजसेवा नृपकार्यसे अजीविका होती है ॥ २ ॥

अथ ग्रहाणां संज्ञा ।

सूर्यो हेलिर्भानुमान्दीमरश्मशंडांशुः स्याद्ग्रस्करोऽहस्करश्च ।

अब्जः सोमश्चंद्रमाः शीतरश्मिः शीतांशुः स्यात् ग्लौर्मृगांकः
कलेशः ॥ ३ ॥ आरो वक्रश्चावनेयः कुजः स्याद्गौमः कूरो
लोहितांगोऽथ पापी । विज्ञः सौम्यो बोधनश्चंद्रपुत्रश्चांद्रिः
शांतः श्यामगात्रोऽतिदीर्घः ॥ ४ ॥

सूर्य, हेलि, भानुमान्, दीपरश्मि, चंडांशु, भास्कर, अहस्कर ये
नाम सूर्यके हैं ॥

अथ चन्द्रनामानि ।

अब्ज, सोम, चन्द्रमा, शीतरश्मि, शीतांशु, ग्लौ, मृगांक, कलेश
ये चन्द्रमाके नाम हैं ॥ ३ ॥

अथ भौमनामानि ।

आर, वक्र, आवनेय, कुज, भौम, कूर, लोहितांग, पापी ये मंगलके
नाम हैं ॥

अथ बुधनामानि ।

विदु, ज्ञ, सौम्य, बोधन, चन्द्रपुत्र, चांद्रि, शांत, श्यामगात्र, अति-
दीर्घ ये बुधके नाम हैं ॥ ५ ॥

अथ गुरोर्नामानि ।

जीवोऽग्निरा देवगुरुः प्रशांतो वाचांपतीज्यत्रिदिवेशवंद्याः । भृगूरा-
नोभार्गवसूनवोऽच्छः काणः कविदैत्यगुरुः सितश्च ॥ ६ ॥ छाया-
त्मजः पंगुयमार्कपुत्राः कोणोऽसितः शौरिशनी च नीलः । कूरः
कृशांगः कपिलाक्षदीघो तमोऽसुरश्चेत्यगुसैःहिकेयौ ॥ ६ ॥ राहुः
सुवर्भानुविधुंतुदौ स्यात्केतुः शिखी स्याद्वृजनामधेयः ॥ ७ ॥

जीव, अंगिरा, देवगुरु, प्रशांत, वाचांपति, इज्य, त्रिदिवेशवन्य ये
ब्रह्मस्पतिके नाम हैं ॥

अथ शुक्रनामानि ।

भूगु, उशना, भागर्वसनु, अच्छ, काण, कवि, दैत्यगुरु, सित ये शुक्रके नाम हैं ॥ ५ ॥

अथ शनिनामानि ।

छायात्मज, पंगु, यम, अर्कपुत्र, कोण, असित, शौरी, शनि, नील, कूर, कुशांग, कपिलाक्ष, दीर्घ ये शनैश्चरके नाम हैं ॥

अथ राहुनामानि ।

तम, असुर, अगु, सैंहिकेय, राहु, स्वर्भानु, विधुंतुद ये राहुके नाम हैं ॥

अथ केतुनामानि ।

केतु, शिखी, वृज ये केतुके नाम हैं । जो जहां संज्ञा आवे उसको इस नामसे जान लेना चाहिये ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ सूर्यस्वरूपम् ।

शूरोऽस्थिसारश्चतुरस्तगात्रः श्यामारुणो वृद्धपदुः पूर्थुश्च ।

पित्तस्वरूपोऽल्पकचो गभीरो नात्युच्चकोऽकर्णो मधुर्पिंगनेत्रः ॥ ८ ॥

शूर, संग्राम प्यारा जिनको, अस्थि अर्थात् हाडमें सार, जितने लंबे उतने ही चौडे, श्यामारुण वर्ण, वृद्ध, चतुर, पित्तप्रकृति, थोडे बाल, गंभीर, अधिक ऊँचे नहीं, सहतके समान पलेनेत्र ऐसा सूर्यका स्वरूप है ॥ ८ ॥

अथ चन्द्रस्वरूपम् ।

कामी मृदुर्मध्यवयी सुकृता प्राज्ञः सितः कुंचित्कृष्णकेशः ।

पद्मेक्षणो वातकफी सुवृत्तः स्याद्रक्षसारः शुभगः शशांकः ॥ ९ ॥

विषय करनेवाला, मीठी वाणीका बोलनेवाला, युवा अवस्था कोमल, पंडित, श्वेत वर्ण, काले बाल, कमलसे नेत्र, वात कफवाली प्रकृति, सुडौल, रुधिरमें सार, शोभायमान ऐसा चंद्रमाका स्वरूप है ॥ ९ ॥

अथ भौमस्वरूपम् ।

हिंसो युवा पैत्तिकरक्तगौरः पिंगेक्षणो वह्निभः प्रचंडः ।

शूरोऽप्युदारो सतमस्त्रिकोणो मज्जाधिको भूतनयः सर्गवः ॥ १० ॥

हिंसा करनेवाला, युवा अवस्था, पित्तकी प्रकृति, गौरवर्ण, कंजे नेत्र, अश्विके समान कांति, प्रचंड, शूर, उदार, छोटा, त्रिकोण स्वरूप, मज्जा अर्थात् चर्वीमें सार ऐसा भौमका स्वरूप है ॥ १० ॥

अथ बुधस्वरूपम् ।

प्राज्ञः कलाज्ञो मधुवाक् त्रिदोषी त्वक्सारकः श्यामतनुः शिरालः ।

रजःकुमारोऽप्यथ मध्यरूपो रक्तेक्षणश्चन्द्रसुतः सुहृष्टः ॥ ११ ॥

पंडित, नृत्य गान कलाओंका जाननेवाला, मीठी वाणीका बोलनेवाला, त्रिदोष प्रकृति, त्वचामें सार, दूर्वा सदृश श्यामता लिये वर्ण, राजसी, बालक, मध्यम शरीर, लाल नेत्र, पुष्ट देह ऐसा चन्द्रपुत्रका स्वरूप है ॥

अथ गुरुस्वरूपम् ।

दक्षः सकामः सबलः सगौरः प्राज्ञः सुवृत्तोत्कटबुद्धिसत्त्वः ।

मेदाधिकः सिंहरवः सुवृद्धः पिंगेक्षणो हस्ततनुः सुरेज्यः ॥ १२ ॥

चतुर, कामसहित, बलवान्, गौरवर्ण, पंडित, सुडौल, अति बुद्धिमान्, मेदामें सार, सिंहकीसी चाल, वृद्ध अवस्था, पीले नेत्र, छोटा कद सब गुणोंमें श्रेष्ठ ऐसा बृहस्पतिका स्वरूप है ॥ १२ ॥

अथ भृगुस्वरूपम् ।

सुलोचनः काव्यकरोऽतिकाणः सुखी बली सुन्दरकांतिपूर्णः ।

अनीलवर्णाकितरोमयुक्तो रजोगुणः सर्वगुणाभिरामः ॥ १३ ॥

अच्छे नेत्र, काव्य करनेवाला, एक आखसे काने, सुखी, बलवान्, सुन्दर कांतिमान्, नीलवर्णके रोमावलीसे अंकित देह, रजोगुणसहित, सम्पूर्ण गुणोंमें उत्तम ऐसा शुक्रका स्वरूप है ॥ १३ ॥

अथ शनिस्वरूपम् ।

मूर्खोऽलसः कृष्णतनुः कृशांगः स्यात्स्नायुसारो मलिनोऽतिदीर्घः ।
क्रोधी ज्वलत्पिगहशोऽर्कसूनुः सपैत्यबाहुः पृथुरोमदंतः ॥ १४ ॥

मूर्ख, आलसी, काला शरीर, दुर्बल देह, नाडियोंमें सार, मलीन,
बहुत बड़ा, क्रोधसाहित, पीले नेत्र, बड़ी भुजा, स्थूल रोम और दांत
बड़े ऐसा शनैश्वरका स्वरूप है ॥ १४ ॥

अथ ग्रहाणां वर्णः ।

रक्तः सितो रक्ततरः सुनीलः पीतोऽतिशक्तस्त्वसितोऽत्र वर्णः ।

सूर्यादधीशा दहनोऽवुभूमी दामोदरः शक्रशच्चीविरंचिः ॥१५॥

लाल वर्णका सूर्य स्वामी है, श्वेतवर्णका चन्द्रमा, अधिक लाल वर्णका मंगल, हरे वर्णका बुध अथवा नीले वर्णका बुध स्वामी होता है। पीत वर्णका बृहस्पति, अधिक सफेद अथवा चित्र विचित्र वर्णका शुक्र और कृष्ण वर्णका स्वामी शनैश्चर और राहु केतुका काले अंजनके समान वर्ण होता है। (रविजविधिरिपु प्रौढनीलांजनाभौ) ये ग्रह इस वर्णोंके स्वामी हैं अथवा इनके वर्ण भी ये ही हैं ॥

अथ ग्रहाणां वर्णशब्दक्रम् ।

ਲੁ.	ਚ.	ਸ.	ਥੁ.	ਥ.	ਥੁ.	ਸ਼.	ਰਾ.	ਪ੍ਰਹ
ਲਾਲ	ਸਫੇਦ	ਅ.	ਨੀਲ	ਪੀਤ	ਸਫੇਦ	ਕੁਣ੍ਣ	ਝਾਮ	ਵਰ्ण

अथ ग्रहेशमाह ।

सर्पका अग्नि, चंद्रमाका जल देवता है, भूमि मंगलका और
बुधका विष्णु देवता है। बृहस्पतिका इन्द्र, शुक्रका इन्द्राणी, शनैश्चरका
ब्रह्मा और राहुकेतुका राक्षस देवता है ॥ १५ ॥

अथ वर्णशब्दकम् ।

सू.	चं.	मं.	तु-	वृ-	शु	शा	रा	मह
अग्नि.	जल.	भूमि.	विश्वा.	इव.	द्याप्ति	संहा.	राक्षस.	ईश.

अथ दिग्गिशानाह ।

प्राच्यादितः सूर्यसितारराहुमेंदुसौम्यांगिरसो दिग्गिशाः ।
वेदाधिनाथाः क्रमशः सुरेज्यपूर्वामरेज्यावनिजेदुपुत्राः॥ १६ ॥
 पूर्वादि दिशाओंके क्रमसे सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनैश्चर, चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति ये ग्रह स्वामी होते हैं अर्थात् पूर्वदिशाका स्वामी सूर्य, अग्नि-कोणका शुक्र, दक्षिणका मंगल, नैऋत्यकोणका राहु, पश्चिमका शनैश्चर, वायव्यकोणका चन्द्रमा, उत्तरका बुध, ईशानकोणका बृहस्पति स्वामी है ॥

अथ दिग्गिशचक्रम् ।

सू.	शुक्र.	मंगल.	राहु.	सूर्य.	चन्द्रमा.	बुध.	बृहस्पति.	ईशा.
पूर्व.	आग्नेय.	दक्षिण.	नैऋत्य.	पश्चिम.	वायव्य.	उत्तर.	ईशान.	दिशा.

अथ वेदनाथानाह ।

यजुर्वेदका स्वामी शुक्र है,ऋग्वेदका स्वामी बृहस्पति है, सामवेदका स्वामी मंगल है और अथर्ववेदका स्वामी बुध है ॥ १६ ॥

अथ ब्राह्मणादिवर्णशमाह ।

विप्रौ भवेतां गुरुदानवेज्यौ दिनेशभौमौ नरपालमुख्यौ ।

सोमश्च विद्वैश्यकुलप्रसूतौ दिनेशपुत्रस्तु चतुर्थवर्णः ।

चांडालजातिस्त्वथ सैहिकेयः केतु॑च जात्यंतरमंत्यजादि १७॥

बृहस्पति और शुक्र ये ब्राह्मणवर्णके स्वामी हैं। सूर्य, मंगल क्षत्रियवर्णके स्वामी हैं। चन्द्रमा, बुध वैश्यवर्णके स्वामी हैं और शनैश्चर शूद्रोंका स्वामी है, राहु चांडाल वा म्लेच्छोंका स्वामी है और केतु अन्त्यज वर्णका स्वामी होता है ॥ १७ ॥

अथ ब्राह्मणादिवर्णशचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ईशा.
क्षत्री.	वैश्य.	क्षत्री	वैश्य.	ब्राह्मण.	ब्राह्मण.	शूद्र.	चांडाल	अन्त्यज.	वर्ण.

(१७८)

ज्योतिषश्यामसंश्रहः ।

अथ पापग्रहसंज्ञामाह ।

क्षीणेदुभूसूनुदिनेशमंदाः पापा बुधस्तत्सहितस्तु पापः ॥ १८ ॥

क्षीण चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, शनैश्चर, राहु, केतु इनकी पाप संज्ञा है और इन्हीं ग्रहोंसहित बुध हो तो वह भी पापी होता है, बलवान् चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, शुक्र इनकी शुभ संज्ञा है ॥ १८ ॥

अथ ग्रहाणां पुरुषादिसंज्ञामाह ।

प्रोक्ता नराः सूर्यकुजामरेज्या कलीबौ शनिज्ञौ युवती सितेदू ।

सत्त्वं रवीज्यक्षणदाधिपाः स्यूरजःसितारौ ज्ययमौ तमश्च ॥ १९ ॥

सूर्य, मंगल, वृहस्पति ये पुरुष हैं अर्थात् इनकी पुरुष संज्ञा है । शनैश्चर और बुध ये नपुंसक हैं और शुक्र, चंद्रमा इनकी स्त्री संज्ञा है ॥

अथ ग्रहाणां पुरुषादिचक्रम् ।

सू.	म.	बृ.	पुरुष.
शु.	चं.	०	स्त्री.
बु.	श.	०	नपुंसक.

अथ ग्रहाणां गुणेशमाह ।

सूर्य, वृहस्पति, चंद्रमा सत्त्वगुणके स्वामी हैं और शुक्र, मंगल ये रजोगुणके स्वामी हैं, बुध शनैश्चर ये तमोगुणके स्वामी हैं ॥ १९ ॥

अथ ग्रहाणां गुणेशचक्रम् ।

सत्त्व.	रज.	तम.	गुण.
सूर्य. बृ. चं.	शु. मं.	बु. श.	ईश.

अथ ग्रहाणां रसज्ञानमाह ।

बुधः कषायः कटुकौ कुजाकौ पटुर्विधुर्मदतमौ च तीक्ष्णौ ।

अम्लोशनार्थ्यो मधुरः सुरेज्यः प्रोक्ता अमी षड्सनायकाश्च२०

सूर्य कटुकरसका स्वामी है । चन्द्रमा लवण रसका और मंगल

कटुरसका स्वामी है। शनैश्चर, राहु तीक्ष्ण रसके स्वामी हैं। शुक्र अम्ल रसका और बृहस्पति मिष्ठ रसका स्वामी है। बुध कषायरसका स्वामी है ॥ २० ॥

अथ ग्रहाणा रसचक्रम् ।

सू.	मं.	बृ.	बृ.	शृ.	श.	रा.	चं.	के.	प्रह
कटुक,	कटुक,	कषाय,	मिष्ठ,	अम्ल,	तीक्ष्ण,	तीक्ष्ण,	लवण,	तीक्ष्ण,	रस.

अथ ग्रहाणा लोकमाह ।

सितेदू पितृलोकेशौ मंदज्ञौ नरकाधिपौ ।
तिर्यग्लोकस्य सूर्यारौ केचित्स्वर्गाधिपो गुरुः ॥ २१ ॥

शुक्र, चन्द्रमा पितृलोकके स्वामी हैं। शनैश्चर, बुध, राहु ये नरकके स्वामी हैं। सूर्य, मंगल मृत्युलोकके स्वामी हैं और बृहस्पति स्वर्गका अधिपति है ॥ २१ ॥

अथ ग्रहाणा लोकचक्रम् ।

सू.	च.	म.	बृ.	बृ.	शृ.	श.	रा.	इश.
मृत्युलोक,	पितृलोक,	मृत्युलोक,	नरकलोक,	स्वर्गलोक,	पितृलोक,	नरक,	नरक,	लोक,

अथ ग्रहाणा सारमाह ।

भौमस्य मज्जापि वसा गुरोस्तु शुक्रं भृगोस्त्वक शशिनंदनस्य ।
चन्द्रस्य रक्तं दिनपस्य चास्थि स्नायुः शनेर्धातुवशादुपाधिः ॥ २२ ॥

मंगल मज्जा सारवशी है। बृहस्पति मेदोसारवशी है। शुक्र वीर्यसारवशी है। बुध त्वचासारवशी है। चन्द्रमा रुधिरसारवशी है। सूर्य अस्थि सारवशी है और शनैश्चर स्नायुसारवशी है। ये ग्रहसार अर्थात् बलवाले होते हैं और इनमें जो ग्रह रोगकारक हो वह उसी धातुसे रोग उत्पन्न करता है ॥ २२ ॥

अथ ग्रहाणां सारचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	छ.	श.	ग्रह.
हाड़,	खून.	हाड़के भीतरकी झींग	खाल.	चर्ची.	बीज.	नसे.	धातुसार.

अथ ग्रहाणां स्थानमाह ।

देवस्थानं भास्करस्यांबुवासं चन्द्रस्याग्निस्थानमंगारकस्य ।

क्रीडास्थानं सोमपुत्रस्य कोशस्थानं जीवस्येवमाहुर्भृगोस्तु २३
सुप्तिस्थानं भानुजस्योत्करं तु सर्पस्थानं सैंहिकेयस्य चैवम् ॥

सूर्यका देवस्थान है । चन्द्रमाका जलस्थान है । मंगलका अग्नि-
स्थान है । बुधका क्रीडास्थान है । बृहस्पतिका कोशस्थान है । शुक्रका
शयन स्थान है । शनैश्चरका ऊषर स्थान है और राहुका सर्पस्थान है २३

अथ ग्रहाणां स्थानचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	छ.	श.	ग्रह.
देव.	जल.	अग्नि.	क्रीडा.	कोश.	शयन.	ऊषर.	सर्प.

अथ ग्रहणां वस्त्रमाह ।

जीर्णं शनेवासरनायकस्य स्थूलं गुरोर्मध्यमकं कवेश्व ॥ २४ ॥

काठिन्यमञ्जस्य तु तूतनं वित्र क्लिन्नं कुजस्याग्निहतं च वस्त्रम् ।

कंथा फणींद्रस्य तु चित्ररूपा केतोर्महाछिद्रयुता विशेषात् २५॥

शनैश्चरका जीर्ण अर्थात् पुराना वस्त्र है । सूर्यका मोटा वस्त्र है ।
बृहस्पतिका अधपुराना वस्त्र है । शुक्रका कठिन अर्थात् मजबूत
वस्त्र है । चन्द्रमाका नवीन वस्त्र है । बुधका बलसे भीजा हुआ, मंगलका
आगसे जला हुआ, राहुका पुराना फटा चित्रविचित्र वस्त्र है । केतुका
बहुत छेदवाला वस्त्र है ॥ २४ ॥ २५ ॥

अथ ग्रहाणां वस्त्रचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	प्रह.
मोटा.	नवीन.	अग्नि.	भीजा	अध	पुराना	मजबूत पुराना	पुराना	छिद्रा	वस्त्र.

अथ ग्रहाणां द्रव्यमाह ।

तात्र दिनेशस्य निशाकरस्य मणिर्हिरण्यं तु धरासुतस्य ।
शुक्लिर्विंदो देवगुरोश्च रौप्यं शुक्रस्य मुक्ता ह्यसमर्कसूनोः ॥२६॥
राहोस्तु सीसं शिखिनश्च नैल्यं धरामणिस्तत्कथयंति तज्ज्ञाः ।

सूर्यका तांबा, चंद्रमाकी मणि, मंगलका सोना, बुधका पीतल कांसा, बृहस्पतिकी चांदी, शुक्रका मोती, शनैश्चरका लोहा, राहुका सीसा और केतुका जस्ता द्रव्य है ॥ २६ ॥

अथ ग्रहद्रव्यचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	प्रह.
तांबा.	मणि.	सोना.	कांसा.	चांदी.	मोती.	लोहा.	सीसा	जस्ता.	द्रव्य.

अथ ग्रहाणां वस्त्रमाह ।

पीतांबरं देवगुरोर्भृगोस्तु क्षौमांबरं भास्करस्येद्रगोपम् ॥ २७ ॥

शुक्लं क्षौमं रात्रिनाथस्य चांद्रेः श्यामं क्षौमं रक्तचित्रं कुजस्य ।

वस्त्रं चित्रं पट्टवस्त्रं शनेस्तु नीलं राहोर्जीर्णचित्रान्वितं च ॥ २८ ॥

रूपान्वितं तद्वसनं च केतोर्बलान्वितानां तु वदेद्रहणाम् ॥ २९ ॥

बृहस्पतिका पीत वस्त्र है । शुक्रका सफेद रेशमी वस्त्र है । सूर्यका बीरबहूटीके माफिक रंगका वस्त्र है ॥ २७ ॥ चंद्रमाका सफेद वल्कल वा रेशमी वस्त्र है । बुधका श्याम रेशमी यानी कौशेय वस्त्र है । मंगलका लाल चित्रकारी वस्त्र है और शनैश्चरका चित्रकार पट्ट वस्त्र है । राहुका नील वस्त्र पुराना चित्रित है ॥ २८ ॥ और केतुका नील वस्त्र

(१८२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

चित्रित रूपवान् है । पहले अहसे वज्र चौर्यज्ञान वा प्रसातिका ज्ञान करना ॥ २९ ॥

अथ ग्रहाणां वस्त्रवर्णचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	डु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	प्रह.
शुष्ठु अनार.	भेत चित्र.	लाल चित्रित.	स्थाम बल्कलष	शीतांबर. सनका.	रघमी वज्र.	नील वस्त्र.	लाल वस्त्र.	वस्त्र.	वस्त्रवर्ण.

अथ ग्रहाणां ऋतुमाह ।

भृगोर्वसंतः क्षितिसूनुभान्वोग्रीष्मः शशांकस्य ऋतुः प्रवर्षः ।
विदः शरदेवगुरोस्तु हैम्नो ऋतुः शनेः स्याच्छिरस्तु कालः ३०

शुक्रकी वसंत ऋतु है । मंगल सूर्यकी ग्रीष्म ऋतु है । चन्द्रमाकी वर्षा, बुधकी शरद् ऋतु, बृहस्पतिकी हेमंत, शनैश्चरकी शिशिर ऋतु जानना चाहिये । प्रयोजन इनमें जो ग्रह लघ्रमें स्थित हो उसकी ऋतु कहनी चाहिये । अगर बहुत ग्रह लघ्रमें स्थित हों तो जो ग्रह बलवान् हो उसकी ऋतु जाननी चाहिये । जो कोई ग्रह लघ्रमें न हो तो जिसका द्रेष्काण हो उसी ग्रहकी ऋतु जानना चाहिये । यथा वृष लघ्र है उससे नवम द्रेष्काण शनैश्चरकेमें जन्म है तो शनैश्चरकी शिशिरकर्तुमें जन्म जानो । नष्ट कुंडली इत्यादिमें ऋतु ज्ञान जानो । यथा—वराहः “द्रेष्काणैः शिशिरादयः” ॥ ३० ॥

अथ ग्रहाणां ऋतुचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	डु.	बृ.	शु.	श.	प्रह.
ग्रीष्मः वर्षा.	प्रातःम.	शरद.	हेमंत.	वसंत.	शिशिर.	ऋतु.	

अथ ग्रहाणामूर्ध्वसमदृष्टिमाह ।

अथोर्ध्वदृष्टि दिननाथभौमौ दृष्टिः कटाक्षणे कर्वीदुसून्योः ।
शशांकगुर्वोः समभागदृष्टिस्त्वधोक्षिपातस्त्वहिनाथशन्योः ॥ ३१ ॥

सर्य, मंगल ऊर्ध्वदृष्टि करके देखते हैं। शुक्र, बुध कटाक्ष करके दृष्टि करते हैं। चंद्रमा, बृहस्पति समभाग अर्थात् बराबर दृष्टि करके देखते हैं। राहु, शनैश्चर नीचे दृष्टि करके देखते हैं ॥ ३१ ॥

अथोर्ध्वसमाधोदृष्टिचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.८	श.	ग.	रा.	बह.
ऊर्ध्वदृष्टि.	समभाग.	ऊर्ध्वदृष्टि.	कटाक्ष.	समभाग.	कटाक्षदृष्टि.	अधोदृष्टि.	अधोदृष्टि.	दृष्टि.

अथ वृद्धिदृष्टिमाह ।

दृष्टिर्दिक्त्रितये ग्रहे नवशरे वेदाऽष्टके कामभे
पश्यन्त्यर्कविधुज्जदेत्यगुरवः पादाभिवृद्धिः क्रमात् ।
मंदेज्यक्षोणिभूनां चरणद्विचरणा वह्निपादं तथैव
पूर्णं पश्यन्ति भावान् वदति मुनिवराः सर्वग्रंथेषु धीराः ॥ ३२ ॥

दशवें, तीसरे, नौवें, पांचवें, आठवें, चौथे, सातवें, सर्य, चंद्रमा, बुध, शुक्र चरणवृद्धिकरके देखते हैं अर्थात् एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं। यथा—दशवें, तीसरे एक चरण, नौवें पांचवें दो चरण, चौथे, आठवें तीन चरण और सातवें चारों चरण दृष्टिसे देखते हैं। शनैश्चर, बृहस्पति, मंगल ये भी एक चरण, दो, तीन तथा चारों चरणोंसे देखते हैं। यथा—शनि नवम पंचम एक चरण, चतुर्थ अष्टम दो पाद, सप्तम तीन, तृतीय दशम चारों चरणोंमें देखता है और बृहस्पति अष्टम चतुर्थ एक चरण, सप्तम दो पाद, तृतीय दशम तीन पाद, नवम पंचम सम्पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं। मंगल सप्तम स्थानको एक चरण, तृतीय दशम दो चरण, नवम पंचम तीन और चतुर्थ अष्टम चारों चरणोंसे देखता है ॥ ३२ ॥

अथ तमस्य पादवृद्धिदृष्टिमाह ।

सुते सप्तमे पूर्णदृष्टि तमस्य तृतीये रिपौ पाददृष्टिर्नितांतम् ।

(१८४)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

घने राज्यगेहार्धदृष्टि वदंति स्वगेहे त्रिपादं तथा चैव केतोः इदै॥

राहु, केतु सदैव पंचम, सप्तम पूर्ण, तीसरे, छठे एक पाद, द्वितीय, दशम द्विपाद और अपने घरको त्रिपाद दृष्टिसे देखते हैं ॥ ३३ ॥

अथ ग्रहाणां दृष्टिचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	तु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
३	३	७	३	८	३	९	३	३	
१०	१०	१०	४	१०	५	६	६	६	एकपाद.
९	९	३	९	७	८	४	२	२	
५	५	१०	५		५	८	१०	१०	द्विपाद.
४	४	१	४	३	४	७	१	१	
८	८	५	८	१०	८				त्रिपाद.
७	७	४	७	९	७	३	५	५	
		८		५	१०	७	७	७	सम्पूर्ण

अथ सूर्यस्य उच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

तुंगोऽजस्तौलिनीचो गहनचरपतिः पद्मनीप्राणपालः

शत्रू दैत्येज्यमंदौ शशिधरतनयौ यस्य सामान्यभावः ।

शेषा मित्राणि खेटा उपचयशुभगो मध्यमः कोशकोणे

केद्रे दुष्टोऽतिदुष्टो व्ययगजभवने कीर्तिः कोविदोच्चैः ॥ ३४ ॥

सूर्य मेषका उच्च और तुलाका नीच कहाता है और सिंहराशिका स्वामी है । यह शुक्र शनैश्चरसे शत्रुता रखता है, बुधसे सामान्य प्रीति करता है और चंद्रमा, मंगल, बृहस्पतिसे मित्रभाव रखता है । सूर्य, तीसरे छठे, दशवें, ग्यारहवें इन स्थानोंमें स्थित शुभ फल देता है, द्वितीय, पंचम, नवमें स्थित मध्यम फल देता है, लग, चतुर्थ, सप्तम, दशममें स्थित दुष्ट फल देता है और अष्टम, चतुर्थमें स्थित अतिदुष्ट फल देता है ॥ ३४ ॥

अथ चन्द्रस्योच्चनीचमित्रामित्रमाह ।

कर्कार्धीशो वृषोच्चो जलनिधितनयो वृश्चिको यस्य नीचो
मित्रे चंडांशुसौम्यौ तदनु परखगा यस्य सामान्यभावः ।

**पाताले कोशकोणे जनकभवगृहे सर्वसिद्धार्थकारी,
सामान्यो भ्रातृकामे तदनुपरगृहे चंद्रमा न प्रशस्तः ॥ ३६ ॥**

चंद्रमा कर्कराशिका स्वामी है। वृषराशिका उच्च और वृश्चिक-
राशिका नीच कहाता है। यह सूर्य बुधसे मित्रता रखता है। मंगल,
बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चरसे समता भाव रखता है। चंद्रमा चतुर्थ,
द्वितीय, पंचम, नवम, दशम, एकादश इन स्थानोंमें स्थित सम्पूर्ण सिद्धि-
योंका देने वाला होता है। तृतीय सप्तममें स्थित सामान्य फल देता है और
लघु, षष्ठ, अष्टम और व्ययमें स्थित नेष्ट फल देता है ॥ ३५ ॥

अथ भौमस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

मेषालीशो मृगोच्चः सलिलचरनतश्चंद्रजो यस्य शत्रु-
मित्राणींद्रकंजीवास्तदनुभृगुशनी द्वौ च सामान्यभावौ ॥
राज्ये लाभे त्रिषष्ठे सकलसुखकरः कीर्तिंतो ब्रह्मपुत्रैर्भावे-
इन्यस्मिन्न शस्तो झटिति फलकरो मंगलः खड्गहस्तः ॥ ३६ ॥

मंगल मेष, वृश्चिकराशिका स्वामी है। मकरराशिका उच्च होता है।
कर्क राशिका नीच कहाता है। यह चंद्रमा, सूर्य, बृहस्पतिसे मित्रता मानता
है। बुधसे शत्रुता रखता है और शुक्र शनैश्चरसे समता रखता है। मंगल
दशम, एकादश, तृतीय, षष्ठ स्थानमें स्थित सम्पूर्ण सुखका देनेवाला और
लघु, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम और द्वादश इन स्थानोंमें
स्थित दुष्ट फलका देनेवाला होता है ऐसा गर्गवसिष्ठादिकोंने कहा है ॥ ३६ ॥

अथ बुधस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

कामेशः कन्यकोच्चः प्रणतजलचरो वैरिणो यस्य चंद्रो
मित्रे दैत्येज्यसूर्यौ कुजशनिगुरवो यस्य सामान्यभावाः ।
लघु लाभे चतुर्थे सुतनवजनके कामकोशे प्रशस्तो
भावेऽन्यस्मिन्न शस्तो हिमकरतनयः कीर्तिंतो गर्गमुख्यैः ॥ ३७ ॥
बुध मिथुनराशिका स्वामी है। कन्याराशि इसकी उच्च है। मीन

(१८६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

राशिका नीच है । यह चन्द्रमासे शत्रुता मानता है । शुक्र सूर्यसे मित्रता रखता है । मंगल, शनैश्चर, वृहस्पतिसे समभाव रखता है । बुध लग्न एकादश चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम, सप्तम और द्वितीय इन स्थानोंमें स्थित अतिश्रेष्ठ फलदाता होता है और तृतीय, षष्ठ, अष्टम और व्यय इन भावोंमें स्थित नष्ट फलका देनेवाला होता है । ऐसा गर्गादि क्रषीश्वरोंने कहा है ॥३७॥

अथ जीवस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

कर्कोच्चो नक्षनीचो विशुधपतिगुरुमीनकोदंडनाथो
मित्राणींद्रिकभौमा रविज अपि समो वैरिणौ सौम्यशुक्रौ ।
कोणे केद्रायकोशे अतिशुभफलदो मध्यमो ब्रातृगेहे
रंधे कैवल्यदाता तदनु परगृहे नैव जीवः प्रशस्तः ॥ ३८ ॥

वृहस्पति कर्कराशिका उच्च है । मकरराशिका नीच है । मीन, धन राशिका स्वामी है । यह सूर्य, चन्द्रमा, मंगलसे मित्रता और शनिसे समभाव रखता है । बुध, शुक्र इसके शत्रु हैं । वृहस्पति नवम, पंचम, लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, एकादश और द्वितीय इन स्थानोंमें स्थित अतिश्रेष्ठ फलदाता है, तृतीय भावस्थित मध्यम फलका देनेवाला है । अष्टमस्थानस्थित मुक्तिका दाता और षष्ठ, व्ययस्थित नेष्ट फलदाता है ॥ ३८ ॥

अथ शुक्रस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

मीनोच्चो नीचकन्यस्तुलवृषभपतिवैरिणौ भानुचंद्रौ
सामान्यौ पूज्यभौमौ तदनु च सुहृदौ सौम्यमन्दौ ग्रहौ द्वौ ।
संप्राप्तौ लाभगेहे तनुसुखजनके कोशकोणे प्रशस्तो
भावेऽन्यस्मिन्न शस्तो गणकमुनिवरैः प्रोक्तमित्यं समस्तैः ॥३९॥

शुक्र मीनराशिका उच्च है, कन्याराशिका नीच है तथा तुला और वृषराशिका स्वामी है । यह सूर्य, चन्द्रमासे शत्रुता, वृहस्पति, मंगल इनसे समभाव और बुध, शनैश्चरसे मित्रता रखता है । शुक्र एकादश, लग्न, सुख, दशम, द्वितीय, पंचम और नवम इन स्थानोंमें स्थित अतिश्रेष्ठ फलका

देनेवाला, तृतीय, षष्ठि, अष्टम, सप्तम और व्यय इन भावोंमें स्थित अतिनेष्ट फलका दाता है ऐसा ज्येतिषशास्त्रके ज्ञाता मुनीश्वरोंने कहा है ॥ ३९ ॥

अथ मंदस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

तौलोच्चो मेषनीचो हरिणघटपतिः पद्मिनीपालपुत्रो
दुष्टेंद्र (ग्लो) भानुभौमौ बुधसिततमसो यस्य मित्राणि खेटाः ।
सामान्यो देवपूज्यो रसशिवसहजे अर्कजश्चातिशस्तो
भावेऽन्यस्मिन्न शस्तो मुनिगणसहितैर्भाषितः पूर्वधीरैः ॥ ४० ॥

शनैश्चर तुलाका उच्च है । मेषराशिका नीच है और मकर, कुम्भ राशिका स्वामी है । यह सूर्य, चन्द्रमा, मंगलसे शत्रुता, बुध, शुक्र, राहुसे मित्रता और बृहस्पतिसे समभाव रखता है । शनैश्चरसे छठे, ग्यारहवें और तृतीय इन स्थानोंमें स्थित अति शुभ फलको देता है । लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम और द्वादश इन स्थानोंमें स्थित अतिनेष्ट फलको देता है ऐसा मुनीश्वरोंके गणसहित पूर्व धीर विद्वानोंने कहा है ॥ ४० ॥

अथ तमसं उच्चनीचमित्रामित्रमाह ।

कामोच्चः कामिनीशः प्रणतशरधरः सिंहिकागर्भभूतो
दुष्टाः सूर्येन्दुभौमा बुधसितशनयो यस्य मित्राणि खेटाः ।
सामान्यो देवमंत्री सहजरसशिवे सर्वदोषप्रहर्ता
शेषे भावे न शस्ताः कलियुगफलदाः कालरुद्रा वदंति ॥ ४१ ॥

राहु मिथुनराशिका उच्च है । कन्याराशिका स्वामी है । धनराशिका नीच है । यह सूर्य, मंगल, चन्द्रमासे शत्रुता रखता है । बुध, शुक्र, शनैश्चरसे मित्रता और बृहस्पतिसे समता रखता है । राहु तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थानमें स्थित सम्पूर्ण दोषका हरनेवाला और लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, व्यय स्थानमें स्थित अतिनेष्ट फलका देनेवाला है । राहु विशेषकरके कलियुगमें फल देता है ऐसा कालरुद्र कहते हैं ॥ ४१ ॥

अथ केतोरुचनीचमित्रामित्रमाह ।

चापोच्चः कामनीचो घनरसचरपः कञ्जलाभः करालः
सिंहो मूलत्रिकोणं हितसमरिपवो राहुवद्वावकर्ता ।

कोपात्मा कोपकेलिर्हमकरदमनः कूरकर्मा कठोरो
म्लेच्छानां कार्यकर्ता इटिति कलियुगे विक्रमागारकेतुः ॥४२॥

केतु धनराशिका उच्च है, मिथुनराशिका नीच है और मीनराशिका स्वामी है। काजलकासा वर्णवाला है। कराल है। सिंहराशिका मूलत्रिकोण है। मित्रके समान शत्रु है। राहुके सदृश भाव फलका दाता है, क्रोधी है। क्रोध ही है खेल जिसका, चंद्रमाको दमन करनेवाला, दुष्ट कर्मोंका करनेवाला, कठोर, कलियुगमें मुसल्मानोंके कामको जल्दी करनेवाला केतु है ॥४२॥

अथ ग्रहोचनीचराश्यंशमाह ।

दिशा गुणा गजाश्विनः शरेंद्रवः समीरणाः ।

नगाश्विनः करोद्भवो रवेस्तु तुंगजा परा ॥ ४३ ॥

सूर्य मेषराशिके दश अंशतक उच्च है और तुलाराशिके दश अंशतक नीच है। चंद्रमा वृषराशिके तीन अंशतक उच्च है और वृश्चिकके तीन अंशतक नीच है। मंगल मकरके अष्टाईस अंशतक उच्च है और कर्कके अष्टाईस अंशतक नीच है। बुध कन्याके पंद्रह अंशतक उच्च है और मीनके पन्द्रह अंशतक नीच है। वृहस्पति कर्कके पांच अंशतक उच्च है और मकरके पांच अंशतक नीच है। शुक्र मीनके सत्ताईस अंशतक उच्च है और कन्याके सत्ताईस अंशतक नीच है। शनैश्चर तुलाके बीस अंशतक उच्च है और मेषके बीस अंशतक नीच है। राहु मिथुनके शून्य अंशतक उच्च है और धनके शून्य अंशतक नीच है। केतु धनके शून्य अंशतक उच्च है और मिथुनके शून्य अंशतक नीच है। सूर्य सिंहका, चंद्रमा वृषका, मंगल मेषका, बुध कन्याका, वृहस्पति धनका, शुक्र तुलाका, शनैश्चर कुंभका, राहु कर्कका और केतु सिंहका ये ग्रह मूलत्रिकोणी होते हैं ॥ ४३ ॥

भाषाटीकासहितः—अ० १२. (१०९)

अथ ग्रहाणामुच्चराश्यंशचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
मे.	बृ.	म.	क.	क.	मी.	दु.	मि.	ध.	राशि.
१०	३	२८१५	५	२७२०	०	०	०	०	उच्चांशः

अथ ग्रहाणां नीचराश्यंशचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
तु.	बृ.	क.	मी.	म.	क.	मे.	ध.	मि.	राशि.
१०	३	२८१५	५	२७२०	०	०	०	०	नीचांशः

अथ नैसर्गिकमैत्रीचक्रम् ।

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
चं.	सू.	बृ.	सू.	सू.	बु.	शु.	बृ.	बु.	मित्र.
मे.	बृ.								
बृ.	०	सू.	०	मे.	रा.	रा.	रा.	रा.	
०	मं.	शु.	मं.	श.	बृ.	०	०	०	
बृ.	बृ.	श.	श.	रा.	मे.	बृ.	बृ.	बृ.	सम.
०	शु.	रा.	बृ.	०	०	०	०	०	
श.	रा.	रा.	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	शत्रु.
श.	०	०	०	०	०	०	०	०	
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	

अथ तात्कालिकमैत्रीमाह ।

भवन्ति तात्कालिकमित्रभूताः सर्वे च वाक्सोदरबंधुयुक्तः ।

स्वात्स्वात्क्रमाद्व्युत्क्रमतस्तथैवमन्यस्थितास्तत्समपारिभूताः ४४

सम्पूर्ण ग्रह अपने स्थानसे दूसरे, तीसरे, चौथे, देशमें, ग्यारहवें, बारहवें स्थानमें स्थित ग्रहके परस्पर मित्र होते हैं । किसी आचार्यका यह भी मत है कि अपने उच्चराशिमें स्थित वा पंचमस्थित ग्रह भी मित्र होते हैं और सब ग्रह अपने स्थानसे अर्थात् जिस जगह स्थित हों वहांसे प्रथम, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम स्थानमें स्थित ग्रह शत्रु होते हैं ॥ ४४ ॥

अथ पंचधामैत्रीमाह ।

तत्कालमित्रं तु निसर्गमित्रं द्वयं भवेत्तत्त्वधिमित्रसंज्ञम् ।

तथैव शत्रोरधिशत्रुसंज्ञमेकत्र शत्रुः समतामुपैति ॥ ४५ ॥

जो यह तत्काल मित्र और नैसर्गिक मित्र हो तो वह यह अधिमित्र होता है और जो यह तत्काल मैत्रीमें शत्रु हो और नैसर्गिकमें भी शत्रु हो वह अधिशत्रु होता है और जो यह एक जगह मित्र हो और दूसरी जगह शत्रु हो वह यह समभावको प्राप्त होता है और सम शत्रु हो तो शत्रु और मित्र सम हो तो मित्र मानना चाहिये ॥ ४५ ॥

अथ ग्रहाणामुच्चमूलत्रिकोणस्वक्षेत्रभेदमाह ।

हरौ रवेर्नखा लवास्त्रिकोणकं परे ग्रहम् । वृषे विधोस्तु तुंगजा

गुणास्त्रिकोणजाः परे ॥ ४६ ॥ कुजस्य भास्करा अवौ त्रिकोणजाः

परे स्वभम् । धर्नुधरे गुरौ दिशस्त्रिकोणजाः परे स्वभम् ॥ ४७ ॥

सूर्य सिंहराशिमें स्थित हो तो मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध होते हैं तहाँ बीस अंशतक मूलत्रिकोणी होता है और बीससे तीस पर्यंत स्वक्षेत्री कहाता है। इसी तरह वृषराशिमें स्थित चन्द्रमाको उच्च मूलत्रिकोण दोनों सम्बन्ध होते हैं। तहाँ तीन अंशतक चन्द्रमा उच्चका रहता है और तीनसे लेकर तीस अंशपर्यंत मूलत्रिकोणी कहता है ॥ ४६ ॥ इसी प्रकार मेषराशिमें स्थित मंगलको मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध होते हैं सो बारह अंशतक मंगल मूलत्रिकोणी रहता है। बारहसे तीसपर्यंत स्वक्षेत्री कहाता है। इसी तरह धन राशिमें स्थित बृहस्पतिको मूलत्रिकोण और स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध होते हैं तहाँ दश अंशतक मूलत्रिकोणी रहता है और दश अंशसे लेकर तीस अंशपर्यंत स्वक्षेत्री कहाता है ॥ ४७ ॥

घटे भृगोः शरेद्वस्त्रिकोणकाः परे स्वभम् । घटे शनेस्त्रिकोण-

जानखाः परे स्वगोहजाः ॥ ४८ ॥ बुधस्य तुङ्गजास्त्रियां शरेद्वः

परेशराः । स्वभं परे त्रिकोणजा दिशस्तु संस्मृता बुधैः ॥ ४९ ॥

इसी तरह तुलाराशिमें स्थित शुक्रको मूलत्रिकोण और स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध होते हैं तहां पन्द्रह अंशतक मूलत्रिकोणी रहता है। इसी तरह कुंभराशिमें स्थित शनैश्चरको भी मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध प्राप्त होते हैं, तहां वीस अंशावधि मूलत्रिकोणी रहता है और तीस अंशतक स्वक्षेत्री रहता है ॥ ४८ ॥ इसी तरह कन्याराशिमें स्थित बुधको उच्च मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र तीनों सम्बन्ध प्राप्त होते हैं। सो पंद्रह अंशपर्यंत उच्चका रहता है। पंद्रहसे वीस अंशतक स्वक्षेत्री कहाता है और वीससे तीस अंशतक मूलत्रिकोणी रहता है ॥ ४९ ॥

अथ तमस्य उच्चमूलत्रिकोणस्वक्षेत्रभेदमाह ।

शून्येषु भूय उच्चं स्यात्कोणक्षेत्रं तमः शिखी ।

युग्मं कुलीरकन्या थर्सिंहमीनाः स्मृता बुधैः ॥ ५० ॥

इसी तरह मिथुनराशिमें स्थित राहु शून्य अंशतक परमोच्च रहता है, कर्कराशिमें पांच अंशतक मूलत्रिकोणी होता है और कन्याराशिमें स्थित चौवीस अंशतक स्वक्षेत्री रहता है। धनराशिमें प्राप्त केतु शून्य अंशतक परमोच्च होता है, सिंहराशिमें स्थित पांच अंशतक मूलत्रिकोणी रहता है और मीनराशिमें स्थित चौवीस अंशतक स्वक्षेत्री रहता है ॥ ५० ॥

अथ उच्चमूलत्रिकोणस्वक्षेत्रांशभेदचक्रमाह ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	प्रह.
मे. १०	बृ. ३	मे. २८	क. १५	क. ५	मी. २७	द. २०	मि. ०	ध. ०	उच्चांशा.
सि. २०	बृ. २७ तीनके मी.	मे. १२	क. २० से ३० तक.	ध. १०	द. १५	कं ३०	क. ५	मी. २५	मूलत्रिको जांशा.
सि. १०	क. २७	मे. १८	क. ५	ध. २	द. १५	कु. १०	क. ३४	मी. १४	स्वस्था- नांशा.

अथ ग्रहाणां स्थानबलमाह ।

स्वोच्चे सुहङ्गे स्वनवांशकेऽपि स्वक्षेत्रे हकाणे द्विरशांशकेऽपि ।
कलांशकाद्यशयुतेऽपि चैवमुपैति तत्स्थानबलं ग्रहेन्द्रः ॥ ५१ ॥

अपने उच्चस्थानमें, अपने मित्रके स्थानमें, अपने नवांशमें, अपनी राशिमें, अपने द्रेष्काणमें वा द्वादशांशमें, कलाअंशादिमें स्थित ग्रह स्थान-बलको प्राप्त होता है ॥ ५१ ॥

अथ दिग्बलमाह ।

लघु बुधेज्यौ बलिनौ तु पूर्वे वीये यमे तदशमेऽर्कभौमौ ।
कामेऽर्कसूनुर्बलवाञ्जलेशे बंधौ निशानाथकवी कुबेरे ॥ ५२ ॥

पूर्वादि चारों दिशाओंमें अर्थात् चारों केंद्रमें बुध, बृहस्पति, सूर्य, मंगल, शनैश्चर, शुक्र, चन्द्रमा ये ग्रह बलवान् होते हैं तथा लघुमें बुध, बृहस्पति स्थित पूर्व दिशामें बली होते हैं । दशवें स्थानमें सूर्य, मंगल स्थित दक्षिण दिशामें बली होते हैं । सप्तमस्थानमें शनैश्चर राहु स्थित पश्चिमदिशामें बली होते हैं और चतुर्थस्थानमें शुक्र चन्द्रमा स्थित उत्तरदिशामें बलवान् होते हैं और सब ग्रह अपने स्थानसे सप्तमस्थानमें निर्बल होते हैं । मध्य त्रैराशिक रीतिसे बल लेना चाहिये । जैसे लघुमें बृहस्पति स्थित है सो पूर्ण बलको प्राप्त होता है तो चतुर्थस्थानमें स्थित बृहस्पतिको कितना बल मिलेगा ॥ ५२ ॥

अथ दिग्बलचक्रम्.



तत्सप्तमे दिग्बलशून्यमाहुस्तदंतरे चेत्त्वंनुपात एव ।

स्वमासहोरादिनवत्सरेषुवीर्यान्विता भानुमुखा ग्रहेन्द्राः ॥ ५३ ॥

सूर्य आदि सम्पूर्ण ग्रह अपने महीने, दिन, वर्ष और होरामें भी बलवान् होते हैं और इसी पूर्वोक्त रीतिके अनुसार उच्च बल भी बनता है अर्थात् अपने उच्चमें स्थित ग्रह पूर्व बली होता है और उच्चस्थानसे सप्तम स्थानमें सब ग्रह हीनबली होते हैं । उच्च नीच राशिके मध्यमें स्थित ग्रहोंका बल त्रैराशिक रीतिसे बनाना चाहिये ॥ ५३ ॥

अथ दृष्टिबलमाह ।

शुभेक्षिताः पूर्णबलन्वितास्तु दृष्टे बल पापखगैरदृष्टः । सौ-
म्यायने त्वतिबली दिवसाधिनाथश्चंद्रस्तदन्यसमये बलपूर्ण-
युक्तः ॥ ५४ ॥ वक्रान्विताः क्षितिसुतप्रमुखाः समस्ता युद्धे
जयी जलजदिग्गतिकांतियुक्तः ॥ ५५ ॥

शुभग्रह करके दृष्ट जो ग्रह हो सो पूर्ण बलको प्राप्त होता है और
पापग्रह करके दृष्ट हीनबली होता है ॥

अथ चेष्टाबलमाह ।

उत्तरायण अर्थात् मकरादि छः राशियोंमें सूर्य अतिबली होता
है और चन्द्रमा कर्कादि छः राशियोंमें बली होता है ॥ ५४ ॥ वक्रान्वित
अर्थात् उलटा चलनेवाले चन्द्रमासे संयुक्त मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र,
शनैश्चर बली होते हैं । सूर्यके संयोगको प्राप्त ग्रह अस्त और चन्द्रमाके
संयोगको प्राप्त समागम मंगलके संयोगको प्राप्त ग्रह युद्ध कहते हैं ।
“जीवार्कस्फुजितोऽहिविच्च सततं मन्देन्दुभौमा निशि । होरामासदिनाधि-
पाश्च बलिनः सौम्याः सितेन्येऽसिते । संयामं जयिनो विलोमगतयः सम्पूर्ण-
भावो ग्रहाः सूर्येन्दु पुनरुत्तरेण बलिनौ सत्योक्तचेष्टाबले” ॥

अथ ग्रहयुद्धलक्षणम् ।

“ विपुलः स्त्रिग्धयुतिमान्नुत्तरदिकस्थो जयी ज्ञेयः ” । यानी विपुल
किरणोवाला स्त्रिग्धकांतिमान् युद्धमें जो ग्रह उत्तरकी तरफ स्थित हो वह
ग्रहजयी अर्थात् बली होता है । जिस ग्रहकी शीघ्र केंद्र दूसरे वा तीसरे
पदमें स्थिति हो वह ग्रह विपुलकिरणवाला कहा जाता है इस रीतिसे
चेष्टाबल कल्पना करनी चाहिये ॥ ५५ ॥

अथ कालबलमाह ।

रात्रौ बलाद्याः शनिचंद्रभौमास्त्रयो ग्रहाश्वाहि रवीज्यशुक्राः ।
सदा बली वित् सितकृष्णपक्षे सौम्यास्तदन्ये बलिनः क्रमेण ५६

(१९४)

ज्योतिषश्यामसंश्रहः ।

शनैश्चर, चन्द्रमा, मंगल ये रात्रिमें बलवान् होते हैं। सूर्य वृहस्पति शुक्र ये तीनों दिनमें बलवान् होते हैं और बुध रात्रि दिन दोनों समयमें बलवान् हैं ॥

अथ पक्षबलम् ।

शुभ यह शुक्रपक्षमें, पापग्रह कृष्णपक्षमें बली होते हैं ॥ ५६ ॥

अथ अयनबलम् ।

सौम्यायने सूर्यसितेज्यभौमा याम्ये शनीदू ह्युभयत्र सौम्यः ।

वीर्यान्विता आयनवीर्यमिंदुरुदग्बली स्थादिति केचिदूच्चुः५७॥

मकरादि छः राशियोंमें अर्थात् उत्तरायणमें सूर्य, शुक्र, वृहस्पति, मंगल बली होते हैं। और कर्कादि छःराशियोंमें शनैश्चर, चन्द्रमा बली होते हैं। और बुध दोनों अयनमें बली होता है। कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि चंद्रमा अधिक बली हो तो उत्तरायणमें बलवान् होता है ॥ ५७ ॥

अथ दिनरात्रिबलमाह ।

गुरुः सदा सोमसुतो दिनादौ मध्यदिनेऽकों रविजस्तथान्ते ।

क्षपासुखे शीतरुचिर्निशीथे शुक्रो निशांते कुसुतो बलीयान्५८

बृहस्पति सर्वकालमें बलवान् है, बुध दिनके आदिमें बलवान् होता है, सूर्य मध्याह्नकालमें बलवान् होता है, शनैश्चर दिनके अंतमें बलवान् होता है, चंद्रमा सायंकालके समय बलवान् होता है, शुक्र अर्द्धरात्रिमें बलवान् होता है और मंगल रात्रिके अंतमें बलवान् होता है ॥ ५८ ॥

अथ नैसर्गिकबलम् ।

मंदारसौम्येज्यकवींदुसूर्या यथोत्तरं पूर्णबला निसर्गात् ।

शनैश्चर, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, चन्द्रमा और सूर्य ये यह क्रमसे उत्तरोत्तर बली होते हैं, अर्थात् शनैश्चरसे मंगल, मंगलसे बुध, बुधसे वृहस्पति, वृहस्पतिसे शुक्र, शुक्रसे चन्द्रमा, चन्द्रमासे सूर्य नैसर्गिक बलको ग्रास होते हैं ॥

ग्रहयोनिप्रभेदोऽयमध्याये द्वादशे मया ।

कृतो वै श्यामलालेन सर्वलोकोपकारकः ॥ ५९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ग्रहप्रभेदवर्णनं
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

इस बारहवें अध्यायमें सम्पूर्ण मनुष्योंके उपकारके निमित्त श्याम-
लालकरके ग्रहके भेद वर्णन किये गये ॥ ५९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-
पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां ग्रहप्र-
भेदवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ नष्टजातकाध्यायप्रारम्भः ।

आधानकालोऽप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् ।

प्रसूतिकालं प्रवदंति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥ १ ॥

जो किसीको अपना गर्भाधानकाल वा जन्मकाल मालूम नहीं
हो तो उस मनुष्यको उचित है कि किसी उत्तम पंडितसे पूछे । तब उस
पंडितको उचित है कि उस मनुष्यका जन्मकाल नष्टजातकसे प्रश्न-
कालिक लगद्वारा कहे ॥ १ ॥

तज्जातकं येन शुभाशुभासिर्जतस्य जंतोर्जननोपकालात् ।

तस्मिन् प्रनष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् २

पैदा हुए प्राणीके जन्मकालसे जिससे शुभाशुभकी प्राप्ति हो वह जातक
उसके नष्ट होनेपर जिससे जन्मकाल कहा जाता है सो नष्टजातक है ॥ २ ॥

अथ राशिगुणकविधिमाह ।

मेषादितः प्रश्नविलग्निसाः कार्याः कर्मात्ता मुनिभिः ७ खच्चैः

१०। गजैश्च ८ वेदैष दर्श १०भिश्च वाणैः ५ शीलै ७ भुजंगैः

८ खचरैः ९ शरै ६ श्व ॥ ३ ॥ शिवैः ११ पतंगैर्निहताः
पुरस्ताद्विलग्नाश्चेदभृगुभौमजीवाः । तदा तुरंगैः ७ करिभिः ८
खचंद्रै १० गुण्याः शरै ६ रन्यखगा यदि स्युः ॥ ४ ॥

मेषको आदि लेकर मीनपर्यंत प्रश्नकालकी लग्नकी कला करे अर्थात् जिस समय प्रश्नकर्ता प्रश्न करे उस समय जो लग्न जितनी गत हुई हो उसकी लिपापिंडी करे अर्थात् प्रश्नलग्नके गत अंशोंको साठ६० से गुण, फिर कलाओंको जोड़ दे इसको लिपापिंडी कहते हैं । उदाहरण—प्रश्न लग्न सिंह है उसको स्पष्ट करनेसे बारह १२ अंश, तेंतालीस ४३ कला, पचपन ५५ विकला हुई, इन बारह अंशोंको साठसे गुणा किया तो ७२० सात सौ बीस अंक हुआ, इसमें तेंतालीस ४३ कला और मिलाय दीं तो समग्र कलात्मक पिंड सात सौ त्रेसठ ७६३ अंक हुआ । इसको कलात्मक पिंड कहते हैं । अब लिपापिंड किये हुए अंकोंके गुणनेकी विधि कहते हैं, जो प्रश्नकालकी मेष लग्न हो तो कुल लिपापिंडी किया हुआ अंक सातसे फिर गुणना चाहिये और वृष हो तो दश १० से गुण, मिथुनको आठ ८ से, कर्कको चार ४ से, सिंहको दश १० से, कन्याको पांच से, ५ तुलाको सात ७ से, वृश्चिकको आठ ८ से, धनको नौ ९ से, मकरको पांच ५ से, कुम्भको ऋबारह ११ से और मीनको बारह १२ से गुणना चाहिये । उदाहरण—यहां प्रश्न लग्न सिंह ५ है उसका लिपापिंड किया हुआ अंक सात-सौ त्रेसठ ७६३ है तो इसको दश १० से गुणा करना चाहिये । अब दशसे गुणनेपर समग्र अंक सात हजार छः सौ तीस हुए ७६३० ॥

अथ राशिगुणकचक्रम् ।

मे.	व.	भि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशि.
७ १०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२		गुणक.

अब अह गुणनविधि कहते हैं । जो प्रश्नलग्नमें शुक्र स्थित हो तो उस लिपापिंड किया हुआ अंक राशिके अंकसे गुणा हुआ जो अंक है उसको

फिर सातसे गुणना चाहिये । लघ्में मंगल स्थित हो तो उस अंकको आठ ८ से गुणा करना चाहिये, प्रश्नलघ्में वृहस्पति स्थित हो तो उस लिप्तापिंडी किये हुए अंकको दश १० से गुणना चाहिये । अन्य ग्रह कोई अर्थात् सूर्य, चंद्रमा, बुध, शनैचर ये ग्रह लघ्में स्थित हों तो उस कलात्मक पिंड राशिके अंकोंसे गुणे हुएको पांचसे गुणना चाहिये ॥ ३ ॥ ४ ॥

अथ ग्रहगुणकचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	श.	ग्रह.
५	५	८	५	१०	७	५

गुणकांक ।

ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा तदीयैर्गणकैश्च गुण्याः ।

एवं कृते कर्मविधानयोगो राशिः पृथक्स्थः परिक्षरणीयः ॥५॥

जो प्रश्नलघ्में दो या तीन ग्रह अथवा बहुत ग्रह स्थित हों तो प्रत्येक ग्रहोंके गुणकांकोंसे पहिले गुणे हुए अंकको वारंवार गुण । उस गुणे हुए अंकको विशेष रक्षाकरके अलग किसी एकांतस्थानमें स्थापित करे ॥५॥ उदाहरण--यहां सिंह लघ्म है उसमें दो ग्रह वृहस्पति और चंद्रमा बैठे हैं तो इन दो ग्रहोंके गुणकांकोंसे इस लिप्तापिंडी किये हुए अंकको गुणते हैं सो देखो लिप्तापिंडी किया हुआ अंक दशसे गुणा हुआ समग्र अंक ७६३० सात हजार छः सौ तीस है, इनको पहिले वृहस्पतिके गुणकांक अर्थात् १० दशसे गुणा किया तो ७६३०० छियत्तर हजार तीन सौ हुए । अब इन अंकोंको चन्द्रमाके गुणकांकोंसे गुणा किया अर्थात् ५ पांचसे गुणा किया तो ३८१५०० तीन लाख इक्यासी हजार पांच सौ भये । अब इस गुणे हुए अंकको एकांतस्थापित करते हैं (३८१५००) ॥ ५ ॥

अथ नक्षत्रज्ञानमाह ।

प्रत्यक्स्थराशिमुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्ये द्वकाणे नवयुक्त द्वितीये
यथास्थितोऽयं नववर्जितोऽत्ये भसंज्यासो ह्यवशेषमृक्षम् ॥ ६ ॥

अब अलग स्थापित करी जो राशि है उसको फिर सातसे गुणे

और जो प्रश्नलघुमें प्रथम द्रेष्काणका उदय हो तो उसे सातसे गुणे हुए अंकमें नौ और जोड़ देना । जो दूसरे द्रेष्काणका उदय हो तो न कुछ जोड़े न कुछ घटावे । जो तीसरे द्रेष्काणका उदय हो तो नौ घटा देना चाहिये । फिर उस अंकमें २७ सन्ताईसका भाग दे जो लब्ध आवे उसको त्याग दे और शेष रहे उसको अश्विन्यादि नक्षत्र जन्मकालका जाने ।

उदाहरण—अलग धरी हुई राशि) ३८१५०० (

इसको सातसे गुणे ७) ३८१५०० (

तो इतने हुए) २६७०५०० (

अब यहां सिंह लघुके १२ बारह अंश गये हैं तो १० दशतक पहिले द्रेष्काण रहा और दस १० से बीसतक दूसरा द्रेष्काण रहा, तो यहां दूसरा द्रेष्काण है तो इसमें न कुछ मिलाना चाहिये न कुछ घटाना चाहिये तो उतना ही अंक रहा इसमें सन्ताईस २७ का भाग देना चाहिये शेष रहे सो जन्मनक्षत्र जानना ।

इसमें सन्ताईसका भाग दिया २७) २६७०५०० (

गुणा किया ९) २७ (ल. ९

) २४३ (हुए इन्हें घटाया

तो शेष) २४०५०० (रहे

भाग २७ ल. ८

गु. ८) २१६ (घटाया

तो शेष) २४५०० (रहे

गु. ९।२७ भा. ल. ९

) २४३ (घटाया

शेष) २०० (रहे

गु. ७।२७ भा. ल. ७

) १८९ (घटाया

शेष रहे ११ । म्यारह इनमें

भाग जाता नहीं तो जानना चाहिये कि प्रश्नकर्ताका जन्मनक्षत्र अश्विन्यादि गिननसे र्घारहवां पूर्वाफाल्गुनी हुआ ॥ ६ ॥

अथ वर्षज्ञानमाह ।

दशाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।

खाकैहते शेषमिताष्टसंख्या आयुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ॥ ७ ॥

जिस समय प्रश्नकर्ताने प्रश्न किया है उस समयकी जो लग्न है उसका लिप्तापिंडी किया हुआ जो अंक है उसको राशिके अंकोंसे गुणना, उस लग्नमें जो व्रह स्थित हो उनके अंकोंसे गुणनेके बाद दश १० से गुणे, फिर नौ घटाके या मिलाके वर्ष निकालना चाहिये, परंतु एक सौ बीसका १२० भाग दे जो शेष रहे सो प्रश्नकर्ताकी आयु गत जाननी चाहिये ।

उदाहरण—लिप्तापिंडी किया हुआ राशिके अंकोंसे व्रहके गुणकसे गुणा हुआ अंक नौ मिलाय घटाय यहां मध्य द्रेष्काण है इससे न कुछ मिलाया है, सौ अंक) ३८१५०० (इसको १० से गुणा तो

इतना हुआ) ३८१५००० (इसमें १२० भाग दिया

भाग १२० ल. २

घ. ३६०

शेष) २१५०० (

१२० भा. ल. १

श.) ९५००० (

१२० भा. ल. ७

८४०

श.) ११००० (

१२० भा. ल. ९

१०८०

श.) २०० (

१२० भा. ल. १

शेष) ८० (

(२००)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

यहां शेष ८० बचे तो प्रश्नकर्ताके गतवर्ष ८० हुए इक्यासीवां प्रवेश है अर्थात् उस शेषांकको वर्तमान संवत्सर में घटा देनेसे जन्मका संवत् निश्चय हो जायगा ॥ ७ ॥

लग्नस्य राशेगुणकेन गुण्याश्वेतसंभवो लग्नगतग्रहस्य ।

पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्याः प्रागुक्तवद्दं परिवेदितव्यम् ॥ ८ ॥

प्रश्नलग्नको राशिके गुणकांकसे गुणनेके बाद जो ग्रह प्रश्नलग्नमें स्थित हों फिर उनके गुणकांकसे गुणा करके पूर्वोक्त प्रकार उसमें नौ मिला घटाके उसको फिर दशसे गुणना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ क्रतुज्ञानमाह ।

षड्भिर्विभक्ते क्रतवो भवन्ति शेषांकतुल्या शिशिरादयः स्युः ।

द्विभाजिते शेषकमेकमध्रं पूर्वापरो तद्वतुजौ च मासौ ॥ ९ ॥

उसी कर्म विधान की हुई राशिको दशसे गुणकर सम्पूर्ण अंकोंमें छः का भाग देनेसे जो शेष बचे वह क्रतु जाननी चाहिये और उसीमें दोका भाग देनेसे एक बचे तो क्रतुका पहिला महीना और दो बचे अर्थात् शून्य शेष रहे तो प्रश्नकर्ताके जन्मका दूसरा मास जानना चाहिये ॥

उदाहरण ।

इससे गुणा राशिका अंक) ३८१५००० (

इसमें भाग ६ । ६ ल. ६

३६

शेष) २९५०००(ल. ३

६

१८

शेष) ३५०००(ल ३

६

३०

भाषाटीकासहितः—अ० १३. (२०१)

शेष) ५००० (ल. ८ अब यहां छः भाग देनेसे शेष २दो रहे तो

६ जानना चाहिये शिशिरक्रतु आदि

४८ लेकर दूसरी क्रतु वसंत हुई तो प्रश्नकर्ताके

शेष) २०० (प्रसवकालमें वसंत क्रतु हुई ।

) २०० (ल. ३

६

१८

शेष) २० (ल. ३

६

१८

शेष) २ (

अब वही जो दशसे गुणी राशि है अर्थात् जिसमें छःका भाग दिया है उसमें दोका भाग देनेसे क्रतुका मास सिद्ध होता है जो एक बचे तो क्रतुका पहिला महीना, शून्य बचे तो क्रतुका दूसरा मास जानना चाहिये ॥

उदाहरण ।

दशसे गुणी हुई राशि) ३८१५००० (ल. १

इसमें दोका भाग २ २

शेष) १८१५००० (ल. १

२

१८

शे.) १५००० (ल. ७

२

१४

शे.) १००० (ल. ५००

२

भागो नास्ति लब्धं शून्यम् ।

(२०२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

यहां भाग देनेसे शेष शून्य अर्थात् कुछ नहीं बचा तो जानना चाहिये कि प्रश्नकर्ताका जन्म वसंतऋतुके दूसरे महीने वैशाखका है ॥ ९ ॥

अथ पक्षज्ञानमाह ।

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।

द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रतुल्येऽस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्तः ॥ १० ॥

अब जो कर्म विधान की हुई राशि है उसको < आठसे गुणना चाहिये पहिलेकी तरह नौ मिलाय घटाके दोका भाग दे जो एक शेष रहे तो लक्षणपक्ष और शून्य बचे तो शुक्ल पक्ष जानना चाहिये ॥ १० ॥

उदाहरण ।

कर्म विधान करी राशिका अंक--

इसको आठ < गुणा करे <) ३८१५०० (

इतने हुए) ३०५२००० (ल. १

२

श.) १०५२००० (ल. ५

२

श.) ५२००० (ल. २

२

श.) १२००० (ल. ६

२ शेष) ०० (

यहां शेष शून्य बचा तो जानना कि प्रश्नकर्ताका जन्म शुक्लपक्षका है ॥

अथ तिथिज्ञानमाह ।

पञ्चेदुभक्ते सति शेषतुल्याः पक्षे च तस्मिन् तिथयो भवन्ति ।

नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणात् ॥ ११ ॥

अब जो आठसे गुणी हुई राशि है उसमें पंड्रह १५ का भाग देनेसे

जो शेष बचे उसको प्रश्नकर्ताके जन्मकी तिथि जाननी चाहिये और वारका ज्ञान इस तरहसे करना चाहिये यानी नक्षत्र तिथिके योगसे अथवा अहर्गणसे वार लाना चाहिये और नहीं तो गणितके द्वारा प्रश्नकर्ताका जो संवत्, मास, तिथि निर्णय कर चुके हैं उस संवत्के पंचाङ्गसे वार जानना चाहिये ॥

उदाहरण ।

आठसे गुणी हुई राशि)	<u>३०५२०००</u>	(इसमें १५ भाग दे ल. २
	१५	
	<u>३०</u>	
शे.)	<u>५२०००</u>	(ल. ३
	१५	
	<u>४५</u>	
शे.)	<u>७०००</u>	(ल. ४
	१५	
	<u>६०</u>	
शे.)	<u>१०००</u>	(ल. ५
	१५	
	<u>९०</u>	
शे.)	<u>१००</u>	(ल. ६
	१५	
	<u>९०</u>	
शे.)	<u>१०</u>	(

शेष १० दश बचे तो जानना चाहिये कि वैशाखके महीनेमें शुक्ल-क्षमें दशमी तिथिको प्रश्नकर्ताका जन्म है ॥ ११ ॥

अथ दिनरात्रिकालज्ञानमाह ।

सप्ताहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमध्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् १२ ॥

(२०४) ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अब जो कर्मविधान की हुई राशि है उसको पहिलेकी तरह नौ मिलाय घटाय सातसे गुणना चाहिये उसमें दोका भाग देना चाहिये, जो एक शेष रहे तो दिन और शून्य शेष रहे तो रात्रिका जन्म प्रभकर्ताको कहना उचित है ॥

उदाहरण ।

कर्म विधान की हुई राशि) ३८१५०० (

इसको सातसे गुणा किया ७) २६७०५०० (तो इतने हुए

भा. २ ल. १

शे.) ६७०५०० (ल. ३०

२

६०

शे.) ७०५०० (ल. ३

२

६

शे.) ९०५०० (ल. ५

२

१०

शे.) ५०० (ल. २

२

४

शे.) १०० (ल. ५

२

१०

शेष) ०० (

अब शेष शून्य रहा तो जानना चाहिये कि प्रभकर्ताका जन्म रात्रिके समयका है ॥ १२ ॥

अथ इष्टकालज्ञानमाह ।

पंचाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।

दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः१३॥

वह जो कर्मविधान की हुई राशि है उसको पांचसे गुणना चाहिये । उसमें पहिला द्रेष्काण हो तो नौ जोड़ना, मध्य द्रेष्काण हो तो न जोड़ना, न कुछ घटाना, तीसरा द्रेष्काण हो तो नौ घटाकर जो दिनको जन्म हो तो दिनमानका और जो रात्रिका जन्म हो तो रात्रिमानका भाग देनेपर जो शेष रहे उतनी ही घटी दिन अथवा रात्रिकी व्यतीत हुए पर जन्म कहना उचित है । फिर इसी इष्टकालसे लग्नसाधन करके पूर्वजातकके समान ग्रह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश कुण्डली बनाके शुभाशुभ फल कहना चाहिये । यथा—उदाहरण । कर्म विधान की हुई राशिके अंक (३८९५००) को पांचसे गुणना तो गुणा अंक (१९०७५००) इतना हुआ यहां मध्य द्रेष्काण है इससे न कुछ घटाया न मिलाया है । अब प्रश्नकर्ताका जन्मदिन वैशाख सुदि दशमी रात्रिके समयका ज्ञात हुआ तो रात्रिमानका भाग देना चाहिये । अब प्रश्नकालके समय दिनमान ३३घटीद्वय पलका है । तो इसको ६० साठमें घटा दिया २६ दंड ५४ पल शेष रहा सो रात्रिमान हुआ इस रात्रिमानको पांचसे गुणे हुए अंकमें भाग देना चाहिये ।

) १९०७५०० (ल. ७

भाव २६

१८२

शे.) ८७५०० (ल. ३

२६

७८

शे.) ९५०० (ल. ३.

२६

७८

शे.) १७०० (ल. ६

२६

१५६

शे.) १४० (ल. ५

२६

१३०

शे.) १० (

(२०६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अब यहां शेष दश रहे सो जानना चाहिये कि प्रभकर्ताका जन्मसमय दश १० दंड रात्रिगत हुएका है । अब पल निकालनेका उपाय लिखते हैं । वही जो पांचसे गुणी हुई राशिको साठसे ६० गुणना चाहिये उसमें पलोंका भाग देना चाहिये शेष रहे सो पल जानना चाहिये ।

उदाहरण ।

पांचसे गुणी राशि) ११०७५०० (इसको ६० गुणा
इसमें पल ५४ भाग दिया) ११४४५०००० (ल. २
५४

१०८

शे.) ६४५०००० (ल. १
५४

शे.) १०५०००० (ल. १
५४

शे.) ५१०००० (ल. १
५४

४८६

शे.) २४००० (ल. ४
५४

२१६

शे.) २४०० (ल. ४
५४

२१६

शे.) २४० (ल. ४
५४

२१६

शे.) २४ (

अब यहां शेष २४ चौर्वीस रहे जानना चाहिये कि २४ पल रहे तो समग्र नष्ट जन्मपत्र इसी प्रकारसे सब जगह जानो अर्थात् वैशाखसुदि दशमी समस्त दिन गत रात्रि घटश्चादि इष्ट १० पल २४ होते हैं ॥ १३ ॥

एवं पित्रादिकानां च नष्टजन्म वदेत् क्रमात् ।

कृतो वै श्यामलालेन तिलको भाषयान्वितः ॥ १४ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबिलदेवप्रसादात्मजरा-
जज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे
नष्टजातकवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इस प्रकार प्रश्नकर्ताके पिता, माता, भ्राता, स्त्री, पुत्र, मित्र, शत्रुका भी नष्टजन्मपत्र निश्चयकरके क्रमसे कहे । पंडित श्यामलाल ज्योतिषिकरके श्यामसुंदरी भाषाटीकासहित ज्योतिषश्यामसंग्रह किया गया ॥ १३ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबिलदेवप्रसादात्मजराज-
ज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां
नष्टजातकवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ गर्भाधानाध्यायप्रारंभः ।

अथ गर्भाधानऋतुयोगः ।

स्त्रीणां गतोऽनुपचयर्क्षमनुष्णरशिमः संहश्यते यदि धरात्-
नयेन तासाम् । गर्भग्रहात्तवमुशंति तदा सुवंध्याबृद्धातुरात्प-
वयसामपि नैतदिष्टम् ॥ १ ॥

मासमासमें स्त्रियोंके रजस्वला होनेका हेतु चंद्रमा और मंगल है जब चं-
द्रमा स्त्रियोंकी जन्मराशिसे प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम,
द्वादश राशियोंमें जाता है तब उनको गर्भधारण करने लायक ऋतु होता
है अर्थात् जब चंद्रमा उक्त स्थानोंमें स्थित हो और उसको मंगल देख तब

स्त्रियां रजस्वला होती हैं और उसी क्रतुसे गर्भ धारणके योग्य होती हैं परंतु ये योग वंध्या, वृद्ध, रोगिणी, बालस्त्रियोंको छोड़कर जानना चाहिये ॥ १ ॥

यथा—अनुपचयराशिसंस्थे कुमुदाकरवान्धवे रुधिरदृष्टे । प्रतिमासं युवती भवति रजोदर्शनम् । इन्दुर्जलं कुजो अग्निः जलाग्निप्रकोपेन पित्तोद्दवः । पित्तेन रजः प्रवर्त्तत उपचयभवनस्थे चन्द्रे रजोदर्शनं निष्फलं भवेत् ॥

अथ स्त्रीपुरुषसंयोगगर्भयोगः ।

बलान्वितावर्कसितौ स्वभांशे पुंसां सदा चोपचये भवेताम् ।

तथांगनानां शशिभूमिजौ वा तदा भवेद्भूमसमुद्भवश्च ॥ २ ॥

बलकरके सहित सूर्य, शुक्र अपने नवांशमें स्थित हो, पुरुषके उपचयस्थानमें हो तैसे ही स्त्रियोंके चंद्रमा, मंगल उपचयस्थानमें स्थित हो तो गर्भ होता है अर्थात् पुरुषकी जन्मराशिसे सूर्य उपचयस्थानमें स्थित हो उसको शुक्र देखता हो और स्त्रीकी जन्मराशिसे चंद्रमा उपचयमें स्थित हो, भौम देखता हो तो निश्चय गर्भ स्थित होता है ॥ २ ॥

स्त्रीणां विधौ चोपचये कुजेन दृष्टेऽपि गर्भग्रहणेऽपि योग्या ।

पुंसां तथा गीष्पतिना प्रदृष्टे स्त्रीपुंसयोर्योगमतोऽन्यथा च ॥ ३ ॥

स्त्रियोंके चंद्रमा उपचय अर्थात् तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें स्थानमें स्थित हो और उस चंद्रमाको मंगल देखता हो तो स्त्री गर्भग्रहणके योग्य होती है और पुरुषके उपचयस्थानमें चंद्रमा स्थित हो और वह बृहस्पतिकरके दृष्ट हो तो स्त्रीपुरुषका संयोग प्राप्त होता है अन्य प्रकारसे यह संयोग नहीं होता ॥ ३ ॥

यथा—उपचयभवने शशभृद् गुरुणा दृष्टे अथवा सुहंद्रिदृष्टे तदा पुंसां करोति योगं विशेषतः शुक्रसंदृष्टः चन्द्रो कुजेन दृष्टे पुष्पवती सह संयोगो भवति तत्र सौम्ये चपलमतिना भृगुणा कान्तेन रूपान्विता राजपुरुषेण रविणा रविजेनाप्नोति भृत्येन अन्ये कुजादिभिः पापैः सर्वे स्वगृहं गत्वा गच्छन्ति वेश्या युवतिः उपचयभवने शशभृद् दृष्टस्त्रोपचयभवने पुरुषस्त्वैव । तथा च बादरायणः । पुरुषोपचयगृहस्थो गुरुणा यदि दृश्यते स्त्रीपुरुषसंयोगं तदा वदेदन्यथा नैवमिति । अयं विचारश्चतुर्थदिने । मणित्यः । ऋतुविरसे स्त्रातायां यद्युपचयसंस्थितः शशी भवति । बलिना गुरुणा दृष्टे

मंत्रिसहस्रमश्च तदा । ननु पूर्वोक्तसारावलीये गुरुशुक्लष्टे चंद्रे स्वपुरुषयोगोऽन्यद्वष्टे
गजपुरुषादिभिः पुष्पवतीसंयोग उक्तोऽस्ति । तत्र साध्वीनां परपुरुषयोगाभावा-
त्कथं योगो घटते तत्र राजपुरुषादिचेष्टास्वरूपादियुतेन स्वपुरुषेणैव योगो वाच्यो ननु
परपुरुषेण । वेश्यापदं चात्र निर्लज्जत्वं ज्ञातव्यम् ।

अथ मैथुनप्रकारमाह ।

निषेकेऽस्तराशिर्यथा मैथुने च तथा तत्समः पुरुषो मैथुने स्यात् ।
असत्खेचरैः संयुते वीक्षतेऽस्ते सरोषः शुभैर्हास्ययुक्सद्विलासः४॥

गर्भाधानकालका लग्न वा जन्मलग्न अथवा प्रश्नकालके लग्नसे सातवें
स्थानमें जो राशि हो वह जीव जैसे मैथुन करता है उसी प्रकार कुंडली
वालेके मावापका मैथुन कहना चाहिये और जो उस सातवें स्थानमें
पापग्रहोंका योग हो या पापग्रहोंकरके दृष्ट हो तो मातापिताका मैथुन
क्रोध वा झगड़ा वा जबरदस्तीके साथ मैथुन कहना चाहिये और जो शुभ
ग्रहोंकरके दृष्ट वा युत सप्तम स्थान हो तो सुखपूर्वक हास्य विलासके साथ
मैथुन कहना चाहिये और जो शुभग्रह पापग्रह दोनों समान देखते हों अथवा
दोनों नहीं देखते हों; न युत हों तो समभावकरके मैथुन कहना चाहिये ।
अथवा पापग्रह जादे देखते हों वा युत हों और शुभग्रह कमती देखते हो
वा कम युत हों तो ऊपर खुशी भीतर क्रोधसे मैथुन हुआ है और शुभग्रह
जादे देखते हों वा युत हों और पापग्रह अल्प युत हों वा कम देखते हो
तो भीतर आनंद बाहिरमें क्रोध करके मैथुन कहना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ ऋतुोरनंतरं संयोगदिनानि ।

स्त्रीणां ऋतुःषोडशकं निशानां तासां त्यजेत्सप्तकमन्त्र पूर्वम् ।

समे नरणां विषमेऽगनानां गर्भा भवेयुः पुरुषस्य योगात् ॥ ५ ॥

स्त्रियोंके ऋतुकालके बाद सोलह रात्रिके भीतर उस ऋतुके दिनसे
सात दिनपर्यंत स्त्रीके साथ संयोग नहीं करना चाहिये फिर सात दिनके पीछे
नौ दिनतक बुद्धिमान् पुरुष शुभमुहूर्तमें स्त्रीसे गमन करे । सम दिनोंमें अर्थात्
आठ, दश, बारह, चौदह इन षोडश दिनोंमें जो गर्भ पुरुषके योगसे स्थित

होगा वह गर्भ पुत्रदायक होता है । विषम दिन अर्थात् नौ, ग्यारह, तेरह, पंद्रह इन दिनोंमें स्थित हुआ गर्भ कन्याकी प्रजाको करता है ॥ ५ ॥

अथ गर्भसंभवयोगः ।

शनैश्चरक्ष्मासुतशुक्रसूर्यैर्निजांशैश्चोपचयस्थितैश्च ।

त्रिकोणलग्नोपनते सुरेज्ये वीर्यान्विते गर्भसमुद्भवः स्यात् ॥ ६ ॥

शनैश्चर, मंगल, शुक्र, सूर्य किसी राशिमें अपने नवांशमें स्थित हों तो गर्भधानमें संतानकी योग्यता प्राप्त होती है । कदाचित् पूर्वोक्त यह अपने नवांशमें स्थित न हों तो पुरुषकी जन्मराशिसे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें राशिमें स्थित शुक्र, सूर्य ये अपने ही नवांशमें स्थित हों और श्वीके जन्म—राशिसे तीसरे, छठे, दशवें ग्यारहव राशिमें स्थित शनैश्चर मंगल अथवा चंद्रमा, मंगल अपने ही नवांशमें स्थित हों तो निश्चय संतानकी योग्यता होती है । अथवा बृहस्पति नवें, पांचवें, लग्नमें स्थित हो तो भी गर्भग्रहण होता है । परंतु ये योग होते भी हिजराक निष्फल हो जाते हैं । जैसे चंद्रमाकी किरण अंधे मनुष्योंको निष्फल होती है ॥ ६ ॥

यथा—शुक्रजातके । सूर्यशुक्रौ स्वांशकस्थौ पुरुषोपचयक्षणौ । श्वीणां कुजाद् वीर्याद्वौ स्वांशोपचयसंस्थितौ ॥ गर्भप्रदौ पञ्चमे च निर्बलकूरसंयुते । सुतेशोऽस्तं गते नीचे न गर्भः ॥ यथा—शुक्रार्कभौमशानिभिः स्वांशोपचयस्थितैः सुरेज्ये वाथ धर्मेऽथवात्मजे लग्नगे सति गर्भसम्भवो भवति । अयं योगो निषेककाले ज्ञेयः । उक्तं च सूर्यजातके—यदुकौश्चन्द्रशुक्ररौः स्वांशोपचयसंस्थितैः । आधानलग्ने गर्भस्य सम्भवो भवति ध्वम् ।

तथाच गर्भपुष्टियोगः ।

वीर्यान्विते लग्नगते सुरेज्ये त्रिकोणसंस्थे यदि वात्र योगः ।

स्युर्निष्फलास्ते हतवीर्यकाणां वीणेव शब्दः श्रववर्जितस्य ॥ ७ ॥

बलकरके सहित बृहस्पति लग्न, नवम, पंचम भावमें गर्भधानकालमें स्थित हो तो ऐसे योगमें श्वीयोंके निश्चय गर्भ स्थित रहता है परंतु श्वी वंध्या, बाल, वृद्धा, रोगिणी न हो और पुरुष हतवीर्य अर्थात् नपुसक अथवा जिनको वीर्यविकार है ऐसे पुरुषोंके संयोगसे गर्भ नहीं स्थित

होता है। जिस तरह बधिर पुरुषको वीणाशब्द नहीं सुनाई पड़ता और अधेको चंद्रमाकी चांदनी नहीं दीख पड़ती तैसे ही वीर्यहीन पुरुषसे गर्भ नहीं स्थित रहता है ॥ ७ ॥

यथा—भगवान् गर्ग आह । लग्नस्थो वा सुतस्थो वा धर्मस्थो वा बली गुरुः । प्रोक्तक्षेत्रे शुभदारे च धारयेद्भर्मुत्तमम् ॥ अन्येषि निषेकलग्नाद्योगानाहुः—पुंश्रहाः षष्ठ्य-लाभस्थाः पञ्चमेशो यदा बली । अन्ये विषमराशिस्था गर्भयोगा इमे स्मृताः ॥ लग्नात्मजेशौ संयुक्तावन्योन्यं वाभिवीक्षितौ । परस्परक्षेत्रगौ वा गर्भयोगा इमे स्मृताः ॥ ओजराइयंशगे चन्द्रे लग्नपुंश्रहवीक्षिते । स्वर्वगगाश्चंद्रतीव्रभौमाः स्युर्योगकारकाः ॥ तथाच शुक्राचार्यः—लग्नाधिष्ठे सुतस्थाने दारास्थानगतेऽपि वा । सुतजायाधिष्ठौ लग्ने तदा स्याद्भर्मसम्भवः ॥

अथ गर्गस्य मातापित्रादिशुभाशुभम् ।

यथा नूनार्यो हि मनःस्वभावो रत्नौ तथा गर्भगतोऽत्र जंतुः ।

द्यूने रवींदकुजौ तु पुंसो रोगप्रदौ शीतरुचेः स्त्रियाश्च ॥ ८ ॥

जैसे पुरुष—स्त्रीके मनका स्वभाव मैथुनके समय हो उसी प्रकारका जीव गर्भमें प्राप्त होता है। गर्भाधानकालमें जिस स्थानमें सूर्य स्थित हो उस स्थानसे शनैश्चर, मंगल सप्तम स्थानमें स्थित हो तो पुरुष उनके महीनेमें रोगी होता है और चंद्रमासे सातवें स्थानमें शनैश्चर अथवा मंगल स्थित हों तो उनके महीनेमें स्त्रीको रोग होता है वा शनैश्चर, मंगलसे सूर्य दृष्ट या युत हो तो भी पूर्वोक्त फल करता है ॥ ८ ॥

यथा—निषेककाले सूर्यस्य सप्तमस्थौ कुर्जार्कजौ । पुंसो रोगप्रदौ वार्कः पूर्णदृष्ट्या च वीक्षितः ॥ मध्यो मन्दाख्योरेकतरेणार्कजौ संयुतः पुंसाम् । मृत्युप्रदश्चंद्रः सूर्य-वत्स्त्रीणां मृत्युदः ॥ योगकारकयोर्वीर्यात्तन्मासे मृत्युमादिशेत् । तथाच सूर्यजातके—विवीतिनामिमे योगा न विचार्याः कदाचनेति । विशेषो मीनराजजातके—मन्दारयोः सप्तमराशिसंस्थयोर्यदा निषेको मरणं तदा पितुः । रवेः शशांकालयतज्जनन्या राकेन रोगाः पुरुषप्रवादाः ॥

सूर्ये यमारात्तगते तु पुंसः स्त्रियास्तथेदौ मृतिदौ तयोः स्तः ।

मंदेन वारेण दिवाकरेद्दू युक्तौ च दृष्टौ निधनं तयोर्वा ॥ ९ ॥

सूर्यसे शनैश्चर, मंगल बारहवें स्थित हों इन दोनोंमें जो बली हो वह अपने महीनेमें पुरुषको मारनेवाला होता है और तैसे ही चंद्रमासे शनै-

श्र, मंगल बारहवें स्थित हों इन दोनोंमें जो बली हो तो अपने महीनेमें स्त्रीको मृत्यु देता है । शनैश्चर अथवा मंगल करके सूर्य, चंद्रमा दोनों युत हों वा दृष्ट हों तो स्त्री पुरुष दोनोंकी मृत्युको करते हैं ॥ ९ ॥

यथा—यदा हिमांशुर्व्ययतो दिवाकरश्चिद्रं गतो भूतभवश्चतुर्थः । मृत्युस्तदा सम्बवते युवाभ्यां शख्स्त्रेण शौरेण तु बन्धनेन ॥ मृत्युकरः शीतकरश्च रिःके सुखस्थिते सूर्यसुतः सभौमः । न गर्भसम्भूतिरिह प्रदिष्ठा योगैः स्वसौम्यैः प्रवदन्ति कृच्छ्रात् ॥

अथ स्त्रीणां वन्ध्यत्वयोगः ।

स्वर्क्षस्थितौ रंगतौ यमाकौ प्रष्टुः स्त्रियं संदिशतश्च वंध्या ।

छिद्रस्थितौ चंद्रबुधौ सदोषा वा काकवंध्या वदतोऽगना वै ॥ १० ॥

अपनी राशिके होकर अष्टम स्थानमें शनैश्चर, सूर्य स्थित हों तो प्रश्नकर्ताकी स्त्रीको वंध्या कहना चाहिये और अष्टमस्थानमें चंद्रमा, बुध निर्बल स्थित हों तो उस मनुष्यकी स्त्रीको काकवंध्या कहना चाहिये ॥ १० ॥

अथ स्त्रीणां मृतप्रजायोगः ।

मृतप्रजा छिद्रगतौ सितेज्यौ गर्भस्त्रवा भूमिसुतेष्टमस्थे ।

छिद्रेश्वरे छिद्रगते बलान्विते पुष्टपं न विंदत्यथवा सुगर्भदम् ॥ ११ ॥

जो प्रश्नकर्ताकी जन्मलघ अथवा प्रश्नलघसे अष्टमस्थानमें शुक्र, बृहस्पति स्थित हों तो उसकी स्त्री मृतप्रजा अर्थात् उसके संतान उत्पन्न होकर मर जाती हैं और जो मंगल अष्टमस्थानमें स्थित हो तो उसकी स्त्री गर्भस्त्रवा अर्थात् उसके गर्भ स्थित होकर पतित हो जाते हैं और जो अष्टमेश अष्टम स्थित हो तो उसकी स्त्री गर्भको ही धारण नहीं करती है ॥ ११ ॥

अथ स्त्रीणां रजोवर्णमाह ।

सूर्येऽत्र कपिलं पुष्टपं चंद्रे श्वेतं कुजेऽरुणम् । बुधे विच्चित्रवर्णाभं गुरौ मंजिष्ठवर्णभम् ॥ १२ ॥ सिते श्वेतं शनौ कृष्णं राहौ जल-समं वदेत् ॥ शून्येऽष्टमे स्वभावस्थं मार्गे याति खलग्रहैः ॥ १३ ॥

जिन स्त्रियोंके जन्मकाल अथवा प्रश्नकालमें सूर्य अष्टम स्थित हो तो उन स्त्रियोंका वीर्य कपिल रंगका अर्थात् बंदरके रंगके सदृश होता

है, चंद्रमा करके सफेदवर्ण, मंगलकरके गुलाबी रंग, बुधकरके विचित्रवर्ण, बृहस्पतिकरके मंजिष्ठ वर्णका वीर्य जानना ॥ १२ ॥ शुक्रकरके श्वेतवर्ण, शनैश्चरकरके श्याम वर्ण, राहुकरके जलके समान ख्रियोंका वीर्य कहना चाहिये और जो अष्टमस्थानमें कोई व्रह नहीं हों तो स्वभावस्थवीर्यका वर्ण कहना उचित है और उसी अष्टमस्थानमें पापव्रह स्थित हो तो ख्रियोंका वीर्य गिरता हुआ कहना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ स्त्रीणां वीर्यशीतोष्णमाह ।

पुष्पमेति तदुष्णं तु भौमाकौ शीतलं परैः ।

कटीवातं वदेद्राहौ पीडाकरमहर्निशम् ॥ १४ ॥

ख्रियोंका वीर्य मंगल, सूर्य करके अति उष्ण कहना चाहिये । चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर ये अष्टम स्थित हों तो शीतल वीर्य कहना और जो राहु अष्टम स्थानमें स्थित हो तो कमरमें वातरोग रातदिन पीडा करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ गर्भान्मातापित्रादिशुभाशुभज्ञानम् ।

दिनेऽर्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञौ नक्तं शनीदू सहजेऽन्यथा तत् ।

पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौ च तयोः शुभावोजसमर्क्षगौ तौ ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यका दिनमें गर्भ रहे तो उस जीवका सूर्य पिता होता है और शुक्र माता होती है और रात्रिमें गर्भ रहे तो शनैश्चर पिता संज्ञक और चंद्रमा माता संज्ञक होता है और दिनमें गर्भस्थित हो तो शनैश्चर पितृव्य अर्थात् पिताका भाई और चंद्रमा मातृष्वसृसंज्ञक अर्थात् मौसी होता और रात्रिमें सूर्य पितृव्यसंज्ञक और शुक्र मातृष्वसृसंज्ञक होता है । इसका प्रयोजन यह है कि गर्भाधानकालमें पूर्वोक्त व्रह विष्मराशि, सम राशियोंमें स्थित होकर पिता पितृव्य माता मातृष्वसृ इनके वास्ते शुभ फलके देनेवाले होते हैं । जिस जीवका गर्भाधान दिनमें हो और मेष, मिथुन, सिंह, तुला,

धन, कुम्भ इन विषम राशियोंमें सूर्य कहीं स्थित हो तो पिताके वास्ते शुभ फलका देनेवाला होता है और रात्रिमें पिताके भाईको शुभकारी होता है और जो गर्भाधान दिनमें हो और शुक्र समराशियोंमें अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीनमें स्थित हो तो माताको शुभकारी होता है । तैसे ही रात्रिमें मौसीको शुभ फल देनेवाला होता है । तैसे ही रात्रिमें गर्भाधान हो और विषमराशियोंमेंसे किसी एक राशियोंमें स्थित शनैश्चर पिताके लिये श्रेष्ठ फलका देनेवाला होता है और दिनमें पिताके भाईको शुभफल देता है और रात्रिमें समराशियोंमेंसे किसी राशियोंमें स्थित चन्द्रमा माताके लिये शुभ देता है और दिनमें मौसीको शुभदायक होता है और पहिले कहे अनुसार उलटा हो तो अशुभ फलको देते हैं । जैसे दिनमें गर्भाधान हो और सूर्य समराशियोंमें स्थित हो तो पिताके वास्ते नेष्ट फलका देनेवाला होता है और रात्रिके समय सम राशियोंमें स्थित सूर्य पिताके भाईको नेष्ट फलका देनेवाला होता है और दिनमें गर्भ हो और शुक्र विषम राशियोंमें स्थित हो तो माताके लिये अशुभ फल देता है और रात्रिमें मौसीको अशुभ होता है और रात्रिमें गर्भाधान हो और सम राशियोंमें शनैश्चर स्थित हो तो पिताको अशुभफलदायक होता है और दिनमें पितृव्यको अशुभ फल देता है और जिसका रात्रिमें गर्भाधान हुआ हो और विषम राशियोंमें चन्द्रमा स्थित हो तो माताको अशुभ फल देनेवाला होता है और दिनमें मौसीको अशुभ फल देता है ॥ १५ ॥

तथाच कल्याणवर्मा—दिवसेति मातापितरौ शुक्ररवी शशिशनी निशार्थी च । मातृभगिनीपितृव्यौ विपर्ययात्कीर्तितौ यवनवृद्धैः ॥ दिवसे निषिक्तस्य जातस्य वेति शेषः । एवं निशायामित्यत्रापि । लग्नाद्विमर्क्षगतः पितुः पितृव्यस्य खेचरः शस्तः मातृभगिनीजनन्योः । समगृहगौ अन्योन्यता तेषु अन्यान्योक्तवैपरीत्ये तेषु मातृपि-त्रादिषु अन्यः विपरीतफलः अशस्त इत्यर्थः । होरामकरंदे—आदौ द्विरात्र्योः पितृमा-त्रुखेटौ फलं तु पूर्ण ददतुः स्वकीयम् । अंते तयोस्तु धमतीव मध्ये पापं शुभं वा परिकल्पनीयः ॥ तथाच वाराहः—दिवार्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञकौ शनैश्चरेद्दू निशि तद्विपर्ययात् । पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौ तु तावथौजयुग्मर्क्षगतौ तयोः शुभौ ॥

अथ गर्भिणीमरणयोगः ।

कूरांतस्थौ लग्नचंद्रौ निषेके क्रौरैः खेटैः संयुतौ वाऽथ दृष्टौ ।

सौम्यैश्वेत्तौ वीक्षितौ नैव युक्तौ नारी गर्भेणान्विता मृत्युमेति॥१६॥

जिस मनुष्यके गर्भाधानकालमें लग्न और चंद्रमासे बारहवें पापग्रह बैठे हों और लग्न चंद्रमा पापग्रहों करके युत वा दृष्ट हो, शुभग्रहों करके लग्न और चंद्रमा युत और दृष्ट न हो तो वह स्त्री गर्भकरके सहित मृत्युको प्राप्त होती है ॥ १६ ॥

अथ गर्भिणीमरणयोगत्रयम् ।

चंद्रात्तनोर्वा यदि पापखेटैर्द्युस्थितैर्भूमिसुतेऽष्टमस्थे ।

यदा कुजाकौं व्ययबंधुसंस्थौ क्षीणे निशीशे मृतिरुक्तवत्स्यात् ॥१७॥

चंद्रमासे चतुर्थ स्थानमें पापग्रह और अष्टम स्थानमें मंगल स्थित हो (एको योगः) अथवा लग्नसे चौथे स्थानमें पापग्रह और अष्टम स्थानमें मंगल स्थित हो (द्वितीयो योगः) अथवा लग्नसे बारहवें मंगल और चौथे सूर्य स्थित हो, क्षीण चंद्रमा कहीं बैठा हो तो इन तीन योगोंमेंसे किसी योगके होनेसे गर्भवती मरणको प्राप्त होती है ॥ १७ ॥

शुक्रो यदा मंदयुतोथ दृष्टशंद्रात्सुतस्थः स तु मातृहंता ।

सपापकः कर्मगतोऽथवा चेदिवाकरो मातुरनिष्टदः स्यात् ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र, शनैश्चरकरके युत वा दृष्ट हो और चंद्रमासे पंचम स्थित हो तो वह गर्भ गर्भिणीको मृत्यु देता है और जो पापग्रहसहित सूर्य, चंद्रमासे दशम स्थानमें स्थित हो तो भी माताको नेष्ट फल देता है ॥ १८ ॥

क्षीणे विधौ पापयुते च मृत्युस्तदन्यथाकैं जनकस्य नूनम् ।

आधिर्भवेत्पापनिरीक्षिती द्वौ मिश्रैर्विमिश्रं शुभदैः शुभं स्यात् ॥१९॥

क्षीण चंद्रमा पापग्रहोंकरके युत हो तो भी गर्भिणीको मृत्यु देता है और जो सूर्य पापग्रहसहित हो तो पिताकी मृत्यु करता है और जो सूर्य

(२१६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

चंद्रमा दोनों पापग्रहोंकरके दृष्ट हों तो रोगको देते हैं और जो सूर्य, चंद्रमाको पापग्रह और शुभग्रह दोनों देखते हों तो शुभ अशुभ मिश्रित फल कहना उचित है ॥ १९ ॥

यथा—क्लीरान्तस्थः सूर्यश्चन्द्रो वा युगपदेव मरणमसौम्यैरदृष्टयुवतीनां गर्भसहितानाम् अत्र लघेदू पापांतस्थौ ज्ञेयाविति च वराहः । तद्यथा-पापदृश्यमध्यसंस्थितौ लघेदून च सौम्यवीक्षितौ । युगपत्पृथगेव वा वदेन्नारी गर्भयुता विषयते ॥ उदयं यतैः पापैः सौम्यैरनिरीक्षितैर्मरणस्थैः । अत्र द्वादशगैः कूर्योगमाह गर्गः-अशुभैद्वादशक्षस्थैः शुभदृष्टिविवर्जितैः । आधानलग्नं मरणं योषितः प्रवदेद्बुधः ॥ सारावलीपद्मे मूलं मृग्यम् वराहेणापि अभिलष्टद्विद्वयक्षमसद्वित्यनेन द्वादश कूर्यहा उक्ताः । उदयस्थितेऽकें द्वे वा क्षीणेदौ भौमसंदृष्टौ । व्ययगोऽकें शशिनि कृशे पाताले लोहिते सगर्भौ च ॥ क्षी मियतेऽस्मिन्नथवा शुके पापदृश्यांतस्थे । चन्द्रे चतुर्थे कूर्लग्नगतैर्वा विषयते गर्भः ॥ होराष्ट्रे क्षितिजे मियते गर्भः सह जनन्या च । वराहेणायं योगोऽन्यथोक्तः कूरः शशिनश्चतुर्थगैर्लग्नादा निधनमाश्रिते कुजे । अथ निधनमाश्रिते कुजे चन्द्रालग्नाच्च योगदृश्य ज्ञेयम् । हिबुकस्थिते धरणिसुते रिःफगतेऽकें क्षपाकरे क्षीणे । गर्भेण समं मियते पापग्रहदर्शने प्राप्ते ॥ लग्ने रविसंयुते क्षीणेदौ वा कुजेऽथ वा मियते । व्ययभवनस्थैः पापैस्तथैव ॥

अथ शस्त्रेण गर्भिणीमरणयोगः ।

सप्तमस्थे दिवानाथे लग्नस्थे धरणीसुते ।

शस्त्राप्रहरान्निधनं ज्ञायते नात्र संशयः ॥ २० ॥

जिस जीवके गर्भाधानलग्नमें सप्तम सूर्य स्थित हो और लग्नमें मंगल स्थित हो तो वह गर्भिणी शस्त्रप्रहारकरके मृत्युको प्राप्त होती है इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ २० ॥

यथा—यामित्रगे दृष्टे लग्नगते कुजे निषिक्तस्य गर्भस्य भवति मरणं शस्त्रच्छैदेः सह जनन्या बलिभिर्बुधगुरुशुक्रैर्दृष्टेऽकें न च शस्त्रप्रहारेण मृत्युः । किन्तु गर्भः पुष्टे भवति इत्यर्थः ॥

अथ आधानान्मासक्रममाह ।

कललं च घनं शास्त्रास्थित्वं ग्रोमोद्रमः स्मृतिः ।

भुक्तिरुद्देशं सम्भूतिर्मासेष्वाधानतः क्रमात् ॥ २१ ॥

पहिले महीनेमें कलल अर्थात् रुधिर और वीर्य मिलकर रक्तरूप रहता है, दूसरे महीनेमें वीर्य और खून दोनों मिलकर कर्ण पड़ता है उसको घन कहते हैं, तीसरे महीनेमें हाथ परके चिह्न होते हैं इनको शाखा कहते हैं, चौथे महीनेमें गर्भगत प्राणीके हड्डियां उत्पन्न होती हैं इनको अस्थि कहते हैं, पांचवें महीनेमें त्वक् अर्थात् खाल पैदा होती है, छठे महीनेमें रोग उत्पन्न होते हैं, सातवें महीनेमें स्मृति याने चेतनता होती है, आठवें महीनेमें भुक्ति अर्थात् अशन करता है, जो गर्भवती अन्न जल खाती है उसका रस नालके द्वारा बालक पाता है, नवमें महीनेमें उद्वेग अर्थात् घबराता है और दशमें महीनेमें उसका प्रसव अर्थात् जन्म होता है ॥ २१ ॥

आद्यमासे तु कललं द्वितीये शिवसंमुखः । तथा तृतीयेऽपि भवन्ति शाखा अस्थी-
न्यथ स्नायुशिराश्चतुर्थे ॥ तथा चर्माण्णपि पञ्चमे च पष्ठे त्वस्त्रोमनखाः शकृच्च ।
चेतस्विता सप्तममासि चेतस्तृणाशनास्वादनमष्टमे स्यात् ॥ स्पर्शोऽथ गन्धो नवमे
मतिश्च स्त्रोतोभिवातीव च पूर्णदेहो गर्भोऽथ मासे दशमे प्रसूते ।

अथ गर्भमासेशज्ञानम् ।

शुक्रारजीवार्कशशीयमज्ञा लग्नेशशीतांशुदिवाकराः स्युः ।

मासेश्वरास्तैः कलुषैः प्रपीडा पातो हतैवीर्ययुतैश्च पुष्टिः ॥२२॥

शुक्र, मंगल, बृहस्पति, सूर्य, चंद्रमा, शनैश्चर, बुध, लग्नेश, चंद्रमा सूर्य ये क्रमकरके पहिले महीनेस लेकर दशवें महीनेतकके स्वामी होते हैं अर्थात् पहिले महीनेका स्वामी शुक्र, दूसरेका मंगल, तीसरेका बृहस्पति चौथेका सूर्य, पंचमका चंद्रमा, छठेका शनैश्चर, सातवेंका बुध, आठवेंका लग्नेश, नवमका चंद्रमा, दशमका सूर्य स्वामी है। मासेशके सदृश अच्छा बुरा फल गर्भवतीको होता है अर्थात् जिस महीनेका स्वामी पापी हीनबल हो अथवा मासेश किसी अहके साथ युद्धमें हारा हो वा उल्कापातसे मारा गया हो तो उसी महीनेमें गर्भपात होता है और हर एक महीनेका स्वामी बली हो, युद्धमें हारा न हो तो वह गर्भ पुष्ट होता है ये योग प्रश्नलग्नसे वा गर्भाधानलग्नसे जानना चाहिये ॥ २२ ॥

कुजास्फुजिज्जीवरवीन्दुसौरशशांकलयेदुदिवाकराणाम् । मासाधिपानां प्रभवो न
चैषां जयोऽथ यातैर्गृहे एव नूनम् ॥ मासलक्षणयुतो गर्भः शुभः इत्युक्तं शुकजातके ।
मासलक्षणसंयुक्तो गर्भः सुखमवाप्नुयात् । अबाधिकगुणो गर्भः सर्वदा सुखमाप्नु-
यात् । तथाच वसिष्ठः । सितावनेयामरपूज्यसूर्यचन्द्रार्किसौम्योदयपेन्दुसूर्याः ॥ मास-
धिपाः स्युः क्रमशो दशैते विपीडितो नाशयति स्थमासे ।

अथ गर्भपुष्टियोगः ।

वीर्यादिच्यः स्यान्मासपः स्वोच्चगो वा वृद्धिर्गर्भस्यैव चेन्निम्रवीर्यः ।
अस्तं यातो नीचगः पापयुक्तस्तत्तन्मासे जायते गर्भपातः ॥ २३ ॥

बलकरके सहित महीनेका स्वामी हो अथवा उच्चका हो तो उस गर्भकी
वृद्धि कहनी चाहिये अथवा चंद्रमा जिस स्थानमें उस भावमें या लघ्में
वा लघ्म चंद्रमा दोनोंमें या चंद्रमा वा लघ्मसे अथवा दोनोंसे पंचम नवम स-
सम द्वितीय चतुर्थ दशमे शुभ ग्रह स्थित हों और तृतीय एकादश पापग्रह
स्थित हों और लघ्म व चंद्रमाको सूर्य देखता हो तो गर्भ पुष्ट कहना चाहिये ॥

अथ गर्भपातयोगः ।

और गर्भाधानलघ्मका स्वामी अस्तंगत हो अथवा नीचका हो वा
पापग्रहयुक्त हो अथवा हतवीर्य हो अर्थात् आधानलघ्ममें जो ग्रह युद्धमें
निपीडित व केतुसंयुक्त अभिधूमित वा राहुसंयुक्त होनेसे सूर्य चंद्र निपी-
डित हों तो पूर्वोक्त ग्रह अपने मासमें गर्भपात करते हैं ॥ २३ ॥

यमारौ लघ्मगौ स्त्रीणां गर्भस्नावस्तथाविधौ ॥

तद्देवृष्टे तद्यूते वा गर्भपातः प्रजायते ॥ २४ ॥

शनैश्चर मंगल गर्भाधानकालिक लग्नमें स्थित हो तो अपने मासमें
गर्भस्नाव करते हैं तिस प्रकार शनैश्चर मंगलकी लघ्म आधानकालकी हो उस
को शनैश्चर मंगल देखते हों तो भी अपने मासमें गर्भस्नाव करते हैं ॥ २४ ॥

अथ वामनयोगः ।

सूर्येदुमन्दैर्मकरांत्यलग्ने दृष्टे भवेद्रामनकः सपापे ।
धीर्घर्मलग्नोपगतैर्दकाणैर्भुजां विशीर्षेश्च विवर्जितः स्यात् ॥ २५ ॥

जिस स्त्रीके गर्भाधानकालमें मकरलग्नके अंत्य नवांशमें उदय अर्थात् उत्पन्न हो और सूर्य चंद्रमा शनैश्चर करके दृष्ट हो तो गर्भस्थ बालक बौना कहना चाहिये ॥

अथ भुजहीनयोगः ।

और गर्भाधानकालमें लघ्नसे पंचम राशिमें जो द्रेष्काण हो उसको सूर्य चंद्रमा शनैश्चर देखते हों, उसमें मंगल स्थित हो तो गर्भस्थ भुजाहीन होना चाहिये ॥

अर्थांश्रिहीनयोगः ।

गर्भलघ्न वा प्रश्वलघ्नसे नवम राशिमें जो द्रेष्काण हो उसको सूर्य चंद्रमा शनि देखते हों उसमें मंगल स्थित हो तो गर्भस्थ चरणहीन होता है ॥

अथ शिरोविहीनयोगः ।

और आधानकालमें लघ्नगत जो द्रेष्काण हो उसको सूर्य चंद्रमा शनैश्चर देखते हों उसमें मंगल स्थित हो तो गर्भस्थ शिरहीन होता है । कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि तीनों बातें लघ्नके ही द्रेष्काणसे विचारना चाहिये यथा लघ्नम प्रथम द्रेष्काण शिरविहीन, उसकी लघ्नमें द्वितीय द्रेष्काण पंचम राशिका होता है, उससे हाथविहीन, उसी लघ्नमें तृतीय द्रेष्काण नवम राशिका होता है उससे पादविहीन जानो, परंतु ये किसी आचार्यका मत है इससे अप्रमाण है ॥ २५ ॥

तथाच—गार्गिः । लघ्नद्रेष्काणगो भौमः शौरिसूर्येन्दुवीक्षितः । कुर्यादशिरसं तद्विष्वमेवाहुवर्जितम् ॥ अपदं नवमस्थाने यदि सौम्यैर्वीक्षितः । तथाच सारावल्याम्—कुजयुतो द्रेष्काणस्त्रिकोणलघ्नेषु भेषु दृष्टश्च । विभुजांश्रिमस्तकः स्याच्छनिरविचंद्रेस्तथा गर्भः ॥ कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं । द्रेष्काणाः स्युः स्वीयपंचांकपानाम् । तथाच शम्भुहोराप्रकाशे । विलग्नद्रेष्काणगते महीजे निरीक्षिते सूर्यशर्नांदभिश्च ॥ कुर्यादशार्वं सुतभे विवाहुं धर्मे विपादं न शुभेक्षितश्च ॥

अथ अधिकांगयोगः ।

बुधस्त्रिकोणगे शेषैर्बलहीनैर्भश्चरैः ।
मुखपादकरैरेवं द्विगुणः स्यात्तदा शिशुः २६ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें पंचम नवम स्थानमें बुध स्थित हो और संपूर्ण ग्रह बलहीन चाहे जहां स्थित हों तो उस बालकके मुख पाद हाथ दुगुने होते हैं अर्थात् दो शिर चार पैर चार हाथ होते हैं ॥ २६ ॥

अथ मूकयोगः ।

चंद्रो वृषस्थितः पापैः कर्ककीटाह्रप्रांतकैः ।

नवांशः संयुतश्चापि मूकः स्याच्छुभनेक्षितः ॥ २७ ॥

चंद्रमा वृषराशिमें स्थित हो और सम्पूर्ण पापयह कक वृश्चिक मीन राशियोंके अंत्य नवांशमें स्थित हों तो गर्भस्थ मूक उत्पन्न होता है ॥

अथ सामान्यमूकयोगः ।

और पूर्वोक्त योग हो और चंद्रमाको शुभयह देखते हों तो गर्भस्थ अधिक दिनोंमें बोलनेवाला उत्पन्न होता है ॥ २७ ॥

अथ सदंतोत्पत्तियोगः ।

सौम्यक्षांशे रविजरुधिरौ चेत्सदंतोऽत्र जातः कुब्जः स्वक्षेपे
शशिनि तनुगे मंदमाहेयदृष्टे । पंगुर्मीने यमशशिकुजैवीक्षिते

लग्रसंस्थै संधौ पापैः शशिनि च जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टः ॥ २८ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें कन्या मिथुन राशियोंमें अथवा इन राशियोंके नवांशमें शनैश्चर मंगल दोनों स्थित हों तो गर्भस्थ बालक दाँतयुक्त कहना चाहिये ।

अथ कुब्जयोगः ।

और चंद्रमा कर्क राशिमें प्राप्त लग्रमें स्थित हो उसको शनैश्चर मंगल देखते हों तो गर्भस्थ कुब्जा कहना योग्य है ।

अथ पंगुलयोगः ।

गर्भाधानकालमें मीन लग्र हो उसको शनि मंगल चंद्रमा ये ग्रह देखते हों तो गर्भस्थ पैर रहित अर्थात् लूला कहना चाहिये ।

अथ जड्योगः ।

गर्भाधानकालमें कर्क, वृश्चिक, मीन राशियोंके नवम नवांशमें पापग्रह सहित चंद्रमा स्थित हो तो गर्भस्थ बधिर अर्थात् बहिरा होता है, परंतु चंद्रमाको कोई शुभग्रह न देखता हो तो ॥ २८ ॥

अथ अंधयोगः ।

रविशशियुते सिंहे लघे कुजार्किनिरीक्षिते नयनरहितस्सौम्या-
सौम्यैस्स बुद्बुदलोचनः । व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं
रविस्त्वशुभगदिता योगा जाप्या भवन्ति शुभेक्षितः ॥ २९ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें सिंहलघ हो उसमें सूर्य, चंद्र स्थित हों और मंगल करके दृष्ट हों तो गर्भस्थ बालक अंधा होना चाहिये॥

अथ काणयोगः ।

सिंहराशिगत लघ हो, उसमें सूर्य स्थित हो और मंगल, शनि देखते हों तो गर्भस्थ दाहिनी आंखसे काना कहना चाहिये और सिंहलघमें चंद्रमा स्थित हो उसको मंगल, शनि देखते हों तो गर्भस्थ बालक वामनेत्रसे काना कहना चाहिये और वही सिंहलघमें सूर्य चंद्रमा दोनों स्थित हों और शुभाशुभग्रह देखते हों तो गर्भस्थ बालक फुल्लीसहित आंखवाला कहना चाहिये और वारहवें स्थानमें स्थित चंद्रमा हो तो बाई आंखसे काना कहो और जो सूर्य हो तो दाहिनी आंखको नष्ट करता है परंतु सूर्य, चंद्रमाको कोई शुभ ग्रह न देखता हो, पापग्रहोंसे दृष्ट हो तो यह योग पूरा मिलेगा ॥ २९ ॥

अथ पुत्रकन्याज्ञानमाह ।

ओजभेषु तनुचन्द्रवीज्यौ त्रेशकेषु बलिभिर्नरजन्म ।

योषिदंशसहितौ समभस्थौ स्तःस्त्रियो मुनिवराः कथयन्ति ३० ॥

गर्भाधानिक लघ चंद्रमा, सूर्य, वृहस्पति ये सब अथवा इनमें बली हो सो विषमराशियोंमें अर्थात् भैष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ इनमें स्थित हो अथवा इनके नवांशोंमें स्थित हो तो गर्भस्थ बालक पुरुष कहना

(२२०)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें पंचम नवम स्थानमें बुध स्थित हो और संपूर्ण ग्रह बलहीन चाहे जहाँ स्थित हों तो उस बालकके मुख पाद हाथ दुगुने होते हैं अर्थात् दो शिर चार पैर चार हाथ होते हैं ॥ २६ ॥

अथ मूकयोगः ।

चंद्रो वृषस्थितः पापैः कर्ककीटाहृप्रांतकैः ।

नवांशः संयुतश्चापि मूकः स्याच्छुभनेक्षितः ॥ २७ ॥

चंद्रमा वृषराशिमें स्थित हो और सम्पूर्ण पापग्रह कक वृश्चिक मीन राशियोंके अंत्य नवांशमें स्थित हों तो गर्भस्थ मूक उत्पन्न होता है ॥

अथ सामान्यमूकयोगः ।

और पूर्वोक्त योग हो और चंद्रमाको शुभग्रह देखते हों तो गर्भस्थ अधिक दिनोंमें बोलनेवाला उत्पन्न होता है ॥ २७ ॥

अथ सदंतोत्पत्तियोगः ।

सौम्यक्षांशे रविजरुधिरौ चेत्सदंतोत्पत्तिः जातः कुब्जः स्वक्षे
शशिनि ततुगे मंदमाहेयदृष्टे । पंगुर्मीने यमशशिकुजैवीक्षिते
लग्नसंस्थे संधौ पापैः शशिनि च जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टः ॥ २८ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें कन्या मिथुन राशियोंमें अथवा इन राशियोंके नवांशमें शनैश्चर मंगल दोनों स्थित हों तो गर्भस्थ बालक दांतयुक्त कहना चाहिये ।

अथ कुब्जयोगः ।

और चंद्रमा कर्क राशिमें प्राप्त लग्नमें स्थित हो उसको शनैश्चर मंगल देखते हों तो गर्भस्थ कुबडा कहना योग्य है ।

अथ पंगुलयोगः ।

गर्भाधानकालमें मीन लग्न हो उसको शनि मंगल चंद्रमा ये ग्रह देखते हों तो गर्भस्थ पैर रहित अर्थात् लुला कहना चाहिये ।

अथ जड़योगः ।

गर्भाधानकालमें कर्क, वृश्चिक, मीन राशियोंके नवम नवांशमें पापग्रह सहित चंद्रमा स्थित हो तो गर्भस्थ बाधिर अर्थात् बहिरा होता है, परंतु चंद्रमाको कोई शुभग्रह न देखता हो तो ॥ २८ ॥

अथ अंधयोगः ।

रविशशियुते सिंहे लघ्ने कुजार्कनिरीक्षिते नयनरहितस्सौम्या-
सौम्यैस्स बुद्बुदलोचनः । व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं
रविस्त्वशुभगदिता योगा जाप्या भवन्ति शुभेक्षितः ॥ २९ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें सिंहलघ्न हो उसमें सूर्य, चंद्र स्थित हों और मंगल करके दृष्ट हों तो गर्भस्थ बालक अंधा होना चाहिये ॥

अथ काणयोगः ।

सिंहराशिगत लघ्न हो, उसमें सूर्य स्थित हो और मंगल, शनि देखते हों तो गर्भस्थ दाहिनी आंखसे काना कहना चाहिये और सिंहलघ्नमें चंद्रमा स्थित हो उसको मंगल, शनि देखते हों तो गर्भस्थ बालक बामनेत्रसे काना कहना चाहिये और वही सिंहलघ्नमें सूर्य चंद्रमा दोनों स्थित हों और शुभाशुभग्रह देखते हों तो गर्भस्थ बालक फुल्हीसहित आंखवाला कहना चाहिये और बारहवें स्थानमें स्थित चंद्रमा हो तो बाईं आंखसे काना कहो और जो सूर्य हो तो दाहिनी आंखको नष्ट करता है परंतु सूर्य, चंद्रमाको कोई शुभ ग्रह न देखता हो, पापग्रहोंसे दृष्ट हो तो यह योग पूरा मिलेगा ॥ २९ ॥

अथ पुत्रकन्याज्ञानमाह ।

ओजभेषु तनुचन्द्रवीज्यौ ब्रशकेषु बलिभिरजन्म ।

योषिदंशसहितौ समभस्थौ स्तः स्त्रियो मुनिवराः कथयन्ति ३० ॥

गर्भाधानिक लघ्न चंद्रमा, सूर्य, वृहस्पति ये सब अथवा इनमें बली हो सो विषमराशियोंमें अर्थात् ऐष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ इनमें स्थित हो अथवा इनके नवांशोंमें स्थित हो तो गर्भस्थ बालक पुरुष कहना

चाहिये और जो वेही सब अह बली होकर समराशि अथवा समनवांशगत हों तो गर्भस्थ प्राणी खी कहना चाहिये ॥ ३० ॥

विषमक्षें विषमनवांशे संस्थिता गुरुशशांकलग्राकार्कः । पुंजन्मकराः समभेषु यो-
षितः समनवांशगताः ॥ तथाच ओजक्षें पुरुषांशकेषु बलिभिर्लग्राकगुर्विदुभिः
पुंजन्म प्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषु तैर्योषितः । तथाच गार्णिः । विषमर्क्षगता लग्नगुरुश-
शांकाकार्कः पुंजन्मकराः ।

बलिनौ विषमेऽर्कगुरु नरं स्त्रियं समगृहे कुर्जेदुसिताः ।
यमलौ द्विशरीरांशष्ठिदुदृष्टाः स्वपक्षसमौ ॥ ३१ ॥

बलवान् होकर विषमराशि में सर्य, बृहस्पति स्थित हो अथवा विषमनवांशगत हों तो पुरुष गर्भगत कहना और चंद्रमा, शुक्र, मंगल ये बलवंत होकर समराशि योंमें और सम नवांशगत हों तो गर्भस्थ खी कहना चाहिये ॥

अथ यमलयोगः ।

वही चंद्रमा, शुक्र, मंगल, बृहस्पति द्विशरीरराशि योंके नवांशगत हों इन्हें बुध देखता हो तो अपने पक्षम जोरला पुरुष वा जोरली स्त्रीकारक होते हैं अर्थात् मिथुन कन्या धन मीन ये चार राशि द्विशरीर कहाती हैं इनमें मिथुन धन ये दो पुरुष हैं और कन्या मीन ये दो स्त्रीसंज्ञक हैं अब मिथुन, धनमें कहीं सर्य बृहस्पति स्थित हों इन्हें बुध देखता हो तो दो जोरला पुरुषोंका जन्म कहना और कन्या, मीनमें कहीं चंद्र शुक्र मंगल स्थित हो इन्हें बुध देखता हो तो दो जोरली स्त्रियोंका जन्म कहना चाहिये पूरे दोनों योग हों तो दो पुरुष व दो स्त्रियोंका जन्म कहना ॥ ३१ ॥

एतत्सपष्टमुक्तं शुक्रजातके-रविजीवौ युग्मधनुनवांशस्थौ बुधेक्षितौ पुण्यगम् ।
मीनकन्याराशि स्था भौमेंदुशुक्राः स्त्रीयुग्मं वदेत् ॥ भौमेंदुशुक्रा मीनस्त्रीनवांशस्था बुधे
क्षिताः । स्त्रीयुग्मं चापयुग्मांशे गर्भपुंस्त्रीयुग्मं वदेत् ॥ द्वंगस्था द्विस्वभावराशि नवां-
शस्था इति व्याख्येयम् अन्यथा ।

लग्नं त्यक्त्वा च विषमे पुत्रदो भास्करात्मजः ।

समे कन्याप्रदः प्रोक्तो नान्यप्रहनिरीक्षितः ॥ ३२ ॥

गर्भधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें लग्नको छोड़कर लग्नसे विषम स्थान अर्थात् तीसरे पांचवें सातवें नवम एकादश स्थानमें स्थित शनि हो तो गर्भस्थ पुरुषका जन्मकारक है इसी प्रकार जो लग्नसे द्वितीय चतुर्थ षष्ठ अष्टम दशम द्वादश स्थानमें स्थित शनि गर्भस्थ कन्याका कारक होता है परंतु अन्य कोई व्रह नहीं देखता हो तो इसी प्रकार व्रहोंका बलावल देखकर पुरुष अथवा स्त्री गर्भमें कहना चाहिये ॥ ३२ ॥

यया—लग्नाद्विषमोपगतः शनैश्चरः पुत्रजन्मदो भवति । निगदितयोगबलाबलम्-
बलोक्य निश्चयो वाच्यः ॥ यत्र पुरुषयोगसम्भवः स्त्रीयोगसम्भवश्च तुल्यो दृश्यते
तदाऽत्रैवंयोगकर्तृग्रहाणां बलाधिक्यं तस्यैव निश्चयो वक्तव्यः । विशेषोक्तः शुकजातके
विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थः शौरोऽपि पुंजन्मकरो विलग्नात् । प्रोक्तग्रहाणामबलोक्य
वीर्यं वाच्यः प्रसूतौ पुरुषोऽग्ना वा ॥ तथाच । एकोपि केंद्रे तु खगो बलीयान्
स्वांशे स्ववर्गे नरखेटदृष्टः । सूते नरं स्वोच्चगतोऽथ केंद्रे स्त्रीसंज्ञकः स्त्रीजननस्तथैव ॥

अथ कलीबयोगः ।

अन्योन्यं यदि पश्यतशशशिरवी यद्याकिसौम्यावपि

वक्रो वा समग्रं दिनेशमसमे चन्द्रोदये चेत्स्थितौ ।

युग्मौजक्षेगतावपीदुशशिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ

पुंभागे सितलग्नशीतकिरणाः षट् कुलीबयोगा अमी ॥ ३३ ॥

सूर्य चन्द्रमा आपसमें परस्पर देखते हों याने समराशिगत चन्द्रमा विषमराशिमें स्थित सूर्यको देखता हो इसी तरह चन्द्रमाको सूर्य देखता हो तो (एको योगः) और सप्तम राशिमें स्थित शनि और विषमराशिगत बुधको देखता हो और बुध शनिको देखता हो तो (द्वितीयो योगः) और मंगल विषम राशिमें स्थित होकर समराशिगत सूर्यको देखता हो और सूर्य मंगलको देखता हो (तदा तृतीयो योगः) और लग्न अथवा चंद्रमा ये दोनों विषमराशिमें स्थित हों और समराशिगत मंगल उन्हें देखता हो (तदा चतुर्थो योगः) और समराशिगत चंद्रमा और विषमराशिमें स्थित बुध इन दोनोंको किसी जगह स्थित हुआ मंगल देखता हो (तदा पंचमो योगः) और शुक्र,

लघु चन्द्रमा ये किसी राशिमें पुरुषनवांशगत हों (तदा षष्ठो योगः) इन छःयोगोंमें से कोई एक भी योग गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें हो तो गर्भस्थ नपुंसक कहना चाहिये ॥ ३३ ॥

अन्योन्यं रविचन्द्रौ विषमक्षस्वमक्षगावलोकपतिनिरीक्षितौ । इन्दुजरविपुत्रौ चाहृष्टौ बलिनौ नपुंसकं कुरुतः ॥ सूर्यसमराशिगतं वक्रो विषमक्षगोऽवलोकयति । विष-मक्षें लग्नेदू कुजेक्षितौ खण्डसम्भवं कुरुतः ॥ बुधचन्द्रौ विषमक्षं समक्षगौ तथा कुरुतः । ओजनवांशकसंस्था लग्नेदुस्तथैवोक्ताः ॥ पश्यति वक्रः सप्तमे सूर्यश्चंद्रादयश्च विषमक्षें । यदेवं गर्भस्थः कूबो मुनिभिः सदा दृष्टः । ओजसमराशिसंस्थौ ज्ञेदू खण्डं कुजोक्षितौ कुरुतः ॥ नरभे विषमनवांशे होरेदुसितबुधार्किदृष्टा वा । तथाच-जायास्थाने यदा मिश्रं हिबुके च तथाविधः । नपुंसको भवेजातो यादि रक्षेत्स्वयं हरिः ॥ ऐते पद् कूबयोगः स्मृताः । तथाच । बलाबलं विलोक्यैषां ग्रहणां योगकारिणाम् । तथा स्त्रीपुंसकलीबानां निर्णयः इति ।

अथ संतानदृययोगः ।

युग्मे चंद्रसितावथोजभवने स्युज्ञारजीवोदया
लग्नेदू नृनिरीक्षितौ च समगौ युग्मेषु वा प्राणिनः ।
कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगतान् द्वचगांशकान्पश्यति
स्वांशज्ञस्त्रितयं ज्ञगांशकवशाद्युग्मं त्वमिश्रः समम् ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें चंद्रमा, शुक ये दोनों ग्रह समराशियोंमें स्थित हों और बुध, मंगल, बृहस्पति, लघु ये चारों विषमराशिमें स्थित हों तो गर्भस्थ एक पुरुष और एक स्त्री अर्थात् कन्या कहना चाहिये अथवा लघु चंद्रमा समराशिमें स्थित हों उनको कोई पुरुष ग्रह देखता हो तो उस गर्भमें एक लड़का और एक लड़की कहना अवश्य है और बुध, मंगल, बृहस्पति, लघु ये चारों बली होकर समराशिमें स्थित हों तो उस गर्भमें भी एक पुरुष एक कन्या संतान कहनी चाहिये ॥

लघु समराशिगते चंद्रेण निरीक्षिते बलयुतेन । गणितविदां वक्तव्यं मिथुनं गर्भ-संस्थितं नूनम् । लग्नेदू समराशिगौ शशिसितयोः विषमे गुरुवक्रसौम्येषु द्विशरीरे बलिषु प्रवदेत् स्त्रीपुरुषमत्रैव द्विशरीरांशकयुतां गृहविलयं च पश्यति इंदुयुते कन्यांशे द्वे कन्ये पुरुषस्य विनिश्चिते गर्भे मिथुनांशे कन्यैका द्वौ पुत्री चिन्तनीयमेवं स्यात् ॥

अथ त्रयसंतानयोगः ।

सम्पूर्ण ग्रह और लघु जो द्विस्त्रभावराशियोंके नवांशमें स्थित हों आर बुध मिथुनके नवांशमें स्थित होकर उन्हें देखता हो तो गर्भस्थ दो पुरुष एक स्त्री कहना चाहिये और जो बुध कन्या राशिके नवांशमें स्थित हो और पूर्वोक्त ग्रहोंको देखता हो तो उस गर्भमें दो स्त्री एक पुरुष कहना चाहिये और जो बुधसहित सम्पूर्ण ग्रह और लघु ये सब स्त्रीसंज्ञक अथवा पुरुषसंज्ञक नवांशोंमें से एक ही तुल्य नवांशोंमें स्थित हों उसीके अनुसार तीनों स्त्री वा तीनों लड़के गर्भमें कहना चाहिये अर्थात् मिथुनके नवांशोंमें बुध स्थित होकर मिथुन धनके नवांशोंमें स्थित सब ग्रहोंको देखता हो तो उस गर्भमें तीन पुरुष कहना चाहिये और कन्याके नवांशमें स्थित बुध, कन्या भीनके नवांशोंमें स्थित सब ग्रहोंको देखता हो तो उस गर्भमें तीन कन्या कहनी चाहिये ॥ ३४ ॥

यथा—नृमिथुनं धनुरंशगतान् ग्रहान् विलग्मं च पश्यति इन्दुसुतः मिथुनांशसु-स्थितः यदा पुरुषत्रयं स्यात् तदा गर्भे कन्या भीनांशस्थितः विहगा उदयं च युव-तिभागतः पश्यति इन्दुसुतः कन्यात्रितयं स्यात् ॥

अथ प्रभूतसंतानयोगः ।

धनुर्धरस्यांतगते विलग्मे ग्रहस्तदंशोपगतैर्बलिष्ठैः ।

ज्ञेनार्किणा वीर्ययुतेन दृष्टे संति प्रभूता अपि कोशसंस्थाः ॥ ३५ ॥

धनराशिके अंत्यनवांश लघु हो और उसी धनके नवांशपै बलवान् होकर सब ग्रह स्थित हों और बलकरके बुध और शनैश्चर उस लघुको देखते हों तो उस गर्भकोशमें जेरमें लपटे हुए प्रभूत संतान अर्थात् पांच वा सात वा बहुतसे बालक कहना चाहिये ॥ ३५ ॥

यथा—धनुर्धरस्यांतगते विलग्मे धनस्यांतिमनवांशे अत्र प्रभूताः पञ्चसप्तदशपरिमिता इत्युपलक्षितम् ।

अथ प्रसवकालज्ञानम् ।

द्विषट्कभागे शशभृद्धि यस्मिंस्तस्मिन् प्रसूतिः पुरतो मृगके ।

उदेति यावान्द्युनवांशकः स्यात्तावद्वृते जन्मदिनोषसोः स्यात् ॥ ३६ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें जितनी संख्याके द्वादशांशमें चंद्रमा स्थित हो उस द्वादशांशसे उतनी ही राशिमें स्थित चंद्रमामें जन्म कहना चाहिये । गर्भाधानलघुके अथवा प्रश्नलघुके समय जो लघु जितनी व्यतीत हो गई हो उतना ही दिन अथवा रात्रि व्यतीत होनेपर जन्म कहना और जो दिनबली लघु हो तो दिनमें जन्म कहना और रात्रिबली हो तो रात्रिमें जन्म कहना । यथा “गोजाश्विकर्किमिथुनाः समृगा निशाख्याः पृष्ठोदया विमिथुनाः कथितास्त एव ॥” उस लघुके जितने अंश व्यतीत हुए हों उतने ही अंशोंके हिसाबसे दिन व रात्रि व्यतीत हुए जन्म कहना चाहिये । उसीपरसे जन्मलघु, होरा, द्रेष्काण नवांश आदि कल्पना करे और जिस दिन जन्म निश्चय हो उस दिनके पंचांगसे अथवा सिद्धान्तसे वह जान लेना चाहिये ॥ ३६ ॥

उदाहरण—जिस समय प्रश्नकर्ताने कहा कि मेरी श्री गर्भवती है मेरेको पुत्र अथवा कन्या होगी ? तब विद्वान्‌को चाहिये उक्त समय जितना दिनमान हो या रात्रिमान हो उसको रखना चाहिये और उक्त समयकी लघु स्पष्ट करनी चाहिये और उक्त समयका चंद्रमा स्पष्ट करना चाहिये । यथा दिनमानम् ३० । पल । ०० । रात्रिमानम् ३० । ०० । उक्त समयकी लघु स्पष्ट ३ । ८ । १२ । २० । चंद्रस्पष्ट ४ । १० । २५ । २५ अब जानना चाहिये कि सिंह राशिगत चंद्रमाके १० अंश २५ क्ला गई १० दश अंशतक चौथा द्वादशांश हुआ यहां दशसे जादे हैं तो सिंहराशिगत चंद्रमा पंचद्वादशांशमें स्थित है तो सिंहराशिसे पंचम धनराशि हुई और धनसे पंचम मेष राशि होती है तो जानना चाहिये कि इस प्राणीका जन्म मेषराशिगत चंद्रमामें गर्भसे दशम मासमें होगया और नक्षत्र जाननेकी यह रीति है कि चंद्रमाका द्वादशांश पूरा एक राशि भोग करता है तो चंद्रभुक्त द्वादशांश प्रमाणसे कितना आवेमा यहां त्रैराशिक गणित करके फिर एक राशिको चंद्रभुक्त द्वादशांशसे गुणना, उसमें चंद्रस्थ द्वादशसे भाग देना जो अंशादिक लब्धि आवे उसीसे जन्मकालका नक्षत्र जानना चाहिये ।

अथ कालज्ञानमाह ।

यहां प्रश्नलघु कर्क है ये रात्रिबल्ली हैं तो इस गर्भस्थप्राणीका रात्रिमें जन्म कहना उस लघुके जितने अंश व्यतीत हुए हैं उतने ही अंशोंके हिसाबसे दिन चढ़े अथवा रात्रि गये जन्म कहना । यहां लघुके ८अंश १२क० २० विकला गई और जन्मके दिनमान तीस घण्ठी हैं। जैसे ही रात्रिमान भी ३० दंड हुआ और एक लघुके भी ३० अंश होते हैं तो एक २ अंशके एक दंड मिला इसी हिसाबसे आठ अंशको ८ दंड मिले और बारह १२ कलाको बारह पल मिले और २० विकलाको २० विपल मिले तो पूरा इष्ट ८ दंड १२ पल २० विपल रात्रि व्यतीत हुए पर कहना चाहिये ॥

तथा च गार्गिः—यावत्संख्ये द्वादशांशे शीतरशिमव्यवस्थितः । तत्संख्यो यस्ततो राशिर्जन्मेद्दुस्तद्वत् भवेत् ॥ अस्यार्थः ॥ मेषादिगणनया यावत्संख्ये द्वादशांशे चंद्रमा व्यवस्थितः तद्राशियावत्संख्यो यो राशिस्तत्र वर्तमानं जन्म वक्तव्यमिति । अथ चन्द्रद्वादशांशप्रमाणेन २।३०।कलात्मकेन १५०। सकलचन्द्रराशिरष्टशतकला १८०० लभ्यते तदा भुक्तद्वादशकलाप्रमाणेन किमिति इत्यनुषातलब्धम् । चंद्रराशिभुक्तं कलात्मके ज्येष्ठं ततोऽष्टशतकलाकल्पनया चंद्रनक्षत्रं ज्येष्ठम् इति शेषः । अन्यतु वराहः—तत्कालमिदुसहितो द्विसांशको यस्तत्तुल्यराशिसहिते पुरतद्वशाशांके । यावानुदीत दिनरात्रिसमानभागस्तावद्वते दिननिशोः प्रवर्द्धति जन्म ॥ अस्यार्थः ॥ तत्कालेदुना यावत्संख्यो द्वादशभागमधिष्ठितः तावत्संख्याराशिस्थे चन्द्रे सति प्रसवकाले प्रसवो वक्तव्यः । तथाच सारावल्याम्—यस्मिन् द्वादशभागे गर्भाधाने व्यवसिते चन्द्रे । तत्तुल्यक्षेप्रसवं गर्भस्य समादिशेत्प्राज्ञः ॥ समुद्रजातकेऽपि—यतमे द्वादशांशः सूतिस्तत्संख्यो विधाविति । अत्र चन्द्रलग्नयोर्मध्ये यो बलवान् तस्य द्वादशांशकवशेन चन्द्रराशिज्ञेयः । इत्युक्तं शुक्लजातके ॥ उम्बेद्वैर्यो बलवान् तस्य द्विदशांशकान्विते शाशिस्थिते विधौ प्रतवः इति गर्गजातके । शुक्लचार्ययोरेकवाक्यं स्यात्सारावल्याम्—समुद्रजातकादिमते मूलं मृग्यम् । दिनरात्रिकालज्ञानं सारावल्याम् । तत्कालदिवसनिशासंज्ञः समुदयति राशिभागो यः । यावानुदयस्तावान् वाच्यो दिवसो निशैव वक्तव्यः ॥ तथा च । सम्यक् ज्ञाते नूनमाधानकाले योगानुकूलांश्चित्येजातकज्ञः । यदा सर्वे प्रश्नतः सूतिकालाः प्रोक्तास्ते वै तत्कलहैर्महस्तिः । प्रश्नमे कुमुदिनीपतौ स्थिते सप्तमं वदति बादरायणः । गर्ग आह-भगवान् नृजन्मभं पञ्चमं तु मुनिसंमर्तं त्विदम् । तत्कालशीतांशुनवांशकाच्च जामित्रगे शीतकरे प्रसूतिः ॥ लग्नस्य नन्दांशपतेस्तु यदा क्षेत्रं प्रयाते

हिमगौ प्रसूतिः । यस्मिन् द्विषड्भागगते विधौ तद्राशिस्थितेऽब्जे पुरतः प्रसूतिः ॥
 रसातलेशो बलसंयुते च गर्भस्तदानीं सुखसंयुतः स्यात् । यदोदयेन्द्रोः सबलस्तु
 तस्य द्विषट्कभागैः सहितोऽत्र राशिः ॥ तावद्वि तद्राशिगते मृगांके भवेत्प्रसूतिः
 पुरतश्च केचित् । यावानुदेति हुनिशोर्नवांशे तावद्वते घस्तनिशोर्जनुः स्यात् ॥
 हुरात्रिसंज्ञाः कथितास्तु पूर्व तद्राशितः कालविमिश्रतः स्यात् । अत्रोदाहरणम् ॥
 तत्र प्रश्नकाले दिनमानं च ३०।०० रात्रिमानम् ३०।०० स्पष्टचन्द्रो राश्यादि ४।
 १०। २५। ३५। लघुं च ३। ८। १२। २०। अत्र चन्द्रः सिंहराशौ पञ्चमे
 द्वादशांशे धन्वाख्येऽस्ति ततो धनुषः पञ्चमे मेषराशौ चन्द्रे सति जन्म ॥ तत्र नक्षत्रा-
 नयनार्थमनुपातः । अत्र पञ्चमे द्वादशांशे भुक्तकलादि २५।३५ ततो यदि द्वाद-
 शांशप्रमाणेन १५० सकलचन्द्रराशिकला १८०० लभ्यन्ते तदा आभिर्भुक्तकलाभिः
 २५। किमित्यत्र फलार्थम् द्वयोः सार्द्धशतेनापवर्तते इति छाया । २५। ३५।
 मुणागुणिते जाता ३०७ ततो नक्षत्रप्रमाणेन ८०० भक्तेलेखक्रहक्षम् । अधिनी
 ततश्चरणप्रमाणलिपाभिः ८०० भक्ते शेष ३०७ लब्धचरणे भुक्तः १ तेनाश्चि-
 नीद्वितीयचरणे जन्म जातम् इति ज्ञानम् ॥ अथ कालज्ञानम् ॥ तत्र कर्कराशिः
 रात्रिबलसंज्ञकस्तेन रात्रौ जन्मेति ज्ञानम् ॥ अथ घट्यादिज्ञानार्थमुपायः ॥ यदि
 त्रिशत्रिरूपैर्निंशाप्रमाणम्, त्रिशत्रिकात्मकम् लभ्यते तदा लग्नभुक्तांशैः ८। १२।
 २०। किमत्रापि फलार्थयोर्खिंशतापवर्तते कृते लब्धरूपं तेन भुक्तगुणिते च लब्ध-
 मविकृतम् अतो जाता रात्रिगतवटिका । ८। १२। २०। एवं सर्वत्र बोधनीयम् ।
 एवं कालज्ञाने चन्द्रादिनज्ञाने च जाते जन्मोक्तं चिन्त्यमित्याह कल्याणवर्मा ।
 इत्याधानं प्रथमं प्रसूतिकालं सुनिश्चितं कृत्वा । जातकविहितं च विधि विचितयेत्
 तत्र गणितज्ञ इति । अथ जन्मानि चन्द्रज्ञानं प्रकारांतरेणाह । यथा--यदेकराशिसं-
 स्थितौ श्रुतेश्वरक्षणाकरौ । तदैव गुरुविणी वधूः प्रसूयते तु नान्यथा । प्रश्नलग्नादास-
 न्नप्रसवकालं चिन्तयति ।

अथ गर्भलग्नात्प्रसवमासज्ञानम् ।

गर्भाधानं चरे राशौ नवमे मासि सूयते ॥

स्थिरभे दशमे मासे ह्यंगे चैकादशे च सः ॥ ३७ ॥

जो गर्भाधानकालमें चररात्रि हो तो गर्भसे नवम मासमें बालककी
 उत्पत्ति होती है और स्थिरलग्नमें गर्भाधान रहे तो दशममासमें बालक
 उत्पन्न होता है और द्विस्त्रभावलग्नमें जो गर्भाधान रहे तो ग्यारहवें
 मासमें प्रसूति कहना चाहिये ॥ ३७ ॥

अथ प्रश्नलग्नाद्भर्गतमासज्ञानम् ।

लग्नेऽशकास्तु यावंतस्तावन्तो गर्भमासकाः ॥

सुताद्वांगाद् बली शुक्रो यावद्रेहेऽथ तन्मितिः ॥ ३८ ॥

प्रश्नलग्नके जितने नवांश व्यतीत हुए हों उतने ही गर्भके मास व्यतीत कहना चाहिये और जो नवांश वर्तमान हो उतना ही गर्भका मास वर्तमान कहना चाहिये । यथा—यहां लग्नके ८ अंश १२ कला २० विकला हैं तो जानना चाहिये कि दो नवांश व्यतीत हुए तो दो मास गर्भके गत हो गये तीसरा नवांश वर्तमान है तो तृतीय मासप्रवेश है अथवा पंचम स्थानसे वा जितने स्थान आगे शुक्र बली होकर स्थित हो उतने ही मास गर्भके जानना चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ वर्षत्रयप्रसूतियोगः ।

मकरांशगते लग्ने द्यूनस्थे भास्करात्मजः ॥

अस्मिन् योगे निषेकस्तु सूतिरब्दत्रये भवेत् ॥ ३९ ॥

गर्भाधानकालमें चाहे कोई राशि लग्नमें स्थित हो उसमें मकर अथवा कुंभका नवांश उदय हो और लग्नसे सातवें घरमें शनैश्चर स्थित हो तो तीन वर्षमें गर्भस्थका जन्म कहना चाहिये ॥ ३९ ॥

अथ द्वादशाब्दे प्रसूतियोगः ।

कर्कटांशगते लग्ने सप्तमस्थे कलानिधिः ॥

तदा द्वादशवर्षेण मुच्यते गर्भबंधनात् ॥ ४० ॥

जो गर्भाधानकालिक लग्नमें कर्क राशिके नवांशका उदय हो और लग्नसे सातवें स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो तो बारह वर्षमें गर्भस्थका जन्म कहना चाहिये । गर्भाधानाध्यायमें जो कहा है जन्मकालसे भी तैसे ही प्रश्नकालसे भी तिसी प्रकार विचार कर फल कहना चाहिये ॥ ४० ॥

अस्मिन्नाध्यायमध्ये तु गर्भाधानमुदीरितम् ॥

बलदेवसुतो गौडः श्यामलालबुधेन वै ॥ ४१ ॥

(२३०)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-
संग्रहे गर्भाधानवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

इस अध्यायके बीचमें बलदेवप्रसादका पुत्र गौड़ श्यामलाल पंडितने
गर्भाधानका वर्णन किया ॥ ४१ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-
पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां गर्भाधानवर्णनं
नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ प्रसवाध्यायप्रारंभः ।

अथ प्रसूतिमासज्ञानम् ।

आधानके चरण्हे दशमे प्रसूतिस्त्वेकादशे स्थिरगूहे उप्युभये-
कर्मासाः ॥ शीषोदयैश्च शिरसाप्युभये कराभ्यां पृष्ठोदयैश्च
जननं भवतीह पद्धत्याम् ॥ १ ॥

जिस प्राणीका गर्भाधान चरराशिवर्ती लग्नमें होता है उस प्राणीका जन्म
दशवें मासमें होता है और स्थिरमें हो तो ग्यारहवें मासमें प्रसव कहना
और द्विस्वभावमें हो तो बारहवें मासमें प्रसूति कहनी चाहिये ॥

अथ प्रसवप्रकारज्ञानमाह ।

जो राशि लग्नमें स्थित हो उसका जिस तरह उदय होता है उसी प्रकार
जन्म होते समय बालकको कहना चाहिये यथा जो शीषोदय राशि लग्नमें
स्थित हो तो उस बालकका जन्म शिरकी तरफसे कहना और उभयोदय-
लग्नमें जन्म हो तो उस बालकका हाथोंकी तरफसे जन्म कहना और पृष्ठोदय
राशि लग्नमें स्थित हो तो पैरोंकी तरफसे बालकका जन्म कहना चाहिये
परन्तु इसमें जन्मसमयमें नवांशका विचार कर लेना ॥ १ ॥

शीर्षोदये विलग्ने मूर्धना प्रसवोऽन्ययोदये चरणैः । उभयोदये च हस्तैः शुभदृष्टः
शोभनोऽन्यथा कष्टैः ॥ तथा गर्गजातके—शिरसा प्रसवे ज्ञेयः समयः स्कंधदर्शनात् ।
अंग्रिभ्यां प्रसवे काले जंघासंदर्शनाद्वेत् ॥ कराभ्यां प्रसवे चैव मणिबंधस्य दर्शनात् ॥
मणित्यः-लग्नाधिर्पेऽशगते लग्नस्थे वक्रिमे गृहे । विफरीतिगतो मोक्षो वाच्यो गर्भस्य संक्षेपः ॥
जः॥ कोई आचार्य कहते हैं कि शीर्षोदयरात्रि लग्नमें स्थित हो तो उत्तानपाद होते हैं॥

अथ नालवेष्टितजन्मज्ञानम् ।

लग्नेषु सिंहाजवृषस्थितेषु तत्स्थे कुजे सूर्यसुते च यद्वा ।
सुकोऽकर्जो भाँशसमे च गात्रः स्यादर्भको नालविवेष्टितांगः ॥ २ ॥

मेष, वृष, सिंह इन राशियोंमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो उनमें
मंगल अथवा शनैश्चर स्थित हो तो नालसे लिपटा हुआ बालक उत्पन्न
होता है, सूर्यसहित शनैश्चर जिस नवांशमें उदय हो उसी अंगमें कालपुरुषके
नाल लिपटा हुआ कहो ॥ २ ॥

सिंहाजगोभिरुदये सूतौ नालेन वेष्टितो जन्तुः । लग्ने कुजेऽथ शौरे राश्यंशसमान-
गात्रे च ॥ राश्यंशेति । राशिलग्ने यद्राशिनवांशस्योदये भवति स राशिकालः पुरु-
षस्य यस्मिन्नंगे व्यवस्थितः तस्मिन्नंगे नालवेष्टितः ।

अथ कोशवेष्टितयमलयोगः ।

रवौ चतुष्पदे स्थिते द्विदेहसंस्थितैः परैः ।

बलान्वितैस्तदा यमौ स एव कोशवेष्टितौ ॥ ३ ॥

सूर्य चतुष्पदराशि अर्थात् मेष, वृष, सिंह, धनका परार्द्ध, मकरका
पूर्वार्द्ध इनमेंसे किसीमें स्थित हो और शेष श्वह द्विदेह मिथुन, कन्या, तुला,
धनका पूर्वार्द्ध, मकरका परार्द्ध, कुंभ इन राशियोंमेंसे किसीमें बलसहित
स्थित हो तो एक जेरसे लिपटे हुए दो जुरे हुए बालक पैदा होते हैं ॥ ३ ॥

सूर्यश्चतुष्पदस्थः शेषा द्विशरीरसंस्थिता बलिनः । कोशवेष्टितदेहौ यमलौ खल
सम्प्रसूयेत ॥

अथ सदंतप्रसूतियोगः ।

सौम्यस्य भाँशोपगतौ यमारौ बालं सदंतं कुरुतः प्रसूतौ ।
कुलीरलग्ने हिमाग्नौ तदा चेन्मंदारहृष्टे स तु कुञ्जकः स्यात् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या, मिथुन राशिमें अथवा इनके नवांशमें शनैश्चर, मंगल ये दोनों स्थित हों तो उस बालककी उत्पत्ति दांत करके सहित कहनी चाहिये ॥

अथ कुब्जयोगः ।

कर्कलघ्न हो उसमें चन्द्रमा स्थित हो उसको शनैश्चर या मंगल देखते हों तो बालक कुब्जा पैदा होता है ॥ ४ ॥

अथ मासेषु दंतोत्पत्तिफलम् ।

दंतैर्यतश्चेत्प्रथमेऽर्भकः स्यात्स्वयं विनश्येदनुजं द्वितीये ।

हन्याचृतीये भगिनीं चतुर्थे स्वमातरं बाणमितेऽप्रजातम् ॥५॥

षष्ठादिमासे शुभदो नितांतं साकं यदा जन्म भवेत्तु दंतैः ।

तस्योर्ध्वपंक्तिः प्रथमं द्विजाः स्युः स्वमातरस्वं च निहंति तातम् ६

जिस बालकके पैदा हानेके बाद पहिले महीनेमें दांत पैदा हों तो वह बालक आप ही नाशको प्राप्त होता है और द्वितीय मासमें जिस बालकके दंतोत्पत्ति हो तो वह बालक छोटे आताको नाश करता है और तृतीय मासमें दंतोत्पत्ति हो तो वह बालक बहिनका नाश करता है, चतुर्थमासमें दंतोत्पत्ति हो तो अपनी माताका नाश करता है और पंचममासमें दंतोत्पत्ति हो तो वह बालक अपने बड़े भाईका नाश करता है ॥५॥ छठे महीनेको आदि लेकर अर्थात् सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, द्वादश मासोंमें जो दंतोत्पत्ति हो तो श्रेष्ठ फलको करता है, जो बालककी दंतोत्पत्ति ऊपरकी पंक्तिकी पहिले हो तो वह बालक अपनी माताको और अपने पिताको नाश करता है ॥ ६ ॥

अथ मूकयोगः ।

कर्काल्यंत्यात्गौः पापैर्भात्यस्थे वा वृषे विधौ ।

मूकः पापेक्षिते सद्विद्वष्टे गीः स्याच्चिरण तु ॥ ७ ॥

कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियोंके नवम नवांशपर सम्पूर्ण पापग्रह स्थित हों और चंद्रमा वृषराशिमें स्थित हो उसको पापग्रह देखते हों तो वह बालक मूक होता है और पूर्वोक्त योग हो और चन्द्रमाको शुभग्रह देखते हों तो वह बालक बहुत दिनमें बोलता है ॥ ७ ॥

अथ पंगुयोगः ।

लग्ने इषे चंद्रयुते च यद्वा सिंहाजचापांतगतैश्च पापैः ।

वृषे विधावर्क्यमारहृष्टे पंगुर्नरः स्याच्छुभद्राष्टिहीने ॥ ८ ॥

मीनराशि लग्नमें स्थित हो उसम चन्द्रमा युक्त हो, सिंह, मेष, धन इनके अंत्यनवांशपर पापग्रह स्थित हों (एको योगः) । अथवा वृष राशिमें चन्द्रमा स्थित हो उसको सर्य, शनैश्चर, मंगल देखते हों, शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो वह बालक पंगु अथात् लूला होता है ॥ ८ ॥

अथ जडयोगः ।

कूरग्रहैः संधिगतैः शुभालोकनवर्जितैः ।

हिमांशुसहितैर्बालो जडः स्यान्नात्र संशयः ॥ ९ ॥

पापग्रह संधिगत हों अर्थात् पूर्वोक्त राशियोंके नवम नवमांशमें स्थित हों शुभग्रह कोई न देखते हों चन्द्रमा करके सहित हो तो वह बालक जड़ होता है अर्थात् ज्ञानविचाररहित मूर्ख होता है ॥ ९ ॥

अथांधयोगः ।

सिंहे विलग्ने रविशीतभानू मंदारहृष्टौ कुरुतो नरोऽधः ।

शुभाशुभैर्बुद्भुदनेत्रयुग्मं वामं हिनस्त्यज्ज इनोऽन्त्ययोगात् ॥ १० ॥

सिंहलग्न हो उसमें सर्य चन्द्रमा स्थित हों उनको शनैश्चर मंगल देखते हों तो वह बालक अंध उत्पन्न होता है और पूर्वोक्त योग होय उनको शुभग्रह भी देखते हों तो उस बालकके नेत्रोंमें फूली कहना उचित है और सिंह लग्न हो व्ययस्थानमें उसमें सर्य स्थित हो और मंगल शनैश्चर देखते हों तो दहिने नेत्रसे काना कहना चाहिये । इसी प्रकार सिंहलग्न हो

व्ययस्थान उसमें चन्द्रमा स्थित हो, उसको मंगल शनैश्चर देखते हों तो वामनेवसे काना कहना चाहिये, परंतु सिंहलघ व्ययस्थानवर्ती हो तो काना योग कहना चाहिये ॥ १० ॥

अथ विलोमजन्मज्ञानम् ।

विलग्नेऽर्कजे विधौ व्यये च नीचगे रवौ ।

विलोमजन्म भूमिजे सभार्गवे त्वनालकः ॥ ११ ॥

जन्मलघमें शनैश्चर चन्द्रमा स्थित हों और व्ययस्थानमें नन्दि राशिगत सूर्य स्थित हो तो उस बालकका उलटा जन्म कहना चाहिये और पूर्वयोग रहते मंगल शुक्रसहित स्थित हो तो वह बालक नालरहित उत्पन्न होता है ॥ ११ ॥

अथ क्लेशान्वितजन्मज्ञानम् ।

विलग्नभांशाधिपतौ विलग्ने विलोमसंस्थे सति विग्रहः स्यात् ।

क्लेशान्विते व्यस्तगतं च जन्म शुभैः प्रदृष्टे च ततः सुखं हि ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लघ नवांशपति दोनों लघमें विलोम स्थित हों तो उस बालकका जन्म विग्रहसे हो और पूर्वोक्त योग रहते लघनवांशपति व्यस्तगत हों तो उस बालकका जन्म क्लेशकरके कहना चाहिये और उसी पूर्वयोग होते शुभग्रह देखते हों तो उस बालकका जन्म सुखपूर्वक होता है ॥ १२ ॥

अथ जारजातज्ञानम् ।

न प्राग्विलग्नं च विधुः प्रपश्येज्जीवोऽर्कयुक्तं सितगुं च यदा ।

साकें विधौ पापयुतेऽथवा चेत्स्याज्जारजातस्य तदाहि जन्म १३

जन्मलघमको चंद्रमा न देखता हो और बृहस्पति लघ व चंद्रमाको न देखता हो तदा एको योगः। अथवा सूर्ययुक्त चंद्रमाको बृहस्पति न देखता हो तदा द्वितीयो योगः। अथवा सूर्य चंद्रमायुक्त होकर पापग्रहसहित हो तो इन योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य परपुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना चाहिये ॥ १३ ॥

सुरेज्यद्वृष्टे तनुगेऽथवाब्जे देवेज्यवर्गोऽज्ञात एष चन्द्रः ।

सपापकेऽकेण युतेऽथ चंद्रे स्याज्ञारजातस्य तदा हि जन्म १४
बृहस्पति करके दृष्ट चंद्रमा लघ्नमें स्थित हो बृहस्पतिके वर्ग अर्थात्
षट्वर्गमें चंद्रमा न हो तदा एको योगः । और पापश्चहसहित चंद्रमा सूर्ययुक्त
हो तो भी मनुष्य जारजात अर्थात् दूसरे मनुष्यसे पैदा कहना चाहिये ॥ १४ ॥

नीचोपगाः सूर्यसुरेज्यचन्द्राः कुर्वति ते जन्मनि जारजातम् ।

यद्वा तनौ सूर्यसुतेन दृष्टाः शुभैश्च चन्द्रोदयभाग्वास्त्वाः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नीचराशिंगे व्रत लग्ये, बृहस्पति, चंद्रमा
हों तो वह बालक परपुरुषसे उत्पन्न कहना चाहिये अथवा चंद्रमा, शुक्र लघ्नमें
स्थित हों उसको शनैश्चर देखता हो तो जारजात रहना चाहिये ॥ १५ ॥

अथ न जारजातयोगः ।

चन्द्रे गुरुक्षेत्रगतेऽथ वा चेत्सुरेज्ययुक्तेऽन्यद्वृष्टे स्थितेऽब्जे ।

गुरोर्हकाणेऽथ नवांशके वा न जारजातस्तु भवेत्प्रसूतिः ॥ १६ ॥

चंद्रमा बृहस्पतिके स्थानमें स्थित हो अथवा बृहस्पति करके चंद्रमा
युत वा दृष्ट हो अथवा बृहस्पतिके द्रेष्काण अथवा नवांशमें चंद्रमा स्थित
हो अथवा इसी प्रकार लघ्न हो तो वह मनुष्य अपने ही वापकरके उत्पन्न
कहना ॥ १६ ॥

न लघ्नं पश्यतद्विं च जीवः सूर्योपेतं शीतराशिंग च यद्वा । साकें चन्द्रे पापयुक्तेऽ-
थवा स्यान्निःसंदिग्धं जारजातस्य जन्म ॥ अत्र सूर्येनू एकत्र पृथक्स्थौ वा पापयुक्तौ
गुरुणा न दृष्टी जारजातजन्मकरी इत्युक्तं शुक्रजातके—न पड्यति गुरुश्चेद्रे लघ्नं वा
परजातकः । साकेंदुनेक्षिते जीवः सूर्येनू पापसंयुतौ ॥ एकस्थौ वा पृथक्स्थौ वा
नैकितौ गुरुणा तथेति । योगांतरमाह गुणाकरः—नीचस्थिताश्चन्द्रदिवाकरेज्याः कुर्व-
त्यमी जन्मनि जारजातम् । लघ्नेऽथवा सूर्यसुतेन दृष्टाः सौम्यैश्च शुक्रोदयशीतभासः॥
अथ तिथिवारक्षयोगानाह—स्वातौ द्वितीयारविवास्योगे सोमात्मजे सप्तमिरेवतीषु ।
स्याद्वादशी वासवमंदवारे जारेण जातं प्रवदंति बालम् ॥ नवमस्यो गुरुर्यत्र धने चंद्रो-
ऽकेमण्डले । अन्यजातः स विजेयो योगोऽस्मिन्यतिते ध्रुवम् ॥ चन्द्रारभानवः पृष्ठा गुरुः
पञ्चमगो यदि । योगेऽस्मिन्नात्र संदेहश्चान्यजातः स उच्यते ॥ अर्यमण्डे स्याद्वि-
वासराष्ट्रमी विश्वे चतुर्थी गुरुवासरं च । हिर्बुध्नभे भौमदिनं चतुर्दशी स्याज्ञारजात-

व्ययस्थान उसमें चन्द्रमा स्थित हो, उसको मंगल शनैश्चर देखते हों तो वामनेत्रसे काना कहना चाहिये, परंतु सिंहलघ्न व्ययस्थानवर्ती हो तो काना योग कहना चाहिये ॥ १० ॥

अथ विलोमजन्मज्ञानम् ।

विलग्नेऽर्कजे विधौ व्यये च नीचगे रवौ ।

विलोमजन्म भूमिजे सभार्गवै त्वनालकः ॥ ११ ॥

जन्मलघ्नमें शनैश्चर चन्द्रमा स्थित हों और व्ययस्थानमें नचि राशिगत सूर्य स्थित हो तो उस बालकका उलटा जन्म कहना चाहिये और पूर्वयोग रहते मंगल शुक्रसहित स्थित हो तो वह बालक नालरहित उत्पन्न होता है ॥ ११ ॥

अथ क्लेशान्वितजन्मज्ञानम् ।

विलग्नभांशाधिपतौ विलग्ने विलोमसंस्थे सति विघ्रहः स्यात् ।

क्लेशान्विते व्यस्तगतं च जन्म शुभैः प्रदृष्टे च ततः सुखं हि ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लघ्न नवांशपति दोनों लघ्नमें विलोम स्थित हों तो उस बालकका जन्म विघ्रहसे हो और पूर्वोक्त योग रहते लघ्ननवांशपति व्यस्तगत हों तो उस बालकका जन्म क्लेशकरके कहना चाहिये और उसी पूर्वयोग होते शुभघ्रह देखते हों तो उस बालकका जन्म सुखपूर्वक होता है ॥ १२ ॥

अथ जारजातज्ञानम् ।

न प्राग्विलग्नं च विधुः प्रपश्येन्नीवोऽर्केयुक्तं सिंहं च यदा ।

साकें विधौ पापयुतेऽथवा चेत्स्याज्ञारजातस्य तदाहि जन्म ॥ १३ ॥

जन्मलघ्नको चंद्रमा न देखता हो और वृहस्पति लघ्न व चंद्रमाको न देखता हो कदा एको योग । अथवा सूर्ययुक्त चंद्रमाको वृहस्पतिन देखता हो कदा इनीयो शोधः । अथवा सूर्य चंद्रमायुक्त होनेव प्राप्य व्रहस्पति होनी चंद्रमायुक्त होना चाहिये । अनुष्ठानसंग्रहमें चंद्रमा वृहस्पति चाहिये । यदा

सुरेज्यदृष्टे तनुगेऽथवाब्जे देवेज्यवर्गोऽज्ञत एष चन्द्रः ।

सपापकेऽकेण युतेऽथ चंद्रे स्याज्ञारजातस्य तदा हि जन्म १४
बृहस्पति करके दृष्टे चंद्रमा लघ्नमें स्थित हो बृहस्पतिके वर्ग अर्थात्
षड्वर्गमें चंद्रमा न हो तदा एको योगः । और पापयहसहित चंद्रमा सूर्ययुक्त
हो तो भी मनुष्य जारजात अर्थात् दूसरे मनुष्यमें पैदा कहना चाहिये ॥ १४ ॥

नीचोपगाः सूर्यसुरेज्यचन्द्राः कुर्वति ते जन्मनि जारजातम् ।

यद्वा तनौ सूर्यसुतेन दृष्टाः शुभैश्च चन्द्रोदयभाग्वान्व्याः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नीचराशियें प्रात् सूर्य, बृहस्पति, चंद्रमा
हों तो वह बालक परपुरुषसे उत्पन्न कहना चाहिये अथवा चंद्रमा, शुक्र लघ्नमें
स्थित हों उसको शनैश्चर देखता हो तो जारजात कहना चाहिये ॥ १५ ॥

अथ न जारजातयोगः ।

चन्द्रे गुरुक्षेत्रगतेऽथ वा चेत्सुरेज्ययुक्तेऽन्यगृहे स्थितेऽब्जे ।

गुरोद्वकाणेऽथ नवांशके वा न जारजातस्तु भवेत्प्रसूतिः ॥ १६ ॥

चंद्रमा बृहस्पतिके स्थानमें स्थित हो अथवा बृहस्पति करके चंद्रमा
युत वा दृष्ट हो अथवा बृहस्पतिके द्रेष्काण अथवा नवांशमें चंद्रमा स्थित
हो अथवा इसी प्रकार लघ्न हो तो वह मनुष्य अपने ही बापकरके उत्पन्न
कहना ॥ १६ ॥

न लघ्नं पश्यतद्दिं च जीवः सूर्योपेतं शीतराश्मि च यद्वा । साकें चन्द्रे पापयुक्तेऽ-
थवा स्यान्निःसंदिग्धं जारजातस्य जन्म ॥ अत्र सूर्येन एकत्र पृथक्स्थौ वा पापयुक्तौ
शुरुणा न दृष्टे जारजातजन्मकर्ता इत्युक्तं शुक्रजातके—न पश्यति गुरुश्चेद्रे लघ्नं वा
परजातकः । साकेंदुनेक्षिते जीवः सूर्येनूपापसंयुतौ ॥ एकस्थौ वा पृथक्स्थौ वा
नैकितौ शुरुणा तथेति । योगांतरमाह गुणाकरः—नीचस्थिताश्चन्द्रदिवाकरेज्याः कुर्व-
त्यमी जन्मनि जारजातम् । लग्नेऽथवा सूर्यसुतेन दृष्टाः सौम्यैश्च शुक्रोदयशीतभासः॥
अथ तिथिवारक्षयोगानाह—स्वाती द्वितीयारविवास्थोगे सीमात्मजे सप्तमिरेवतीषु ।
स्याद्वादशी वासवमेंदवारे जारेण जाते प्रवदाति चालम् ॥ नवमस्थो गुरुर्यत्र धने चंद्रो-
ऽक्षमण्डले । अन्यजातः स विज्ञेयो योगोऽस्मिन्वतिते द्वुवम् ॥ चन्द्रारभानवः पष्ठा गुरुः
पञ्चमगो यदि । योगोऽस्मिन्नात्र सदिहस्यान्यजातः स उच्यते ॥ अर्थमण्डलं स्याद्राव-
वासराष्ट्री विश्वं चतुर्था गुरुवासरं च । हिर्षुधनं भौमादिनं चतुर्दशीं स्याज्ञारजात-

(२३६)

ज्योतिषश्यामसंव्रहः ।

स्य च जन्मकाले ॥ दिनांतं च तिथिप्रांते लग्नप्रान्ते च सूतिषु । वारस्यान्ते च यो
जातः सोऽन्यजातः प्रकीर्तिः ॥ लग्नपादक्षसंयोगाद्वितीया द्वादशी यदि । सप्तमी
चार्कमन्दारे जारतो जायते शुब्रम् ॥ अत्रापवादमाह गार्गिः—गुरुक्षेत्रगते चन्द्रे तद्युक्ते
अन्यराशिके । तद्वेष्टकाणे तदेशे वा न पैर्जात इष्यते ॥ शुक्रजातके सौम्यराश्यंशगे
चन्द्रे जारजातयोगापवाद उक्तः—सौम्यराश्यंशगे चन्द्रे गुरुराश्यंशगेऽपि वा । जार-
जातस्य योगेऽपि न पैर्जात इष्यते ॥

अथ कारागारगृहे जन्मज्ञानम् ।

लग्नेदुभ्यां द्वादशे सूर्यपुत्रे गुप्त्यां सूतिवीक्षिते पापखेटैः ।

लग्ने कक्षे वृश्चिके मंदयुक्ते गर्तायां स्याच्चंद्रयुक्ते प्रसूतिः ॥ १७ ॥

जन्मलग्नके बीचमें चंद्रमा स्थित हो और बारहवें स्थानमें पापग्रहोंसे
दृष्ट शनैश्चर स्थित हो तो ऐसे योग जिसके पढ़े वह मनुष्य बंधनके स्थान
अर्थात् जेलखाना वा हवालातमें उसका जन्म कहना चाहिये ॥

अथ गर्तस्थजन्मज्ञानम् ।

वृश्चिक अथवा कर्कलग्न जन्मकालकी हो उसमें शनैश्चर स्थित हो
चंद्रमा युक्त अथवा दृष्ट हो तो उस बालकका जन्म गढ़े अथवा खाईमें
कहना चाहिये ॥ १७ ॥

अथ नौकाजन्मज्ञानम् ।

लग्ने सौम्ये वेश्मगे सौम्यखेटे प्रालेयांशौ स्वक्षणे पूर्णदेहे ।

आये लग्ने द्यूनगे वा मृगांके गर्भों नूनं सूयते नावसंस्थः ॥ १८ ॥

जन्मलग्नमें बुध स्थित हो और चतुर्थ स्थानमें शुभ यह स्थित हों
और चंद्रमा कर्कराशिमें पूर्ण स्थित हो अथवा जलचर राशि लग्नमें हो
और लग्न वा सप्तम वा एकादश स्थानमें चंद्रमा स्थित हो तो निश्चय
करके बालकका जन्म नावमें कहना चाहिये ॥ १८ ॥

सौम्ये लग्ने पूर्णे स्वगृहगते शशिनि सलिलपातालस्थैर्च शुभैर्जलजे लग्नेऽस्तगे
शशिनि । अत्र स्वराशिगे पूर्णेदौ बुधे लग्नगे अन्यैः सौम्यैश्चतुर्थगैः सलिलसम्पाते
सलिलं जलं तत्र सम्पातः सम्बन्धो यस्येति नौकादिके जन्म वाच्यम् । अत्र बुधात्
शुक्रस्य चतुर्थगत्वासम्भवाचतुर्थगो गुरुर्जेयः । उक्तं च समुद्रजातके—पूर्णेदौ स्वगृह-
गते जीवे तुय तरीगत इति । अथवा जललग्ने सप्तमेंदौ नौकायां जन्म वाच्यम् ॥

अथ ऊषरभूमिजन्मज्ञानम् ।

लग्ने नीरे मंदयुते दृष्टे चंद्रार्कचन्द्रजैः ।

ऊषरे देवतागारे क्रीडागेहे क्रमात्सवः ॥ १९ ॥

शनैश्चर जलचरराशिमें स्थित होकर लग्नमें स्थित हो उसको चंद्रमा देखता हो तो ऊषरभूमिमें बालकका जन्म कहना चाहिये ॥

अथ देवगृहे जन्मज्ञानम् ।

पूर्वोक्त योग हो और शनैश्चरको सूर्य देखता हो तो उस बालकका देवताके स्थानमें जन्म कहना ॥

अथ क्रीडागेहे जन्मज्ञानम् ।

पूर्वोक्त योग रहते शनैश्चरको बुध देखता हो तो उस बालकका जन्म क्रीडागेह अर्थात् खेलनेकी जगह वा विहारभूमिमें कहना चाहिये ॥ २० ॥

अथ उदयस्थिते रविजे जलजविलग्ने बुधेन दृष्टे क्रीडागेहे प्रसवः । रविणा दृष्टे देवागारे वा मखालये प्रसवो भविष्यति । चंद्रेण दृष्टे ऊषरभूमौ वा अरण्यगिरिविन-दुर्गे प्रसवो ज्ञेयः ।

अथ श्मशाने जन्मज्ञानम् ।

पुंलग्नस्थे भानुसुते श्मशाने शैलिपके गृहे । भूपालये च गोष्ठे च देवागारे मखालये ॥ २० ॥ वीक्षितैभौमसौम्येदुशुक्रार्कगुरुभिः क्रमात् । प्रसवोऽयं समाख्यातः सत्यलङ्घादिसूरभिः ॥ २१ ॥

दुरुषलग्न अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ, धनका पूर्वार्द्ध इन मनु-व्यराशियोंमेंसे किसी राशिमें स्थित शनैश्चर लग्नमें स्थित हो तो श्मशान अर्थात् मरघट, शैलिपक अर्थात् राजगीरी करनेवालेके मकानमें, राजाके घरमें, गोशालामें, देवस्थान और यज्ञशालामें क्रमसे जन्म कहना चाहिये ॥ २० ॥ अर्थात् भौम, बुध, चंद्रमा, शुक्र, सूर्य बृहस्पतिकरके देखा जाय तो क्रमसे प्रसव कहा गया । सत्याचार्य, लङ्घाचार्यको आदि लेकर पहिले आचार्योंने अर्थात् नरराशियोंमेंसे किसी राशिमें स्थित शनैश्चर लग्नमें बैठा हो उसको

मंगल पूर्णदृष्टिसे देखता हो तो उस बालकका जन्म मुर्दा फूकनेकी जगहमें होना चाहिये और जो बुध देखता हो तो उस बालकका जन्म राजगीरी करनेवालेके मकानमें कहना चाहिये और जो चंद्रमा देखता हो तो राजाके घरमें जन्म कहना चाहिये और जो शुक्र देखता हो तो उस बालकका जन्म गोशालामें कहना चाहिये और जो सूर्य देखता हो तो देवालयमें जन्म कहना, जो बृहस्पति देखता हो तो उस बालकका जन्म अमिन्दिगाला वा यज्ञशालामें कहना चाहिये यह सत्यलङ्घादि आचार्योंका मत है ॥ २१ ॥

नरविलगे रुधिरेक्षिते इमशाने शिलिपकीनिलये च सौम्येन सूर्येक्षिते गृह्यवद्वालये शुक्रेदुजाभ्यां रमणीयदेशे । सुरेज्यदृष्टे द्विजवद्विहोत्रे नरोदये संप्रवदंति सूतिम् ॥ अत्र वृत्ताशिगे शनौ भौमादिदृष्टे इमशानादौ जन्म वाच्यम् । उक्तं च समुद्रजातके पुलग्रं पञ्च पश्येदर्कादिश्चैत्यगांकुले । चरे इमशाने शिलीचगृहे वद्विगृहे प्रसूतिः ॥

अथ अरण्ये जन्मज्ञानम् ।

यदैकराशिगौ लग्नचंद्रौ दृष्टिविवर्जितौ ।

विजने प्रसवः प्रोक्तो मणित्थाद्यैश्च सूरिमिः ॥ २२ ॥

जो एक राशिमें लग्न और चंद्रमा दोनों हों और लग्नगत एक ही नवांशमें हों उनको कोई अह नहीं देखता हो तो उस बालकका जन्म जिस जगह मनुष्य न रहते हों अर्थात् शून्यस्थल वा जंगलमें जन्म कहना चाहिये ॥

अथ नराणां समूहे जन्मज्ञानम् ।

और जो पूर्वोक्त योग हो और लग्नम बहुतसे व्रह स्थित हों और चंद्रमाको देखते हों तो बालकका जन्म बहुतसे जहां स्त्रीपुरुष हों वहां कहना चाहिये, मणित्थको आदि ले विद्वानोंने कहा है ॥ २२ ॥

लग्नेदू यदेकराशिसंस्थौ तदाटव्यां जन्म । अत्र बहुवचनात् तत्र आदिभिरेकराशिगैर्ग्रहलग्नेदू न दृष्टौ तदा अटव्यां जन्म विजने जन्म अर्थात् दृष्टौ जनाकीणे जन्म वाच्यम् । अत्रैकराशिगैः सौम्यैरेव योगो भवति ॥

अथ सलिले जन्मज्ञानप् ।

आप्योदयमाप्यगः शशी संपूर्णः समवेक्षितोऽपि वा ।

मेषूरणबंधुलग्नः स्यात् सूतिः सलिले न संशयः ॥ २३ ॥

जलचर लघ्मे जन्म हो अर्थात् कर्क मकरका परार्द्ध, मीन इन जल-
राशियोंमें कोई राशि लघ्मे स्थित हो और पूर्ण चंद्रमाभी जलचरराशिमें
स्थित हो तो जलके किनारे जन्म कहना। अथवा लघ्मे स्थित जलचर-
राशिको पूर्ण चंद्रमा देखता हो तो द्वितीयो योगः। अथवा जलचरराशिमें
स्थित चंद्रमा दशमें वा चतुर्थ वा लघ्मे स्थित हो तो भी निश्चय करके
जलके किनारे उत्पन्न हुआ बालक जानना चाहिये ॥ २३ ॥

अथ जन्मदेशज्ञानम् ।

चरेभांशचारेण तुल्ये पथि स्यात्प्रसूतिः स्थिरे स्वर्क्षणैः खेचरेन्द्रैः ।
निजांशस्थितैः स्वीयगेहेऽथवीर्यात्फलं भांशयोर्होरिकेद्वा वदंति २४

जन्मलघ्मे जिस राशिके नवांशका उदय हो उस राशि या नवांश
राशिके सदृश अर्थात् ‘शेषाः स्वनामवत्परे’ प्राणी जिस स्थानमें वास करता
हो उसी स्थानमें जन्म कहना चाहिये और जो वह राशि जन्मलग्नकी
हो अथवा नवांश राशि चरसंज्ञक हो तो उसके तुल्य प्राणी जिस मार्गमें
विचरता हो उसी मार्गमें जन्म कहना चाहिये. और जो स्थिरसंज्ञक
जन्मलग्न नवांश हो तो उस प्राणीके घरमें जन्म कहना चाहिये और
द्विस्वभावसंज्ञक जन्मलग्न नवांश दोनों हों तो उस प्राणीके घरके बाहर
जन्म कहना चाहिये और जो जन्मलग्नमें अपनी राशिके नवांशका
उदय हो तो उसके समान प्राणीके घरमें जन्म कहना चाहिये और जहाँ
जन्मलघ्मपर राशि नवांशराशि पृथक् हो तो उनमें जो बलवान् हो उसी
के योगके जन्मका स्थान कहना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ जन्मगृहज्ञानम् ।

तातांबाभवनेषु तद्वलवशान्नीचस्थितैः साधुभिः ।

सूतिः स्यात्तरुशालकादिषु तदा यदा तरोराश्रितम् ॥ २५ ॥

पूर्वोक्त पितृसंज्ञक पितृव्यसंज्ञक अर्थात् जो बालक दिनमें उत्पन्न हो तो
उस बालकका सर्व पिता और शुक्र माता है; रात्रिमें उत्पन्न हो तो उस बाल-
कका शनैश्चर पिता और चंद्रमा माता है और दिनमें उत्पन्न हो तो शनैश्चर

पितृव्य अर्थात् पिताका भाई और चंद्रमा मातृष्वसृसंज्ञक अर्थात् मौसी है और रात्रिमें जन्म हो तो उस बालकका सूर्य पितृव्यसंज्ञक और शुक्र मौसी है इन सब ग्रहोंमें जो सबसे बलवान् हो उसीके घरमें बालकका जन्म कहना चाहिये । यथा जो पितृसंज्ञक बलवान् हो तो पिताके घरमें और मातृसंज्ञक बलवान् हो तो माताके संबंधियोंके घरमें अर्थात् नानी के घरमें जन्म कहना चाहिये और पितृव्यसंज्ञक बलवान् हो तो पिताके भाई या बुआ आदिके घरमें जन्म कहना और मातृष्वसृसंज्ञक बलवान् हो तो माताकी बहिन या मामा इत्यादिके घरमें जन्म कहना चाहिये और जो सम्पूर्ण शुभव्यह अपने नीचस्थानमें स्थित हों तो उस बालकका जन्म साधुके स्थान वा वृक्षोंके नीचे मकानमें अथवा बगीचेमें अथवा इनके समीप कहना चाहिये ॥ २५ ॥

अथ पितृमातृगृहवर्गे तत्स्वगृहेषु बलयोगात् पितृमातृग्रहौ प्रयुक्तौ तद्वलौ पितृ-
मातृगृहेषु सूतिर्वक्तव्या । तत्रार्कशन्योरन्यतरोऽपरो यदि बलवान् भवति तदा पितृ-
गृहे पितृष्वसृपितृव्यादिगृहे प्रसूतिः । यदि चन्द्रशुक्रयोरन्यतरो बलवान् वा भवति
तहा मातृगृहे वा मातृष्वसृगृहे मातुलादिगृहे प्रसूतिरिति वक्तव्यम् । प्रकारान्तरं
तरुनदीपु च प्रसवो नीचाश्रितैः सौम्यैः तदा साधुभिः ॥

अथ द्विशालादिगे हैं जन्म ।

चेत्तुंगादधिकोनकेऽथ परमोद्भांशस्थिते वा गुरुः

खस्थे द्वित्रिचतुर्थभूमिकमदः कुर्यात्तदा मंदिरम् ।

एवं वीर्ययुते शरासनगते तद्विशालं गृहं

चेदन्येषु समर्थकेषु सुधिया वाच्यं द्विशालं गृहम् ॥ २६ ॥

जन्मलघ्नसे दशमस्थानमें बृहस्पति कर्कराशिमें स्थित अपने परमोद्भ
भागमें बैठा हो अर्थात् दो वा तीन अंशके भीतर बृहस्पति हो तो उस
बालककी उत्पत्ति दुमजले मकानमें कहनी चाहिये, और जो दशमस्थान
स्थित कर्कराशिवर्ती बृहस्पति तीन अंशके ऊपर और चार अंशके भीतर
स्थित हो तो तिखने मकानमें संतानोत्पत्ति कहनी और पुर्वोक्त बृहस्पति
चार अंशसे ऊपर और पांच अंशके अव्यवर्ती स्थित हो तो चार सनके

मकानमें संतानोत्पत्ति कहनी चाहिये और जो बृहस्पति धनराशिवर्ती दशम स्थानमें स्थित हो तो उस बालककी उत्पत्ति तीन खनके मकानमें होनी चाहिये और पूर्वोक्त बृहस्पति मीन, मिथुन, कन्याराशिवर्ती दशम स्थानमें स्थित हो तो भी उस बालककी उत्पत्ति दुमजले मकानमें होनी चाहिये परंतु ये योग बड़े शहरोंमें वा राजा रईसोंके यहां विचारकर कहना चाहिये॥२६॥

अथांधकारे जन्मज्ञानम् ।

मंदक्षीरे शशिनि हिबुके मंदहृष्टब्जगे वा तद्युक्ते वा तमसि
शमनं नीचसंस्थैश्च भूमौ । यद्ग्राशिर्वजति हरिजं गर्भमो-
कस्तुतद्वत्पापैश्चंद्रात्समरसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्यः ॥ २७ ॥

जिस प्राणीके जन्मकालमें चंद्रमा चाहे जिस किसी राशिमें स्थित हो परंतु शनैश्चर नवांशोंमें हो तो बालकके माताकी खाट अंधेरेमें कहना चाहिये(एको योगः) अथवा लग्नसे चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा स्थित हो तो भी बालकका जन्म अंधेरेमें कहना(द्वितीयो योगः) अथवा किसी स्थानमें स्थित चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो तो भी पूर्वोक्त फल कहना(तृतीयो योगः) अथवा किसी राशिमें स्थित चंद्रमा कर्क वा मीनके नवांशमें स्थित हो तो भी अंधकारमें जन्म कहना (चतुर्थो योगः) अथवा शनैश्चर संयुक्त चंद्रमा किसी राशिमें स्थित हो तो भी अंधकारमें जन्म कहना चाहिये और इन पूर्वोक्त योगोंमें चंद्रमाको सूर्य देखता हो या सूर्यसहित हो तो दीपकादिके प्रकाशमें जन्म कहना चाहिये और इसी तरह गर्भाधानकालमें भी विचार कर लेना और जो पहिले अंधकारके योग कह आये हैं जो प्रसवकालके समय अंधकार न हो तो ये जान लेना कि बालककी उत्पत्तिके समय घबराहटसे दीपक उठाया था सो दीपक बुझ गया होगा, दूसरा एक दीप बाल लिया होगा॥

अथ भूमिशयनज्ञानम् ।

और जो तीन अहोसे अधिक यह अपने नीचस्थानमें स्थित अथवा नीचके नवांशमें स्थित हों तो बालककी उत्पत्ति चटाई बिछी हुई भूमि अथवा

तृणादिके ऊपर होनी चाहिये और उसीपर माता और प्रसवका शयन भी होना चाहिये । जन्मलघ्नमें जो राशि स्थित हो उसको जिस प्रकारकी पृथ्वी मिली हो तैसी ही भूमिमें बालककी उत्पत्ति कहनी चाहिये, केवल आकाशसंबंधी भूमिको त्याग देना चाहिये ॥

अथ मातृकष्टज्ञानम् ।

और जो चंद्रमा पापग्रहसहित होकर लघ्नसे चतुर्थ वा सप्तम स्थित हो तो प्रसवकालमें माताको क्लेश कहना चाहिये ॥ २७ ॥

तथा च यवनेश्वरः—सौरांशकस्थे शशिनि प्रलग्ने जलक्ष्मीशक्मित्रश्रिते वा । स्वांशस्थिते सौरविलोकिते वा जातस्तमसि च दिवार्कदृष्टः ॥ सौरांशे जलजांशे चन्द्रार्कजसंयुतोऽथवा हिबुके । तदृष्टे वा कुर्यात्तमसि प्रसवं न सन्देहः ॥

अथ कष्टकालज्ञानम् ।

पापाधिकारे तु घटी मुहूर्तः स्याद्विष्टपातेऽथ युतौ तु पापौ ।

द्यूने चतुर्थे प्रविचार्य सम्यग्वाच्यातिपीडा जनने जनन्यः ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लघ्नसे सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें जो पापग्रहोंने अधिकार पाया हो तो प्रसवसे पहिले दो घटी माताने कष्ट पाया है और पापग्रह उसी चतुर्थ सप्तम स्थानको देखते हों और पापग्रहोंने अधिकार भी पाया हो तो प्रसवकालके एक प्रहर पहिले माताको कष्ट हुआ और जितने पापग्रहोंने अधिकार पाया हो उतने प्रहर वा दिन प्रथम माताको कष्ट कहना चाहिये ॥ २८ ॥

अथ बहुदीपज्ञानम् ।

बलान्वितेऽके कुजवीक्षिते चेत्सौरेण वा स्युर्बहवः प्रदीपाः ।

व्ययस्थितैरन्यखगैः सर्वायैज्योतिस्तृणैः स्याद्वदतीति गर्गः ॥ २९ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें बलवान् सूर्य हो और उसका मंगल वा शनैश्चर देखता हो तो प्राणीकी उत्पत्तिके समय बहुतसे दीपक कहना चाहिये ॥

अथ तृणज्योतिर्ज्ञानम् ।

और जो अन्यग्रह बारहवें स्थानमें स्थित हों और पूर्वोक्त योग भी हो तो कहना कि बालकके प्रसवके समय तृण वा काष्ठादिककी ज्योति करी है ॥ २९ ॥

सारावल्याम्-बलवति सूर्ये दृष्टे बहुप्रदीपान् वदेत् कुपुत्रेण । अन्ये व्ययगतवीर्यैः सूतौ ज्योतिस्तुर्ज्योतिर्वति ॥ भौमार्कजरहितैर्न्यग्रहैर्बलहीनैः सूतौ तृणज्योतिरिति ॥

अथ मातृत्यक्तपुत्रज्ञानम् ।

आराकजयोत्त्रिकोणगे चन्द्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया ।

दृष्टे सुरराजमंत्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च संस्मृतः ॥ ३० ॥

जिस बालकके जन्मकालमें मंगल, शनैश्चर एक राशिमें स्थित होकर किसी स्थानमें स्थित हों उनसे पंचम वा नवम या सप्तम स्थानमें चंद्रमा स्थित हो तो उस पैदा हुई संतानको माता त्याग देती है और जो पूर्वोक्त योग हो चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो तो वह माता करके त्याग करी हुई संतान दीर्घायु सुखी बहुतकालतक रहती है ॥ ३० ॥

कुजसौरयोत्त्रिकोणे चन्द्रेऽस्तगते विसृज्यते मात्रा । दृष्टे सुरेन्द्रगुरुणा सुखा-निनौ दीर्घजीवी च ॥ अत्रैकराशिगयोभौमशन्योर्योगो ज्ञेयः । उक्तं च समुद्रजातके-एकस्थाकर्यारयोः कोणस्ते त्यज्यन्तेऽवया इति ॥

अथ मातृत्यक्तमृत्युयोगः ।

पापेक्षिते तुहिनगाबुदये कुजेऽस्ते त्यक्तो विनश्यति कुजार्कज-योस्तथाये । सौम्येऽपि पश्यति तथाविधहस्तमेति सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनायुः ॥ ३१ ॥

पापग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा लग्नमें स्थित हो और सप्तम स्थानमें मंगल स्थित हो तो माताकरके त्याग किया हुआ बालक मृत्युको प्राप्त होता है । अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा जन्मलघ्नमें स्थित हो और बारहवें स्थानमें मंगल शनैश्चर स्थित हों तो भी माताकरके त्याग करा हुआ बालक मृत्युको प्राप्त होता है अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा लघ्नमें स्थित हो और उसे शुभग्रह भी

देखते हों तो माताकरके त्याग करी हुई संतानको जैसे शुभग्रहोंकरके दृष्टि हो तैसे ही सदृश ब्राह्मणादि वर्णके किसी मनुष्यके हाथ प्राप्त होता है अर्थात् चंद्रमाको देखनेवाले शुभग्रह वा पापग्रह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चारों वर्णोंमें जिसका ईश हो उसी वर्णके मनुष्यके हाथ लगता है और नाशको प्राप्त होता है और जो चंद्रमाको बहुतसे ग्रह देखते हों उनमें जो बलवान् हों तैसे ही वर्णके मनुष्यके हाथ लगता है, इन पूर्वोक्त योगोंमें चंद्रमाको पापग्रह देखते हों और बृहस्पति न देखता हो तो माताकरके त्याग किया हुआ बालक मृत्युको प्राप्त होता है, अगर बृहस्पति देखता हो तो माताकरके त्याग किया हुआ बालक दीर्घायु सुखी होता है ॥ ३१ ॥

शशिनि विलग्ने कुजेऽस्तगे त्यक्तः लग्नेऽस्तलाभगतवसुधासुतमंदयेरेवम् । अत्र लग्नस्थचंद्रे पौर्वोक्ते सप्तमैकादशे स्थितयोः भौमशन्योर्मात्रा त्यक्तो म्रियते । उक्तं च सूर्यजातके लग्नेऽब्जे पापसंदृष्टे वसुधासुतमंदयोः । लाभास्तस्थितयोर्बालो मात्रा त्यक्तो विनश्यति । पश्यति सोमे बलवति बालं गृह्णाति तादशो जातः । शुभपापग्रहदृष्टेः पौर्वोक्तोऽपि स म्रियते ॥ पूर्वोक्तयोगद्वये चन्द्रे सबलशुभग्रहदृष्टे तादग्नब्राह्मणादिवर्णो मात्रा त्यक्तं बालं गृह्णाति । उक्तं च सोमजातके-मातृसंत्यक्तयोगेषु चन्द्रे पश्यति यः शुभः । ग्रहवर्णसमो बालं गृह्णाति नियतं नरः ॥ शुभपापदृष्टे चन्द्रे परहस्तगतोऽपि बालो म्रियते । एकांशावस्थितयोर्यमारयोस्त्यज्यते मात्रा ॥ सर्वेष्वेतेषु योगेषु यदा शशी सुरज्यसंदृष्टो भवति तदा दीर्घायुः परहस्तगतः ॥

अथ पितृपरोक्षजन्मज्ञानम् ।

न प्राग्विलग्नं यदि पश्यतींदुर्जशुक्रयोर्मध्यगतेऽथ वाब्जे ।

यमोदये वा कुसुतेऽस्तसंस्थे पितुः परोक्षस्य तदा हि जन्म ॥ ३२ ॥

जन्मलग्नको चंद्रमा नहीं देखता हो तो पिताके परोक्षमें बालककी उत्पत्ति कहनी चाहिये (एको योगः) अथवा बुध और शुक्रके बीचमें चंद्रमा स्थित हो (द्विं योगः) अथवा लग्नमें शनैश्चर स्थित हो, लग्नको चंद्रमा न देखता हो (तृतीयो योगः) अथवा मंगल सप्तम स्थित हो और चंद्रमा लग्नको न देखता हो (चतुर्थो योगः) इन योगोंमें उत्पन्न हुए बालकका पिताके परोक्षमें रहते जन्म कहना चाहिये ॥ ३२ ॥

चरराशिस्थितेऽके नवमाष्टमस्ये पितरि जन्म वाच्यम् । अस्मिन् योगेऽपि लघ्ने
चन्द्रदृष्टिवर्जितमित्युक्तं श्रीशुकेन—“चरराशिस्थिते भानोर्नवमाष्टमसंस्थितः । शिशोः
पिता विदेशस्थो लघ्ने चन्द्रेण नेक्षिते” इति ॥ लघ्नस्थिते वासरनाथपुत्रे यामित्रसंस्थे-
इत्यथवा महीने । चन्द्रेऽथवा सूर्यमहीजमध्ये विदेशसंस्थे जनके बभूव ॥ दिनेकेः
कुजसंदृष्टो रात्रौ चन्द्रकुजेक्षितः । पितुः परोक्षे वक्तव्यं जननं जातकस्य च ॥

तनुर्न वीक्षिते विधौ चरक्षकांशसंधिगे ।

परोक्षसंस्थितस्य वा पितुर्जनुस्तदा भवेत् ॥ ३२ ॥

जन्मलघ्नको चंद्रमा नहीं देखता हो और चरराशियोंके संधिगत हो
अर्थात् अंतिम नवांशमें स्थित हो तो उस बालककी उत्पत्ति पिताके
परोक्षमें कहनी चाहिये ॥ ३३ ॥

अथ पितृमृत्युज्ञानम् ।

भौमेक्षितावर्कसितौ द्युरात्रौ तदा वदेत्तत्पितरं व्यतीतम् ।

चरक्षणौ भौमयुतेक्षितौ वा तदान्यदेशे जनकस्य मृत्युः ॥ ३४ ॥

भौमान्वितः सूर्यसुतश्वरक्षे भवेन्निशाजन्म हि मानवस्य ।

तदा व्यतीतं पितरं च वाच्यमशंकितं तद्विषयांतरे च ॥ ३५ ॥

मंगलकरके दृष्ट सूर्य शुक्र हों दिन अथवा रात्रिका जन्म हो तो उस
बालकका पिता मृत्युको प्राप्त कहना चाहिये अर्थात् दिनमें जन्म हो
और सूर्यको मंगल देखता हो तदा एको योगः, अथवा रात्रिका जन्म
हो और शुक्रको मंगल देखता हो तो उस बालकका जन्म पिताके परोक्ष
अर्थात् मृत्युको प्राप्त कहना चाहिये और वेही सूर्य शुक्र चरराशिमें स्थित
हों और दिन वा रात्रिका जन्म हो, पूर्वोक्त मंगल देखता हो तो उस बाल-
कका पिता परदेशमें मृत्युको प्राप्त कहना चाहिये ॥ ३६ ॥ मंगलकरके सहित
शनैश्चर चरराशिमें प्राप्त हो और रात्रिका जन्म हो तो उस बालकका
पिता विदेशमें मृत्युको प्राप्त हो गया ऐसा निःसंदेह कहना चाहिये ॥ ३७ ॥

तथाच—वाच्यं शिशोर्जन्म पितुः परोक्षे क्षणाकरः पश्यति चेन्न लग्नम् । चरस्थ-
तेऽकेऽष्टमध्यमें वा विदेशसंस्थे पितरीह वाच्यम् ॥ सूर्यमन्दौ चरक्षस्थौ भौमेन युवती-
क्षितौ । परदेशे पिता तस्य मृतो वाच्यो विनिश्चयात् ॥

अथ जन्मकाले पितृरोगज्ञानम् ।

व्याष्टसंस्थितौ खलौ विलग्नपे बलोज्जिते । तुरीयधर्मगौ हि वा पिता रुग्दितः स वै ॥ ३६ ॥ तनौ रवौ बलस्थिते शनौ तदीक्षिते यदा । पिता रुग्दितस्तदा कुजेक्षितेऽथवा भवेत् ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें वा अष्टम स्थानमें पापयह स्थित हों और लग्नपति बलवान् होकर चतुर्थ वा नवम स्थित हो उस बालकके जन्मकालमें उसका पिता रोगी कहना चाहिये ॥ ३६ ॥ लग्नमें सूर्य बलवान् होकर स्थित हो और जो शनैश्चर उसको देखता हो तो संतानके उत्पत्तिकालमें उसका पिता रोगी कहना चाहिये अथवा उसी लग्नस्थ सूर्यको मंगल देखता हो तो भी उस बालकके पिताको रोगी कहना चाहिये ॥ ३७ ॥

भाग्यबंधुगतौ पापौ लग्नेश बलवर्जिते । जन्मकाले पिता दुःखी शिशोरंगाश्चरिष्णे ॥ अकांशकस्थिते मंदे शुक्रेणैव निरीक्षिते । जन्मकाले पिता रोगी कुजे दृष्टेऽथवा युते ॥

अथ जन्मतः पूर्वं पितृमृत्युज्ञानम् ।

यत्र यत्र स्थितो भानुर्मदाराभ्यां समन्वितः ।

पितरं जन्मतः पूर्वं निर्वृतं नात्र संशयः ॥ ३८ ॥

जन्मकालमें चाहे किसी स्थानमें शनैश्चर मंगलकरके सहित सूर्य कहीं स्थित हो तो संतानके जन्मसे पहिले बालकका पिता मृत्युको प्राप्त हो गया है ॥ ३८ ॥

अथ मातृपितृमृत्युज्ञानम् ।

मंदस्त्रिकोणगश्चंद्रात्कुर्यान्मातृवधं निशि ।

दिवसे पापसंयुक्तौ दानवेज्यस्तथा कुजः ॥ ३९ ॥

सुखास्तसंस्थैर्यदि पापखेट्मातुः कलिवेदुयुतैश्च मृत्युः ।

सूर्याद्यमारौ प्रसवेऽस्तसंस्थौ शुभैरहष्टौ जनकस्य रिष्टम् ॥ ४० ॥

चंद्रमासे नवम अथवा पंचम शनैश्चर स्थित हो और रात्रिका जन्म हो तो उस बालककी माता मृत्युको प्राप्त हो और दिनका जन्म हो

और पापग्रहोंसे संयुक्त शुक्र और मंगल हों चंद्रमासे नवम वा पंचम स्थित हों तो पिताका नाश करे ॥ ३९ ॥ जिस बालकके जन्मकालमें चतुर्थ सप्तम पापग्रह स्थित हों चंद्रमा करके सहित हो तो माताको मृत्यु देता है और चंद्रमा सहित न हो तो माताको रोग देता है और सूर्य, शनैश्चर, मंगल जिसके जन्मकालमें सप्तममें स्थित हों और शुभग्रह नहीं देखते हों तो पिताको रोग देते हैं ॥ ४० ॥

इंदुतो नवमे द्यूने नैधने पापखेचराः ।

अखिलाः पितरं हन्युर्बालं जातं समातृकम् ॥ ४१ ॥

चंद्रमासे नवम सप्तम अष्टम जो पापग्रह स्थित हों तो वह संतान अपने पिताको नाश करता है और अपनी माताको भी नाश करता है ॥ ४१ ॥

द्वादशाष्टमगे पापे लग्नेश बलवर्जिते ॥ जन्मकाले शिशोर्दुःखी स बालो मातृनाशकः ॥

अथ विदेशस्थपितृबंधनज्ञानम् ।

क्रूरक्षगा क्रूरखगा यदि स्युर्दिवामणेधर्मसुतास्तमस्थाः ।

स्थिरादिभेदके जनकोऽन्यदेशो बद्धः स्वभावाद्विषयादिकेषु ॥ ४२ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें क्रूरराशियोंमें पापग्रह स्थित हों और सूर्यसे नवम पंचम सप्तम स्थित हों तो उस बालकका पिता बंधनमें कहना चाहिये। जो सूर्य स्थिर राशिमें स्थित हो तो स्वदेशमें बंधन कहना और जो सूर्य चरणशिमें स्थित हो तो विदेशमें बंधन कहना चाहिये और द्विस्वभावराशिमें हो तो मार्गमें बंधन कहना चाहिये ॥ ४२ ॥

सूर्याच्च पञ्चमे द्यूने नवमे क्रूरखेचराः । क्रूरैर्दृष्टाः स्थिरे राशौ स्वदेशो बंधनं पितुः ॥
चरेऽन्यदेशो मार्गे च ऽस्वभावे च बंधनम् । अस्मिन्नपि योगे सूर्यात्पञ्चमनवमस्थानां पापानां पापक्षगतत्वम् श्री प्रयोजकं पापदृष्टिश्च प्रयोजिकेत्पाद वराहः—कूरगतावशोभनौ सूर्यात् द्यूननवात्मने स्थितौ । बद्धस्तु पिता विदेशग इति ॥

अथ पितृमातृसमवलज्ञानम् ।

बलान्वितेऽके सदृशश्च पित्रा मात्रा समः शीतरुचौ सवीयें ।

त्रिंशांशके यस्य गतो विवस्वान् वाच्यो गुणस्तत्त्वचरस्य नूनम् ॥ ४३ ॥

जिस बालकके जन्मसमयमें सूर्य बलवान् हो तो वह बालक पिताके गुणके सदृश होता है और जो चंद्रमा बली हो तो वह संतान माताके समान होती है और जो सूर्य जिस ग्रहके त्रिशांशमें स्थित हो तो वह बालक उसी ग्रहके गुणोंकी माफिक होता है और चंद्रमा जिस ग्रहके त्रिशांशमें स्थित हो उसी ग्रहके समान लड़कीका स्वभाव कहना चाहिये अर्थात् सूर्य चंद्रमा जो सात्त्विक ग्रहके त्रिशांशमें स्थित हों तो बालक सात्त्विक स्वभाववाला होता है सतोगुणीके लक्षण ये हैं कि परजनोंपर कृपा करनेवाला, दीनोंपर दया करनेवाला, ब्राह्मण, देवता, शास्त्र, पिता, मातादिकोंमें भक्ति रखनेवाला, सत्यवादी, विनयविद्यावान्, शांतप्रकृतिवाला सत्त्वगुणी पुरुष होता है और जो सूर्य चंद्रमा राजसी ग्रहके त्रिशांशमें स्थित हो तो वह बालक राजसी होता है अर्थात् काव्य, कला, नृत्य, गान्, द्रव्य, सवारी, भूत्य, स्त्रियोंमें प्रवृत्त, विषयी, अभिमानी होता है और अपनी बड़ी कीर्ति को सुनकर प्रसन्न होनेवाला राजसीष्टकृत युक्त राजसी पुरुष होता है और जो सूर्य, चंद्रमा तामसी ग्रहके त्रिशांशमें स्थित हों तो वह बालक तामसी स्वभाववाला होता है, तामसीके लक्षण क्रोधयुक्त सदैव रहे, पराये धन वा स्त्रियोंका हरण करनेवाला, पराये वैभवको देखकर जलनेवाला, आलसी, अभिमानी, दुष्टवचनको बोलनेवाला, सबको दुःख देनेवाला, मद मांसका आहारी तामसी पुरुष होता है परंतु सूर्यसे पुत्रका स्वभाव कहना और चंद्रसे कन्याका स्वभाव कहना चाहिये ॥ ४३ ॥

अथ सर्ववर्णेषु लग्नात्सप्तमभवने भौमे रविपुत्रवीक्षिते निजभम् । यादृक् पश्यति सौम्य-स्तचुल्यगुणं शुभं समाधत्ते पितृजननीसाद्वश्यं रवेः शशांकस्य बलयोगात् वाच्यम् ॥

अथ बालकस्य हस्तदीर्घाङ्गज्ञानम् ।

लग्नस्थनं दलवपेन समस्तमूर्त्या पादग्रहो बलयुतस्तु तथैव यद्वा । वर्णो विधीर्नवलवेशसमस्तु बुद्धा जाति कुलं च विष-
यान् प्रवदेश वर्णम् ॥ ४४ ॥

जन्मलक्ष्मे जो नवांश हो तिसको स्वामीके सदृश मनुष्यके शरीरका आकार कहना चाहिये 'पूर्वार्द्ध विषयादयः कृतगुणा' इत्यादि करके हस्त दीर्घागज्ञान करना चाहिये और जिस राशिमें पापग्रह स्थित हों वली हो-कर शरीरके जिस अंगमें हों उसी अंगको निर्बिल कहना चाहिये और जिस अंगमें शुभग्रह वली होकर स्थित हो उसी अंगको पुष्ट कहना चाहिये, काल-पुरुषके अंग मेषादिराशि स्थित हो उनके हिसाबसे अंगको बड़ा छोटा कहना चाहिये । तहाँ लघु तो शिर है, द्वितीय मुख, तृतीय छाती, चतुर्थ हृदय, पंचम वक्षस्थल है, छठा स्थान कमर, सातवां स्थान लिंग-नाभिका मध्यभाग वस्ति है, आठवां स्थान लिंग, नवम अंडकोश है, दशम स्थान ऊरु है, एकादशस्थान जानु अर्थात् पैरके बीचकी गाँठें हैं, बारहवां स्थान जंघा और दोनों पैर हैं इन अंगोंको बड़ा छोटा कालपुरुषके बड़ी छोटी राशिसे कहना पापग्रहयुक्त राशियोंको बलहीन अंग कहना, शुभग्रह युक्त राशियोंसे वली पुष्ट अंग कहना चाहिये और चंद्रमा जिस नवांशमें स्थित हो तिसके स्वामीके समान वर्ण स्वरूप कहना चाहिये, जैसे पहिले प्रह्योनिप्रभेदाध्यायमें कह आये हैं "शूरा-स्थित्यसाररक्तगौर" इत्यादि वाक्यासे कहा है उसी माफिक कहना चाहिये । सम्पूर्ण फल बुद्धिमान् पुरुष कुल, जाति, देशोंको विचारकरके कहे यथा निषादजाति कोल भील इत्यादि जातिके मनुष्योंका श्याम रंग होता है तो उनको तैसाही कहना चाहिये, यथा क्षत्रियोंके कुलके मनुष्य गौरवर्ण होते हैं उनको गौरही कहना और देश काल विचारकरके भी फल कहना चाहिये जैसे कर्नाटक तैलंग विदेह इत्यादि देशोंके मनुष्य श्यामवर्ण होते हैं । गौरवर्णके मनुष्य इन देशोंमें कम होते हैं, तैसेही पांचाल कश्मीर गुरुंड देश अर्थात् विलायत गुर्जर, सिंध इत्यादि देशोंके मनुष्य गौरवर्ण होते हैं क्षत्री वा नागर वा काश्मीरी अंगरेज इन मनुष्योंका जातिस्वभाव गौरवर्णका है, यथा मध्यदेशके मनुष्य गौर श्यामवर्ण मिश्रित अथवा दोनों प्रकारके होते हैं तैसे नेपाल वा खस देशके मनुष्योंका चपटा मुँह और कंजी आंख ठिंगना कद होता है और

(२५०)

ज्योतिषश्यामसंयहः ।

मारवाड़देशी श्रियोंका स्वरूप मध्यमवर्ण और पेट बड़ा होता है इसी तरह अन्यदेश वा जातियोंकी माफिकबुद्धिमान् पुरुष विचार कर फल कहे॥४४॥

अथ मात्रा सह मृत्युयोगः ।

लग्नाष्टरिपुजामित्ररिःफस्थैः पापखेचरैः ।

सुतेन सार्द्धं जननी प्रियते नात्र संशयः ॥ ४५ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्न अष्टम छठे सप्तम बारहवें स्थानमें जो पापग्रह स्थित हों तो वह श्री अपने पुत्रकरके सहित शीघ्र मरणको प्राप्त होती है ॥ ४५ ॥

अथ पुत्रनष्टयोगः ।

षष्ठांत्यगेषु पापेषु माता जीवेन्न वै सुतः ।

लग्नाष्टसप्तमस्थेषु माता नश्येन्न वै सुतः ॥ ४६ ॥

छठे बारहवें जिस बालकके जन्मकालमें पापग्रह स्थित हों तो उस बालककी माता जीती रहती है और पुत्र मर जाता है ॥

अथ मातृनष्टयोगः ।

और जिस बालकके जन्मकालमें लग्न, अष्टम, सप्तम स्थानोंमें पापग्रह स्थित हों तो उस बालककी माता मर जाती है और बालक जीता रहता है ॥ ४६ ॥

अथोपसूतिकासंख्याज्ञानम् ।

लग्नाऽब्जान्तरसंस्थितैर्दिविचरैस्तुल्या वदेत्सूतिका

बाह्याभ्यन्तरदृश्यकोदितलेऽप्येवं तु मध्यस्थिताः ।

पूर्वादृश्यदलेऽपि बाह्यनुदिते चक्रस्य सौम्यैः शुभा

रूपादच्याः कलखेचरैस्तु बलिना मिश्रैर्विमिश्रा बुधैः॥ ४७ ॥

लग्नसे लेकर जिस स्थानमें चंद्रमा स्थित हो उतने बीचमें जितने ग्रह स्थित हों उतनी ही श्रियां उस संतान उत्पन्न करनेवाली श्रीके पास

कहना चाहिये जितने ग्रह हृश्य चक्रार्द्ध अर्थात् सप्तमस्थानसे लेकर लग्न पर्यंत स्थित हों उतनी ही ख्रियां सूतिप्रसवस्थानसे बाहर कहनी चाहिये और जितने ग्रह अदृश्य चक्रार्द्ध अर्थात् लग्नसे लेकर सप्तमभागपर्यंत स्थित हों उतनी ही औरतें प्रसवस्थानके भीतर कहनी चाहिये और जो अदृश्य चक्रार्द्धमें वा दृश्यचक्रार्द्धमें शुभ ग्रह स्थित हों तो वे औरतें शुभ रूपवान् भूषणयुक्त कहनी चाहिये और उन ग्रहोंके समान गुण, वर्ण, रंग, भूषण, वस्त्र, अवस्था, विधवा सौभाग्यवती कहनी चाहिये और पापग्रह बलवान् होकर चक्रमें स्थित हों तो उसी सदश कहना योग्य है और जो शुभग्रह पापग्रह दोनों स्थित हों तो मिश्रित फल कहना चाहिये ॥ ४७ ॥

शशिलग्नविवरयुक्ता ग्रहतुल्याः सूतिकाश्च वक्तव्याः । अनुदितचक्रार्द्धयुतैरंतरब-
हिन्यथा त्वेके ॥ लक्षणरूपविभूषणयोगस्तासां शुभैर्योगात् । क्रूर्विरूपदेहा लक्षण-
हीनाश्च गौद्रमलिनाश्च । मिश्रैर्मध्यमरुपा बलमहितैः सर्वैर्मेतद्वधार्यम् । अथ लग्नमारभ्य
राशिपर्यंतं गणना कर्तव्या तन्मध्ये बलिनो ग्रहाश्च अनुदितेऽदृश्ये चक्रार्द्धे यदि भवं-
ति ततुल्या उपसूतिका गृहमध्ये वक्तव्याः । अन्यथा दृश्यचक्रार्द्धे यदि भवंति तदा
गृहाद्विर्वाच्याः । लग्नादारभ्य सप्तमपर्यंतं अदृश्यं चक्रार्द्धं अपरं दृश्यम् । यदाह वराहः—
यावंतः शशिलग्नांतर्ग्रहास्तत्संख्यकाः सूतिकाः । उत्तरमध्यगा बाह्यास्तत्समलक्षणा
बहुसंमतत्वादयमेव मुख्यपक्षः । लग्ने च विशेषश्चांद्रिकामाम्—योषितो लग्ने चंद्रे
ग्रहाः स्युः सूतिकोद्भवा इति । अन्ये तु—उदगर्धस्थितैर्ग्रहैर्बाह्याः पूर्वार्द्धं ग्रहमध्ये मतः ।
आह जीवशर्मा—उदयशशिमध्यस्थैर्ग्रहैः स्पुरुपसूतिकास्तत्र उदगर्धस्थैर्बाह्या दक्षिणे
ज्ञेया इति । लग्ने तदीशपाश्च वाथवांतः स्युः खणापिनः । धनस्था व्ययगा ये च
तावंतः सूतिका वदेदिति । गृहस्थावितसूतिकायोगविशेषोक्तम् । तुर्ये दृष्टाः सूतिकाः
खेटतुल्याः स्वांशे स्ववर्गे द्विगुणादि ज्ञेयम् । अत्र चंद्रलग्नयोर्मध्ये ग्रहास्तिष्ठांति ततुल्याः
सूतिका ज्ञेयाः । अथ जन्मलग्नवशाङ्कुपसूतिकाज्ञानमुक्तं ग्रंथांतरे—मीने मेषे वदैदेकः
चत्वारि वृषकुंभयोः । सप्त बाणाश्च धनुषि कर्कटे द्वादश स्मृताः ॥ अन्यलग्ने भवेत्
त्रीणि सूतिकाया विनिश्चितम् । अय नृपादिगृहे बहुखीसंभवे लग्नवशेन उपसूतिका-
ज्ञानम् । खनंदा ९० मेषतुल्योऽस्त्रिनंदा ९३ वृषकन्ययोः । सप्तनागा ८७ खिनंदा ९३
श्च प्रोक्ताश्च मिथुने स्मृताः ॥ नंदींकाः ९९ कर्कमृगयोर्विज्ञेयाः सूतिकाः ख्रियः ।
बहुखीसंभवो वाच्यो नृपादीनां गृहे बुधैरिति । अत्र विशेषोक्तो जातकोक्तमे । युग्मा-
युग्मविलग्नस्य वश्यात्प्रसवकारिणी । विधवाः सधवा ज्ञेयाः क्रमाद्वलविचक्षणैः ॥
लग्नादृष्टमगः पापः पापादृष्टमगः शशी । उपसूती भवेद्रेङ्डा विज्ञेया उपसूतिका ॥

(२५२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

पञ्चमे सूर्यपुत्रश्च शशिशुक्रौ च कर्मगौ । तत्रैव कन्यका ज्ञेया शिशोर्जन्म विनि-
श्चितम् ॥ इति ।

अथ द्विगुणत्रिगुणोपसूतिका ।

वक्रोच्चसंस्थैस्त्रिगुणः स्वराशौ हके नवांशे द्विगुणाः स्वबुद्धया ।
नीचेऽस्तगेऽद्वै द्वृपसूतिकाख्या होराविदैर्द्वित्रिगुणे सकृद्वा ॥४८॥

जो यह अपने उच्चस्थानमें स्थित हो अथवा वक्री हो चक्रमें स्थित हो तो त्रिगुण ख्रियां सूतिका गृहके बारह वा भीतर कहनी चाहिये और जो यह अपनी राशिमें वा अपने द्रेष्काण नवांशमें स्थित हो तो उपसूतिका द्विगुण कहनी चाहिये अपनी बुद्धि करके और जो यह अपनी नीच राशिमें अथवा नीच नवांशमें वा अस्तंगत हो तो चक्रमें स्थित यहाँसे उपसूतिका आधी कहनी चाहिये, क्योंकि ज्योतिषी लोगोंने ऐसा कहा है कि जहाँ बहुतबार द्विगुण पाया जाय तहाँ एक ही बार द्विगुण करना चाहिये और जहाँ बहुतबार त्रिगुण पाया जाय वहाँ एक ही बार त्रिगुण करना क्योंकि ऐसा लिखा है 'एकं तु यद्वौरि तदैव कार्यम् । सकृद्वा द्विगुणं पदम्' ॥ ४८ ॥

अथ गृहमध्ये गृहज्ञानम् ।

तुलालिकर्काजघटे स्थितिः स्यात्स्थितिर्भवेच्छककुप्कमेण ।
मृगास्यहर्योर्वृषभेण चापि कन्यानृयुग्मांत्यशरासनाख्यैः ॥४९॥

तुला, वृश्चिक, कर्क, मेष, कुंभ इन राशियोंमें से कोई राशि भी लघ्रमें स्थित हो अथवा इन राशियोंके नवांश लघ्रमें स्थित हो तो घरमें पूर्वकी तरफ सूतिकागृह कहना चाहिये मकर, सिंह इनमें कोई राशि लघ्रमें स्थित हो अथवा इन राशियोंका नवांश लघ्रमें हो तो दक्षिणकी तरफ स्थानमें सूतिकागृह कहना योग्य है और वृष लघ्र वा वृषका नवांश लघ्रमें हो तो घरमें पश्चिमकी तरफ सूतिकागृह कहना चाहिये और जो कन्या, मिथुन, मीन, धन इन राशियोंमें से कोई राशि लघ्रमें स्थित अथवा इनका नवांश लघ्रमें स्थित हो तो उत्तरकी तरफ मकानमें सूतिकागृह कहे ॥ ४९ ॥

अथ सूतिकागृहचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कं.	मी.	राशि.
श्व.	वृ.	रथान.										
म.	वृ.	भाग.										

तथाच वराहः—मेषकुलीरत्नलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरुसौम्यगृहेषु । पश्चिमतश्च वृषेन निवासो दक्षिणभागकरौ मृगसिंहौ ॥

अथ सूतिकागृहद्वारज्ञानम् ।

द्वारं केन्द्रस्थैर्ग्रहैर्वीर्ययुक्तेऽन्यं नैवं चेत्तदा लग्नगेहात् ।

दृश्यो भागो वाममंगं निरुक्तं यो वादश्यो दक्षिणांगं मुनीन्द्रैः ५०

लग्नादि चारो केन्द्रोमें स्थित ग्रहोंके क्रमसे सूतिकागृहका दरवाजा कहना चाहिये अर्थात् केन्द्रमें जो ग्रह स्थित हो उस ग्रहकी जो दिशा कही है उसी दिशाके सामने सूतिकागृहका द्वार कहना । यथा—सूर्यकरके पूर्वको, शुक्रकरके अधिकोण, मंगल करके दक्षिण, राहु करके नैऋत्य, शनैश्चर करके पश्चिम, चंद्रमा करके वायव्य कोण, बुध करके उत्तर दिशा, बृहस्पति करके ईशान कोण कहना चाहिये । तथा—“रविः शुक्रो महीसूनः स्वर्भानुर्भा- नुजो विधुः । बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशां चैव तथा ग्रहाः ॥ इत्यमरः ॥ अन्ये तु वराहः—प्रागादा रविशुक्लोहिततमःशौरीदुष्टिसूरयः ॥” और जो चारों केन्द्र अर्थात् लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशममें कोई ग्रह न स्थित हो तो जन्म लग्न जिस दिशाके स्वामी हों उसी दिशाकी तरफ मकानका दरवाजा कहना । अथवा लग्नादिकेन्द्रोमें बहुतसे ग्रह स्थित हों तो उनमें जो अधिक बली हो उसी ग्रहकी दिशाके सामने सूतिकागृहद्वार कहना चाहिये ।

अथ वामदक्षिणे द्वारज्ञानम् ।

पूर्वोक्तकेन्द्रमें स्थित ग्रह दृश्यचक्रार्द्धमें स्थित हों तो सूतिकागृहके बाँई तरफको मकानका द्वार कहना और अदृश्यचक्रार्द्धमें स्थित हों तो सूतिकागृहसे दहनी तरफ मकानका दरवाजा कहना चाहिये ॥ ५० ॥

द्वारं केन्द्रगताद्वदंति बलिनो लग्नर्थतो वा वदेत् । विशेषः होरामकरंदे-एकद्वारं स्थिरांशे तु द्यंशद्वारं द्वयं वदेत् । चरांशे तु बहुद्वारं सूतिकासंभवं वदेत् ॥ रव्यादि-ग्रहमध्ये यः स पोपेक्षया प्रबलस्तादृशं सूतिकागृहं वक्तव्यम् । तथाच यदनः-संवर्द्धता चन्द्रमसोपलिप्तमिति । गृहद्वारनिर्णयमाह-जन्मकाले यः केन्द्रस्थो ग्रहो भवति तस्य या दिक् तदभिमुखं द्वारं वक्तव्यम्, यदि केंद्रे भूयांस्तदा तन्मध्ये योऽतिवली तदभि-मुखद्वारम्, यदि च केंद्रे कोऽपि ग्रहो नास्ति तदा लग्नराशिवशेन दिग्भिमुखं द्वारं वक्तव्यम्, लग्ने यो द्विरसांशस्तदभिमुखं सूतिकागृहद्वारं मणित्योक्तेः संवारदिक्त्वेनानु-भूतत्वात् लग्ने यद्राशिद्वादशांशाः तद्राशिद्वादशांशात् दिग्भिमुखं द्वारं वक्तव्यमिति ॥

अथ ग्रहस्वरूपज्ञानम् ।

संस्कारितं तु जरितं रविजे कुजे तु दग्धं च काष्ठसहितं न हृष्टं खरांशौ । रम्यं नवं भृगुसुते शशिजे विचित्रं सोमं नवं च धिषणे सुदृढं गृहं स्यात् ॥ ९१ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें सब ग्रहोंसे शनैश्चर बली हो तो सूतिकाघर मरम्मत किया हुआ पुराना कहना चाहिये और जो सब ग्रहोंसे मंगल बली हो तो जला हुआ सूतिकागृह कहना और सर्य बली हो तो काष्ठकर-के सहित कमजोर सूतिकागृह कहना चाहिये और जो शुक्र बलवान् हो तो रमणीक मनको प्रसन्न करनेवाला नवीन गृह कहना योग्य है और जो बुध बली हो तो विचित्र शोभायमान चित्रकारी किया हुआ अथवा बहुत तसवीरों सहित मकान कहना चाहिये और चंद्रमा बलवान् हो तो नया सूतिकाघर कहना और जो बृहस्पति बलवान् हो तो बहुत मजबूत सूतिकाघर कहना चाहिये और इन ग्रहोंके वामदक्षिण जो ग्रह स्थित हों तो पूर्वोक्त रीत्यनुसार सूतिकाघरके समीपके वरोंका फल कहना चाहिये, परंतु पूर्वोक्त ग्रह लग्नस्थ हों तो बहुत ठीक फलादेश मिलेगा ॥ ५१ ॥

जीर्ण काष्ठयुतं रवौ शाशिधरे स्यान्तूतनं मंदिरं दग्धं वास्तुजि भूरिशिल्पविहितं सौम्ये हृष्टं वाक्पतौ । कांतं चित्रयुतं नवं भृगुसुते जीर्ण मवेत्सूर्यजे इति ॥ जीर्ण संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ काष्ठादैर्यं न हृष्टं रवौ शशिसुते तत्रैकशि-ल्पोद्भवम् ॥ रम्यं चित्रयुतं नवं च धिषणे शुक्रे हृष्टं मंदिरं चक्रस्थैश्च यथोपदेश-स्वनासामंतपूर्वो वदेत् ॥ इति वराहः ॥

अथ सूतिकाशय्याज्ञानम् ।

द्वौ द्रावजाद्याः किल राशयः स्युः प्राच्यादितो व्रंगगृहं विदिक्षु ।
शय्या प्रवाच्याप्यथवा यथा स्याद्राहुस्तथैवेति वदन्ति केचित् ॥२

मेषादि दो दो राशियोंको क्रमसे सूतिकाशरमें पूर्वादि दिशाओंमें सूति-काकी शय्या कहनी और द्विस्थभावराशिके क्रमसे आश्रेयादिकोणमें सूतिकाकी शय्या कहनी योग्य है। यथा मेष, वृष इनमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो तो पूर्व दिशामें शय्या कहनी और मिथुन राशि जन्मलग्नकी हों तो आश्रेयकोणमें शय्या कहनी चाहिये, कर्क सिंह इनमेंसे कोई राशि-लग्नमें स्थित हो तो दक्षिण दिशामें शय्या कहनी, कन्या हो तो नैऋत्य कोणमें कहना और तुला वृश्चिकराशि लग्नमें स्थित हो तो पश्चिम दिशामें शय्या कहनी, धनराशि लग्नमें हो तो वायव्य कोण कहना, मकर वा कुंभराशि लग्नमें स्थित हो तो उत्तरदिशामें शय्या कहनी, मीनराशि लग्नमें स्थित हो तो ईशानकोणमें शय्या कहनी चाहिये और कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं जिस स्थानमें राहु स्थित हो उसी स्थानमें सूतिकाकी शय्या कहनी चाहिये “यत्र राहुस्तत्र शय्याः स्युः” ॥ ५२ ॥

द्वौ द्वौ क्रमात् क्रियमुखाः खलु राशयः स्युः प्राच्यादितो द्वितनवश्च विदिक्षु गेहे ।
शय्यासु तद्विदित पत्रिभवांत्यपादा भंगः खलैर्भवति ॥ २ ॥ क्रियमुखा मेषादयो राशयः
क्रमेण दिशासु ज्ञेयाः । तद्यथा—मेषवृषौ पूर्वस्यां, मिथुनश्चाग्नेयां, कर्कसिंहौ दक्षि-
णस्यामिति । तथा च लग्नराशिर्याद्विभागे भवति तद्विभागे शयनं वक्तव्यम् । तद्वत्
वास्तुवत् शय्यास्वपि वदेत् ॥

अथ खट्टाङ्गज्ञानम् ।

शीर्षस्यां त्रिर्दक्षिणे विक्रमक्षे वामः पादो द्वादशक्षे विचित्यः ।

एवं पृष्ठं धर्मभं दक्षवामौ खट्टाङ्गानां निर्णयोऽत्र स्वबुद्ध्या ॥५३॥

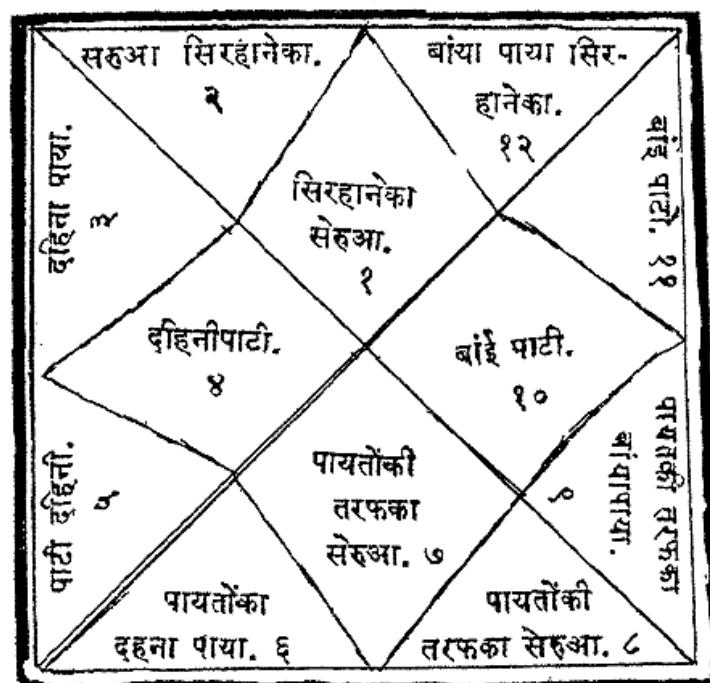
लग्नादि द्वादश भावोंमें क्रमसे शय्याके अंग जानने अर्थात् जिस लग्नमें जन्म हो उस राशिकी जो दिशा कह आये हैं उस दिशाको सूतिकाका सिरहाना कहना और लग्न द्वितीय ये दो भाव खाटके सिरहानेके हैं और

(२५६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

तीसरा स्थान सिरहानेका दाहिना पाया है और चतुर्थ पंचमस्थान दाहिनी पट्टी शश्याकी है और छठा स्थान शश्याका पायतकी तरफका दहना पाया है और सातवां आठवां स्थान शश्याकी पायत है और नवस्थान पायतकी तरफका बांया पाया है और दशम एकादश स्थान शश्याकी बाँई पट्टी है और बारहवाँ स्थान शश्याके सिरहानकी तरफका बांया पाया है । ये खाटके अंग अपनी बुद्धि करके निर्णय इस जगह करने ॥ ५३ ॥

अथ खट्टाङ्गचक्रम् ।



येन लग्नेन प्रसवस्तुत् शश्यायाः शिरः लग्नात्तृतीयभावः खट्टवायाः दक्षिणपादः द्वादशो वामपदः षष्ठस्तु पश्चात् दक्षिणः नवमो वामपद इत्यर्थः ॥

अथ खट्टांगघातज्ञानम् ।

खट्टांगे यत्र पापिष्ठास्तत्र घातस्तु तत्समः ।

वक्तव्यो दैवविदुषा वित्ततत्त्वद्विरूपमैः ॥ ५४ ॥

शश्याके जिस अंगपर पापग्रह स्थित हों उसी स्थानको अर्थात् शश्य के उसी अंगको घात कहना चाहिये और शश्याके जिस अंगमें शुभग्रह

स्थित हों उसी अंगको पुष्ट अथवा मजबूत कहना उचित है, दैवविद्वा
अर्थात् ज्योतिर्षी लेण विचार कर करें ॥ ५४ ॥

अथ शश्योपरि वस्त्रज्ञानम् ।

लग्नोत्ता दिशि खद्वायाः शिरोऽङ्गानि धिया ततः ।

लग्नं पश्यन्ति ये खेटास्तद्वास्तरणं विदुः ॥ ५५ ॥

लग्न करके कहे गये शश्याकी दिशा शिरसे लेकर पायतपर्यंत अंगों-
को लग्नके वास्ते जो वह देखते हों उसी वहका वस्त्र शश्यापर बिछा
कहना चाहिये और जो बहुतसे वह लग्नको देखते हों तो उसमें जो वह
बलवान् हो उसी वहके वस्त्रका बिछौना कहना चाहिये ॥ ५५ ॥

खद्वाङ्गे यत्र पापग्रहस्तत्र तत्सदृशा उपधातो वक्तव्यः । यत्र च द्विस्वभावराशय-
स्तत्र वितानत्वम् । तथाच सारावलयाम्-खद्वास्थितिभवनद्युतिविहगसमाने तत्र
चिन्नानि । आभरणानि च विद्या शुभद्वाष्टिकृतानि दैवज्ञः ॥ लग्नं ये खेटाः पश्यन्ति
तद् वस्त्रास्तरणं ज्ञेयम् । इति ॥

अथ लग्नवशेन उपसूतिकाज्ञानम् ।

अजद्विषे द्विमिता वृषकुंभयोः श्रुतिमिता हयकर्कटके शराः ।

मकरयुग्मतुलाधरकन्याकास्तवलिहरौ त्रिमिता द्युपसूतिकाः ॥ ५६ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें मीन अथवा मेष लग्न हो तो प्रसवकालके
समय दो स्त्री कहनी चाहिये और वृष वा कुंभलग्नमें जन्म हो तो चार
द्वियां कहनी चाहिये कर्क वा धन लग्न होय तो पांच उपसूतिका कहनी,
मकर, मिथुन, तुला, कन्या, वृश्चिक, सिंह ये जन्मलग्न हों तो तीन
द्वियां प्रसवकालके समय कहनी चाहिये ॥ ५६ ॥

अथ मातृवस्त्रज्ञानम् ।

मातृवस्त्रं वदेत्तत्र वा विलग्नवार्शपात् ।

तुर्येशवशतो वाच्यं सूते प्राङ्मातृभोजनम् ॥ ५७ ॥

जिस लग्नमें बालकका जन्म हो उस लग्नेशके वस्त्रको अथवा जन्म-

लघर्में जिस नवांशमें बालकका प्रसव हो उस नवांशपतिके समान वस्त्र-
को कहना चाहिये ॥

अथ मातृभोजनज्ञानम् ।

और जन्मलघर्में चतुर्थस्थान जो है उसके स्वामीके समान प्रसव-
कालके पूर्व माताका भोजन कहना चाहिये ॥ ५७ ॥

कठिनं मधुरं रूक्षं लेह्यपेयादिकं मृदु । सावणाम्लं गुणं दुग्धं
विचित्रं स्वल्पभोजनम् ॥५८॥ वटकाद्यं बहुरसं पेयादि मधुरं
हिमम् । क्रोधादिना कदशनं सूयादेः शोकपादतः ॥ ५९ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें जो चतुर्थेश सर्व हो तो प्रसवकालके
पूर्व कठोर, मिष्ठ, रूखा भोजन माताने किया है और जो चन्द्रमा हो
ता लसदार कोमल दुग्धादिक माताका भोजन कहना योग्य है और जो
चतुर्थेश भौम हो तो सखा हुआ अम्ल गुड वा दुग्धका भोजन कहना
चाहिये और बुधकरके विचित्र थोड़ासा भोजन कहना चाहिये ॥५८॥ और
जो चतुर्थेश बृहस्पति हो तो बहुत रसकरके संयुक्त पकौड़े वगैरेका भोजन
कहना चाहिये और शुक्रकरके दुग्धादिक मिष्ठ पदार्थ शीतल भोजन
कहना और शनैश्चर करके खट्टे, चरपरे, मांसादि अथवा भुना अन्न
भोजन बालकके प्रतवकालके पहिले माताका भोजन कहना चाहिये ॥५९॥

अथ प्रसवस्थाने धातुज्ञानम् ।

ताम्रं मणिः स्वर्णमतश्च शुक्री रौप्यं च मुक्ताफलकं च लोहम् ।
सूर्यादिभिर्विर्ययुते प्रवाच्या जावूनदं स्वर्क्षणते सुरेज्ये ॥ ६० ॥

जिस बालकके जन्मकालमें सब ग्रहोंसे सर्व अधिक बली हो तो
प्रसवस्थानके विषे तांबा ज्यादे कहना चाहिये और मंगल बली हो तो
सुवर्ण ज्यादे कहना और बुध बलवान् हो तो सीसा वा रांग वा कांसा ज्यादे
कहना और बृहस्पति अधिक बली हो तो चांदी ज्यादे कहना चाहिये और
शुक्र अधिक बली हो तो मोती ज्यादे कहना और शनैश्चर बलवान् हो तो

लोहा ज्यादे प्रसवस्थानमें कहना और जो वृहस्पति धन अथवा मीन-राशिका हो तो भी प्रसवस्थानमें सुवर्ण ज्यादे कहना चाहिये परंतु ये ग्रह लघवती हों तो पूरा फल कहना ॥ ६० ॥

**दीपः सूर्यादिङुतः स्नेहमानं वर्तिर्लग्नादेवमुक्तं पुराणैः । ज्ञातुं
शक्यं मंदधीभिन्नं तस्मात्सच्छिष्याणां प्रीतये प्रोच्यतेऽत्र ६१॥**

सूर्यकरके दीपक कहना चाहिये, चंद्रमाकरके दीपकका तैल कहना चाहिये और जन्मलग्नकरके बत्ती कहना योग्य है । इन फलोंको मंदबुद्धि शिष्य नहीं जान तकते हैं सत् शिष्योंके लिये ये फल इस जगह कहे हैं ॥ ६१ ॥

अथ दीपज्ञानम् ।

खटांग स्याद्ग्रास्करो यत्र तत्र वाच्यो दीपश्चालितं चंचलक्ष्मे ।

वारं वारं द्वंगमे चैकवारं तत्रस्थो वै स्यात्प्रियरक्षे तु दीपः ॥६२॥

खटके जिस अंगमें सूर्य स्थित हो उसी जगह दीप कहना चाहिये और जो सूर्य चरराशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर इन राशियोंमें स्थित हो तो प्रसवकालके समय दीप लिये किसी मनुष्यको घूमता जानो और जो सूर्य द्विस्वभाव राशि अर्थात् मिथुन, कन्या, धन, मीन इन राशियोंमें स्थित हो तो चालित और स्थापित दो प्रकार अर्थात् एक समय दीप उठाया फिर धर दिया जानना चाहिये और जो सूर्य स्थिरराशि अर्थात् वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभमें स्थित हो तो प्रसवकालके समय दीप स्थिर कहना चाहिये ॥ ६२ ॥

अथार्कलग्नदादशांशवशेन दीपकज्ञानमुक्तं गर्गेण—लग्नस्य प्रथमे भागे सूर्ये प्राच्यां प्रदीपकः । द्वितीये च तृतीये च भेवदीशानकोणगः ॥ चतुर्थे चोत्तरे वायुकोणे पञ्चमषष्ठ्ये । सप्तमे पश्चिमायां च नैऋत्यां नवमेऽष्टमे ॥ दशमेऽकें दक्षिणस्यामग्निकोणे च दीपकः । द्वादशैकादशे प्रोक्तो दीपभावः स्वयंभुवा ॥ अन्यत्र तत्रैव—चरे लग्ने करे दीपः स्थिरे तत्रैव संस्थितः । द्विस्वभावे तथा वाच्यो करेण परिचालितः ॥ इति ॥

अथ दीपस्य तैलज्ञानम् ।

पूर्णं तैलं दीपकं पूर्वद्वके चन्द्रे मध्येऽर्द्धं त्रिभागं तृतीये ।

वर्तिर्लग्नात्तद्वदेव प्रकल्प्य वाच्यं सम्यग्बुद्धिमद्भिः स्वबुद्धया ६३

जन्मकालमें जिस राशिमें चन्द्रमा स्थित हो उस राशिके पहिले द्रेष्काणमें चंद्रमा हो तो दीपक तैलकरके परिपूर्ण प्रसवकालके समय कहना और जो दूसरे द्रेष्काणमें चन्द्रमा स्थित हो तो दीपकमें आधा तैल कहना और जो चंद्रमा तीसरे द्रेष्काणमें स्थित हो तो दीपकमें थोड़ा तैल कहना चाहिये अर्थात् जितने अंश राशिके चन्द्रमा भोग कर चुका हो उतने ही अंश तैल दीपकमें कहना चाहिये ॥

द्रेष्काणे प्रथमे चद्रे दीपः पूणो द्वितीयके । अर्द्धपूणो हि विज्ञेयस्तैलहीनस्तृती-यके ॥ चंद्रस्य पूर्णत्वे दीपपूर्णत्वं सक्षीणत्वे तैलक्षयमुक्तं न तद्युतितहपातो अमां-वस्यायां सर्वस्यांधकारे जन्मसंभवः स्यात् । तनुस्थानगतश्चंद्रोऽप्यष्टमस्थो यदा भवेत् । बालस्य जन्मसमये दीपस्य परिपूर्णता ॥

अथ दीपस्य वर्तिज्ञानम् ।

जन्मकालके समय लग्नके जितने अंश व्यतीत हो चुके हों उतने ही दीपककी बत्ती जली जानो अर्थात् जन्मलग्नके जितने अंश बीते हों प्रसव कालके समय उतनी ही अंश बत्ती जली भई कहना चाहिये ॥ ६३ ॥

लग्नमुक्तानुमानेन दग्धवाति विनिर्दिशेत् । वर्तिपूर्णस्तु लग्नराशिर्वर्णसद्वशो वाच्यः । लग्नस्य योऽन्न वणो निर्दिष्टस्तेन वर्तिरादिश्येति ॥

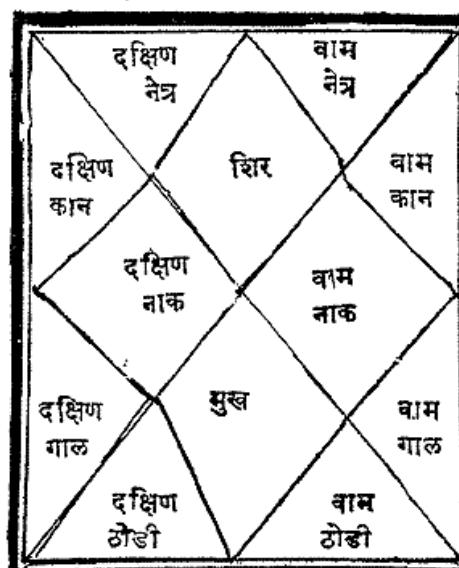
अथ बालकस्य अंगन्यासः ।

शीर्षहशौ श्रुतियुगं च नसाकपोलौ तस्माद्दनुश्च वदनं प्रथमे हृकाणे । कंठांसकौ भुजयुगं किल पार्श्ववक्षः क्रोडं च नाभि-रिति वा कथितं द्वितीये ॥ ६४ ॥ बस्तिश्च शिश्रेणुदके वृषणा-बुरू च जानुद्रयं च जघने चरणौ तृतीये । चक्रस्यानाममुदितं सकलं नरस्य यामं तथा ह्यनुदितं गदितं ग्रहज्ञैः ॥ ६५ ॥

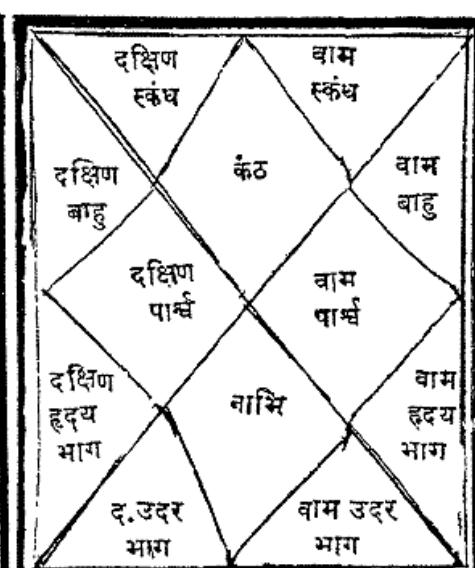
शरीर तीन हिस्से करना इस प्रकार कि जन्मसमयमें लग्नके पहिले द्रेष्काणका उदय हो तो शिरसे लेकर मुखपर्यंत द्वादश अंगोंका एक भाग जानना और जो द्वितीय द्रेष्काणका उदय हो तो कंठसे लेकर नाभिपर्यंत द्वादश अंगोंका दूसरा भाग जानना और जो तीसरे द्रेष्काणका उदय हो तो

बस्तिसे लेकर चरणपर्यंत द्वादश अंगोंका तीसिरा भाग जानना चाहिये। इन तीनों द्रेष्काणोंमें जिसका उदय हो उसी भागके द्वादश अंगोंको लग्नादि भावोंमें न्यास करे अर्थात् पहिले द्रेष्काणका उदय हो तो लग्नादि शिरचक्रमें देखो, वाम दक्षिण अंगोंको जानना चाहिये ॥ ६४ ॥

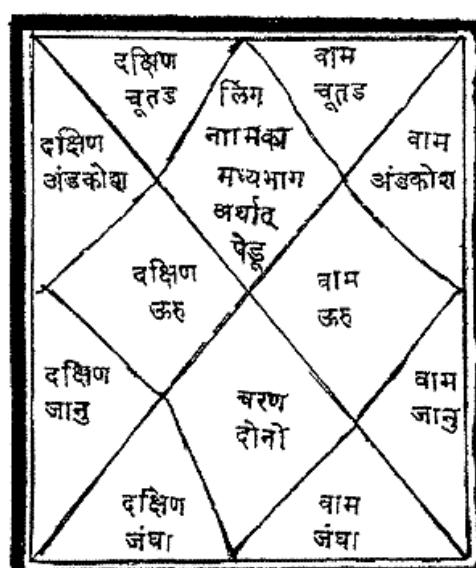
प्रथमद्रेष्काणांगविभाग.



द्वितीयद्रेष्काणांगविभाग.



तृतीयद्रेष्काणांगविभाग.



ये तीनों द्रेष्काणचक्र करके बताये हैं ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओं करके चक्रका सम्पूर्ण मनुष्योंका वामभाग कहा तैसे दक्षिण भाग कहा है ॥ ६५ ॥

अथ ब्रणमशकादिज्ञानम् ।

ब्रणो भवेत्पापयुतेऽत्र सौम्यैः सर्वीक्षिते लक्ष्मतिलस्तु सद्ग्रिः ।

स्थिरे स्वभांशे सहजस्तदानीमागतुकस्तद्विपरीतसंस्थे ॥ ६६ ॥

कालपुरुषके जिस अंगराशिमें पापग्रह संयुक्त हों अथवा देखते हों तो उस अंगमें धाव इत्यादि कहना चाहिये । अथवा जिस अंगराशिमें शुभग्रह स्थित हों अथवा देखते हों उस अंगमें तिल मशकादि कहना और जो पूर्वोक्त ग्रह अपनी राशि अथवा अपने नवांशमें वा स्थिर राशि वा स्थिर राशिके नवांशमें स्थित हो तो धाव मशा तिल बालकके संग पैदा हुआ कहना चाहिये और जो पूर्वोक्त ग्रह उक्त स्थानसे विपरीत स्थित हों तो आगंतुक अर्थात् उस ग्रहकी दशामें पैदा होगा ॥ ६६ ॥

अथ ब्रणमशकादिकारणम् ।

रवौ काष्ठतुर्यांश्रिजः सूर्यपुत्रे दृषद्वायुजद्रजे भूमयश्च ।

गराग्न्यस्त्रजोभूमिपुत्रे ब्रणस्तत्समांगे विधौ शृंगिनीराज्जजःस्यात्

और जो अंग वा राशि सूर्यसे युक्त वा दृष्ट हो तो काष्ठके लगनेसे वा चतुष्पाद जीवोंके काटनेसे अथवा मारनेसे धाव कहना चाहिये और जो शनैश्चर जिस अंग वा राशिमें युक्त वा दृष्ट हो तो पत्थरके लगनेसे वा जलसे अथवा वातसे पैदा हुआ धाव कहना चाहिये और जो अंग बुधसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो धरतीमें गिरनेसे अथवा ईट वा मिट्टीका ढेला लगनेसे धाव कहना चाहिये और जो अंगराशि मंगलसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो अग्निसे अथवा विषकरके या हथियारसे पैदा हुआ धाव कहना चाहिये और जो अंग वा राशि चन्द्रमासे संयुक्त वा दृष्ट हो तो सींगवाले जीव अथवा जलमें रहनेवाले जंतुओंसे धाव कहना चाहिये और किसी शुभग्रहसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो धाव नहीं होता है ॥ ६७ ॥

अथ व्रणमशकादिनिश्चयज्ञानम् ।

यत्र त्रयः सौम्ययुता ग्रहाः स्युस्तत्र व्रणस्तत्समराशिदेशो ।

तद्विपुस्थो व्रणकृत्स्वलो वा सदृष्टियुक्तस्तिललक्ष्मकृतस्यात् ॥८

मनुष्योंके जन्मकालमें बांये अथवा दहिने जिस अंग राशिमें तीन ग्रह बुधसहित स्थित हों तो उस अंगमें जरूर घाव इत्यादि कहना चाहिये फिर वे बुधसहित तीनों ग्रह चाहे पापग्रह अथवा शुभग्रह हों इसका कुछ विचार नहीं करना और उस योगमें जो ग्रह बली हो उसी ग्रहकी दिशामें घाव कहना चाहिये और जो पापग्रह लग्नसे छठे स्थानमें स्थित हों और वह छठे स्थानमें जो राशि स्थित हो कालपुरुषके जिस अंगप्रत्यंगमें स्थित हो उसी अंगमें घाव कहना चाहिये और जो छठे स्थानमें स्थित पापग्रह शुभग्रहोंकरके दृष्टि वा संयुक्त हो तो घाव नहीं करते हैं किंतु तिन्मशकादि चिह्न कारक होते हैं और जो उसी छठे स्थानमें स्थित पापग्रह अपनी राशि नवांशमें अथवा स्थिर राशि अथवा स्थिर राशिके नवांशमें स्थित हो तो वह घाव या लक्षण स्वाभाविक अर्थात् संग पैदा हुआ कहना चाहिये और अन्यराशि चर वा द्विस्वभावमें स्थित हो तो व्रणकारक ग्रहकी दशामें घाव या लक्षण इत्यादि कहना चाहिये ॥ ६८ ॥

अथांतरिक्षे जन्मज्ञानम् ।

धनुमीने च कन्यायां मिथुने च विशेषतः ।

अंतरिक्षे भवेजन्म शेष भूमीति निर्दिशेत् ॥ ६९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन वा मीन या कन्या अथवा मिथुन राशिमें विशेषकरके हों तो उस बालकका जन्म अंतरिक्ष अर्थात् धरतीसे ऊचे स्थानपर कहना चाहिये और शेष राशियोंमें पृथ्वीमें जन्म कहना ॥ ६९ ॥

अथ बालकस्य रोदनज्ञानम् ।

मेषात्रयो धनुः सिंहे बालकः खलु रोदिति । अर्द्धशब्देन मकरे

(२६४)

ज्योतिषश्यामसंश्रहः ।

कन्यायां कुभमे तथा ॥ ७० ॥ तुलालिमीनसदने अल्पं च
चिरकालतः । लग्नचंद्रवशात्सोऽपि वाच्यं बलविवेकेतः ॥ ७१ ॥

मेष, वृष, मिथुन, धन, सिंह ये राशि लग्नवर्ती हों तो बालक निश्चयकर-
के पैदा होते ही रोता है और मकर, कन्या, कुभ इनमें जन्म हो तो
अर्द्धशब्द अर्थात् पहिले थोड़ा थोड़ा पीछेसे ज्यादे रोता है ॥ ७० ॥
तुला, वृश्चिक, मीन इन राशियोंमें जन्म हो तो पैदा होते ही चुपचाप
रहे पश्चात् बहुत कालतक रोता रहे। ये फल विचार करके लग्न अथवा
चंद्रमाके विचारसे हैं इन दोनोंमें जो बलवान् हो उसी करके फल
कहना उचित है ॥ ७१ ॥

अथ बालकस्य छिकाज्ञानम् ।

चतुर्थस्थानगश्चन्द्रश्चंद्रजेन समन्वितः ।

तत्कालजातबालस्तु छिकां प्रकुरुते सदा ॥ ७२ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा बुधकरके सहित
स्थित हो तो कहना चाहिये कि पैदा होते ही बालकने छींका है ॥ ७२ ॥

अथ मातुलमृत्युज्ञानम् ।

चंद्रात्रिकोणगे सूर्ये मातुलो म्रियते ध्रुवम् ।

कुजस्त्रिकोणगे शुक्रान्मातृमाता विनश्यति ॥ ७३ ॥

प्रोक्तं प्रसवाध्यायं बालकानां शुभाशुभम् ।

बहुभिर्जातकैर्द्ध्वा श्यामलालेन धीमता ॥ ७४ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-

संग्रहे प्रसववर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ ७५ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें चंद्रसे त्रिकोण अर्थात् नवम पंचम
स्थानमें सूर्य स्थित हो तो प्रसवकालके समय बालकका मामा मृत्युको
प्राप्त होता है ॥

अथ मातृमातामृत्युज्ञानम् ।

और शुक्रसे नवम वा पंचम स्थानमें मंगल स्थित हो तो बालककी मातामही अर्थात् नानी मृत्युको प्राप्त होती है ॥ ७३ ॥ इस प्रसवाध्यायमें बहुतसे जातकग्रंथ देखकरके बुद्धिमान् श्यामलाल करके बालकोंका अच्छा बुरा फल कहा ॥ ७४ ॥

इति श्रीवशवेरलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यो-
तिषिपंडितश्यामलालकतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां प्रसव-
भेदवर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथाष्टकवर्गाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्याष्टकम् ।

केद्राया १ । ४ । ७ । १० । ११ ॥ ८ ॥ द्वि २ नव ९
स्वर्कः स्वादार्किभौमयोश्च शुभः । पट् ६ सप्तां ७ त्ये १२
षु सितात्पडाय द्व । ११ धी ६ धर्म ९ गो जीवात् ॥ १ ॥
उपचय द्व । द्व । १० । ११ गोर्कश्चंद्रादुपचय द्व । ६ । १० ।
११ नव ९ धी ६ युतः सौम्यात् । लग्नादुपचय द्व । ६ ।
१० । ११ बंधु ४ व्यय १२ स्थितः शोभनः प्रोत्कम् ॥ २ ॥

इस सूर्याष्टकवर्गमें जन्मकालिक लग्नसहित ग्रहोंके स्थानोंसे गोचरकालिक स्थानद्वारा हरएक ग्रहका अच्छा बुरा फलका विचार किया जाता है, जन्मकालमें जो ग्रह जिस राशिपर स्थित हो वही राशि उसका अपना स्थान प्रामाणिक किया जाता है, जैसे सूर्य व मंगल व शनैश्चर अपने स्थानसे ग्यारहवें, चौथे, आठवें, दूसरे, दशवें, नववें, सातवें स्थानमें रेखा देते हैं और तैसे ही शुक्र जिस स्थानमेंस्थित हो वहांसे छठे, सातवें रहे शुभ रेखा देता है । इसी तरह बृहस्पति अपने स्थानसे पंचम, छठे, नवम, एकादश

(२६६)

ज्योतिषश्यामसंयहः ।

स्थानोंमें रेखाको देता है। ऐसे ही चन्द्रमा अपने स्थानसे दशवें, तीसरे, छठे, ग्यारहवें रेखा देता है। तैसे ही बुध अपने स्थानसे दशवें, तीसरे, ग्यारहवें, छठे, बारहवें, नवम, पंचमस्थानमें रेखाको देता है। तैसे ही लघु अपने स्थानसे दशवें, तीसरे, ग्यारहवें, छठे, चौथे, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखा देती है अन्य स्थानोंमें अशुभ फल देती है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ सूर्यशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

अथ सूर्यानिष्ठाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

स.	च.	मे.	दु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	८	१२	५	६
७	११	७	८	११	७	१०	
८		८	१०		८	११	
९		९	११		९	१२	
१०		१०	१२		१०		
११		११			११		

स.	च.	मे.	दु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	१	३	२	१	१	३	१
५	२	५	४	३	२	५	२
६	४	६	७	३	३	६	५
१२	५	१२	८	४	४	१२	७
७		७	७	७	५		
८		८	८	८	८		
९		९	१०	९	९		
१३				११	१०	११	

अथ चन्द्राष्टकवर्गः ।

शश्युपचये ३ । ६ । १० । ११ षु लग्नात्साद्य १ मुनि ७.

स्वात्कुजा ३ । ६ । १० । ११ त्स्व २ नव ९ धी ६ स्थः ।

सूर्यात्सा ३ । ६ । १० । ११ साष्ट ८ स्मारणः ७ त्रिषडा-
३ । ६ य ११ सुतेषु ६ सूर्यसुतात् ॥ ३ ॥ ज्ञातकेंद्र १

४ । ७ । १० त्रि ३ सुता ६ या ११ ष्टम ८ गो गुरोर्व्यया-
१२ या ११ मृत्यु ८ केंद्रे १ । ४ । ७ । १० षु ॥ ४ ॥ त्रि ३

चतुः ४ सुत ६ नव ९ दशम १० सप्त ७ माया ११
गश्चंद्रात् ॥ ४ ॥

अब चन्द्राष्टक वर्ग कहते हैं ॥ चन्द्रमा जन्मलघस्थान अथवा गोचर राशिसे तीसरे, छठे, दशवें १०, ग्यारहवें ११, पाहिले, सातवें रेखा शुभ देता है और जन्मकालिक लघमें मंगल जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, छठे,

दशवें, ग्यारहवें, दूसरे, नवम, पंचम इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है, तैसे ही सर्व तीसरे, छठे; दशवें, ग्यारहवें, अष्टम, सप्तम स्थानोंमें शुभ रेखा देता है। तैसे ही शनैश्चर जन्मकालमें जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, पंचम, छठे, ग्यारहवें चन्द्राष्टकवर्गमें रेखा शुभ देता है ॥ ३ ॥ जन्मलघ्नमें अथवा गोचरमें बुध जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, चौथे, सप्तम, दशम, तृतीय, पंचम, एकादश, अष्टम इन स्थानोंमें रेखा शुभ फलको देता है और तैसे ही बृहस्पति अपने स्थानसे बारहवें, ग्यारवें, आठवें, पहिले, चतुर्थ, सप्तम, दशम इन स्थानोंमें रेखा शुभ देता है और शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, चौथे, पंचम, नवम, दशम, सातवें, ग्यारहवें इन स्थानोंमें रेखा शुभ देता है अन्यत्र अशुभ जानो ॥ ४ ॥

अथ चन्द्रगुभाष्टकवर्गाक्चक्रम् । अथ चंद्रानिष्ठाष्टवर्गाक्चक्रम् ।

चं.	मं.	दु.	वृ.	शु.	ग.	क.	स.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	६	५	६	१०	७
७	६	५	८	७	११	११	८
१०	९	७	१०	८		१०	
११	१०	८	११	१०		११	
११	१०	९०	१२	११			

चं.	मं.	दु.	वृ.	शु.	ग.	क.	स.
२	१	२	३	१	१	१	१
४	४	६	३	२	२	२	२
५	७	८	५	६	४	४	४
८	०	१२	६	८	७	५	५
९	१२		९	१२	८	७	८
१२					९	८	१२
					१०	९	
					१२	१२	

अथ भौमाष्टकवर्गमाह ।

भौमात्स्वादाय ११ स्वा २ष्ट८ केन्द्रे १ । ४ । ७ । १० गत-स्त्र्या देय ११ पट्ट६ सुते ९ षु बुधात् । जीवो दशा १० य ११ शत्रु ६ व्यये १२ ष्विनादुपचय दे । ६ । १० । ११ सुते ९ षु ॥ ५ ॥ उदयादुपचय दे । ६ । १० । ११ तत्त्व-१ पु त्रि देषडा दिये ११ ष्विदुतः । समो दश १० म भृगु-सुतादत्य १२ षडा ६ ये ११ ष्ट८ थ सितात्केन्द्रा १ । ४ । ७ । १० या ११ नव ९ वसु ८ षु ॥ ६ ॥

मंगल जन्मकालमें अथवा गोचरमें जिस राशिमें स्थित हो वहसे ग्यारहवें, दूसरे, आठवें, पहिले, चौथे, सातवें, दशवें स्थानोंमें मंगल शुभ फलको देनेवाली रेखा देता है, तैसे ही बुध तीसरे, ग्यारहवें, छठे, पांचवें शुभ रेखाओंको देता है; तैसेही बृहस्पति दशवें, ग्यारहवें, छठे, बारहवें शुभ रेखा देता है, तैसेही सूर्य अपने स्थानसे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, पंचम शुभ फलको देता है ॥ ५ ॥ और जन्मलघ्न अपने स्थानसे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, पहिले इन स्थानोंके विषे शुभ रेखाओंको देता है और चंद्रमा अपने स्थानसे तीसरे, छठे, ग्यारहवें शुभरेखाओंको देता है और तैसे ही शुक्र अपने स्थानसे बारहवें, छठे, ग्यारहवें, अष्टम शुभ रेखाओंको देता है और शनैश्चर अपने स्थानसे पहिले, चौथे, सातवें, दशवें, अष्टम, नवम, एकादश इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और अन्यत्र अशुभ जानना ॥ ६ ॥

अथ भौमशुभाष्टकवर्गाक्चक्रम् । अथ भौमानिषाष्टकवर्गाक्चक्रम् ।

मं.	बु.	बु.	गु.	श.	ल.	सू.	च.
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	५	६	६	११
७	११	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

मं.	बु.	बु.	गु.	श.	ल.	सू.	च.
३	१	१	१	१	२	२	१
५	२	२	२	२	३	३	२
६	४	३	३	३	५	५	४
९	६	४	४	६	६	६	५
१२	८	५	५	१२	८	८	७
					९	९	९
					१०	१०	१०
					१२	१२	१२

अथ बुधाष्टकवर्गमाह ।

सौम्योत्त्य १२ षण् दि नवा ९ या ११ त्मजे ५ ष्विनात्स्वात्स १२ । दि । १११ त्रि ३ तनु १ दश १० युतेषु । चंद्रो द्वि-२ रिषु दि दशा १० या ११ षृ ८ सुखगतः सा २ । १० ११ । ८ । ४ दि १ षु लग्नात् ॥ ७ ॥ प्रथम १ सुखाय ४ ।

११ द्वि २ निधन ८ धर्मे ९ सितात्रि ३ धी ६ समेतेषु ।
 दश १० स्मरे ८। १। ४। १। २। ९ शौरा १०।
 ७। १। ४। १। १। २। ८। ९ र्योवर्यया १२या ११ रि ६
 वसु ८ षु गुरोः ॥ ८ ॥

जन्मकालमें अथवा गोचरकालमें जिस स्थानमें सूर्य स्थित हो वहांसे बारहवें, छठे, नवम, ग्यारहवें इन स्थानोंमें सूर्य श्रेष्ठ रेखाओंको देता है और जिस स्थानमें बुध स्थित हो वहांमें पहिले, बारहवें, छठे, नवम, एकादश, तीसरे, दशम, पंचम इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको बुध देता है और जिस घरमें चंद्रमा स्थित हो वहांसे दूसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, आठवें, चतुर्थ स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और जन्मलग्न अपने स्थानसे दूसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, आठवें, चौथे लग्नमें शुभ रेखाओंको देता है ॥ ७ ॥ और शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, चौथे, ग्यारहवें, दूसरे, अष्टम, नवम, तीसरे, पंचम स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और शनैश्चर जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दशवें, सातवें, पाहिले, चौथे, ग्यारहवें, दूसरे, नवम, अष्टम स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और मंगल जिस घरमें स्थित हो वहांसे दशवें, सातवें, पहिले, चौथे, ग्यारहवें, दूसरे, आठवें, नवम इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और बृहस्पति जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे बारहवें, ग्यारहवें, छठे, आठवें शुभ रेखाओंको देता है ॥ ८ ॥

अथ बुधशुभाष्टकवर्गाक्चक्रम् ।

अथ बुधानिष्टाष्टकवर्गाक्चक्रम् ।

बु.	वृ.	श.	श.	ल.	सू.	च.	म.
१	६	१	१	१	५	२	१
३	८	२	२	२	६	४	२
५	११	३	४	४	९	६	४
८	१२	४	७	६	११	८	०३
१०	५	८	८	८	१२	१०	८
११	८	१	१०		११	१	
१२		१०	११			१०	
	११	११				११	

बु.	वृ.	श.	श.	ल.	सू.	च.	म.
२	१	६	३	३	१	१	३
४	२	७	५	५	२	३	५
७	३	१०	६	७	२	५	६
८	४	१२	१२	९	४	७	१२
१०	५	६		१२	८	४	
११	६				१०	१२	
१२	१०						

अथ गुरोरष्टकवर्गमाह ।

जीवो भौमात्स्वा २ या ११ षृ ८ केन्द्रे । ४ । ७ । १०
 गोकात्स २ । ११ । ८ । ११ । ४ । ७ । ३० धर्म ९ सहजे ई
 षु । स्वात्स २ । ११ । ८ । ११ । ४ । ७ । १० त्रिकेषु ई
 शुक्रान्नव ९ दश १० लाभ ११ स्व २ धी ६ रिषु ई षु ॥९॥
 शशिनः स्मरे ७ त्रिकोणा ६ । ९ थ लाभ ११ गत्ति ई
 रिषु ई धी ६ व्यये १२ षु यमात् । नव ९ दिक् १० सुखा ४
 व्य १ शर ९ स्वा २ य ११ शत्रु ई षु ज्ञात्स ९ । १० ।
 ४ । १ । ५ । २ । ११ । ई काम ७ गो लग्नात् ॥ १०॥

मंगल जिस स्थानमें जन्मकाल वा गोचरमें स्थित हो वहांसे दूसरे, ग्यारहवें, अष्टम, पहिले, सप्तम, चतुर्थ, दशम स्थानमें मंगल शुभ रेखाओंको देता है और सर्य जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दूसरे, ग्यारहवें, आठवें, पहिले, चौथे, सप्तम, दशम, नवम, तृतीय स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और बृहस्पति जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दूसरे, ग्यारहवें, आठवें, पहिले, चौथे, सातवें, दशम, तीसरे शुभ रेखाओंको देता है और शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे नवम, दशम, ग्यारहवें, दूसरे, पंचम, छठे स्थानोंमें शुक्र शुभ रेखाओंको देता है अन्यत्र अशुभ देता है ॥ ९ ॥ जन्मकाल वा गोचरमें चन्द्रमा जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे सातवें, पंचम, नवम, द्वितीय, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको चन्द्रमा देता है और शनैश्चर अपने स्थानसे तीसरे, छठे, पंचम, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और बुध जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे नववें, दशवें, चौथे, पहिले, पंचम, दूसरे, ग्यारहवें, छठे स्थानोंमें बुध शुभ रेखाओंको देता है और जन्मलग्न अपने स्थानसे नवम, दशम, पहिले, पांचवे, दूसरे, ग्यारहवें, छठे, सातवें स्थानोंमें जन्मलग्न शुभ रेखाओंको देता है ॥ १० ॥

अथ चृहस्यतिशुभाष्टकवर्गकचक्रम् । अथ गुरोः अनिष्टाष्टकवर्गकचक्रम् ।

व.	गु.	श.	ल.	सु.	चं.	म.	कु.
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	६	४	४
४	९	१२	१	४	९	७	५
५	१०		६	७	११	८	६
६	११		७	८		१०	९
७	१०		९	९		१११०	
८	११		१०	१०		११	
९			११११				

व.	गु.	श.	ल.	सु.	चं.	म.	कु.
५	१	१	३	५	१	३	३
६	३	२	८	६	३	६	८
७	४	४	१२	१२	४	६	८
८	७	७			८	९	१२
९	८	८			१०		
१०	१२	१२			१२		
११							

अथ शुक्राष्टकवर्गमाह ।

शुक्रो लग्नादा १ । २ । ३ । ४ सुत ६ नवा ९ षट् ८ लाभे ११
षु स १ । २ । ३ । ४ । ५ । ९ । ८ । ११ । १२ व्ययश्च-
द्रात् । स्वात्सा १ । २ । ३ । ४ । ५ । ९ । ८ । ११ । ज्ञे-
१० षु रविसुतात्रि ३ धी ६ सुखा ४ मि ११ नव ९ कर्म-
१० रथे ८ षु ॥ ११ ॥ वस्वं ८ त्या १२ ये ११ ष्वर्कान्नव-
९ कर्म १० लाभा ११ षट्धी ६ स्थितो जीवात् । ज्ञात्रि-
सुत ६ नवा ९ या ११ रि ६ षु लाभ ११ सुता ६ पोक्खिमे
३ । ६ । ९ । १२ षु कुजात् ॥ १२ ॥

जिस लग्नमें जन्म हो उस स्थानसे प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ,
पंचम, नवम, अष्टम, लाभ स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है अर्थात् इन
स्थानोंमें शुक्र शुभ फल देता है और तैसे ही चंद्रमा जन्मकालिक स्थानमें
जहां स्थित हो अथवा गोचरमें जहां स्थित हो वहांसे प्रथम, द्वितीय, तृतीय,
चतुर्थ । पंचम, नवम, अष्टम, ग्यारहवें, वारहवें इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको
देता है, तैसे ही शुक्र अपने स्थानसे पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें,
नवम, आठवें, ग्यारहवें, दशम स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है । तैसे ही

शनैश्चर तीसरे, पांचवें, चौथे, ग्यारहवें, नवम, दशम, अष्टम स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है ॥ ११ ॥ इसी प्रकार सूर्य जन्मकालमें जहां स्थित हो वहांसे अष्टम, बारहवें, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और बृहस्पति जन्मकालमें अथवा गोचर राशिमें जहां स्थित हो वहांसे नवम, दशम, ग्यारहवें, आठवें, पंचम इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और जन्मकाल वा गोचरमें जिस स्थानमें बुध स्थित हो वहांसे तीसरे, पंचम, नवम, ग्यारहवें, छठे स्थानोंमें शुभ रेखाओंका देता है और मंगल अपने स्थानसे ग्यारहवें, पंचम, तीसरे, छठे, नवम, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है अन्यत्र अशुभ जानना चाहिये ॥ १२ ॥

अथ शुक्रशुभाष्टकवर्गकिञ्चकम् ।

अथ शुक्रनिश्चष्टकवर्गकिञ्चकम् ।

शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४	४	९	९	१०	
५	९	५	५	११	११	११	
६	१०	८	९	१२			
७	११	९	११				
८	११		१२				
९							

शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.
६	१	६	१	६	१	१	१
७	२	७	२	७	२	२	२
१२	६	१०	३	१०	४	४	३
७	७	१२	४		७	७	४
१३			५		८	८	६
			६		१०	१०	
			७		१२	१२	
			१०				

अथ शनेरष्टकवर्गमाह ।

स्वाच्छौरिण्डि इ सुता ६ या ११रि ६ गः कुजादंत्य १२ कर्म १० स ३ । ६ । ११ । ६ हितेषु । स्वा २ या ११ ष्ट ८ केन्द्र १ । ४ । ७ । १० गोकात् शुक्रात्पष्टां ६ त्य १२ लाभे ११ षु ॥ १३ ॥ त्रि इ षडा ६ य ११ गः शशांकादु-दयात्स ३ । ६ । ११ सुखा ४ र्थ २ कर्म १० गतो गुरोः । सुत ६ षडं ६ त्या १२ या ११ गतो ज्ञाद्वय-

या १२ य ११ रिपु दि॒द॑ १० नवा ९ ष्ट॑ स्थः ॥ १४ ॥

जन्मकालिक लग्नमें अथवा गोचरमें जिस स्थानमें शनैश्चर स्थित हो वहांसे तीसरे, पांचवें, ग्यारहवें, छठे स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और जिस स्थानमें मंगल स्थित हो वहांसे दशवें, तीसरे, पांचवें, ग्यारहवें, छठे स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और सूर्य जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दूसरे, ग्यारहवें, आठवें, पहिले, चौथे, सातवें, दशवें शुभ रेखाओंको देता है और शुक्र अपने स्थानसे छठे, बारहवें, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है ॥ १३ ॥ इसी तरह चंद्रमा जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और इसी तरह जन्म लग्न अपने स्थानसे तीसरे, छठे, ग्यारहवें, चौथे, दूसरे, दशवें स्थानोंमें शुभ फलको देता है और इसी तरह बृहस्पति जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पंचम, छठे, बारहवें, ग्यारहवें शुभ रेखाओंको देता है और इसी तरह बुध जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे बारहवें, ग्यारहवें, छठे, दशवें, नवम, आठवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है; अन्यत्र किसी भी स्थानमें अशुभ जानना चाहिये ॥ १४ ॥

अथ शनिशुभाष्टकवर्गाक्चक्रम् ।

अथ शन्यनिष्टाष्टकवर्गाक्चक्रम् ।

श.	ल.	सु.	च.	म.	बु.	बृ.	ग.
३	२	१	३	३	६	५	६
५	३	२	६	५	८	६	११
६	४	४	११	६	९	११	१२
११	६	७		१०	१०	१२	
१०	८			११	११		
११	१०			१२	१२		
		११					

श.	ल.	सु.	च.	म.	बु.	बृ.	ग.
१	१	३	१	१	१	१	१
२	५	५	२	२	८	२	२
४	७	६	४	४	३	३	३
७	८	८	५	७	४	४	४
८	९	१२	७	८	५	७	५
९	१२		८	९	७	८	८
१०			९		८	९	८
१२			१०		१०	१०	१०

अथ लग्नाष्टकवर्गमाह ।

सूर्यद्वौवितनात्परं ३ । ४ । ६ । १० । ११ । १२ रविसुता-
द्योगो वितानस्य १ । ३ । ४ । ६ । १० । ११ शक्रेज्यात्कौर-

वरेषसाधनकाः १ । २ । ४ । ६ । ७ । ९ । १० । ११
भूपुत्रात्कलातानयम् १ । ३ । ६ । १० । ११ । शुक्रात्कारु-
गवोमुदांधस्य १ । २ । ३ । ४ । ६ । ८ । ९ । ११ । तनोश्च-
द्राज्ञ गीतज्ञायं ३ । ६ । १० । ११ सौम्यात्कौरवचंद्रेनाल्पः
१ । २ । ४ । ६ । ८ । १० । ११ लग्नाष्टकवर्गे ध्रुवः ॥१५॥

जन्मकालिक लघुमें अथवा गोचरमें जिस स्थानमें सर्व स्थित हो वहांसे
तीसरे, चौथे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, बारहवें स्थानोंमें सर्व शुभ रेखा देता
है और तैसे ही शनैश्चर जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, तीसरे, चौथे,
छठे, दशवें, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और इसी तरह बृह-
स्त्रिय जहां स्थित हो वहांसे पहिले, दूसरे, चौथे, पांचवें, छठे, सातवें, नवम,
दशम, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और और इसी तरह मंगल
जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें स्थानोंमें
शुभ रेखाओंको देता है और इसी तरह शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे
पहिले, दूसरे, तीसरे, चतुर्थ, पंचम, अष्टम, नवम, एकादश स्थानोंमें शुभ रेखा
देता है । तैसे ही चंद्रमा जहां स्थित हो वहांसे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें
स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है । ऐसे ही जन्मलघु अपने स्थानसे तीसरे,
छठे, दशवें, ग्यारहवें शुभ रेखाओंको देता है । इसी प्रकार बुध जिस स्थानमें
स्थित हो वहांसे पहिले, दूसरे, चौथे, छठे, आठवें, दशव, ग्यारहवें शुभ
रेखाओंको देता है यह लग्नाष्टकवर्गका ध्रुव है ॥ १५ ॥

अथ लग्नशुभाष्टकवर्गाक्चक्रम् ।

अथ लग्नानिष्टाष्टकवर्गचक्रम् ।

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
१३	१०	११	१०	६	५	४	६
	११	११	८	६	५	५	१०
१२			१०	७	८	११	
			११	१	१		
			१०	१	१		
			११				

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	१	१	२	३	३	६	२
२	२	२	३	४	५	८	५
	४	५	४	५	७	१२	१०
५	७	५	७	८	८	१२	८
७	८	७	८	९	१२		९
८	९	८	९	१२			१२
९		९	१२				
१२		१२					

अथ राहोरष्टकवर्गमाह ।

सूर्यात्पुत्रगमः सदान १ । २ । ३ । ५ । ७ । ८ । ९० हिमगोः
पूर्णं मसादेवं १ । ३ । ५ । ७ । ८ । ९ । १० भौमात्खङ्ग-
गमः पुरं १ । ३ । ५ । ९२ बुधाद्रश्चससदाः २ । ४ । ७ ।
८ । १२ सूर्यपुत्रादपि । गोमेसन्तुयरो ३ । ५ । ७ । १० ।
११ । १२ भृगोस्तिथिपरं ६ । ७ । ११ । १२ जीवात्युगा-
वस्तदा १ । ३ । ४ । ६ । ८ लग्नाद्रोविमधीर इत्यथ गुणाः
३ । ४ । ६ । ९ । १२ संख्या त्रिभा ४३ कुञ्चित् ॥ १६ ॥

जन्मकालिक लग्न अथवा गोचर राशिमें जहां सूर्य स्थित हो वहांसे पहिले, दूसरे, तीसरे, पांचवें, सातवें, दशम राहु अष्टकवर्गमें सूर्य शुभ रेखाओंको देता है और चंद्रमा जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, तीसरे, पांचवें, सातवें, आठवें, नवम, दशम स्थानोंमें शुभ रेखा देता है और तैसे ही मंगल जिस स्थानमें स्थित हो वहाँसे पहिले, तीसरे, पांचवें, बारहवें राहु अष्टकवर्गमें शुभ रेखा देता है और इसी तरह बुध जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखा देता है और तैसे ही शनैश्चर जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, पाँचवें, सातवें, दशम, षष्ठीरहवें, बारहवें स्थानोंमें शनैश्चर शुभ रेखा देता है और तैसे ही शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे छठे, सातवें, षष्ठीरहवें, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखा देता है और इसी प्रकार बृहस्पति जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, तीसरे, चौथे, छठे, आठवें राहु अष्टकवर्गमें शुभ है और तैसे ही जन्मलग्न अपने स्थानसे तीसरे, चौथे, पांचवें, नवम, बारहवें स्थानोंमें राहु अष्टकवर्गमें शुभ रेखा देता है; अन्यत्र अशुभ जानना और केतु भी राहुके सहशा जानना चाहिये ॥ १६ ॥

(२७६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अथ राहुशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

अथ राहुनिष्ठाष्टकवर्गचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शृ.	श.	ल.
१	१	१	२	१	६	३	३
२	३	३	४	३	७	५	४
३	५	५	७	४	११	७	५
४	७	१२	८	६	१२	१०	९
५	८	१२	८	८	११	१२	
६	९				१२		
७०	१०						

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शृ.	श.	ल.
४	२	२	१	२	१	१	१
६	४	४	३	५	२	२	२
८	६	६	५	७	३	४	६
११	११	७	६	३	४	६	७
१२	१२	८	९	१०	५	८	८
		९	१०	११	८	९	१०
		१०	११	१२	९		
		११			१०		

अथाष्टवर्गांकयोगः ।

देवो ४८ धवो ४९ धिगो ३९ विष्णु ५४ श्वेशो ५६ रामो ५३ धिगो ३९ धवः ४९ । अष्टवर्गमिदं वक्ष्ये संसारहित-काम्यया ॥ १७ ॥

सर्याष्टकवर्गमें रेखाओंके योग अडतालीस हैं, चंद्राष्टकवर्गमें रेखाओंके योग उनचास हैं, भौमाष्टकवर्गमें उतालीस हैं, बुधाष्टकमें चौपन हैं, बृहस्पत्याष्टकवर्गमें छप्पन हैं, शुक्राष्टकवर्गमें त्रेपन हैं, शन्याष्टकवर्गमें उतालीस हैं, लभाष्टकवर्गमें समश्र रेखाओंके योग उनचालीस होते हैं और राहुष्टकवर्गमें तेंतालीस रेखाओंके योग हैं, ये अष्टवर्ग संसारके हितके अर्थ कहे गये हैं ॥ १७ ॥

अथाष्टवर्गांकफलम् ।

इति निगदितमिष्टं नेष्टमन्यद्विशेषादधिकफलविपाकं जन्म-भात्तव्र दद्युः । उपचयगृहमित्रस्वोच्चर्गैः पुष्टमिष्टं त्वपचयगृह-नीचारातिगैरेष्टसंपत् ॥ १८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-ज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे अष्टकवर्गवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

इस तरह प्रत्येक श्रहोंके कहे हुए स्थान शुभ अशुभ फल कहे हैं। जैसे जन्मकाल अथवा गोचरमें जिस स्थानमें जो यह स्थित हों उन स्थानोंसे जो विद्वानोंने कहा है सो शुभ है और जो नहीं कहे स्थान हैं वे अशुभ हैं सो अशुभकी जगह रेखा धरनी चाहिये और शुभकी जगह बिंदु धरना चाहिये, उन्हीं शुभ अशुभ स्थानोंका अंतर करना चाहिये, उस अंतरकरके जो विशेष अथवा शेष रहे उसके अनुसार शुभ वा अशुभ फलको कहना चाहिये। जो अंतर करनेसे आठों स्थानोंमें बिंदु ही हो तो पूर्ण शुभफल कहना और छः बच्चे तो शुभ फल कहना और चार शेष रहें तो मध्यम फल और दो शेष रहें तो अधम फल कहना। आठों जगह रेखा ही हों तो पूर्ण नेष्ट फल जानना चाहिये और जो गोचरकाल अथवा जन्म कालमें लग्न अथवा चंद्रमासे उपचयस्थानमें अर्थात् तीसरा, छठा, दशवां, ग्यारहवां इन स्थानोंमें कहीं अथवा मित्रके स्थानमें वा स्वस्थानमें या अपने उच्च स्थानमें स्थित हो तो सम्पूर्ण शुभ फल देता है, उसीको पूर्ण फल कहते हैं। और अपचय अर्थात् प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, द्वादश स्थानोंमें स्थित हो अथवा अपने नीच स्थानमें वा शत्रुके स्थानमें स्थित हो तो पूर्ण शुभफल नहीं देता है अर्थात् शुभस्थानमें स्थित यह थोड़ा अशुभ फल देते हैं और अशुभ स्थानमें स्थित यह थोड़ा शुभ फल देते हैं ॥ १८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतसश्रीवलदेवप्रसादात्मजराजज्योति-

षिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायामष्टवर्गी-

वर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ द्विग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ चंद्रादित्ययोगफलम् ।

कूरकियायां निषुणः सर्गवः पाषाणयंत्रक्यविक्येषु ।
कामी नितांत च भवेन्मनुष्यो विकर्तने चंद्रमसा समेते ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमासहित होता है वह मनुष्य दुष्कृतियाओंमें चतुर, अभिमानी, पत्थरकी वस्तुओंका क्रयविक्रय करनेवाला तथा सदैवकाल विषयमें आसक्त होता है ॥ १ ॥

अथ भौमादित्ययोगफलम् ।

सद्धर्मकर्मद्रविणेन हीनः क्लेशानुरक्तः सततं सकोपः ।

भवेन्मनुष्यो दिवसाधिनाथे यदा धरित्रीतनयेन युक्ते ॥ २ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य मंगलसे युक्त हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म, धर्म और धनसे हीन, सदैव क्लेशयुक्त, सर्वदा क्रोधसहित होता है ॥ २ ॥

अथ ब्रुधादित्ययोगफलम् ।

प्रियंवदः स्यात्सचिवो नृपाणां सेवार्जितार्थः श्रुतितत्परश्च ।

कलाकलापे कुशलो मनुष्यो दिनाधिपे चंद्रसुतेन युक्ते ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य चन्द्रपुत्रसे युक्त हो वह मनुष्य प्यारी वाणीका बोलनेवाला, मंत्री, राजाओंकी सेवा करके धन पैदा करनेवाला, वेदमें तत्पर तथा गीत वाय काव्यादि कलाओंमें कुशल होता है ॥ ३ ॥

अथ गुर्वादित्ययोगफलम् ।

पौरोहित्ये नैपुणो भूमिपानां मंत्री सन्निमत्रासवित्तः समृद्धः ।

चातुर्याढच्यः पूरुषश्चोपकारी घसाधीशे जीवयुक्ते प्रसूतौ ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें घसाधीश अर्थात् सूर्य बृहस्पतिकरके युक्त होता है वह मनुष्य पुरोहितकर्ममें कुशल, राजाओंका मंत्री, अच्छे मित्रोंसहित, धनसे समृद्धः, चतुरार्द्धसहित तथा पराये उष्कारका करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ भृग्वादित्ययोगफलम् ।

सुबुद्धिश्च संगीतवाद्यायुधेषु भवेन्मानवो नेत्रवीर्येण हीनः ।

सुनेत्रानिमित्तासुहत्समाजो दिवानायके दानवेज्येन युक्ते ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें शुक्रकरके सूर्य युक्त होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धियुक्त, संगीत वाय और आयुधोंमें कुशल, नेत्रवीर्यकरके हीन, स्त्रियों-करके आस और मित्रोंके समाजकरके सहित होता है ॥ ५ ॥

अथ मन्दादित्ययोगफलम् ।

धर्मप्रीतिः पुण्यबुद्धिर्गुणज्ञो जायापुत्रप्राप्तसौख्यः समृद्धः ।

सूतौ मत्योऽत्यंतधातुक्रियाद्यस्तिग्मांशौ चेद्वानुपुत्रेण युक्ते ॥

जिसके सूतिकालमें सूर्य शनैश्चरकरके युक्त हो वह मनुष्य धर्मप्रीति करनेवाला, श्रेष्ठबुद्धियुक्त, गुणका जाननेवाला, स्त्रीपुत्रोंकरके प्राप्त सुख, धातुकी क्रियाओंकरके समृद्ध, अर्थात् धातुका बनानेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ चन्द्रारयोगफलम् ।

पृथ्यानुजीवी कुटिलः प्रतापी स्वाचारहीनः कलहानुरक्तः ।

रोगार्दितः स्यात् किल मातृशत्रुः कलानिधौ वक्युते मनुष्यः ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा मंगलके सहित होता है वह मनुष्यव्यापार करके अजीविका करनेवाला, कुटिल, प्रतापवान्, अपने आचारकरके रहित, कलहमें आसक्त, रोगकरके दुःखी तथा माताका शत्रु हो ॥ ७ ॥

अथ चन्द्रेन्दुजयोगफलम् ।

सद्वृपसद्धर्मधनेन युक्तः कांतापरप्रीतिरतीव वक्ता ।

सद्वाग्निलासश्च कृपाद्रचेता हीनो नरः सौम्ययुते निशीशे ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा बुधकरके सहित हो वह मनुष्य अच्छा स्वरूप और अच्छा धर्म और धनकरके युक्त, स्त्रियोंपर श्रेष्ठ प्रीतिका करनेवाला, बहुत बोलनेवाला, श्रेष्ठ वाणीका बोलनेवाला, दयायुक्त चित्तवाला तथा हीन होता है ॥ ८ ॥

अथ जीवेन्दुयोगफलम् ।

विनीतो सदा गाढगृहोऽतिमंत्रो भवेन्मानवशोपकारी परेषाम् ।

समेतः सदा धर्मकर्मादिकैश्च तमिसाधिपे शकपूज्येन युक्ते ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा गुरुकरके युक्त हो वह मनुष्य नम्रताकरके सहित, सदैवकाल अत्यंत छिपा हुआ मंत्र जिसका ऐसा, पराये उपकारका करनेवाला तथा धर्मकर्मांकरके सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रेन्दुयोगफलम् ।

सद्गंधपुष्पोत्तमवस्तुचित्तो वस्त्रादिकानां क्रथविक्रयेषु ।

दक्षो नरः स्याद्यसनी विधिज्ञः प्रालेयरश्मौ कविना समेते १०

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा शुक्र सहित हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गंधवाले अच्छे पुण्योंमें और उत्तम वस्तुओंमें चित्त रखनेवाला, वस्त्रोंको आदि लेकर अनेक वस्तुओंका क्रय विक्रय करनेमें चतुर और अनेक प्रकारके व्यसनों-करके सहित तथा विधियोंका जाननेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ मन्देन्दुयोगफलम् ।

परस्त्रीरतो वैश्यवृत्त्यानुजीवी सदाचारहीनः परस्यात्मजश्च ।

भवन्मानवः पूरुषार्थेन हीनः प्रसूतौ यदा मंदशीतांशुयोगः ११॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर चंद्रमाका योग होता है वह मनुष्य परायी खियोंसे प्रीति करनेवाला, वैश्यवृत्तिकरके आजीविका करनेवाला, सदैव आचारकरके हीन, दूसरेका पुत्र तथा पुरुषार्थ करके हीन हो॥ ११॥

अथ भौमेन्दुजयोगफलम् ।

सद्वाहुद्वकुशलो विपुलांगनानां सल्लालसो विविधभेषज-

पुण्यशीलः । स्याद्वेमलोहविधिबुद्धिविभावको ना धात्रीसुते शशिसुतेन युते प्रसूतौ ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल बुधकरक सहित हो वह मनुष्य बाहु-युद्धमें कुशल, बहुतसी खियोंमें लालसा करनेवाला, अनेक औषधीसहित-पुण्यशीलवाला, सुवर्ण और लोहेकी विधिमें बुद्धिविभावक होता है ॥ १२ ॥

अथ भौमजीवयोगफलम् ।

मंत्राद्वशश्वपरिबोधविधौ मनुष्योऽत्यर्थ भवेद्धि निपुणश्च

विवेकशीलः । सेनापतिस्तु नृपतिस्त्वथवा पुरेशो ग्रामेश्वरो धरणिजे धिषणेन युक्ते ॥ १३ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल बृहस्पतियुक्त हो वह मनुष्य मंत्र अथ शास्त्र इनके समझनेमें चतुर, अर्थसाधनमें निपुण, चतुर, शीलवान्, फौज-का पति वा नृपति वा नगरका स्वामी वा श्रामका अधिपति हो ॥ १३ ॥

अथ शुक्रारयोगफलम् ।

प्रपञ्चानृतद्यूतकर्मप्रियः स्यादनेकांगनाभोगचित्तः सर्गवः ।
प्रसूतौ नरः सर्ववैरानुकर्ता यदा भूसुते दानवेज्यन युक्ते ॥ १४ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल शुक्रकरके सहित हो वह मनुष्य प्रपञ्च, अनृत और जुआ कर्मका प्रेमी, अनेक श्रियोंके भोगमें चित्त रखनेवाला, अभिमानी तथा सबसे बैर करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ मंदारयोगफलम् ।

शश्वास्ववित्समरकर्मरतो नितांतं स्तेयानृतप्रियकरः पुरुषो-
इल्पवित्तः । सौजन्यताविरहितः खलु सौख्यहीनः स्याद्भू-
सुतेऽक्तनयेन युतेऽतिनिध्यः ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल शनिसे युक्त हो वह मनुष्य शश्व और शास्त्रका जाननेवाला, संश्रामकर्ममें सदैव तत्पर, चोरी, झूठका प्रेमी, थोड़े धनवाला, मित्रतासे रहित, सुखसे हीन तथा निधि होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधजीवयोगः ।

संगीतज्ञो नीतिनाथो विनीतः सौख्याधिक्यः सद्गौणैः स्यात्प्र-
पूर्णः । धीरः सौगन्ध्यप्रियः स्यादुदारः सूतौ जीवे सौम्ययुक्ते
मनुष्यः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति बुधकरके संयुक्त होता है वह मनुष्य संगीतशास्त्रका जाननेवाला, नीतिमें चतुर, विनयकरके सहित, अधिक-सौख्य युक्त, श्रेष्ठ गुणोंकरके पूर्ण, धीरजयुक्त, सुगंधि है प्रिय जिसको तथा उदार स्वभाववाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधशुक्रयोगफलम् ।

सद्गामिलासो गुणवान्विवेकी सदा सहर्षः स्वकुलाधिशाली ।

नरः सुवेशो बहुनायकः स्याच्छुक्रान्विते सोमसुते प्रसूतौ ॥ १७ ॥

जिसके जन्मकालमें शुक्रसहित बुध होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, गुणोंकरके युक्त, चतुर, सदैव काल आनंदयुक्त, अपने कुलमें प्रतापी, अच्छे स्वरूपवाला तथा बहुत मनुष्योंका पति होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधार्कियोगः ।

कलिप्रियश्चंचलचित्तवृत्तिः कलाकलापे कुशलो नरः स्यात् ।

भर्ता बहुनां परमः सुशीलः प्रसूतिकाले बुधमंदयुक्ते ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध शनैश्चरके सहित होता है वह मनुष्य कलह प्रिय जिसको, चंचल चित्तकी प्रकृति जिसकी, संपूर्ण कला अर्थात् गान काव्य कलामें कुशल, बहुतसे मनुष्योंका स्वामी तथा बहुत अच्छे स्वभाववाला होता है ॥ १८ ॥

अथ जीवदैत्येजययोगः ।

नित्यं कांतावित्तमित्रात्मजाद्यैः सौख्यं मत्योंविद्या पंडितः स्यात् ।
वादात्यर्थं पंडिताद्यैः करोति गीर्वाणेजये दानवेज्येन युक्ते ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति शुक्रकरके सहित होता है वह मनुष्य नित्य ही कांता, धन, मित्र, पुत्रादिकोंसे युक्त, सौख्यसहित, विद्याकरके पंडित और पंडितोंसे नित्य ही विवादका करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ जीवार्कियोगः ।

यशोऽधिको श्रामपुराधिनाथः स्त्रीसंशयप्राप्तमनोरथः स्यात् ।

शूरो धनाद्यैः कुशलः कलासु जीवे समदे मनुजः प्रसूतौ ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति शनैश्चरकरके युक्त होता है वह मनुष्य अधिक यशस्वी, श्राम अथवा नगरका स्वामी, स्त्रीसंशयसे मनोवांछित फल प्राप्त, शूर, धनवान् तथा संपूर्ण कलाओंमें कुशल होता है ॥ २० ॥

अथ सितासितयोगः ।

सच्छिल्पलेखविविजातकुत्रुहलाब्धः पाषाणकर्मकुशलश्चल-
बुद्धियुक्तः । स्यादारुणो रणकरो मनुजः प्रसूतौ पूर्वासुरेज्य-
सहिते तरणेस्तनूजे ॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-
संग्रहे द्विग्रहयोगवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र शनैश्चर करके सहित होता है वह
मनुष्य अच्छी तरह से शिल्पलेख अर्थात् मकानोंपर चित्रकारी करनेमें चतुर,
आनंदसहित; पत्थरकी चीजोंके बनानेमें कुशल, चंचलबुद्धि सहित तथा
दारुण संग्राम करनेवाला होता है ॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-
पंडितश्यामलालविरचितायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां ज्योतिषश्याम-
संग्रहे द्विग्रहयोगवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ त्रिग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचंद्रभौमयोगफलम् ।

सवंत्रपाषाणविधौ प्रवीणः नारीकृपाभ्यां रहितश्च शूरः ॥

एकत्रसंस्थैर्जनने मनुष्यो भवेदशीतद्युतिरक्तचंद्रैः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें एकस्थानमें सूर्य चन्द्रमा मंगल युक्त हों
वह मनुष्य पत्थरके यंत्र बनानेमें चतुर, शियोंसे तथा दयासे रहित तथा
शूर होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यचंद्रबुधयोगफलम् ।

सत्कार्यकृन्नरपतेश्च भवेन्महोजा वार्ता विधौ सकलशास्त्रकलासु दक्षः ।
प्रद्योतनामृतकरामृतरश्मजानां चेन्मानवश्च खलु संमिलने प्रसूतौ २

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य चंद्रमा बृहसहित स्थित हो वह मनुष्य राजाओंके अच्छे कार्मोंका करनेवाला, प्रतापी, वार्ता करनेमें चतुर तथा सम्पूर्ण शास्त्रोंकी कलामें प्रवीण होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यचन्द्रजीवयोगः ।

प्राज्ञो धूर्तश्चंचलः स्यात्प्रवीणः सेवाभिज्ञस्त्वन्यदेशाभिगामी ।

ताराधीशादित्यवाचस्पतीनां योगे तूनं भूतिकाले मनुष्यः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्र, सूर्य, बृहस्पति एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य पंडित, धूर्ता करनेवाला, चंचल, चतुर, सेवाका जाननेवाला तथा अन्य देशोंमें गमन करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यचन्द्रशुक्रयोगः ।

सद्धर्मकर्मण्यरुचिर्नरः स्यात्परार्थहर्ता व्यसनानुरक्तः ।

सरोजिनीशोशनशीतभासश्वैकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य, चंद्र, शुक्र संयुक्त स्थित हों वह मनुष्य अच्छे धर्म और कर्मोंमें श्रीति न करनेवाला, पराये धनका हरनेवाला तथा व्यसनोंमें आसक्त होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचन्द्रशनियोगफलम् ।

वेश्यानुरक्तो द्विजदेव भक्तो धातुक्रियायां निरतोऽतिधूर्तः ।

व्यर्थप्रयासप्रकरो नरः स्यादेकक्षणाः सूर्यसुधांशुमन्दाः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य चंद्रमा, शनैश्चर सहित स्थित हों वह मनुष्य वेश्यामें आसक्त, ब्राह्मण और देवताओंका भक्त, धातुक्रियामें तत्पर, अत्यन्त धूर्त तथा वृथा ही मेहनतका करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यभौमबुधयोगः ।

लज्जात्मजार्थवनिताजनमित्रवर्गैर्युक्तो भवेजनुषि निष्ठुरचित्त-

वृत्तिः ॥ ख्यातः सुसाहसकमंत्रविधी प्रवीणो युक्तैर्दिनाधिप-

कुजेंदुसुतैर्मनुष्यः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बुध एक स्थानमें स्थित हो वह मनुष्य लज्जा, पुत्र, धन, श्री और मित्रजनोंके सहित, कठोर चित्तवृत्तिवाला हो, पराक्रमसे विख्यात तथा सलाह करनेमें चतुर होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यभौमजीवयोगः ।

वक्ता धनाढ्यः सचिवो नृपाणां चमूपतिनीतिविधौ समर्थः ।
उदारहत्सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥७॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बृहस्पति एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य वक्ता और धनवान्, राजाओंका मंत्री, सेनाका पति, नीतिशास्त्रमें कुशल, उदारचित्त तथा सच बोलनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ सूर्यभौमशुक्रयोगः ।

भाग्यान्वितोऽतिधिषणः सधनो विनीतो वंशाधिकः सुचतुरो
बहुजल्पकः स्यात् । सच्छीलसद्गुणयुतो मनुजः प्रसूतौ
चैकर्क्षगैस्तरणिभूसुतदानवेज्यैः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य मंगल, शुक्र सहित स्थित हो वह मनुष्य भाग्यकरके सहित, विद्वान्, धनकरके युक्त, नव्रताकरके सहित, वंशमें श्रेष्ठ, अत्यंत चतुर, बहुत बोलनेवाला, उत्तम शीलवाला और श्रेष्ठ गुणोंकरके संयुक्त होता है ॥ ८ ॥

अथ सूर्यभौमशनियोगः ।

विवेकहीनः पितृबंधुवर्गेऽर्धनौर्विहीनः कलहानुरक्तः ।

रोमान्वितः स्यान्मनुजः प्रसूतौ चेदर्कवक्रार्कसुता हि योगे ॥९॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, शनैश्चर एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य चतुरता और पिता भाई इत्यादि और धन इन करके हीन, कलहमें तत्पर तथा रोमसहित होता है ॥ ९ ॥

अथ सूर्यबुधजीवयोगः ।

द्वयोगयुक्त शास्त्रकलाकलापे विचक्षणः स्यान्मनुजः सुशीलः ।
सुसंग्रहार्थः प्रबलः प्रसूतौ योगे रविज्ञामरपूजितानाम् ॥ १० ॥

(२८६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, वृहस्पति एक स्थानम् स्थित हों वह मनुष्य नेत्रोंके रोगकरके युक्त, शास्त्रकी कलामें चतुर तथा अच्छी तरह संग्रह करनेमें तत्पर होता है ॥ १० ॥

अथ सूर्यबुधशुक्रयोगः ।

कांतानिमित्तं परितप्तचित्तमाचारहीनश्च विदेशवासी ।

द्वेषीसतां निंद्यमतिर्नरः स्याद्योगे विवस्वद्बुधभार्गवानाम् ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, शुक्र एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य इके निमित्तकरके जला हुआ चित्त जिसका, आचारकरके हीन, विदेशका वास करनेवाला, सर्वकाल सबसे वैर करनेवाला तथा खोटी-बुद्धिवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ सूर्यबुधमंदयोगः ।

षंढाकृतिश्चात्मजनैर्विहीनो लोके महाद्वेषकरोऽतिदुष्टः ।

भवेन्नरो नीचजनानुयातः सूतौ रविज्ञार्कसुतैः समैतैः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध और शनैश्चर एकत्रित हों वह मनुष्य नपुंसकोंकेसा स्वभाव, अपने भाई बंधुओंकरके हीन, संसारमें अत्यंत वैर करनेवाला, बड़ा दुष्ट तथा नीच मनुष्योंका संग करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ सूर्यवृहस्पतिशुक्रयोगः ।

परस्य कार्येऽष्यतिसादरो नाऽप्रगल्भवाक्यो द्रविणेन हीनः ।

भूपाश्रितः क्रूरतरस्वभावो योगे रवीज्यासुरपूजितानाम् ॥ १३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, वृहस्पति और शुक्रका योग होता है वह मनुष्य पराये कामको अधिक प्रीतिसे नहीं करनेवाला, बहुत न बोलनेवाला, द्रव्यकरके हीन, राजाका आश्रय करनेवाला तथा दुष्ट स्वभाववाला होता है ॥ १३ ॥

अथ सूर्यमंदजीवयोगः ।

नृपश्रिया मित्रकलत्रपुत्रौर्नित्यं युतः कांतवपुर्नरः स्यात् ।

शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृतप्रगल्भः ॥ १४ ॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर, बृहस्पति और सूर्यका योग हो सो मनुष्य राजाओंको प्यारा, मित्र, स्त्री और पुत्रोंकरके सदैव संयुक्त शोभायमान शरीरवाला, अच्छी तरह नीतिकरके स्वर्चका करनेवाला तथा प्रगल्भ होता है ॥ १४ ॥

अथ सूर्यशुक्रार्कियोगः ।

द्रविणकाव्यकथास्वजनोज्जितः कुचरिताभिरुचिस्त्वतिभीतियुक् ।
भवति कंडुरुजार्तियुतः सदा रविसितार्कसुतैः सहितैर्नरः ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य धन, काव्य, कथा तथा अपने भाई बंधुओंकरके रहित, बुरे कार्योंमें प्रीति करनेवाला, भयकरके सहित तथा कंडुदोषयुक्त सदैवकाल रहे ॥ १५ ॥

अथ चन्द्रभौमबुधयोगः ।

दीनोऽत्यन्तं स्वीयवर्गापमानो नूनं मत्यो वित्तधान्येन हीनः ।
स्यादुत्पत्तौ हीनलोकानुयातो योगे दोषाधीशभौमेदुजानाम् ॥१६॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, चंद्रमा, बुधका योग होता है वह मनुष्य अत्यंत दीन, अपने कुटुंबियोंकरके अपमान किया हुआ, निश्चयकरके धन और अन्धकरके हीन तथा नीच जनोंका संग करनेवाला हो ॥ १६ ॥

अथ चन्द्रभौमजीवयोगः ।

ब्रणांकितः कोपयुतश्च हर्ता कांतारतः कांतवपुर्नरः स्यात् ।
प्रसूतिकाले मिलिता भवन्ति चेदारनीहारकरामरेज्याः ॥ १७ ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें मंगल, चंद्रमा, बृहस्पति स्थित हों वह मनुष्य फोड़ा फुडियाओंकरके अंकित देह जिसकी, क्रोधसहित, हरण करनेवाला, स्त्रीमें आसक्त तथा शोभायमान शरीरवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ भौमचन्द्रशुक्रयोगः ।

दुःशीलः स्त्रीनायकश्चंचलो ना दुःशीलः स्यात्तसुतः शीलयुक्तः ।
मत्यो नूनं चैकभावे यदा स्यात्सूतौ ताराधीशभौमासुरेज्याः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल और शुक्र एकत्र स्थित हों वह मनुष्य निश्चयसे खोटे स्वभाववाली श्रीका पति, चचलस्वभाववाला, खोटा शीलवाला होता है तथा उसका पुत्र शीलवान् होता है ॥ १८ ॥

अथ चन्द्रभौमशनियोगः ।

मृतिप्रदः शैशवके जनन्याः सदा मनुष्यः कलहाभितपः ।

स्याद्गर्हितश्चद्रुकुजार्कपुत्राः प्रसूतिकाले मिलिता यदि स्युः १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर करके युक्त हो उस मनुष्यकी बालकपनेमें माता प्रत्युको प्राप्त होती और सर्वकाल वह मनुष्य कलहकरके दुःखी रहता है ॥ १९ ॥

अथ चन्द्रबुधजीवयोगः ।

धीमान्महौजा बहुभाग्ययुक्तः सद्वृत्तविद्योऽतिविचित्रमित्रः ।

विख्यातकीर्तिश्च भवेन्मनुष्य एकत्र संस्थैः शशिसौम्यजीवैः २०॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें चंद्रमा, बुध, बृहस्पति होते हैं वह मनुष्य बुद्धिमान्, राजतुल्य, बहुत भाग्यकरके युक्त, अच्छी वृत्ति, प्रकाशवान्, विचित्र हैं मित्र जिसके तथा संसारमें कीर्ति जिसकी विख्यात ऐसा होता है ॥ २० ॥

अथ चन्द्रबुधशुक्रयोगः ।

श्राद्धे श्रद्धायुक्त सुविद्याप्रवीणो मत्यो नूनं नीचवृत्त्यानुजीवी ।

चेदेकत्रस्थानसंस्थाः प्रसूतौ ताराधीशज्ञौ सुराचार्ययुक्तौ ॥२१॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें चंद्रमा, बुध, शुक्रकरके सहित स्थित हो वह मनुष्य श्राद्धके विषे श्रद्धायुक्त, अच्छी विद्यामें प्रवीण तथा निश्चयकरके नीच वृत्तिकरके आजीविका करनेवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रबुधमन्दयोगः ।

ख्यातो विनीतोऽभिमतो नृपाणां नरः पुरग्रामकृताधिकारः ।

कलाकलापेऽमलबुद्धिशाली चंद्रज्ञमंदाः सहिता यदि स्युः ॥२२॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा बुध शनैश्चरसे युक्त होता है वह मनुष्य संसारमें विख्यात, नग्रतासहित, राजाओंको प्रिय, नगर वा ग्राममें अधिकार करनेवाला, सम्पूर्ण कलाओंमें कुशल तथा श्रेष्ठ बुद्धियुक्त होता है ॥ २२ ॥

अथ शुक्रचंद्रजीवयोगः ।

भाग्याधिकः सद्गुणकीर्तियुक्तः सद्बुद्धिविद्यासहितो नरः स्यात् ।
प्रसूतिकाले हिमरश्मजीवपूर्वासुरेज्याः सहिता यदि स्युः ॥ २३ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा बृहस्पति, शुक्र सहित होते वह मनुष्य अधिक भाग्यवान्, अच्छे गुण और कीर्तिकरके युक्त, श्रेष्ठ बुद्धि और विद्याकरके सहित होता है ॥ २३ ॥

अथ चंद्रजीवशनियोगः ।

सन्मंत्रशास्त्राधिकृतः सुवेशो भूप्रियोऽत्यंतविचक्षणश्च ।
भवेन्महौजा मनुजः प्रसूतौ योगे निशीशेज्यशनैश्चराणाम् ॥ २४ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बृहस्पति, शनैश्चर एक स्थानमें स्थित होते हैं वह मनुष्य अच्छे मंत्र और शास्त्र इनका जानेवाला, अच्छा स्वरूप-वाला, राजाओंको प्यारा तथा अत्यंत चतुर होता है ॥ २४ ॥

अथ चंद्रसितार्कियोगः ।

अभिमतोत्तमपुस्तकवीक्षणे सुललितो धनधर्मपरायणः ।
श्रुतिविदां प्रवरश्च पुरोधसां शशिसितार्कभुवां मिलने नरः ॥ २५ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य मन चाहती पुस्तकोंका देखनेवाला, शोभायमान शरीरवाला, धन और धर्ममें तत्पर तथा वेदके जानेवाले पुरोहितोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ २५ ॥

अथ मंगलबुधजीवयोगः ।

निजकुले नृपतिर्मनुजो भवेद्रकवित्वकगीतकलादरः ।
अतिपरार्थकसाधनमानसः कुजबुधांगिरसां जनने युतौ ॥ २६ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बुध, बृहस्पति एक स्थानमें स्थित हों तो वह मनुष्य अपने कुलमें राजाके समान, श्रेष्ठ काव्य और गीतकलाओंमें चतुर तथा पराये अर्थसाधनमें विशेषकरके मन रखनेवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ भौमबुधशुक्रयोगः ।

वाचालः स्याञ्चंचलः क्षीणदेहो नित्योत्साही मानवो वित्तयुक्तः ।
धृष्टोऽत्यंतं तारकेशावनीजदैत्येज्यानां संभवे संयुतिश्वेत् ॥ २७ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध, मंगल, शुक्र एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, दुर्बल देहवाला, सदैव उत्साही, धनकरके युक्त तथा अत्यंत धृष्ट होता है ॥ २७ ॥

अथ भौमबुधार्कियोगः ।

भयान्वितः क्षीणवपुर्वनेच्छः प्रेष्यः प्रवासी कुविलोचनश्च ।
न स्यात्सद्विष्णुर्बुद्धेशभोक्ता योगे कुजज्ञार्कभुवां प्रसूतौ ॥ २८ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बुध, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य भयकरके सहित, हीनदेह, बनकी कांक्षा करनेवाला, दूत, परदेशमें रहनेवाला, बुरे नेत्रोंवाला, सहिष्णु तथा अतिक्लेशका भोगनेवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ भौमजीवशुक्रयोगः ।

कलत्रपुत्रादिसुखैः समेतो भूपालमान्यः सुजनानुयातः ।
भवेन्मनुष्योऽवनिजामरेज्यपूर्वासुरेज्यैः सहितैः प्रसूतौ ॥ २९ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बृहस्पति, शुक्र एकत्र होते हैं वह मनुष्य जी पुत्रादिकोंके सुखसहित, राजाओंकरके मान्य तथा श्रेष्ठ जनोंकरके युक्त होता है ॥ २९ ॥

अथ भौमजीवार्कियोगः ।

भूपालमानः कृपया विहीनः कृशः कुवृत्तौ गतमित्रसौख्यः ।
भवेन्नरः श्रेष्ठग्रहं प्रयातैः क्षोणीतनूजागिरसार्कपुत्रैः ॥ ३० ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें मंगल, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य राजाओंकरके आप मान, कृपाकरके हीन, दुर्बल देह, खोटी वृत्तिका करनेवाला तथा मित्रोंके सुखसे रहित होता है ॥ ३० ॥

अथ भौमशुक्रार्कियोगः ।

विदेशवासी जननी त्वनार्या कुरंगनेत्रोपहतिः सुखान्तम् ।

प्रसूतिकाले यदि संयुताः स्युर्माहेयदैत्यार्चितभानुपुत्राः ॥ ३१ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, शुक्र, शनैश्चर एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य परदेशका वास करनेवाला, अनार्य जननीवाला, खीकरके सुख रहित होता है ॥ ३१ ॥

अथ बुधजीवशुक्रयोगः ।

सत्यान्वितः स्याद्द्वुगीतकीर्तिर्भूपानुकंपाविजितारिपक्षः ।

प्रसन्नमूर्तिर्बुधजीवशुक्रैकर्क्षसंस्थैर्जनने नरः स्यात् ॥ ३२ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध, बृहस्पति, शुक्र एक स्थानमें स्थित होते हैं वह मनुष्य सत्यकरके सहित, बहुत दूरतक गायी गई है कीर्ति जिसकी, राजाकी दयाकरके शत्रुओंको जीतनेवाला और प्रसन्न मूर्तिवाला ऐसा होता है ॥ ३२ ॥

अथ बुधजीवार्कियोगः ।

सद्वित्तसद्वाहनशीलयुक्तः सद्वस्त्रभूषः सुभगः सुभृत्यः ।

शनैश्चराचार्यशशांकपुत्राः क्षेत्रे यदैकत्र युता भवन्ति ॥ ३३ ॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर, बृहस्पति, बुध एक स्थानमें संयुक्त हों वह मनुष्य श्रेष्ठ धन, श्रेष्ठ वाहन और श्रेष्ठ शीलकरके सहित, अच्छे वस्त्र और भूषणकरके युक्त, सुंदर है भाग्य जिसका, श्रेष्ठ है भृत्य जिसका ऐसा होता है ॥ ३३ ॥

अथ बुधशुक्रार्कियोगः ।

असत्यभाषी बहुदारगामी धूर्तः सदाचारविवर्जितः स्यात् ।

दूरप्रयाणानुरतः कलाज्ञो धीरो जशुकार्कभुवां प्रसूतौ ॥ ३४ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध, शुक्र, शनैश्चर एक स्थानमें स्थित होते हैं वह मनुष्य झूँठका बोलनेवाला, बहुत खियोंमें गमन करनेवाला, धूत, सदैवकाल आचारकरके रहित, दूर यात्रामें रति जिसकी, सम्पूर्ण कला-ओंका जाननेवाला तथा धीर होता है ॥ ३४ ॥

अथ जीवशुक्रार्कियोगः ।

यदपि नीचकुलोद्भवमानुषो विशदकीर्तियुतः पृथिवीपतिः ।

अमलवृत्तियुतो जनने भवेद्विषणभार्गवभानुभुवां युतौ ॥ ३५ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य चाहे नीच कुलमें क्यों न पैदा हुआ हो, परंतु बड़ी कीर्तिकरके युक्त, पृथिवीका पति तथा निर्मल वृत्तियोंकरके युक्त होता है ॥ ३५ ॥

पापखेटसहिते कलानिधौं कीर्तयंति जननीविनाशनम् । तादृशे-
ऽम्बरमणौ जनकस्य मिश्रिते च खलु मिश्रितं फलम् ॥ ३६ ॥

सद्युतः कुमुदिनीपतिर्जनौ भूयशोऽर्थवरकीर्तिसंयुतम् । गौर-
वेण नृपतेर्वरेण्यकं मानवं प्रकुरुते कुलोत्तमम् ॥ ३७ ॥

एकालये चेत्खलखेचराणां त्रयं करोत्येव नरं कुरुपम् ।
दारिद्र्यदुःखैः परितपदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः ॥ ३८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-

संग्रहे त्रिग्रहयोगवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

पापश्रहोंकरके सहित चंद्रमा पीडाकारक हो तो माताका नाश करता है, इसी तरह सूर्य पापश्रहोंकरके सहित हो तो पिताको रोगी करता है और जो पापश्रह शुभश्रह दोनोंकरके युक्त हो तो मिश्रित फल कहना चाहिये ॥ ३६ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभश्रहोंकरके युक्त चंद्रमा हो तो धरती, यश और धन करके संयुक्त होता है, गौरवताकरके श्रेष्ठ कुलमें उत्तम मनुष्यको करता है ॥ ३७ ॥ जो एक स्थानमें तीन पापश्रहोंका

योग हो तो उस मनुष्यको कुरुप करते हैं, दरिद्र और दुःखकरके परितम
देह हो जिसके कभी वरमें कल्याण नहीं होता है ॥ ३८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावत्सश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योति-
षिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां त्रिग्रह-
योगवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ चतुर्ग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचन्द्रभौमबुधयोगः ।

सूर्येदुभौमसौम्यानां योगे लेखकरो नरः ।

मुखरोगयुतश्चौरो भाषायां निपुणो भवेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्र, मंगल, बुधका योग होता है वह
मनुष्य लेखक, मुखका रोगी, चोर तथा भाषामें निपुण होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमजीवयोगः ।

सूर्यश्चंद्रः कुजो जीव एकस्थाने धनी नरः ।

शिल्पज्ञो दीर्घनेत्रश्च स्वर्णाभो वीर्यवान्भवेत् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बृह-
स्पतिका योग हो तो वह मनुष्य शिल्पशास्त्रज्ञ जाननेवाला, बड़े नेत्र-
वाला, सुवर्णकीसी कांतिवाला तथा बलवान् होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यचंद्रभौमभृगयोगः ।

रवींदुभौमशुक्राणां योगे शास्त्रार्थयुद्धनरः ।

सौख्यंपुत्रयुतः स्त्रीणां वाचालो मनुजो भवेत् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, भौम, शुक्रका योग होता
है सो मनुष्य शास्त्रके अर्थको जाननेवाला, पुत्र और स्त्रीकरके सुखी
तथा बहुत बोलनेवाला होता है ॥ ३ ॥

(२९४)

ज्योतिषश्यामसंयहः ।

अथ सूर्यचन्द्रभौमशनियोगः ।

सूर्येदुभौममंदानां योगे दारिद्र्यसंयुतः ।

मूर्खों विषमदेहश्च द्रव्यहीनो भेवेन्नरः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, भौम, शनैश्चरका योग हो सो मनुष्य दारिद्रकरके सहित, मूर्ख, दुर्बलदेह तथा धनहीन होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधजीवयोगः ।

सूर्येदुबुधजीवानां योगे बहुधनी भेवेत् ।

हीनशोकश्च तेजस्वी नीतिशास्त्रविशारदः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरुका योग हो सो मनुष्य बहुत धनी, शोकरहित तेजयुक्त, नीतिशास्त्रमें कुशल होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधशुक्रयोगः ।

अकेदुज्जकवीनां च योगे कांतियुतो नरः ।

लघुदेहो भूपमान्यो वाचालो विकलो भेवेत् ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्रका योग हो सो मनुष्य कांतिकरके सहित, छोटा शरीर, राजाकरके मान्य, बोलनेवाला तथा विकल होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधशनियोगः ।

सूर्यचन्द्रज्ञमंदानां योगे जातोऽतिनिर्धनः ।

भिक्षाशी नेत्ररोगी च कुटुंबरहितो नरः ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शनैश्चरका योग होता है सो मनुष्य धनकरके रहित, भिक्षाकरके भोजन करनेवाला, नेत्ररोगसहित तथा कुटुंबकरके हीन होता है ॥ ७ ॥

अथ सूर्यचन्द्रगुरुशुक्रयोगः ।

रवींदुगुरुशुक्राणां संयोगे नृपपूजितः ।

नीरे प्रीतिर्मृगेऽरण्ये रतिमान्त्रिर्गुणः सुखी ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य राजाओंकरके पूजनीय, जल, मृग और वनमें प्रीति करनेवाला गुण करके रहित तथा सुखी होता है ॥ ८ ॥

अथ सूर्यचन्द्रगुरुशनियोगः ।

सूर्येदुभृगुमंदानां योगे वित्तसुतान्वितः ।

सुनेत्रो लोकमान्यश्च भार्याप्रीतिः प्रतापवान् ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्र, बृहस्पति, शनैश्चरका योग हो सो मनुष्य धन और पुत्रोंकरके सहित, अच्छे नेत्रवाला, संसारमें मानयुक्त, स्त्री-से प्रीति करनेवाला तथा प्रतापी होता है ॥ ९ ॥

अथ सूर्यचन्द्रशुक्रमंदयोगः ।

सूर्येदुभृगुमंदानां संयोगे द्यतिदुर्बलः ।

नारीतुल्यसदाचारो भयभीतश्च जायते ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, शनैश्चरका योग हो सो मनुष्य अतिदुर्बल शरीरवाला, स्त्रियोंके तुल्य आचारवाला तथा भयभीत होता है ॥ १० ॥

अथ सूर्यबुधगुरुभौमयोगः ।

सूर्यभौमज्ञजीवानां संयोगे विजयी भवेत् ।

परदाररतो नित्यं देवताद्विजसेवकः ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, बृहस्पति, मंगलका योग हो सो प्राणी विजयी होता है, पराई स्त्रियोंमें सदैवकाल रत तथा देवता और ब्राह्मणोंका सेवक होता है ॥ ११ ॥

अथ सूर्येदुभौमशुक्रयोगः ।

सूर्येदुभौमशुक्राणां योगे दुर्जनमानसः ।

तस्करः स्त्रीरतो नित्यं निर्लज्जो निर्धनो भवेत् ॥ १२ ॥

(२९६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य खोटे चित्तवाला, चोर, द्वियोंमें प्रीति करनेवाला तथा लज्जा और धनकरके रहित होता है ॥ १२ ॥

अथ सूर्यभौमबुधार्कियोगः ।

सूर्यभौमज्ञमंदानां योगे नीचजनान्वितः ।

मंत्री सेनापतिवीरः काव्यशस्त्रास्त्रविन्नरः ॥ १३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बुध, शनैश्चरका योग होता है सो मनुष्य नीच मनुष्योंकरके युक्त, मंत्री, सेनाका मालिक, वीर, काव्य और अस्त्र-शस्त्रोंका जाननेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ सूर्यभौमजीवशुक्रयोगः ।

हंसभौमेज्यशुक्राणां संयोगे सुभगो जनः ।

भूपमान्यो धनी ख्यातो नीतिज्ञो नरपालकः ॥ १४ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य शोभायमान, राजाकरके मान्य, धनकरके विख्यात, नीतिका जाननेवाला तथा मनुष्योंका पालन करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ सूर्यभौमजीवार्कियोगः ।

सूर्यभूसुतजीवार्कियोगे सेनापतिर्भवेत् ।

मंत्रज्ञो भूपमान्यश्च धनधान्यद्यान्वितः ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है सो मनुष्य फौजका अफसर, मंत्रका जाननेवाला, राजाकरके मान्य, धन, अन्न और दयाकरके सहित होता है ॥ १५ ॥

अथ सूर्यभौमशुक्रमंदयोगः ।

रविभौमो भृगुर्मदो नीचसंगपरो नरः ।

बद्धेषी दुराचारी मूर्खस्तु पलभक्षकः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, शनैश्चर, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य नीचजातिके मनुष्योंसे संग रखनेवाला, बहुत वैर करनेवाला, दुष्ट आचारवाला, मूर्ख तथा मांसका खानेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ सूर्यबुधवृहस्पतिशुक्रयोगः ।

सूर्यविद्यगुरुशुक्राणां संयोगे विनयान्वितः ।

धनी मानी भूमिपालः पुत्रदारसुखान्वितः ॥ १७ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, गुरु, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य विनयकरके सहित, धनवान्, मानी, राजाके समान, पुत्र और स्त्रीके सुखसहित होता है ॥ १७ ॥

अथ सूर्यबुधजीवमन्दयोगः ।

भास्करो बुधजीवार्किंसंयोगे प्रभवो नरः ।

नपुंसको नरो मानी दुराचारी निरुद्यमः ॥ १८ ॥

सूर्य, बुध, वृहस्पति, शनैश्चरके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है सो नपुंसक, मानी, खोटे कर्म करने वाला तथा उद्धरहित होता है ॥ १८ ॥

अथ सूर्यबुधशुक्रार्कियोगः ।

भास्करो बुधभृग्वादिसंयोगे सुभगः शुचिः ।

बंधुमान्यो महाप्राज्ञः पुत्रदारसुखान्वितः ॥ १९ ॥

सूर्य, बुध, शुक्र, शनैश्चरके योगमें जो मनुष्य पैदा होता है सो श्रेष्ठ-भाग्यवाला, पवित्र, भाइयोंकरके पूज्य, बड़ा पंडित, पुत्र और स्त्रीके सुखसहित होता है ॥ १९ ॥

अथ सूर्यवृहस्पतिशुक्रार्कियोगः ।

हंसो जीवः कविर्मदः संयोगे कृपणो महान् ।

काव्यकृत्करुणायुक्तो भूपमान्यो भवेन्नरः ॥ २० ॥

सूर्य, वृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है सो महाकृपण, काव्यका करनेवाला तथा करुणासे युक्त होता है ॥ २० ॥

अथ चन्द्रभौमबुधशुक्रयोगः ।

विधुभौमज्ञशुक्राणां संयोगे कलही भवेत् ।

बंधुद्वेषी नीचसेवी वेदत्राह्मणनिंदकः ॥ २१ ॥

चंद्र, मंगल, बुध, शुक्रके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है सो पुरुष कलह करनेवाला, भ्राताओंका द्वेषी, नीच जनोंसे प्रीति करनेवाला तथा वेद और शास्त्रका निंदक होता है ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रभौमबुधजीवयोगः ।

चंद्रभौमबुधेज्यानां योगे भूपदयान्वितः ।

सर्वशास्त्रार्थकुशलः सत्यवादी सुखी भवेत् ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पतिका योग हो सो राजाकी दया करके सहित, सम्पूर्ण शास्त्रमें कुशल, सच बोलनेवाला तथा सुखी होता है ॥ २२ ॥

अथ चन्द्रभौमशनिशुक्रयोगः ।

विधुभौमभृगोर्मदसंयोगे कुलवंचकः ।

लोकद्वेषी दरिद्री च नरः शूरकुलोद्धवः ॥ २३ ॥

चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर, शुक्रके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है सो पुरुष अपने कुलमें वंचक, संसारका वैरी, दरिद्री, शूरोंके कुलमें उत्पन्न होता है किंतु शूर नहीं होता ॥ २३ ॥

अथ चन्द्रभौमगुरुशुक्रयोगः ।

इंदुगोजेज्यशुक्राणां संयोगे विकलो नरः ।

धनपुत्रान्वितो मानी नीतिज्ञः साहसी भवेत् ॥ २४ ॥

चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शुक्रके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है जो मनुष्य विकल, धन पुत्र करके सहित, मानी, नीतिको जाननेवाला तथा साहसी होता है ॥ २४ ॥

अथ चंद्रमंगलगुरुशनियोगः ।

चंद्रारजीवमंदानां संयोगे नृपपूजितः ।

सत्यवादी सदानन्दो नीचसेवी दयान्वितः ॥ २५ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है सो पुरुष राजपूजित, सच बोलनेवाला, सदा आनंदयुक्त, नीचोंका सेवी तथा दयाकरके सहित होता है ॥ २५ ॥

अथ चन्द्रभौमशुक्रार्कियोगः ।

विधुभौमभूगोर्मन्दसंयोगे पुंश्चलीपतिः ।

दूतकर्मरतो नित्यं मद्यमांसप्रियः सदा ॥ २६ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल, शुक्र, शनैश्चरका संयोग हो सो प्राणी व्यभिचारिणी स्त्रीका पति, सदैव जुआ खेलनेवाला तथा मद्य, मांसको खानेवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ चन्द्रबुधजीवशुक्रयोगः ।

चंद्रेन्दुजेज्यशुक्राणां योगे दाता दयान्वितः ।

बुद्धिमान्धनसंपन्नो विद्यवादी विचक्षणः ॥ २७ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य दाता, दयाकरके सहित, बुद्धिमान्, धनयुक्त, विद्याका वाद करनेवाला तथा चतुर होता है ॥ २७ ॥

अथ चन्द्रबुधगुरुमंदयोगः ।

चन्द्रेन्दुजेज्यमंदानां योगे लोकप्रियो नरः ।

यशस्वी ज्ञानसंपन्नस्तेजस्वी विजितेन्द्रियः ॥ २८ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है सो पुरुष संसारको प्यारा, यशस्वी, ज्ञानसहित, तेजस्वी तथा इंद्रियोंका जीतनेवाला होता है ॥ २८ ॥

(३००)

ज्योतिषश्यामसंघ्रहः ।

अथ चन्द्रबुधशुक्रशनियोगः ।

चन्द्रविच्छुक्रसौरीणां संयोगे नृपपूजितः ।

नेत्ररोगी पुराधीशो बहुदारयुतो धनी ॥ २९ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बुध, शुक्र, शनि का योग हो सो पुरुष राजपूजित, नेत्ररोगी, बहुत ख्यातिसहित, धनी तथा ग्रामस्वामी हो ॥ २९ ॥

अथ चन्द्रजीवशुक्रार्कियोगः ।

विधुजीवार्किशुक्राणां संयोगे ललनाप्रियः ।

धर्मज्ञो निर्धनः प्राज्ञः स्थूलदेहो विचक्षणः ॥ ३० ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बृहस्पति, शनैश्चर, शुक्रका संयोग होता है सो मनुष्य स्त्रीको प्यारा, धर्मका जाननेवाला, धनरहित, पंडित, स्थूलशरीरवाला तथा चतुर होता है ॥ ३० ॥

अथ भौमगुरुबुधशुक्रयोगः ।

कुजेज्यबुधशुक्राणां संयोगे कलहप्रियः ।

सुशीलो धनसंपत्तो राजमान्यो दयान्वितः ॥ ३१ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, गुरु, बुध, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य कलह करनेवाला, सुशील, धनी, राजमान्य तथा दयावान् होता है ॥ ३१ ॥

अथ भौमबुधजीवशनियोगः ।

भौमविज्जीवमंदानां संयोगे निर्धनो भवेत् ।

शुचिः सदा सत्ययुक्तः शूरश्च विनयान्वितः ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल, बुध, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है सो मनुष्य धनरहित, पवित्र, हमेशा सच बोलनेवाला, शूर तथा नम्रताकरके सहित होता है ॥ ३२ ॥

अथ भौमजीवशुक्रार्कियोगः ।

भौमेज्यसितमंदानां संयोगे सुखो धनी ।

विद्याविनयसंपत्तः साहसी सुजनप्रियः ॥ ३३ ॥

भाषाटीकासहितः—अ० २०. (३०१)

जिसके जन्मकालमें मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका संयोग होता है सो पुरुष सुंदरमुखवाला, धनवान्, विद्या और नम्रतासहित, साहसी तथा अच्छे मनुष्योंको प्यारा होता है ॥ ३३ ॥

अथ भौमबुधशुक्रार्कियोगः ।

वित्तिसतासितभौमानां संयोगे धनवर्जितः ।

पुष्टदेहो मिष्टभाषी मल्लविद्याविशारदः ॥ ३४ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध, शुक्र, शनैश्चर, मंगलका संयोग होता है सो मनुष्य धनराहित, पुष्टशरीरवाला, मीठा बोलनेवाला तथा मल्लविद्यामें विशारद होता है ॥ ३४ ॥

अथ बुधगुरुशुक्रार्कियोगः ।

जीवज्ञभृगुसौरीणां योगे कामातुरो जनः ।

शस्त्रविद्यारतो नित्यं वेदवेदांगपारगः ॥ ३५ ॥

इति श्रीवंशबरेलिऽज्योतिषि पं० श्यामलालकृते ज्योतिषश्यामसंग्रहे
चतुर्ग्रहयोगवर्णनं नाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति, बुध, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है सो मनुष्य कामातुर, शस्त्रविद्यामें प्रीति करनेवाला तथा वेद और वेदके अंगोंको जाननेवाला होता है ॥ ३५ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यो-
तिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां चतु-
र्ग्रहवर्णनं नाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

अथ पंचग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचन्द्रमंगलबुधजीवयोगः ।

भार्याहीनः सदा दुःखी दुष्टः क्रोधी महाछली ।

हंसाद्यैर्गुरुपर्यंतैः संयोगे पंचभिर्ग्रहैः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य आदि बृहस्पति पर्यंत पांच ग्रहोंका योग हो वह मनुष्य स्त्रीहीन, सदैव दुःखयुक्त, दुष्ट, क्रोधी और बड़ा छली होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमबुधशुक्रयोगः ।

मिथ्यावादी भ्रातृहीनो दयालुः परसेवकः ।

कुपीवाकृतिर्दादशात्मचंद्रभौमज्ञभार्गवैः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्रका योग होता है वह मनुष्य झूँठ बोलनेवाला, भ्राताकरके हीन, दयावान्, पराई सेवा करनेवाला तथा हिजड़कीसी आकृतिवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यचन्द्रमंगलबुधशनियोगः ।

अल्पजीवी सदा दुःखी भार्यापुत्रविवर्जितः ।

सूर्येन्दुकुजज्ञाकीणां संयोगे तस्करो भवेत् ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बुध, शनि, चंद्रका योग होता है वह थोड़े काल जीनेवाला, सदैव दुःख भोगनेवाला, स्त्री पुत्र रहित और चोर होता है ३

अथ सूर्यचन्द्रमंगलगुरुशुक्रयोगः ।

मातृपितृसुखैर्हीनो नेत्रदोषी च दुःखितः ।

गानविद्यारतो भौमभानुचन्द्रेज्यभार्गवैः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, गुरु, शुक्रका योग हो वह माता-पिताके सुखसे हीन, नेत्ररोगी, दुःखी तथा गानविद्यामें रत होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमगुरुमंदयोगः ।

परस्वहर्ता व्यसनी साधुदेषी जडाकृतिः ।

कातरः सूर्यसंयोगे चन्द्रारगुरुसौरभिः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य पराये धनका हरनेवाला, व्यसनयुक्त, साधुओंका वैरी, वृक्षोंकीसी आकृतिवाला तथा डरपोक होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यचन्द्रमंगलशुक्रार्कियोगः ।

परदाररतो द्वेषी अर्थधर्मविवर्जितः ।

संयोगे जायते भानुचंद्रारभृगुसौरिभिः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शुक्र, शनिका योग होता है वह मनुष्य पराई खियोंमें रमण करनेवाला, सबसे द्वेषी तथा अर्थधर्मसे रहित हो ॥ ६ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधगुरुशुक्रयोगः ।

राजमान्यो धनी मानी न्यायाधीशो विचक्षणः ।

रवींदुज्जेज्यशुक्राणां संयोगप्रभवो नरः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्रका योग हो वह मनुष्य राजा करके माननीय, धन-मानयुक्त, न्यायाधीश, अर्थात् हाकिम तथा बड़ा चतुर होता है ॥ ७ ॥

अथ सूर्यचंद्रबुधजीवार्कियोगः ।

वेश्यागामी ऋणप्रस्तो दुराचारी भयान्वितः ।

धर्मद्वेषी नरो भानुचंद्रज्ञशुक्रसौरिभिः ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य वेश्याके साथ गमन करनेवाला, ऋणकरके असित, दुष्ट कार्मोंका करनेवाला, भयकरके युक्त तथा धर्मका द्वेष करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ सूर्यचंद्रबुधशुक्रार्कियोगः ।

देहरोगी द्रव्यहीनः पुत्रमित्रविवर्जितः ।

बहुरोमान्वितो भानुचंद्रज्ञभृगुसौरिभिः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बुध, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य देहरोगी, धनकरके हीन; पुत्र और मित्रोंकरके रहित तथा बहुतसे रोगकरके सहित होता है ॥ ९ ॥

(३०४)

ज्योतिषश्वामसंग्रहः ।

अथ सूर्यचन्द्रगुरुशुक्रार्कियोगः ।

वाक्यजालरतः पापी चलचित्तोऽगनाप्रियः ।

शत्रुभिस्तप्त आदित्यचंद्रजीवसितासितैः ॥ १० ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य वाणीका जाल रचनेवाला, पापी, चलायमान चित्तवाला, स्त्रीका प्यारा तथा शत्रुओंकरके तपित होता है ॥ १० ॥

अथ सूर्यमंगलबुधगुरुशुक्रयोगः ।

सेनापतिर्नरः कामी यशस्वी बहुसेवकः ।

रव्यारज्ञेज्यशुक्राणां संयोगे नृपपूजितः ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, मंगल, बृहस्पति, शुक्रका संयोग होता है वह मनुष्य फौजका स्वामी, कामी, यशवान्, बहुतसे नौकरोंकरके सहित तथा राजपूजित होता है ॥ ११ ॥

अथ सूर्यमंगलबुधगुरुशनियोगः ।

भिक्षाशी च नरो रोगी स्वल्पवित्तः सुतान्वितः ।

बृद्धो जडो भानुभौमबुधजीवशनैश्चराः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य भिक्षाकरके भोजन करनेवाला, रोगसहित, थोड़े धन करके युक्त, पुत्रवाच, बृद्ध तथा जड होता है ॥ १२ ॥

अथ सूर्यमंगलबुधशुक्रार्कियोगः ।

स्थानभ्रष्टो व्याधियुक्तः शत्रुग्रस्तो बुभुक्षितः ।

सूर्यशुक्रज्ञमन्दारसंयोगे विकलो नरः ॥ १३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, शुक्र, बुध, शनैश्चर, मंगलका योग हो वह मनुष्य स्थानभ्रष्ट, व्याधियुक्त, शत्रुओंकरके व्रसित, भूखकरके दुःखी तथा विकल होता है ॥ १३ ॥

अथ सूर्यगुरुमंगलशुक्रनियोगः ।
प्राज्ञो धनी बन्धुयुक्तो धातुयन्त्रात्मकारकः ।
तपस्वी भानुभौमार्कभृगुजीवान्वितैर्भवेत् ॥ १४ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, शनैश्चर, शुक्र और बृहस्पति करके सहित हो वह मनुष्य पंडित, धनवान्, भ्राताओंकरके युक्त, धातु और लोहेके यंत्रोंका बनानेवाला तथा तपस्वी होता है ॥ १४ ॥

अथ सूर्यबुधगुरुशुक्रार्कियोगः ।
दयालुर्धार्मिको वक्ता मित्रयुक्तो धनान्वितः ।
सामंतो भास्करश्चाद्रिजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य दयावान्, धर्मात्मा, वक्ता, मित्रोंकरके सहित, धनकरके सहित तथा फौजका मालिक होता है ॥ १५ ॥

अथ चंद्रमंगलबुधजीवशुक्रयोगः ।
सुशीलः पापरहितो मित्रद्रव्यैः सुखान्वितः ।
बहुविद्यायुतश्चंद्रभौमज्ञगुरुभार्गवैः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्रका योग होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ स्वभाववाला, पापकरके रहित, मित्र और धनकरके सुख तथा बहुत विद्या करके संयुक्त होता है ॥ १६ ॥

अथ चंद्रमंगलबृहस्पतिशुक्रार्कियोगः ।
परान्नभोगी मलिनः परसेवान्वितः सुधीः ।
योगे भवति चन्द्रारजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ १७ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य पराये अन्नका भोग करनेवाला, मलिन, परायी सेवामें तत्पर तथा पंडित होता है ॥ १७ ॥

(३०६)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अथ चंद्रभौमबुधशुक्रार्कियोगः ।

मित्रद्वेषी दुराचारी निष्ठुरः परनिंदकाः ।

चंद्रभौमज्ञशुक्रार्किसंयोगे प्रभवो नरः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा, बुध, शुक्र, शनैश्चर, मंगलका योग होता है वह मनुष्य मित्रोंसे वैर करनेवाला, खोटे कर्म करनेवाला, कठोर हृदय तथा परायी निंदा करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रार्कियोगः ।

राजतुल्यो राजमान्यो लोकपूज्यो गणाधिपः ॥

चंद्रज्ञगुरुशुक्रार्किसंयोगे जायते नरः ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य राजाके सदृश, राजमान्य, संसारपूजनीय तथा गणाधीश होता है ॥ १९ ॥

अथ भौमबुधगुरुशुक्रार्कियोगः ।

धनी मंत्री शुचिर्वक्ता दीर्घायुः स्वजनप्रियः ॥

भौमज्ञगुरुशुक्रार्किसंयोगे नृपवल्लभः ॥ २० ॥

इति वंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-

ज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे

पंचग्रहयोगवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग हो वह मनुष्य धनवान्, मंत्री, पवित्र, वक्ता, दीर्घायु, अपने मनुष्योंको प्यारा तथा राजाको प्यारा होता है ॥ २० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-

पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां पंचग्रह-

योगवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ षड्ग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचन्द्रभौमबुधजीवशुक्रयोगः ।

अल्पभाषी धनैर्युक्तो विद्याधर्मसुखर्युतः ।

हंसाद्यैर्भूगुपर्यतैः संयोगे जायते नरः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्यको आदि लेकर शुक्रपर्यंत छः ग्रहोंका योग हो वह मनुष्य थोड़ा बोलनेवाला, धनकरके युक्त, विद्या, धर्म और सुखकरके सहित होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यचन्द्रमंगलबुधजीवार्कियोगः ।

परोपकारी शुद्धात्मा दयालुशंचलो नरः ।

विपिने रमते नित्यं विना शुक्रं तु षड्ग्रहैः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकालमें शुक्रके विना छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य पराया उपकार करनेवाला, शुद्ध-अंतःकरण, दयावान्, चंचल तथा वनमें विचरनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यचन्द्रमंगलबुधशुक्रशनियोगः ।

चिंतायुक्तो नरो मानी संशामे विजयी भवेत् ।

वनाद्रौ रमते धाती विना जीवं तु षड्ग्रहैः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें वृहस्पतिके विना छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य चिन्ताकरके युक्त, मानी, संशाममें जय पानेवाला तथा वन और पर्वतोंमें विचरनेवाला तथा धाती होता है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमजीवशुक्रार्कियोगः ।

क्रोधीकृपणोऽर्थाद्यो ग्रामपूज्यः सुखप्रियः ।

भूमिपालकृपापात्रं विना चन्द्रसुतं ग्रहैः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें बुधके विना छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य क्रोधी, कृपण, धनयुक्त, ग्रामपूज्य, सुखसहित तथा राजाओंका कृपापात्र होता है ॥ ४ ॥

(३०८)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

अथ सूर्यचन्द्रबुधगुरुक्षुकशनियोगः ।

भार्यापुत्रधनैर्हीनो धर्मज्ञो वेदपारगः ।

भूपमान्यो दयायुक्तो विना भौमेन षड्ग्रहैः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें चंगलके विना छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य स्त्री, पुत्र और धनकरके हीन, धर्मका जाननेवाला, वेदका पारग, राजाकरके मान्य तथा दयासहित होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यमंगलबुधगुरुक्षुकशनियोगः ।

भिक्षाशी च क्षमायुक्तो ब्रह्मविद्यारतो नरः ।

विना चंद्रे ग्रहैः सर्वैः संयोगे धनवर्जितः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमाके विना छः ग्रहोंका योग हो सो मनुष्य धनकरके रहित, भिक्षा मांगनेवाला, क्षमायुक्त तथा ब्रह्म-विद्यामें तत्पर होता है ॥ ७ ॥

अथ चन्द्रमंगलबुधगुरुक्षुकशनियोगः ।

भूपमान्यो धनी स्व्यातो बहुभायो गुणान्वितः ।

चंद्राद्यैः शनिपर्यंतैः संयोगे प्रभवो नरः ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमासे लेकर शनिपर्यंत छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य राजमान्य, धनवान्, संसारमें विख्यात तथा बहुत स्त्री और गुणोंकरके सहित होता है ॥ ७ ॥

अथ सप्तग्रहयोगः ।

दिवाकरनिभं तेजो भूपमान्यः शिवप्रियः ।

सूर्याद्यैः शनिपर्यंतैयोगे दानी धनान्वितः ॥ ८ ॥

इति श्रीविंशतिरेलिकस्थगौडवंशावतंस श्रीबलदेवप्रसादात्मज-

राजजोतिषिण्डितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे

षड्ग्रहयोगवर्णनं नाम एकविंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

जो मनुष्य सूर्यसे लेकर शनिपर्यंत सात ग्रहोंके योगमें उत्पन्न हो सो सूर्य प्रकाशके समान तेजवाला, राजौंकरके मान्य, शिवका भक्त, दान करनेवाला तथा धनवान् होता है ॥ ८ ॥

इति श्रीबंशबरेलिकस्थगौडबंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-
पंडितश्यामलालविरचितायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां ज्योतिष-
श्यामसंग्रहे पड्यहयोगवर्णनं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ पाकाध्यायप्रारंभः ।

अथ विंशोत्तरीदशाक्रमः ।

अग्निभाजन्मभांतं च गणयेन्नवभिर्भजेत् ।

शेषं दशारचंभौराजीवज्ञार्किशिखीभृगुः ॥ १ ॥

कृतिकानक्षत्रसे लेकर जन्मनक्षत्रपर्यंत गणना करके उसमें नौका भाग दे, शेष बचे सो क्रमसे र. चं. भौ. रा. जी. ज्ञ. श. के. शुककी दशा जाननी चाहिये ॥ १ ॥

अथ दशावर्षमाह ।

रसाशास्वरधृत्यब्दाः षोडशैकोनविंशतिः ।

सूर्यादिवत्सराः प्रोक्ताः सप्तचंद्रो मुनिर्निखाः ॥ २ ॥

छः, दश, सात, अठारह, सोलह, उन्नीस, सत्रह, बीस वर्ष ये क्रमसे सूर्यादि शुक्रपर्यंत ग्रहोंकी दशाके वर्ष होते हैं अर्थात् रविकी दशा छः वर्षकी होती है, इसी तरह चंद्रमाके दश, मंगलके सात, राहुके अठारह, बृहस्पतिके सोलह, शनैश्चरके उन्नीस, बुधके सत्रह, केतुके सात, शुक्रके बीस वर्ष होते हैं ॥ २ ॥ दशा बनानेकी रीति यह है कि—पहिले गतक्ष और सर्वक्ष बनाना चाहिये, उसकी रीति यह है गत नक्षत्रकी घड़ी पल साठमें घटाकर उसमें सूर्योदय इष्ट मिलाय देना उसको गतक्ष कहते हैं और वही जो गत

(३३०)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

नक्षत्र साठमें घटाया है उसको शेषमें वर्तमान नक्षत्रकी घटी पल जोड़ देनेसे सर्वक्षण होता है । यथा उदाहरण—जैसे किसी मनुष्यका जन्म चैत्र सुदी पूर्णिमा २० घ. ३० पलका है । जन्मसमय उस दिन हस्त नक्षत्र १४ दंड ५१पल है । यहाँ नक्षत्र इष्टकालसे न्यून है अतः हस्तनक्षत्र गत हुआ और चित्रा वर्तमान हुआ । गत नक्षत्रकी घटी पल ६०में घटा दी ६० साठमें गये चौदह तो रहे ४६ के रखे ४५ एक उतरे ६० गये ५१ बचे ९ तौ अब)४५९(में सूर्योदय इष्ट जोड़ दिया,

२०।३०

६५।३९ पैसठमेंसे गये साठ तौ रहे)५।३९
(इसको गतक्षण कहते हैं अब उसी)४५।९ (में वर्तमान नक्षत्रकी घटी पल मिलानेसे सर्वक्षण होता है सो वर्तमान चित्रानक्षत्र दूसरे दिन १२ दंड ४१ पल है इनमें पैतालीस जोड़ दिये)४५ ९ ()५७ ५० (

तौ)५७।५०(हुए, इसको सर्वक्षण कहते हैं। दशाका भुक्त भोग बननेका

उदाहरण ।

कृतिका जन्मनक्षत्रपर्यंत गुणना करी तो चित्रानक्षत्र १२ हुआ, इसमें नौका भाग देनेसे शेष ३ रहे तीसरीं दशा मंगलकीमें मनुष्यका जन्म हुआ । अब गतक्षणके पल करना ॥

गतक्षण ५।३९ पांचको साठसे गुणा

एवं भमे गु. ६०)३०० (इसमें पल जोड़ दिये

३९

३३९

अब सर्वक्षण पल करना (५७५० (सर्वक्षण

गु. ६०)३४२० (इसमें पल जोड़ दिये

५०

) ३४७० (यह सर्वक्षं हुआ
दशा मंगलकी वर्ष ७	गु. ७) ३३८ (सर्वक्षको दशाके वर्षोंसे गुणना २३७३
मुक्त	सर्वक्षभा) ३४७० (भागो नास्ति ल.०
व. ०	१२ गु.) २३७३ (
मा. ८	२८४७६ इतने हुए
दि. ६	८ गुणा) ३४७० भा. (ल. ८
घ. ११	२७७६० इनको घटाया
प. २४ इसको गुणा ३०) ७१६ (शेष ३१४८० इतने हुए
	६ गुणा) ३४७० भा. (ल. ६ २०८२० इतने हुए
इसको ६० गुणा) ६६० (शेष रहा ३९६०० इतने हुए
इसको ११ गुणा) ३४७० भा. (ल. ११ इनको घटाया ३९६०० हुए
इसको ६० गुणा) १४३० (शेष रहे ८५८०० हुए
२ गुणा) ३४७० भा. (ल. २४ इनको घ. ६९४० इतने हुए
) १५४०० (शेष रहे
४ गुणा.)	३४७० (भा.
इनको घटाया १३८८०	इतने हुए
	२५२० शेष रहे यहां अब कुछ नहीं

(३१२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

करना जो लब्ध आया है सो दशाका भुक्त जानना चाहिये । इस लब्धको दशाके वर्षोंसे घटानेसे जो शेष रहे सो दशाका भोग जानना । यथा— मंगलकी दशा ७वर्षकी इसमें भुक्त घटाया भुक्त ० व. ८ मा. ६ दि. १३ व. २४ पल है सातको रखे ६ उतरे १२ बारहमें गये ८ रहे ४ चारके धरे ३ उतरे ३० तीसमें गये ६ तो रहे २४ चौबीसके धरे २३ उतरे ६० गये ११ रहे ४९ उनचासके धरे ४८ उतरे ६० गये २४ रहे ३६ सो सम्पूर्ण भोग ६ व. ३ मा. ३३ दि. ४८ व. ३६ पल होता है ॥ २ ॥

अथ विशेषतरीदशाक्रमः ।

मह.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	श.
वर्ष.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
नक्षत्र.	कु.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले.	म.	पू.फा.
	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.
	उ.षा.	अ.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अ.	भ.

अथाष्टोत्तरीदशाक्रमः ।

रविश्चंद्रः कुजश्चांद्रिमंदो जीवस्तमो भृगुः ।

दशा अष्टोत्तरी ख्याता केतुहीना स्मृता बुधैः ॥ ३ ॥

सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, शनैश्चर, बृहस्पति, राहु और शुक्र यह अष्टोत्तरी दशाका क्रम केतुकरके रहित विद्वानोंने कहा है ॥ ३ ॥

अथ दशावर्षमाह ।

रसो बाणेदुरष्टौ च सप्तचन्द्रो दिगीश्वरः ।

एकोनविंशदादित्या एकविंशति क्रमात् स्मृताः ॥ ४ ॥

छः, बाणेदु अर्थात् पंद्रह, आठ, सत्रह, दश, उन्नीस, बारह और इक्कीस वर्ष क्रमकरके कहे हैं अर्थात् सूर्यकी दशा ६ वर्षकी, चन्द्रमाकी पंद्रह वर्षकी, मंगलकी आठ वर्षकी, बुधकी सत्रह वर्षकी, शनैश्चरकी दश वर्षकी, बृहस्पतिकी उन्नीस वर्षकी, राहुकी बारह वर्षकी और शुक्रकी इक्कीस वर्षकी इस क्रमसे दशा कही है ॥ ४ ॥

अथ अष्टोत्तरीक्रमज्ञानम् ।

दशा अष्टोत्तरी प्रोक्ता शंभुना कृत्तिकादितः ।
चतुस्त्रयं पुनर्वेदा अग्निर्वेदास्त्रयं पुनः ॥ ५ ॥

कृत्तिका नक्षत्रको आदि लेकर शुक्रसे आर सूर्यसे चार नक्षत्र फिर तीन, फिर चार, फिर तीन, फिर चार, फिर तीन इस क्रमसे अष्टोत्तरी दशा शिवजीकरके कही गई है ॥ ५ ॥

अथ देशभदन दशामाह ।

गुर्जरे कच्छसौराष्ट्रे पांचाले सिंधुपर्वते ।
देशोष्वष्टोत्तरी ज्येया प्रत्यक्षफलदायिनी ॥ ६ ॥

गुर्जर, कच्छ, सौराष्ट्र, पांचाल और सिंधुपर्वत इन देशोंमें अष्टोत्तरी दशा प्रत्यक्ष फल देनेवाली जाननी चाहिये । गुर्जरकरके गुजरात, कच्छ करके कच्छभुज, काठियावाड, सौराष्ट्रकरके सूरत, पांचाल अर्थात् पंजाब और सिंधुपर्वतकरके दुर्गत देश जानना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ अष्टोत्तरीदशाचक्रम् ।

प्रह.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	बू.	रा.	शु.
वर्ष.	६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२९
नक्षत्र.	आ.	म.	ह.	अनु.	पू.षा.	ध.	उ.भा.	कृ.
	पु.	पू.फा.	चि.	ज्ये.	उ.षा.	श.	रे.	रो.
	पु.	उ.फा.	स्वा.	मू.	आमि.	पू.भा.	अ.	मृ.
	आळे.	०	वि.	०	श्र.	०	भ.	०

अथ योगिनीदशाक्रमः ।

मंगला पिंगला चैव धान्या ब्रामरिभद्रिके ।

उल्का सिद्धा संकटा च योगिनी च दशाः स्मृताः ॥ ७ ॥

मंगला, पिंगला, धान्या, ब्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा यह योगिनीकी दशा विद्वानोंने कही है ॥ ७ ॥

अथ मंगलादिदशास्वामिनः ।

मंगलायाः शशी स्वामी पिंगलाया दिवापतिः ।

धान्याधिपो देवपूज्यो भूमिजो ऋमरीपतिः ॥ ८ ॥

भद्रिकाया बुधः प्रोक्त उल्कास्वामी शनैश्चरः ।

सिद्धाधिपो दैत्यपूज्यस्तमस्तु संकटाधिपः ॥ ९ ॥

मंगलादशाका चंद्रमा स्वामी है, पिंगलाका सूर्य स्वामी है, धान्याका बृहस्पति स्वामी है, ऋमरीका मंगल पति है ॥ ८ ॥ भद्रिकाका बुध स्वामी है, उल्काका शनैश्चर स्वामी है, सिद्धादशाका शुक्र स्वामी है और संकटा दशाका राहु मालिक है ॥ ९ ॥

अथ योगिनीदशाप्रकारमाह ।

जन्मनक्षत्रपर्यंतं गणयेद्रामसंयुतम् ।

अष्टभिर्भाजितं शेषं मंगलाद्या दशा भवेत् ॥ १० ॥

अश्विनीसे लेकर जन्मनक्षत्रपर्यंत गणना करे, उसमें तीन और जोड़े दे आठका भाग दे शेष बचे सो जन्मदशा जाननी चाहिये । यथा—किसी मनुष्यका जन्मनक्षत्र हस्त है तो अश्विन्यादिगणनासे तेरहवां हुआ, उसमें तीन और जोडे तो सोलह हुए आठका भाग दिया बचा शून्य तो उसकी जन्मदशा संकटा हुई, भुक्तभोग विशोत्तरीके समान बनाना चाहिये ॥ १० ॥

अथ मंगलादिवर्षक्रमः ।

चंद्रो नेत्रे ब्रयो वेदा बाणाः षड् गिरयो गजाः ।

योगिनीवत्सराः ख्याता हिमे गौर्यैश्चिवेन हि ॥ ११ ॥

इति श्रीवैश्वरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-

राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-

संग्रहे दशावर्णनं नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

मंगलाकी एक वर्षकी, पिंगलाकी दो वर्षकी, धान्याकी तीन वर्षकी, ऋमरीकी चार वर्षकी, भद्रिकाकी पांच वर्षकी, उल्काकी छः वर्षकी, सिद्धाकी सात वर्षकी और संकटाकी आठ वर्षकी दशा होती है ॥ ११ ॥

भाषाटीकासाहितः—अ० २३। (३१५)

अथ योगिनीदशाचक्रम् ।

दशापति	चंद्र	सूर्य	वृ.	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	रा.
दशा.	म.	पि.	धा.	आ.	म.	उ.	सि.	स.
वर्ष.	१	२	३	४	५	६	७	८
नक्षत्राणि	आ.	पुन.	पु.	आळे.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.
	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.
	श्र.	घ.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अ.	भ.
	कृ.	रो.	मृ.					

इति श्रीवंशबेरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज्योतिषि-
पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां दशा-
वर्णनं नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ अंतर्दशाध्यायप्रारंभः ।

तत्रादौ विंशोत्तरीदशांतराणि लिख्यन्ते ।

ये जो तीन प्रकारकी विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी इसी तरह योगिनी दशाओंके जो चक्र गणित करके स्पष्ट बनाये हैं इन चक्रके अंकोंमें दशाका संवत् और सूर्यस्पष्ट जोड़ देनेसे अंतरका चक्र बन जाता है ॥

अथ सूर्यदशांतराणि ।

अथ चन्द्रदशांतराणि ।

सू.	चं.	म.	रा.	वृ.	शा.	बु.	के.	शु.	प्र.
०	०	०	०	०	०	०	०	१	व.
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	मा.
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दि.

चं.	म.	रा.	वृ.	शा.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्र.
०	०	१	१	१	१	१	०	१	व.
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.

अथ भौमदशांतराणि ।

अथ राहुदशांतराणि ।

मं.	रा.	वृ.	शा.	बु.	के.	श.	सू.	चं.	अ.
०	१	०	१	०	०	१	०	०	व.
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मा.

रा.	वृ.	शा.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	प्र.
२	२	२	२	१	३	०	१	१	व.
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	मा.

३१६

ज्योतिषशास्त्रग्रहः ।

अथ गुरेद्दशांतरणि ।

बृ.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	ग्र.
२	२	२	०	२	०	१	०	२	व.
१	६	३	११	८	९	४	११	४	मा.
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	दि.

अथ शनिदशांतरणि ।

श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	ग्र.
३	२	१	३	०	१	१	१	२	व.
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	मा.
६	९	९	०	१२	०	९	६	१२	दि.

अथ बुधदशांतरणि ।

बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्र.
२	०	२	०	१	०	२	२	२	व.
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मा.
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	दि.

अथ केतुदशांतरणि ।

के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बृ.	ग्र.
०	१	०	०	०	१	०	१	०	व.
४	२	४	७	४	०	११	१	११	मा.
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	दि.

अथ भूगोर्दशांतरणि ।

शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.	ग्र.
३	१	१	१	३	२	३	२	१	व.
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.

अथाष्टोत्रीदशांतरं लिख्यते ।

आदौ सूर्यदशांतरणि व० ६ ।

प्रह.	सू.	चं.	म.	बृ.	श.	बृ.	रा.	शु.
व.	०	०	०	०	०	१	०	१
मा.	४	१०	५	११	६	०	८	२
दि.	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	अ.

अथ चंद्रदशांतरणि व० १५ ।

प्रह.	चं.	म.	बृ.	श.	बृ.	रा.	शु.	सू.
व.	२	१	२	१	२	१	२	०
मा.	३	१	४	४	७	८	११	१०
दि.	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमदशांतरणि व० ८ ।

ग्रह.	म.	बृ.	श.	बृ.	रा.	शु.	सू.	चं.
व.	०	१	०	१	०	१	०	१
मा.	७	३	८	४	१०	६	५	१

अथ बुधदशांतरणि व० १७ ।

ग्रह.	बृ.	श.	बृ.	रा.	शु.	सू.	चं.	म.
व.	२	१	२	१	३	०	२	१
मा.	८	६	११	१०	३	११	३	३

भाषाटीकासहितः—अ० २३।

۳۹۶

अथ शनिदशांतराणि व० १० ।

ਗ੍ਰਹ	ਸਾ.	ਵੂ.	ਰਾ.	ਸ਼ੁ.	ਸੂ.	ਚੰ.	ਮ.	ਤੁ.
ਵ.	੦	੧	੧	੧	੦	੧	੦	੧
ਮਾ.	੧੧	੯	੧	੧੧	੬	੪	੮	੬
ਦਿ.	੩	੩	੧੦	੧੦	੨੦	੨੦	੨੬	੨੬
ਘ.	੨੦	੨੭	੦	੦	੦	੦	੪੦	੪੦

अथ राहुदशांतराणि व० १२।

मह.	रा.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	बृ.
वं.	१	३	०	१	०	१	१	२
मा.	४	४	८	८	१०	१०	१	१
दि.	०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
घ.	०	५	०	०	०	०	०	०

अब मंगलादि योगिनीदशाके चक्र सहित अंतर लिखते हैं ।

अथ मंगलादशांतराणि व० १।

ग्रहद.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	०	१	१	१	२	३	२
दि.	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	

अथ धान्यकादशांतराणि व० ३ ।

इन अंतर्देशकि अंकोमें जन्मकी दशका संवत् और सूर्य स्पष्ट जोड़ देनेसे हरएक जन्मपत्रमें अंतर्देशका चक्र पूरा हो जाता है ॥

अथ भद्रिकांतर्दशाचक्रम् व० ५ ।

दशा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	त्रा.
व.	०	०	०	१	०	०	०	०
मा.	८	१०	११	१	१	३	५	६
दि.	१०	०	०	१०	२०	१०	०	१०

अथ. गूरुदशांतराणि व० १९।

प्रह.	व.	स.	ल.	सू.	च.	मं.	बु.	श.
व.	३	२	३	१	२	१	२	१
मा.	४	९	८	०	७	४	१५	९
दि.	५	१०	१०	२०	२०	२६	२५	३
घ.	२०	०	०	०	०	४०	४०	३०

अथ शुक्रदशांतराणि व० २१।

अतरं लिखत ह ।

प्रहृद.	पिं.	धा.	ध्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	१	२	२	३	४	४	५	०
दि.	१०	०	२०	५०	०	२०	१०	२०

अथ भ्रामरीदशांतरणी व० ४ ।

दशा.	आ.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पं.	धा.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	५	६	८	९	१०	१३	२	४
दि.	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०

अथ उल्कादशांतराणि व० ६ ।

अथ सिद्धादशांतराणि व० ७ ।

दशा.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
व.	१	१	०	०	०	०	०	१
मा.	४	६	२	४	७	९	११	२
दि.	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०

अथ संकटादशांतराणि व० ८।

दक्षा.	सं.	मं.	पिं.	घा.	आ.	भ.	उ.	सि.
व.	१	०	०	०	०	१	१	१
मा.	९	२	५	८	१०	१	४	६
दि.	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०

तिस्रो दशा ह्यतरसंयुताश्च या वर्णिता ज्योतिषशास्त्रविज्ञेः ।
लिखामि चक्रेषु विविच्य सर्वाः फलार्थसिद्धचै विदुषां सुखेन॥१॥

इति श्रीवंशबरे लिकस्थगौडवंशावतं स श्रीबलदेव प्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे
अंतर्देशावर्णनं नाम त्रयोर्बिंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

इति श्रीवंशब्देरेलिकस्थगौडवं शावर्तंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यो-
तिषिंपिंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां
अंतर्दशावर्णनं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ।

अब इस सूक्ष्मांतर्दशाध्यायमें इक्यासी चक्र गणित करके स्पष्ट किये हैं, इन चक्रोंके अंकोंमें अंतर्दशाके चक्रका संवत् सूर्य स्पष्ट जोड़ देनेसे सूक्ष्मांतरका चक्र तैयार होता है ॥

अथ रविदशामध्ये रव्यन्तरं तमध्ये
प्रत्यन्तराणि ।

अथ सूर्यदशामध्ये चंद्रान्तरं तन्मध्ये
प्रत्यन्तराणि ।

भाषाटीकासहितः—अ० २४ ।

۳۹۹

अथ सूर्यदशाभौमतिरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ सूर्यदशामध्ये गुरोरंतरं
तन्मध्ये सर्वप्रत्यंतराणि ।

अथ सूर्यदशामध्ये बुधांतरं
तज्जमध्ये प्रत्यंतराणि ।

अथ सर्यदशाभगोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि।

अथ चंद्रुदशाभैमांतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

अथ सूर्यदशाराहोरंतरं तन्मध्ये
सर्वप्रत्यंतराणि ।

प्रह.	स.	ब.	श.	ब.	के.	श.	मू.	चं.	मं.
मा.	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दि.	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४
प.	०	०	०	७	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशामध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ सूर्यदशाकेत्वंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतगणि ।

अथ चंद्रदशाचंद्रांतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

अथ चंद्रदशाराहोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

अथ चंद्रदशामध्येगुर्वतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	२	२	०	०	२	०	१	०	२	
दि.	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

अथ चंद्रदशाखुधांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दि.	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

अथ चंद्रदशाभूधांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दि.	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमदशाभौमांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

मह.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	११	२३	२०	८	२	७	१२
घ.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२९	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

अथ भौमदशागुरोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशाशन्यंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	८	२	१	३	०	१	१	१	२
दि.	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

अथ चंद्रदशाकेवंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.
मा.	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दि.	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	२५	१०
घ.	१५	०	३०	०	३०	१५	३०	१५	४५

अथ चंद्रदशारव्यंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०

अथ भौमदशाराहोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमदशाशल्यंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
प.	३०	३०	१०	०	०	०	३०	०	०

भाषाटीकासहितः—अ० २४ ।

३२९

अथ भौमदशाबुधांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दि.	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथ भौमदशाभूगोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

प्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.
मा.	२	०	१	०	२	२	२	१	०
दि.	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	७	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमदशाच्छ्रांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.
व.	०	०	१	०	१	०	०	१	०
मा.	१७	१२	१	२९	३	२०	१२	५	१०
दि.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशागुरोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

प्रह	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मा.	३	४	४	०	४	१	२	१	४
दि.	१५	१६	२	२०	२७	१३	१२	२०	१
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाबुधांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दि.	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१
प.	०	०	०	०	७	०	०	०	०

अथ भौमदशाकेतोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	१६	२०
घ.	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	३०	४३
प.	३०	०	०	३०	०	०	०	०	३०

अथ भौमदशारवेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

प्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
दि.	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाराहोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दि.	२५	१	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाशनेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

प्रह	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दि.	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाकेत्वंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.
मा.	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दि.	२३	३	१०	१	२२	२६	२०	२८	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाभूगोरंतरं तन्सःध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ राहेदिशाचंद्रान्तरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ गरोदेशागुरोरंतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

अथ गुरोद्दिशाबुधांतं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

अथ गुरोर्दशभूगोरंतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

अथ राहेदिशारवेरंतरं तन्मष्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ राहेदिशाभौमांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ गुरोर्दशाशनेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि

अथ गुरोद्दिशाकेत्वंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि

अथ गुरोद्देशारबेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि

भाषाटीकासहितः-अ० २४ ।

३२३

अथ गुरोद्दशाचंद्रांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दि.	१०	२८	१२	४	१६	८	२४	२०	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	७	०	०	०	०	०

अथ गुरोद्दशाराहेरतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	४	२	४	४	१	४	१	२	१
दि.	९	३५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशाबुधांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दि.	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३
घ.	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५
प.	३०	३०	०	०	३०	०	०	३०	०

अथ शनिदशाभूगेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	६	१	३	२	५	५	६	४	२
दि.	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशाचंद्रांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	१	१	२	२	३	२	१	३	२
दि.	१७	३	२५	१६	०	२०	३०	५	२८
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोद्दशाभौमांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि.	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२४
घ.	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशाशन्यांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दि.	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	३०

अथ शनिदशाकेत्वंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	२	०	३	०	१	१	२	१
दि.	२३	६	११	३	२३	२१	२३	३	२६
घ.	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१
प.	३०	०	०	०	३०	०	३०	०	३०

अथ शनिदशारवेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१७	२८	१२	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घ.	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशाभौमांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

प्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दि.	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घ.	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

३२४

ज्योतिषशामसंव्रहः ।

अथ शनिदशाराहोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दि.	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घ.	५४	४८	५७	२१	५१	०	१८	३०	५१
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाबुधांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	४	१	४	१	२	०	४	३	४
दि.	२	२०	२	१३	९२	२०	१०	२५	१७
घ.	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	२६	१६
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथ बुधदशाभूगोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दि.	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९
घ.	०	०	०	२०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाचंद्रांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दि.	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घ.	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाराहोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	४	२	४	४	१	५	१	२	१
दि.	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घ.	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	२३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशागुरोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मा.	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दि.	१६	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घ.	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाकेत्वंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दि.	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घ.	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

अथ बुधदशारवेरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घ.	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाभौमांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि.	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घ.	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
प.	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	०

अथ बुधदशागुरोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मा.	३	४	३	५	४	१	२	३	४
दि.	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	५	०	०	०	०	०

भाषाटीकासहितः—अ० २४ ।

३२५

अथ बुधदशाशनेरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दि.	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घ.	२५	१६	३१	३०	१७	४५	३१	२१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथ केतुदशाकेतोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

अथ केतुदशाभूगोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.
मा.	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दि.	१०	२०	५	२४	३	२९	६	२८	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशाचंद्रांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.
मा.	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दि.	१७	१२	१	२८	३	१९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशाराहोरंतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

प्रह	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशाशनेरंतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

प्रह	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथ केतुदशाकेतोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

अथ केतुदशारवेरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशाभौमांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

प्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
प.	३०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०

अथ केतुदशागुरोरंतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

प्रह	बृ.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशाजुधांतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

प्रह	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	३	०	१	०	०	०	१	१	१
दि.	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
प.	३०	३०	०	०	०	०	०	०	३०

अथ शुक्रदशाशुक्रांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ भूगुदशाच्चंद्रांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ भूगुदशाराहोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ भगवदशाश्वनेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

अथ भृगुदशाकेतोरंतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि

अथ शुक्रदशारवेरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ भृगुदशाभौमांतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणि ।

अथ भृगुदशागुरोरंतरं तन्मध्ये
प्रत्यंतराणे ।

अथ भगवान् तरंतन्मध्ये प्रवृत्तं तपाणि

अथ भृगुदशाकेतोरंतरंतन्मध्ये प्रत्यंतराणि

दशा चांतर्दशा चैव प्रत्यंतरमुदीरितम् ।
एकाशीतिमिदं चक्रं श्यामलालेन धीमता ॥ १ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-
पंडितश्यामलालविरचितायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां ज्योतिषश्याम-
संयहे प्रत्यंतर्दशावर्णनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

अथ भावाध्यायप्रारम्भः ।

तनुभावः ।

स्वोच्च स्वोच्चनवांशे च शुभवर्गेऽथ नीचगे । नीचांशे क्रूरषुद्धर्गे
मित्रमे सुहदंशके ॥ १ ॥ वर्गोत्तमेऽस्मित्यर्थं स्वक्षेष्ठा द्वादशध
क्रमात् । फलं च तनुभावोत्थं कथ्यते यवनादिभिः ॥ २ ॥
सकलं च फलं तच्च भावेशस्य बलाबलात् । कूरेण युज्य-
मानस्य विशेषाद्विफलं भवेत् ॥ ३ ॥

अपने उच्चमें या उच्चके नवांशमें, शुभग्रहके वर्गमें अथवा नीचमें,
नीचके नवांशमें, पापग्रहके वर्गमें, मित्रकी राशिमें, मित्रके नवांशमें, पापग्रहके
नवांशमें ॥ १ ॥ वर्गोत्तम नवांशमें, शत्रुके नवांशमें, स्वक्षेत्रमें, ऐसा वारहप्रकार-
करके क्रमसे तनुभावका फल यवनादि आचार्योंने कहा है ॥ २ ॥ सम्पूर्ण
फल उस भावके स्वामीके बलाबलसे कहना चाहिये, जो भावेश पापग्रहयुत
हो अथवा युद्धमें हारा हो, या सुप्त अवस्थामें स्थित हो, या अस्त हो तो
वह ग्रह विशेषकरके निष्फल होता है ॥ ३ ॥

एवं शुभफलस्योक्तो निर्णयो भावनाथतः । अशुभस्य क्षय-
स्तस्मिन्सबले विबलेऽथवा ॥ ४ ॥ तीव्रो १ हृढांगः २ सुभगो
३ रागी ४ लावण्यवर्जितः ५ । अंधो ६ दीर्घो ७ ऽथ

(३२८)

ज्योतिषश्यामसंघः ।

जटिलो ८ अधिकांगो ९ हीनकांगकः १० ॥ ६ ॥ दीनः ११ स्या-
नीतिरहितः १२ सूर्ये तनुगते क्रमात् ।

इस प्रकार उत्तम फल कहा गया, यह भावके स्वामी करके निर्णय
किया । अशुभ क्षय फल उससे सबल वा निर्बल अहकरके करे ॥ ४ ॥
तीव्र १, द्वांग २, सुभग ३, रागी ४, लावण्यरहित ५, अंध ६, दीर्घ ७,
जटिल ८, अधिकांग ९, हीनांग १० ॥ ५ ॥ दीन ११, नीतिरहित
१२; जो सूर्य तनुभावमें स्थित हो तो पूर्वोक्त बलाबलसे फल कहना
चाहिये ॥

पूर्णो १ मनोहरः २ स्वच्छः ३ क्षीणो ४ रात्र्यं ५ धतान्वितः ६
॥ ६ ॥ अतिस्वरूपे नियुतः ७ सुमुखो ८ रम्यकेशकः ९ ॥
स्थूलोष्टो १० दीर्घपीनांसः ११ शुभोष्टो १२ उज्जे तनुस्थिते
॥ ७ ॥ रक्तनेत्र १ श्विपिटहृक कर्कशाक्षो ३ उन्वतायुतः ४ ।
नक्तांध ५ स्तिमिरोपेतो ६ वकहृक ७ स्थूललोचनः ८
॥ ८ ॥ नेत्ररोगी ९ दूरदर्शी १० कुदृष्टिः ११ सविधेक्षणः
१२ । जन्मनीदं फलं भौमे तनुभावस्थिते क्रमात् ॥ ९ ॥

पूर्ण १, मनोहर २, स्वच्छ ३, क्षीण ४, रात्रि ५, अंधता ६
॥ ६ ॥ अतिरूपवान् ७, श्रेष्ठ मुख ८, शोभायमान केश ९, मोटे हौंठ
१०, बडा भारी कंधा ११, सुंदर हौंठवाला १२, जो चन्द्रमा लग्नमें स्थित
हो तो पूर्वोक्त बलाबलक अनुसार फल कहे ॥ ७ ॥ रक्तनेत्र १, चुंदा २,
कर्कशनेत्र ३, अंध ४, रात्रीका अंधा ५, तिमिरदृष्टि ६, टेडी दृष्टि ७ मोटे
नेत्र ८ ॥ ८ ॥ नेत्ररोगी ९, दूरदर्शा १०, बुरी दृष्टि ११, श्रेष्ठ दृष्टि १२
जन्मकालके विषे मंगल तनुभावमें स्थित हो तो पूर्वोक्त क्रमसे फल
जानना चाहिये ॥ ९ ॥

सुवक्रनासिकायुक्तः १ सुलंबोष्टो २ उत्तिकांतिमान् ३ ।
दुर्गंधास्यो ४ दीर्घजिह्वो ५ दीर्घकर्णः ६ सितालकः ७ ॥ ३० ॥

शुभकंठो ८ अतिशुभगः ९ कराल १० शपल ११ स्तथा ।
मेदोबृद्धयातिपुष्टांगो १२ बुधे स्यात्तनुभावगे ॥ ११ ॥

अच्छा मुखारविंद शुभनासिका सहित १, अच्छे लंबे हौंठ २,
अतिस्वरूपवान् ३, दुर्गाधिवाला मुख ४, दीर्घ जिह्वा ५, दीर्घ कर्ण ६, श्वेत
केश ७ ॥ १० ॥ शुभकंठ ८, अतिशोभायमान ९, कराल १०, चपल
११, मेदोबृद्धिसे पुष्टांग १२ जो बुध लग्नभावमें स्थित हो तो पूर्वोक्त फल
क्रमसे कहना चाहिये ॥ ११ ॥

सुंदरः १ सुंदरकर्णः २ सुमुखो ६ रोगवर्जितः ४ । सुज्ञः ५
सुभूषः ६ सद्वस्त्रः ७ सुनाभिकटिसंयुतः ८ ॥ १२ ॥ शुभोदरः
९ क्रोडरोगी १० पांडुरोगसमन्वितः । सुलिंगता ११ अतिसौ-
भाग्यसंयुत १२ स्तनुगे गुरौ ॥ १३ ॥

सुंदर १, सुंदर कर्ण २, सुमुख ३, रोगरहित ४, श्रेष्ठ बुद्धि
५, श्रेष्ठ आभूषण ६, श्रेष्ठ वस्त्र ७, सुंदर नाभि कमर ८ ॥ १२ ॥ सुंदर
उदर ९, कमरमें रोग १० अथवा पांडुरोग सहित, सुंदर लिंग ११, सौ-
भाग्यसहित १२ जो बृहस्पति तनुभावमें प्राप्त हो तो पूर्वोक्त क्रमसे फल
बलाबलसे कहने ॥ १३ ॥

स्वास्यजानुः १ सुकरपादू २ विभक्तांगो ३ अल्पकेशकः ।
खल्वाटो ५ बहुरामाद्यः ६ कांतिसौभाग्यसंयुतः ७ ॥ १४ ॥
सुमुखश्च ८ सुरूपश्च ९ कुञ्जो १० विकृतगंधवान् ११ । नेत्रा-
भिरामो १२ भृगुजे क्रमेण तनुभावगे ॥ १५ ॥

सुंदर मुख जानु १, सुंदर हाथ २, विभक्तांग ३, थोडे बाल
४, खल्वाट अर्थात् गंजा ५, बहुत रामादि ६, कांति सौभाग्य-

सहित ७ ॥ १४ ॥ सुंदर मुख ८, सुंदर रूप ९, कुबडा १०, बुरी गंधसहित ११, मध्यम नेत्र १२ जो शुक्र लग्नमें स्थित हो तो पूर्वोक्त बलाबलानुसार क्रमसे फल कहना चाहिये ॥ १५ ॥

श्यामवर्णोऽभिन्नवर्णोऽभिन्नांगोऽभिन्नमकासवान् ४। कफानि-
लाठच्यः ५ पित्ताठच्योऽगौरः ७ संततमस्थिमान् ८ ॥ १६॥
स्थूलनखता तु ९ सूक्ष्मनेत्र १० स्ताभ्यां समन्वितः । स्थूल-
देहो ११ दीर्घजानुः १२ शनौ स्यात्तनुभावगे ॥ १७ ॥

श्यामवर्ण १, भिन्न वर्ण २, भिन्नांग ३, भ्रम कांस ४, कफवात-
सहित ५, पित्ताद्य ६, गौर ७, निरन्तर अस्थिसहित ८ ॥ १६ ॥
मोटे नख ९, सूक्ष्मनेत्र १०, मोटे दांत ११ दीर्घ जानु १२, जो
शनैश्चर तनुभावमें स्थित हो तो क्रमसे पूर्वोक्त बलाबलके अनुसार फल
कहना चाहिये ॥ १७ ॥

अथ तनुभावस्थितराशिफलम् ।

मेषोदये रक्ततनुर्मनुष्यः सदाल्पबुद्धिः परनिर्जितश्च ।

पित्ताधिकः सर्वजनोपसेव्यः सर्वाशनो बुद्धिविचक्षणश्च ॥ १८॥

मेष लग्नमें जो मनुष्य हो सो लाल देह, सदा अल्पबुद्धि, परनि-
र्जित, अधिक पित्तवाला, सम्पूर्ण मनुष्योंकरके सेवनीय, सर्व भोजन
करनेवाला तथा बडा चतुर होता है ॥ १८ ॥

वृषोदये श्वेतनुर्मनुष्यः श्लेष्माधिकः क्रोधयुतः कृतघ्नः ।

सुमंदबुद्धिः स्थिरतासमेतः पराजितः स्त्रीभृतकैः सदैव ॥ १९ ॥

तृतीयलग्ने पुरुषोऽतिगौरः स्त्रीरक्तचित्तो नृपपीडीतश्च ।

जनप्रियो वाग्विभवेन युक्तः सुशीलयोगी सविक्षणः स्यात् २०

वृषलग्नमें जिस मनुष्यका जन्म हो सो मनुष्य गौर शरीरवाला-
कफकी प्रकृतियुक्त, क्रोधसहित, कृतघ्न अर्थात् उपकारको न माननेवाला.

मंदबुद्धि, स्थिरतायुक्त श्री और नौकरोंकरके सदैव पराजित होता है॥ १९॥
जिस मनुष्यका मिथुन लश्मै जन्म हो सो अतिगौर, श्वियोंमें रक्त चित्त
जिसका, राजाकरके पीडित, मनुष्योंको प्यारा, वाणी और विनयकरके
सहित, सुंदर शीलवान्, योगी तथा चतुर होता है ॥ २० ॥

कक्षेऽदये गौरवपुर्मनुष्यः पित्ताधिकः कल्पतरुप्रगल्भः ।

जलावगाहानुरतोऽतिबुद्धिः शुचिः क्षमी धर्मरुचिः सुसेव्यः॥२१॥

सिंहोदये पांडुतनुर्मनुष्यः पित्तानिलाभ्यां परिपीडितांगः ।

प्रियामिषो मूर्खजनः सुतीक्ष्णः शूरः प्रगल्भः सुरतो निरीहः २२॥

कर्कलश्मै जिस मनुष्यका जन्म होता है सो मनुष्य गौर शरीरवाला,
अधिकपित्तवाला, दाता, प्रगल्भ, जलक्रीडामें रत, अतिबुद्धिमान्, पवित्र,
दयावान्, धर्ममें रुचि, श्रेष्ठ मनुष्यकरके सेव्य होता है ॥ २१॥ सिंहलश्मै
जिसका जन्म होता है सो मनुष्य पांडुशरीरवाला, पित्त और अनिल-
करके परिपीडित अंग जिसका, मांस प्रिय जिसको, मूर्ख, तीक्ष्ण, शूर,
प्रगल्भ, सुरत तथा निरीह होता है ॥ २२ ॥

कन्याविलग्ने कफपित्तयुक्तो भवेन्मनुष्यः शुभकांतियुक्तः ।

श्वेष्मप्रजःश्वीविजितोऽतिभीरुःकर्माधिकः शीलयुक्तो नरः स्यात् २३

तुलाविलग्ने च भवेन्मनुष्यः श्लेष्मायुतः सत्यरतः सदैव ।

धने रतिर्धर्मसुकर्मयुक्तः सुरार्चने प्रीतियुतः सदैव ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यका जन्म कन्यालश्मै हो सो मनुष्य कफपित्तकरके सहित
श्रेष्ठकांतियुक्त, श्लेष्माकरके कन्याकी संतान जिसके, श्वियोंकरके जीता
हुआ, अधिक कर्मवान् तथा शीलवान् होता है॥ २३ ॥ जिस मनुष्यके
जन्मकालमें तुला हो सो मनुष्य कफकरके सहित, सत्यमें प्रीति सदा
जिसकी, धनमें रत, धर्मकर्मकरके युक्त तथा सदैव काल देवताओंके पूज-
नमें प्रीति करनेवाला हो ॥ २४ ॥

लग्नेऽष्टमे कोपरतो न सद्यो भवेन्मनुष्यो नृपपूजितांगः ।

गुणान्वितः शास्त्रकथानुरक्तः प्रमर्दकः शत्रुगणस्य नित्यम्॥२५॥

जिस मनुष्यका जन्म वृथिकलग्नमें होता है सो मनुष्य क्रोधयुक्त, असहनशील, राजोंकरके पूजित, गुणोंकरके सहित, शास्त्रकी कथामें श्रीति करनेवाला तथा सदैवकाल शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ २५ ॥

धनोदये राजयुतो मनुष्यः कायें सुतीब्रो द्विजदेवरत्तः ।

तुरंगयुक्तः सुहृदाः प्रयुक्तस्तुरंगजंघश्च भवेत्सदैव ॥ २६ ॥

मृगोदये तोपरतः सुतीब्रो भीरुः सदा पण्यनिषेवकश्च ।

श्लेष्मानिलाभ्यां परिपीडितांगः सुदीर्घनेत्रः परवंचकश्च ॥ २७ ॥

धनलग्नमें जिस मनुष्यका जन्म हो वह मनुष्य राजासेसंयुक्त, कार्यके विषे तीव्र, ब्राह्मण और देवताओंमें तत्पर, धोडेकरके सहित, मित्रोंकरके युक्त, धोडेकीसी जांघवाला सदैव होता है ॥ २६ ॥ जिस मनुष्यकी मक-रलग्नमें उत्पत्ति होती है सो मनुष्य संतोषकरके संयुक्त, तीव्र, डरपोक, सदैव रोजगारका सेवन करनेवाला, कफ और आनिलसे परिपीडित अंग-वाला, अच्छे बडे नेत्रवाला तथा परपुरुषोंका वंचक होता है ॥ २७ ॥

घटोदये सुस्थिरतासमेतो वाताधिकस्तोयनिषेवणोक्तः ।

सुहृत्स्वगात्रः प्रमदास्वभीष्टः शिष्टानुरक्तो जनवल्लभश्च ॥ २८ ॥

मीनोदये तोयरतो मनुष्यो भवेद्विनीतः सुरतानुकूले ।

सुपंडितः स्त्रीदयितः प्रचंडः पित्ताधिकः कीर्तिसमन्वितश्च ॥ २९ ॥

कुंभलग्नमें जिसकी उत्पत्ति हो सो मनुष्य सुस्थिरतायुक्त, अधिक वात-वाला, जलका सेवन करनेवाला, उत्तम शरीर और स्त्रीभी जिसकी स्वरूपवती, अच्छे मनुष्योंकरके युक्त तथा पुरुषोंको प्यारा होता है ॥ २८ ॥ मीनल-ग्नमें जिसका जन्म हो सो मनुष्य जलम रत, नम्रतासहित, अच्छी रतिके अनुकूल, श्रेष्ठपंडित, स्त्रीप्रिय, प्रचंड, पित्ताधिक तथा कीर्तियुक्त होता है ॥ २९ ॥

अथ ततुस्वामि नो द्वादशभावस्थफलम् ।

तत्र वृद्धयवनः ।

लग्नाधिपे लग्नगते नीरोगं दीर्घजीवनं कुरुते । अतिवलं भवति पति वा भूत्वा लाभसमन्वितम् ॥ ३० ॥ जातो लग्नपतिर्धन-

भवने धनवंतं विपुलजीवितम् । स्थूलं स्थानप्रधानमहर्निशं
सत्कर्मरतं नरं कुरुते ॥ ३१ ॥ सहजगतो लग्नपतिः सुबंधु-
प्रवरमित्रपरिकलितम् । दातारं शूरं सबलं करोति नरं सदा
॥ ३२ ॥ लग्नेशस्तुर्यगतो नृपत्रियं प्रचुरजीवितं पुरुषम् ।
सल्लब्धियुतं पित्रोभक्तं तु बहुभोजनं कुरुते ॥ ३३ ॥

जन्मलग्नपति जो लग्नमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य रोगरहित, दीर्घ
जीवनवाला, अत्यंत बलयुक्त, पति तथा लाभसहित होता है ॥ ३० ॥ जिसके
लग्नपति धनभवनमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य धनवान्, बहुत जीवेवाला,
स्थूल, स्थानमें प्रधान तथा रातदिन अच्छे कर्मोंमें रत होता है ॥ ३१ ॥
जिसके जन्मलग्नपति तीसरे स्थानमें प्राप्त हो उस मनुष्यके अच्छे भाई,
बलवान् मित्र होते हैं और वह मनुष्य दाता, शूर तथा सैद्व बलवान्
होता है ॥ ३२ ॥ जिस मनुष्यके लग्नेश चतुर्थस्थानमें स्थित हो वह मनुष्य
राजाको प्यारा, दीर्घ अवस्थातक जीता है, अच्छी प्राप्तिसहित, पिताका
भक्त तथा बहुत भोजन करनेवाला होता है ॥ ३३ ॥

पंचमगो लग्नपतिः समुतं सत्यागमीश्वरं विदितम् । बहुजी-
वितं सुशीलं सुकमनिरतं तनुते ॥ ३४ ॥ रिपुभवने लग्ने-
शो नीरोगं भूमिलाभदं सबलम् । कृपणं धनिनमरिम्बं स्वकर्म-
पक्षान्वितं कुरुते ॥ ३५ ॥ प्रथमपतौ सप्तमगे तेजस्वी शीलवा-
न्भवेत्पुरुषः । तद्वार्यापि सुशीला तेजोयुक्ता तथा सुरूपा च इ-
जिसके जन्मकालमें जन्मलग्नपति पंचमभावमें स्थित हो वह पुरुष
पुत्रवान्, त्यागीकरके विदित, बहुतकाल जीवेवाला, सुशील, अच्छे
कर्मोंमें तत्पर होता है ॥ ३४ ॥ जिसके छठे स्थानमें लग्नपति हो वह मनुष्य
रोगी, पृथिवीका लाभदायक, बलवान्, कृपण, धनवान्, वैरियोंका
नाश करनेवाला तथा अपने पक्षकरके सहित होता है ॥ ३५ ॥ जन्म-
लग्नपति सातवें भावमें स्थित हो तो वह मनुष्य तेजस्वी तथा शीलवान् होता

है और उस मनुष्यकी ही भी अच्छे स्वभावाली, तेजस्विनी तथा रूपवती होती है ॥ ३६ ॥

प्रथमपतौ चाष्टमगे कृपणे धनसंचयकः सुदीर्घायुः। क्लूरे खचरे
कटुजलपकश्च वपुषा भवेत्पीतः ॥३७॥ मूर्तिपतिर्यदि नवम-
स्तदा भवेत्प्रवरबांधवः सुकृती । सर्वसौख्यश्च सुशीलः
सुकृतः ख्यातः स्वतेजस्वी ॥ ३८ ॥ प्रथमपतौ दशमस्थे
नृपपूज्यः पंडितः सुशीलश्च । गुरुमातृपितृपूजनमतिर्नृपः
समृद्धः पुमान् भवति ॥ ३९ ॥

जन्मलघ्नपति अष्टमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य कृपण, धनका
संचय करनेवाला, बड़ी आयुष्यवाला हो और जो पापग्रह हो तो दुष्ट
वचन बोलनेवाला तथा पापी हो ॥ ३७ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्म-
लघ्नपति नवम भावमें स्थित हो वह मनुष्य बलवान्, भाईयोंकरके सहित
अच्छे कर्म करनेवाला, संपूर्ण सौख्यकरके सहित, श्रेष्ठस्वभावयुक्त, श्रेष्ठकरके
विख्यात तथा आप तेजस्वी होता है ॥ ३८ ॥ जन्मलघ्नपति दशमस्थानमें
स्थित हो तो वह मनुष्य राजपूज्य, पंडित, सुशीलयुक्त, गुरु और माता-
पिताके पूजनमें मति जिसकी, कद्दियोंकरके सहित तथा राजा होता है ॥ ३९ ॥

एकादशगतस्तनुपतिः सुजीवितं सुतसमन्वितं विदितम् ।

तेजस्कलितं कुरुते पुरुषं बलिनं वाहनसंयुतम् ॥ ४० ॥

द्वादशगे मूर्तिपतौ पटुवाम्बादं करोति मतिमांश्च ।

सह गोत्रकैर्मिलनभे विदेशगो दत्तभुक्तनरः ॥ ४१ ॥

जन्मलघ्नपति ग्यारहवें स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य अच्छी
तरहसे जीनेवाला, पुत्रसहित, विख्यात, अधिक तेजकरके शीभायमान, बल
वान् तथा वाहनकरके संयुक्त होता है ॥ ४० ॥ जिसके जन्मलघ्नपति बारहवें
स्थानमें स्थित हो सो पुरुष चतुर वाणीके वादका करनेवाला, बुद्धिमान
अपने कुटुंबियोंसे मिलनेवाला, परदेशमें रहनेवाला तथा दत्तभुक्त होता है ॥ ४१ ॥

अथ धनभावविचारः ।

अथ धनभावे किंचित्पलमित्युक्तं जातकाभारणे—स्वर्णादि-
धातुक्रयविक्रयाश्च रत्नादिकोशादिकसंग्रहश्च । एतत्समस्तं
परिचितनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ ४२ ॥ अथ
जातकसारे—धनस्वामी सुखे खेट्युग्मष्टो धनवृद्धिदः । क्षीणे
दुपापयुक्त दृष्टो विना स्वर्क्षं धनापहः ॥ ४३ ॥ सारावल्याम्—
रवितनयो भौमरवी कुटुंबसंस्था विलोकनाद्वापि । कुर्वति
धनविनाशं क्षीणेन्दुनिरीक्षिता विशेषण ॥ ४४ ॥

स्वर्णको आदि लेकर जो धातु हैं उनके क्रय विक्रय करना,
रत्नोंको आदि लेकर खजानेका संयह करना ये समस्त बातें धनस्थान करके
विचारने योग्य हैं ऐसा पंडितोंने कहा है ॥ ४२ ॥ जो धनभवनका स्वामी
शुभव्रह्मोंकरके युक्त वा दृष्ट हो तो धनकी वृद्धि देनेवाला होता है । क्षीण
चंद्रमा और पापयहकरके धनभावका स्वामी युक्त वा दृष्ट हो तो धनका
नाश करनेवाला होता है और जो वह पापयह अपने स्थानका हो तो नाश
नहीं करता है ॥ ४३ ॥ शनैश्चर, मंगल, सूर्य जो द्वितीय स्थानको देखते
हैं अथवा स्थित हैं तो धनका नाश करते हैं और इसी तरह क्षीण
चंद्रमाका भी फल जानना चाहिये ॥ ४४ ॥

मन्दस्तु धनस्थाने महर्थयुक्तं बुधेक्षितः कुरुते । रविरपि
निधनं जनयति यमेक्षितः शस्यतेऽन्यहृष्टश्च ॥ ४५ ॥ सौम्यः
कुटुंबराशौ बहुप्रकारं धनदं बुधहृष्टः । त्रिदशगुरुः कुटुंबराशौ
च निःस्वां कुरुते सोमम् ॥ ४६ ॥ तनयोऽपि शशिना निरी-
क्षितो हंति सर्वधनम् । चन्द्रोऽपि धनस्थाने क्षीणो बुधवी-
क्षितः सदा कुरुते ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर धनस्थानमें स्थित हो और
बुधकरके दृष्ट हो तो बहुत धनवान् करे और उसी धनस्थानमें सूर्य स्थित
हो उसको शनैश्चर देखता है तो धनहीन करता है, अन्य शुभ ग्रहोंकरके

दृष्ट हो तो शुभ फल देता है ॥४५॥ जो शुभग्रह कुटुंबस्थान अर्थात् दूसरे स्थित हो और बुधकरके दृष्ट हो तो बहुत प्रकार धन प्राप्त कराते हैं और धनभावमें चंद्रसहित बृहस्पति स्थित हो तो भी निरंतर धनवान् करे ॥४६॥ और बुध पापग्रहसहित कहीं स्थित हो तो सम्पूर्ण धनका नाश करता है और क्षीण चंद्रमा धनस्थानमें स्थित हो बुधकरके दृष्ट हो तो भी धननाश करता है ॥ ४७ ॥

धनस्थानगते जीवे धनी भवति बालकः । बुधे तत्रैव भोगी स्याच्छुक्रे भूमिपतिर्भवेत् ॥४८॥ धनस्थाने यदा चन्द्रः पंचमस्थो यदा रविः । तदा धनक्षयं विद्यादशवर्षाणि निश्चितः ॥४९॥ धनभावगतः सूर्यो धननाशमहर्निशम् । करोति निनधं चाथ ताप्रवित्तं ददाति च ॥ ५० ॥ वैद्यकांचनयुक्तश्च मणिरत्नधनो भवेत् । कर्पूरचंदनामोदी धने कुमुदबांधवे ॥५१॥ कृषको विक्रीयी भोगी प्रवासी निर्धनो भवेत् । धातुवादकरो नित्यं धनस्थे धरणीसुते ॥ ५२ ॥

जिसके धनस्थानमें बृहस्पति स्थित हो तो वह बालक धनवान् होता है और उसी धनस्थानमें बुध स्थित हो तो भी वह मनुष्य धनका भोग करनेवाला होता है और जो शुक्र हो तो धरतीका मालिक होता है ॥४८॥ जिसके धनस्थानमें चंद्रमा स्थित हो और पंचमस्थानमें सूर्य हो तो उस मनुष्यका धन दश वर्षमें नाश होता है ॥४९॥ धनस्थानमें जो सूर्य स्थित हो तो उस मनुष्यका धन सर्वदा नाशको प्राप्त होता है और उस मनुष्यको निर्धन करते हैं; तांबेका धन देते हैं ॥५०॥ जिसके धनस्थानमें चंद्रमा स्थित हों उसे वैद्य, कांचनकरके युक्त, मणि और रत्नका धनी करते हैं, कर्पूर चंदनादि प्राप्त करते हैं ॥ ५१ ॥ जिसके धनस्थानमें मंगल स्थित हो वह स्वेतीका करनेवाला, भोगी, परदेशमें विचरनेवाला, धनहीन तथा धातुके वादमें चतुर हो ॥ ५२ ॥

धनं ददाति बहुधा नाशयेच्छ्रद्धवीक्षितः । त्वग्दोषं कुरुते
नित्यं सोमपुत्रः कुटुंबकः ॥५३॥ लक्ष्मीवान् नित्यमुत्साही
धनस्थे देवतागुरौ । बुधवृष्टे तु निःस्वः स्यादिति सत्यं
प्रभाषते ॥५४॥ विद्यार्जितधनो नित्यं स्त्रीधनैरथवा धनी ।
शुभहृष्टः शुभक्षेत्रे बुधहृष्टौ भृगौ धनी ॥ ५५ ॥ काष्ठां-
गारलोहधनः कुकर्मधनसंचयः । नीचविद्यानुरक्तश्च दानी
वा मन्दगे धने ॥ ५६ ॥ शुभा धनस्थिताः कुर्युर्वाग्मिनं
प्रियभोजनम् । क्रूराः प्रोक्ता विशेषण कदापि बहुभाषणम्
॥ ५७ ॥ मत्स्यमांसधनो नित्यं नखचर्मास्थिविक्रियी ।
जीविका चौरवृत्त्या च राही धनगते नरः ॥ ५८ ॥ द्वितीये
भवने केतौ धनहानिः प्रजायते । नीचसंज्ञी च दुष्टात्मा
सुखसौभाग्यवर्जितः ॥ ५९ ॥

धन बहुत प्रकारका देता है, नाश भी करता है, जो चंद्रमा
देखता हो, त्वचामें दोष सदैव करे, जिसके धनस्थानमें चन्द्रमाका पुत्र
बुध स्थित हो ॥ ५३ ॥ धनवान् नित्य ही उत्साही होता है, जिसके
धनस्थानमें बृहस्पति स्थित हो और बुधकरके दृष्ट हो तो निर्धनी करता
है यह सत्य ही कहते हैं ॥५४॥ विद्याकरके पैदा किया धन अथवा स्त्रीके
धनकरके धनवान् होता है । शुभ ग्रहकरके दृष्ट शुभस्थानमें बुध करके दृष्ट
शुक्र हो तो भी धनवान् हो ॥५५॥ काष्ठ, अंगार, लोह, धन, खोटे कर्मी-
करके करा है धन इकट्ठा; नीच विद्यामें तत्पर, दानी जिसके धनस्थानमें
शनैश्चर हो ॥५६॥ जो शुभ ग्रह धनस्थानमें स्थित हो तो श्रेष्ठ वाणीका
बोलनेवाला, प्रिय भोजन करनेवाला और पापग्रह धनस्थानमें स्थित हो
तो विशेषकरके बहुत बोलनेवाला होता है ॥५७॥ मच्छी मांस खानेवाला,
नख चमड़ा हाड़को खेचकरके धनसंचय करे और चोरवृत्ति करके धन पैदा
करे जिसके धनस्थानमें राहु स्थित हो ॥ ५८ ॥ जिसके दूसरे स्थानमें

केतु स्थित हो तो उस मनुष्यकी धनहानि होती है नीचोंका संग करने-वाला, दुष्टात्मा, सुख और सौभाग्यरहित होता है ॥ ५९ ॥

अथ धनभावविशेषफलम् ।

स्वोच्चे स्वोच्चनवांशे च शुभवर्गेऽथ नीचगे । नीचांशे क्लूपद्वर्गे
मित्रभे सुहृदंशके ॥ ६० ॥ वर्गोत्तमेऽरिभेर्यशे स्वक्षें द्वादशधा
क्रमात् । फलं च धनभावेऽल्पं कथ्यते यवनोदितम् ॥ ६१ ॥
चित्तं नृपतिमानोत्थै १ नृपसेवासमुद्भवम् २ । सुलोकदत्तं ३
पापोत्थं ४ स्थूलजं ५ चौर्यसंगमात् ६ ॥ ६२ ॥ कामात् ७
लोभात् ८ परम्प्रीतः ९ स्वल्पं च १० धनसेवया ११ । भृत्यं
१२ तु धनभावस्थे भास्करे लभते नरः ॥ ६३ ॥

अपने उच्चमें १, उच्चके नवांशमें २, शुभ ग्रहके वर्गमें ३, नीचमें
४, नीचके नवांशमें ५, पापग्रहोंके वर्गमें ६, अपने मित्रकी राशिमें ७,
अपने मित्रके नवांशमें ८॥६०॥ वर्गोत्तममें ९, शत्रुकी राशिमें १०, शत्रुके
नवांशमें ११ और अपनी राशिमें १२ जो ग्रह स्थित हों उनका बारहप्रकारका
क्रमसे यवनाचार्यने फल कहा है ॥ ६१ ॥ राजोंकरके माननीय चित्त १,
राजाकी सेवाकरके उत्पन्न हुआ २, अच्छे मनुष्योंकरके दिया हुआ ३,
पापकरके उत्पन्न ४, स्थूलज ५, चोरके संगसे ६ ॥६२॥ कामसे ७,
लोभसे ८, पराई स्त्रीकरके ९, थोड़ा धन १०, सेवासे ११ तथा नौकरसि
१२ जो पूर्वोक्त प्रकारोंमेंसे जिस प्रकारका सूर्य धनभावमें स्थित हो तो
उन बारहप्रकारके फलोंमेंसे क्रमकरके वैसा ही फल जानना चाहिये॥६३॥

व्ययहीनं १ पापभवं २ सुतजं ३ कृषिसंभवम् ४ । सुहृद् ५
दुर्जनं ६ स्त्री ७ यज्ञं ८ धनहीनं ९ च कर्मजम् १० ॥ ६४ ॥
पूर्वोपार्जितं ११ चन्द्रे धनभावगते धनम् १२ । विततः क्षीण-
१ बहुलं २ पूर्वजायं ३ क्षितीशजम् ४ ॥ ६५ ॥ कृपणं ५
पण्यतो लब्धं ६ परदेशजसंगजम् ७ । नृपजं ८ नृपपुत्रोत्थ-

९ शत्रुतो १० वरकर्मजम् ११॥६६॥ म्लेच्छपुत्रात्सुजनितं
१२ शुक्रे वनगते क्रमात् । रक्तयुक्ते १ हेमयुक्ते २ स्वर्णा ३
द्वर्मात् ४ कुकर्मजम् ५ ॥ ६७ ॥ ऋणी ६ स्वदेशत्यागेन ७
मित्रवर्गेण संभवम् ८॥ सुहृदचनतो लब्धि ९ गुरुदेवादिसे-
वनात् १० ॥ हीनं ११ स्वजनविद्वेषात् १२ भूमिपुत्रे
धनस्थिते ॥ ६८ ॥

व्ययकरके हीनं १, पापकरके उत्पन्न २, सुतकरके उत्पन्न ३,
खेती करके पैदा हुआ ४, मित्रोंकरके ५, दुष्ट जनोंसे ६, स्त्रीके द्वारा ७,
यज्ञसे ८, धनहीन ९, कर्मसे उत्पन्न १०॥६४॥ पहिलेका पैदा किया हुआ
११, चन्द्रमा धनभावमें जिस प्रकार स्थित हो उसी प्रकारसे क्रमसे धन
कहना अथवा अधम धन कहना १२। धनकरके धन १, क्षीण बहुत २,
पूर्वजाय ३, राजाकरके ४ ॥ ६५ ॥ कृपण ५, व्यापारकरके ६, पर-
देशीके संगसे ७, राजाकरके ८, राजपुत्रकरके ९, शत्रुसे १०, श्रेष्ठकर्म-
करके उत्पन्न ११॥६६॥ म्लेच्छपुत्रकरके पैदा हुआ १२ । जिसके शुक्र
धनभावमें स्थित हो क्रमकरके रक्तयुक्त १, सुवर्णकरके युक्त २, सुवर्णसे
३, धर्मसे ४, खोटे कर्म करके पैदा किया ५॥ ६७ ॥ कर्जबंद ६ अपना
देश त्याग करके ७, मित्रोंकरके पैदा किया ८, सुहृदके वचनसे प्राप्त ९,
गुरुदेवताओंकी सेवासे १०, हीन ११ तथा अपने मनुष्योंके वैरसे १२,
जो मंगल धनस्थानमें स्थित हो तो क्रमकरके ॥ ६८ ॥

भूमिजं १ सस्य २ पशुजं ३ बहुपापसमुद्धवम् ४॥ निकृष्टता-
५ समुद्भूतं ६ निंद्यकर्म ७ रिपूद्धवम् ८॥ ६९ ॥ कृषिजं
भूरिवाणिज्यं ९ जनसेवासमुद्धवम् १०॥ शत्रुसेवाभवं ११
स्वल्पं १२ धनस्थानगते बुधे ॥७०॥ वित्त न्यायार्जितं १
विप्रसाधुदत्तं २ क्षितीशजम् ३॥ परदारसमुद्धूतं ४ सत्यजोत्थं

६ च काष्टजम् ६ ॥ ७१ ॥ गजाश्वस्त्रसंभूतं ७ कृषिजं च ८
 जनार्पितम् ९ । रिपुदास्यं १० दरिद्रत्वं ११ निर्धनं १२
 धनगे गुरौ ॥ ७२ ॥ वित्तं कुर्कर्मजाताल्पं १ कष्टजं २
 व्यसनोद्भवम् ३ । दुःखनिर्घृणताङ्केशा ४ तस्त्यजोत्थं च ५
 पापजम् ६ ॥ ७३ ॥ अस्थिजं ७ मृत्युं चैव ८ जलजं ९
 पापमेव च १० । दास्यजं ११ परमोत्थं च १२ शनौ
 धनगते क्रमात् ॥ ७४ ॥

पृथ्वीकरके उत्पन्न १, अन्नकरके २, पशुकरके ३, बहुत पापकरके
 ४, निकृष्ट ५, पैदा किया हुआ ६, निंद्य कर्मसे ७, शंतु करके
 ८ ॥ ६९ ॥ खेतीकरके उत्पन्न अथवा वहु वाणिज्यसे ९, मनुष्योंकी
 सेवासे १०, शत्रुकी सेवासे ११, स्वल्प १२ जो धनस्थानमें बुध स्थित
 हो ॥ ७० ॥ न्याय करके धन पैदा किया १, ब्राह्मण साधु करके
 दिया हुआ २, राजाकरके ३, पराई श्रीकरके ४, सत्यकर्म करके ५,
 काष्टकरके पैदा हुआ ६ ॥ ७१ ॥ हाथी घोडा वस्त्रकरके उत्पन्न ७,
 खेतीकरके ८, जनोंकरके दिया ९, शत्रु और दासकरके १०, दरिशी
 ११, धनहीन १२, जो धन स्थानमें गुरु स्थित हो ॥ ७२ ॥ बुरे
 कर्मोंसे पैदा किया १, कष्टकरके २, व्यसनकरके पैदा हुआ ३, दुःख
 निर्घृणता छेशकरके ४, सत्यकरके ५, पापकरके पैदा हुआ ६ ॥ ७३ ॥
 हाड़करके धन पैदा करे ७, मट्टीकरके ८, जलकरके ९, तैसेही पापकरके
 १०, दासकरके ११, परमोत्थ १२, जो शनैश्चर धनस्थानमें क्रमसे पूर्वोक्त
 प्रकारकरके स्थित हो तो ॥ ७४ ॥

सहस्रनाथो दिनपः प्रदिष्टो लक्षाधिपो रात्रिकरः सदैव ।

शताधिपो भूतनयः सदैव कोटीश्वरः सोमसुतः सदैव ॥ ७५ ॥

स्वर्वाधिनाथः सुरराजमंत्री शक्रोऽस्य शंखः शनिरल्पतुल्यः ।

स्वतुंगगाः स्युर्यदि सर्व एते तयोऽतराले त्वनुपाततः स्यात् ७६ ॥

जो धनस्थानमें सूर्य स्थित हो, उच्चराशिमें हो तो वह मनुष्य सह-
स्राधिपति होता है, चन्द्रमा लक्षाधीश करता है, मंगल हो तो शताधिपति
करता है, बुध उच्चका द्वितीयस्थानमें स्थित हो तो कोट्यधिपति करता
है ॥ ७५ ॥ बृहस्पति सर्वाधिपति करता है और शुक्र हो तो शंखपति
होता है और शनैश्चर हो तो शताधिपति करे, जो पूर्वोक्त वह अपने उच्चमें
हों तो ऐसा फल करे और अपने उच्चसे लेकर और अपने नीचस्थानपर्यंत
जिन राशियोंमें स्थित हो उसको त्रैराशिक करनेसे सिद्ध होगा ॥ ७६ ॥

अथ धनभावस्थितराशिफलम् ।

मेषे धनस्थे कुरुते मनुष्यो धनं स पुण्योर्विबुधैः प्रभूतम् । चतु-
ष्पदाढ्यो बहुबांधवाढ्यः प्रयच्छति प्रीतिपरः सदैव ॥ ७७ ॥
वृषे धनस्थे लभते मनुष्यः कृषिप्रयत्नेन धनं सदैव । अत्रा-
भिधानं च चतुष्पदाख्यं भवेन्मनुष्यो मणिमौक्तिकैर्युक् ॥ ७८ ॥

जो मेष राशि धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य अच्छे पुण्यों करके
अनेक प्रकारका धन करे, चतुष्पादकरके युक्त वह बांधव करके सहित
प्रीतिका करनेवाला होता है ॥ ७७ ॥ और जो वृषराशि धनस्थानमें स्थित
हो तो वह मनुष्य स्वेतीके करनेसे धनवान् होता है, चतुष्पाद और मणि
मोक्तिकरके युक्त सदैव काल मनुष्य होता है ॥ ७८ ॥

तृतीयलग्ने धनगे मनुष्यो धनं भवेत्स्त्रीजनितं च नित्यम् ।
कर्के तथा चेत् सबलं स्वरूपं न याति तृस्मि वनितासु वृनम् ॥
॥ ७९ ॥ सिंहे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं सदारण्यजनोत्थमा-
तम् । सर्वोपकारं प्रवणग्रभूतं स्वविक्रमोपार्जितमेव नित्यम् ॥

१ सहस्रं सूर्यो, लक्षं विधुः, शतं कुजः, बुधः कोटिम्, गुरुः खर्व, शुक्रः शंखं,
शनिः शतम् । दद्युरत्युच्चगाः स्वेऽस्ततो न्यूनं क्रमाद्धनम् । निजस्थानानुरूपं च सुद-
शासु यथोदितम् ॥ अत्रानुपातः स्थानबलोक्तः पादोनं च बलं त्रिकोणं गृहगे
क्षवक्षर्दलं च त्रयो वस्त्रांशाधिमित्रमेव वरणो मित्रसमक्षेष्ट इति ॥

॥ ८० ॥ कन्योदये वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद्भूमिपतेः
सकाशात् । हिरण्यमुक्ताफलविद्रुमं स्याद् गजाश्वनाना-
विविधं धनं भवेत् ॥ ८१ ॥

जिसके धनस्थानमें मिथुन लग स्थित हो तो वह मनुष्य स्त्रीजनित
इव्यवान् हो और जो कर्कराशि धनस्थानमें हो तो वह मनुष्य बलसहित
रूपवान् होता है, उसको श्वियोंसे तृप्ति नहीं होती है ॥७९॥ जिसके धन
स्थानमें सिंहराशि स्थित हो तो वह मनुष्य सदैवकाल बनवासी मनुष्योंकरके
सहित वा सिंहके समान सबका उपकार करनेवाला, नप्रतासहित अपने
पराक्रमकरके धनका पैदा करनेवाला होता है ॥ ८० ॥ जिसके धन स्थानमें
कन्याराशि स्थित हो तो वह मनुष्य राजाओंके सकाशसे धन प्राप्त करता
है सुवर्ण मोती मूँगा हाथी घोड़े अनेक प्रकारके धनयुक्त होता है ॥८१॥

तुले धनस्थे बहुदेशजातं धनं भवेत्पुत्रजनैरुपेतम् । वित्तं वि-
युक्तं पुरुषाग्रगण्यं स्वान्याययुक्तं गुरुलब्धशेषम् ॥८२॥ अलौ
धनस्थे बहुपण्यजातं धनं मनुष्यो लभते प्रभूतम् । पाषाणजं
मृन्मयमापितं च सस्योद्भवं कर्मजमेव नित्यम् ॥ ८३ ॥ धन-
र्धे वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद्दैर्ययुतो सदैव । चतुष्पदादचं
विविधं यशस्वी रसोद्भवं धर्मविधानलब्धः ॥ ८४ ॥

जो तुलाराशि धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य धन और स्त्री-
पुत्रसहित होता है, धनयुक्त पुरुषोंमें अश्रणी, न्यायसहित गुरुकरके लब्ध
होता है ॥८२॥ वृश्चिकराशि धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य बहुत
व्यापारकरके युक्त, बहुत धनवान् होता है, पाषाणकरके उत्पन्न मृत्ति-
कापात्र करके उत्पन्न सस्य जो अन्नकरके उत्पन्न धनवान् होता है
॥८३॥ धन राशि जिसके धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य धैर्यक-
रके धन प्राप्त करता है, चतुष्पदकरके युक्त, अनेक प्रकारके यशसहित
रसोंकरके उत्पन्न धर्मविधिकरके धन लब्ध करता है ॥ ८४ ॥

मृगे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रकुर्याद् विविधैः प्रकारैः ।
सेवासमुत्थं च सदा नृपाणां कृषिक्रियाभिश्च विदेशसंगात् ॥
॥ ८५ ॥ धटे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतं फलपुष्पजा-
तम् । जनोद्भवं साधुजनस्य भोज्यं महाजनोत्थं च परोपकारैः
॥ ८६ ॥ मत्स्ये धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतैर्नियमो-
पवासैः । विद्याप्रभावान्निधिसंगमात् मातापितृभ्यां समुपा-
जितं च ॥ ८७ ॥

जिसके धनभावमें मकर लग्न स्थित हो तो वह मनुष्य बहुत
प्रकारके धनकरके युक्त, राजाओंकी सेवामें तत्पर, खेतीकी क्रिया और
विदेशसंगसे धनवान् होता है ॥ ८५ ॥ जिसके धनभावमें कुंभलग्न स्थित
हो तो उस मनुष्यके फलपुष्पकरके उत्पन्न हुए धनकरके युक्त मनुष्यों-
करके उत्पन्न क्रिया, साधु मनुष्योंकरके भोज्य, महाजनपुरुषोंकरके धनवान्
पराया उपकार करनेवाला होता है ॥ ८६ ॥ जिसके मीन लग्नधन भावमें
स्थिर हो तो वह मनुष्य नियम और व्रतकरके धनवान् होता है और
विद्याके प्रभावकरके धनका संगम होता है, मातापिताकरके उपार्जित क्रिया
धनवान् होता है ॥ ८७ ॥

अथ धनभावस्वामिद्वादशभावफलम् ।

द्रव्यपतिर्लग्नगतः कृपाणं व्यवसायिनं सुकर्माणम् । धनिनं
श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगभुजम् ॥ ८८ ॥ धनपो
धनभावस्थो धर्मकर्मनिरतं च । लाभाधिकं सलोभं कुरुते
पुरुषं सदा दक्षम् ॥ ८९ ॥ सहजगते तु धनेशे व्यवसायी
कलिकरः कलाहीनः । चोरश्चलचित्तो नरोऽथ विनयेन
रहितश्च ॥ ९० ॥ तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभश्च परः । सदो-
दयः पुरुषो दीर्घायुः क्रूरखगेन युते ॥ ९१ ॥

जिसके धनभावस्थानका स्वामी लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य

कृपण और व्यवसायी, श्रेष्ठ कर्मों करके धनी, लक्ष्मीवान् करके विदित, अधिक भोगेंका भोगनेवाला होता है ॥ ८८ ॥ जिसके धनपति धनभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य धर्मकर्ममें तत्पर, लोभसहित अधिक लाभ करनेवाला, सदैव चतुर होता है ॥ ८९ ॥ जिसके सहजस्थानमें धनभावका स्वामी स्थित हो तो वह पुरुष व्यवसायी, कलहका करनेवाला, कलाहीन, चौर, चंचल-चिन्त मनुष्य नम्रतारहित होता है ॥ ९० ॥ जिसके चतुर्थभावमें, धनभावपति स्थित हो तो वह मनुष्य पिताकरके धनलाभ पाता है, सदैव वह पुरुष दीर्घायु हो जो पापश्रहकरके सहित न हो तो ॥ ९१ ॥

तनयगतो धनपतिः कुरुते कमलाविलासमर्तिनरः । कष्टेतरं
प्रसिद्धं च कृपाणं दुःखनिधानं कविर्निदेश्यम् ॥ ९२ ॥ षष्ठ-
गतो द्रविणपतिर्धनसंग्रहतत्परं रिपुधनं च । भूस्वामिनं च युते
पापे धनवर्जितं पुरुषम् ॥ ९३ ॥ धनपे सप्तमगृहगे श्रेष्ठचिता
विलासभोगवंतः । धनसंग्रहणी भार्या क्रूरखेचरे भवति वंध्या
॥ ९४ ॥ धनपतौ चाष्टमभवने स्वल्पकलाश्रात्मघातकः
पुरुषः ॥ उत्पन्नभुग्विलासी भवति वेदयुतो नरः ॥ ९५ ॥

जिसके धनस्थानका पति पंचमभावमें स्थित हो तो उसी मनुष्यकी लक्ष्मीके विलास भोगमें मति होती है, कष्टसे इतर अर्थात् सुखी, कृपण, दुःखोंका स्थान, कवि कहना ॥ ९२ ॥ जिसके छठे स्थानमें धनपति स्थित हो तो वह मनुष्य धनसंग्रह करनेमें तत्पर, शत्रुओंका नाश करनेवाला, धरतीका स्वामी होता है और जो पापश्रह हो तो धनहीन कहना चाहिये ॥ ९३ ॥ जिसके धनपति सप्तमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य अच्छी चिंताके विलासमें भोगवान् होता है और उसकी स्त्री धनका संग्रह करनेवाली और जो धनपति पापश्रह हो तो उसकी स्त्री वंध्या होती है ॥ ९४ ॥ अष्टम भवनमें जो धनभावका स्वामी स्थित हो तो वह मनुष्य अल्पकलायुक्त, आत्माका धात करनेवाला, पैदा हुए भोगविलाससहित तथा वेदयुत होता है ॥ ९५ ॥

धनपे धर्मगृहगते सौम्ये दानी प्रसिद्धभाग्यवंतः । क्रूरो दरिद्र-
भिक्षुकविडबृत्तिस्तथा मनुजः ॥ ९६ ॥ दशमगृहस्थे धनपे
नरेद्रमान्यो भवेन्नरः । लक्ष्मीः सौम्यगृहे च मातुः पितुञ्च परि-
पालकः पुरुषः ॥ ९७ ॥ एकादशगः स्वपतिव्यवहारः पर-
श्रियः पतिम् । स्वातं लोकाद्यप्रतिपालननिरतं कुरुते न
जातम् ॥ ७८ ॥ द्वादशगे द्रव्यपतौ अष्टकपाली विदेश-
ऋद्धिश्च । दुष्कर्मा भिक्षुकः क्रूरे सौम्ये च संग्रामी ॥ ९९ ॥

जिस मनुष्यके धनभावपति शुभग्रह नवम स्थानमें स्थित हो तो वह
मनुष्य दानी, प्रसिद्ध, भाग्यवान् होता है और जो पापग्रह धनभावपति हो-
कर नवम स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य दुष्ट, दरिद्री, भिक्षुक, विडबी
होता है ॥ ९६ ॥ जिसके दशमस्थानमें धनभावपति स्थित हो तो वह मनुष्य
राजोंकरके मान्य राजा होता है और धनभावपति शुभग्रह दशम घरमें हो
तो वह पुरुष लक्ष्मीवान् पिताकी आज्ञा पालन करनेवाला होता है ॥ ९७ ॥
जिसके ग्यारहवें स्थानमें धनभावपति स्थित हो तो वह मनुष्य अपने पति
व्यवहार पराई लक्ष्मीका स्वामी, संसारमें मनुष्योंका पालन करनेवाला
होता है ॥ ९८ ॥ जिसके बारहवें स्थानमें धनभावपति स्थित हो तो वह
मनुष्य अष्टकपाली, दरिद्री, परदेशमें कङ्क, खोटे कर्म करनेवाला, भिखारी,
पाप सौम्य ग्रह कोई हो तो लडाई करनेवाला होता है ॥ ९९ ॥

अथ संक्षेपतो अष्टमभावो विचारणीयः ।

अथ निर्याणाध्यायस्थमृत्युविचारः ।

नद्युत्तारात्यंतवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटश्चेति सर्वम् ॥
रंभस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥ १०० ॥
वीर्यान्वितः पश्यति मृत्युभं यस्तद्वातुकोपान्मृतिमामनंति ।
तद्युक्तकालास्यनरस्य गात्रं तस्मिन्प्रदेशे बहुभिर्बहुनाम् ॥ १०१ ॥

नदीका उतरना, अत्यंत कठिन जंगह किला इत्यादिमें बंधन, शस्त्र,

(३४६)

ज्योतिषश्यामसंश्रहः ।

आयु, सम्पूर्ण प्रकार संकट ये सम्पूर्ण विचार अष्टम स्थानसे हमेशह कल्पना करनी चाहिये ऐसा पुराने आचार्योंने कहा है ॥ १०० ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे आठवें स्थानमें कोई ग्रह न स्थित हो तब उस अष्टम स्थानको बलवान् होकर जो ग्रह देखता हो उस ग्रहके पूर्वोक्त कफवात-पित्तादि जनित धातुके कोपसे उस प्राणीका मरण होता है अथवा उसी आठवें स्थानमें स्थित राशि कालपुरुषके जिस अंगमें स्थित हो उस अंगमें जो ग्रह स्थित हो उसीके कफवातपित्तादि धातुके कोपसे उस मनुष्यका मरण होता है और जो बहुत ग्रह हों तो उनमें जो बली हो तो उसके पूर्वोक्त धातुके प्रकोपसे उस प्राणीका मरण कहना चाहिये और जो बली ग्रह भी बहुत हों तो उन सब ग्रहोंके पूर्वोक्त धातुके प्रकोपसे उस जीवका मरण होता है ॥ १०१ ॥

सूर्यादिभिर्निधनगौर्निधनं हुताशतोयायुधज्वरजमामयजं क्रमेण
॥ १०२ ॥ क्षुत्रृद्वकृतं च चरभे परदेशतस्य तत्स्यात्स्थिरे
स्वदेश पथि तद्विमूर्तौ ॥ १०३ ॥

जो अष्टम स्थानमें सूर्य स्थित हो तो अग्निकरके, चन्द्रमा स्थित हो तो जलकरके, मंगल हो तो हथियारकरके, बुध स्थित हो तो ज्वर-करके, बृहस्पति स्थित हो तो विना मालूम रोगसे ॥ १०२ ॥ शुक्र स्थित हो तो क्षुधादिकरके, शनैश्चर अष्टम स्थानमें स्थित हो तो प्यास-करके मरण कहना चाहिये ॥

अथ मरणदेशज्ञानम् ।

जिसके अष्टम स्थानमें चर राशि हो तो वह प्राणी परदेशमें और स्थिर हो तो स्वदेशमें और द्विस्वभाव राशि अष्टम हो तो वह मनुष्य रास्तेमें मृत होता है ॥ १०३ ॥

अथ लोभान्मृत्युः ।

तनौ रविसुते भौमे ह्यष्टमस्थे शनैश्चरः ।

नवमे चंद्रमा यस्य लोभान्मृत्युर्न संशयः ॥ १०४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्युत्र—भवनमें मंगल, अष्टम स्थानमें शनैश्चर, नवम स्थानमें चंद्रमा स्थित हो उस प्राणीकी मृत्यु लोभके कारणसे होती है ॥ १०४ ॥

अथ तुरंगान्मृत्युः ।

दशमोऽङ्गारको जीवः सूर्यश्च यदि सप्तमः ।

योगेऽस्मिन् जायते मृत्युस्तुरंगान्मानवस्य च ॥१०५॥

जिसके जन्मकालमें दशम मंगल, बृहस्पति, सातवें सूर्य स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु बोडे करके होती है ॥ १०५ ॥

अथ अग्निकारणान्मृत्युः ।

तनौ शनी रिपौ सूर्यो द्वास्ते ज्ञो दशमे शशी ।

नवमे भूसुतो नूनं मृत्युर्धर्मेण वाग्निना ॥ १०६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मलघ्नमें शनि, छठे सूर्य, सातवें बुध, दशम चंद्रमा और नवम मंगल स्थित हो तो उसकी मृत्यु घाम अथवा अग्नि करके कहनी चाहिये ॥ १०६ ॥

अथ भगंदरान्मृत्युज्ञानम् ।

षष्ठे वा दशमे भौमो धने चंद्रोऽष्टमे शनिः ।

भगंदरेण रोगेण मृत्युरेव न संशयः ॥ १०७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे अथवा दशम मंगल, दूसरे चंद्रमा, अष्टम शनैश्चर स्थित हो तो उस प्राणीकी निःसंदेह भगंदर अथवा कुष्ठरोग करके मृत्यु होती है ॥ १०७ ॥

तनौ रविसुतो भौमः सूर्यः सप्तमगो यदि ।

योगेऽस्मिन् जायते मृत्युरूर्ध्वात्पतति निश्चितम् ॥१०८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलघ्नमें शनैश्चर, मंगल और सातवें सूर्य स्थित हो तो इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य ऊपरसे गिरकर मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १०८ ॥

(३४८)

ज्योतिषश्यामसंध्रहः ।

अथ गजान्मृत्युज्ञानम् ।

रविरंगारकश्वेव चतुर्थभवने स्थितौ ।

दशमे रविसूनुश्च गजान्मृत्युर्न संशयः ॥ १०९ ॥

जिस मनुष्यके सूर्य, मंगल चतुर्थ भवनमें स्थित हों और दशमें शनैश्चर स्थित हो सो उस प्राणीकी मृत्यु हाथीकरके होती है ॥ १०९ ॥

अथ बंधुकारणान्मृत्युः ।

यदि कूरग्रहाकांतौ स्थानाच्चाष्टमपञ्चमौ ।

तस्य बंधुवशान्मृत्युर्नीर्दिष्टो मुनिपुंगवैः ॥ ११० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे पांचवां और आठवां स्थान पाप-यहोंकरके आक्रांत हो तो उस प्राणीकी बंधुकरके मृत्यु होती है ऐसा श्रेष्ठ मुनीश्वरोंने कहा है ॥ ११० ॥

अथ शूलिकामृत्युयोगः ।

तनुगो भास्करो यस्य द्वितीयस्थो निशाकरः ।

शूलिकायां भवेत्स्य मृत्युरेव न संशयः ॥ १११ ॥

जिस मनुष्यके लग्नमें सूर्य और दूसरे स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो तो उस पुरुषकी मृत्यु शूलीमें टँगकर होती है इसमें संशय नहीं है ॥ १११ ॥

अथ परदारार्थमृत्युः ।

यस्य जन्मनि जायास्थाश्चन्द्रभौमशनैश्चराः ।

जायंते परदारार्थं विनाशस्तस्य निश्चितम् ॥ ११२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे सातवें घरमें चन्द्रमा, मंगल और शनैश्चर स्थित हो तो उस मनुष्यका पराई जीके अर्थ विनाश निश्चय होता है ॥ ११२ ॥

अथ जलोदरेण मृत्युः ।

धर्मस्थानगते चंद्रे कर्कराशिधने शनौ ।

जलोदरेण रोगेण मृत्युरेव न संशयः ॥ ११३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो और कर्कराशिमें द्वितीयस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु जलोदर रोग करके होती है ॥ ११३ ॥

अथ स्त्रीकारणान्मृत्युः ।

मूर्तौ गतौ तु मंदाकौ भौमचंद्रौ च सप्तमे ।

द्वितीयो यदि शुक्रस्तु मृत्युः स्त्रीकारणेन तु ॥ ११४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मूर्तिमें शनैश्चर और सूर्य स्थित हों और कुज, चन्द्रमा सप्तम भवनमें स्थित हों तो उस प्राणीकी मृत्यु स्त्रीके द्वारा होती है ॥ ११४ ॥

अथ शत्रुहस्तान्मृत्युः ।

षष्ठे कूरग्रहो यत्र नवमो वाष्टमो यदा ।

शत्रुमध्ये न संदोहो मृत्युरेव न संशयः ॥ ११५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे वा आठवें वा नवम अथवा इन तीनों स्थानोंमें पापग्रह स्थित हों तो उस प्राणीकी मृत्यु शत्रुओंके बीचमें अथवा शत्रु करके निश्चय होती है ॥ ११५ ॥

अथ शैलभागान्मृत्युः ।

शैलग्रामिहतस्य सूर्यकुजयोमृत्युः खबंधुस्थयोः

कूपे मंदशशांकभूमितनयैर्बन्धस्तकर्मस्थितैः ।

कन्यायां स्वजनाद्विमोषणकरयोः पापग्रहैर्दृष्टयोः

स्यातां यद्युभयोदयेऽर्कशशिनौ तोये तदा जन्मतः ॥ ११६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे चौथे स्थानमें अथवा दशमस्थानमें सूर्य मंगल स्थित हो अथवा दशम स्थानमें सूर्य और चतुर्थ स्थानमें मंगल स्थित हो तो उस मनुष्यकी पत्थरके लगनेसे मृत्यु अथवा पहाड़के अग्रभागसे गिरकर मृत्यु होती है ॥

(३५०)

ज्योतिषश्यामसंब्रहः ।

अथ कूपे मृत्युः ।

और चतुर्थ स्थानमें शनैश्चर और सातवें स्थानमें चन्द्रमा, दशम मंगल स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु कुएमें गिरकर होती है ॥

अथ स्वजनान्मृत्युः ।

जिसके सूर्य और चन्द्रमा दोनों कन्याराशिमें स्थित हों और पाप-ग्रहोंकरके दृष्ट हों तो वह प्राणी अपने ही मनुष्योंकरके मारा जाता है ॥

अथ जलेन मृत्युयोगः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्या या धन अथवा मीन इन राशियोंमेंसे कोई भी राशि लक्ष्यमें स्थित हो और उसी राशिमें सूर्य और चन्द्रमा दोनों स्थित हों तो वह प्राणी जलमें ढूबकर मरता है ॥ ११६ ॥

अथ जलोदरेण मृत्युयोगः ।

मंदे कर्कटगे जलोदरकृतो मृत्युर्मृगांके मृगे
शास्त्राग्निप्रभवः शशिन्यशुभयोर्मध्ये कुञ्जक्षें स्थिते ॥

कन्यायां रुधिरोत्थशोषजनितस्तद्रत्स्थिते शीतगौ

सौरक्ष यदि तद्वदेव हिमगौ रज्ज्वग्निपातैः कृतः ॥ ११७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर कर्कराशिमें और चन्द्रमा मकरराशिमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु जलोदररोग करके होती है ॥

अथ शस्त्राग्नितो मृत्युयोगः ।

मेष अथवा वृश्चिकराशिमें स्थित चन्द्रमा दो पापग्रहोंके मध्यमें हो तो उस प्राणीकी मृत्यु जलोदररोग करके होती है ॥

अथ रक्तविकारेण मृत्युः ।

और कन्याराशिमें स्थित चन्द्रमा दो पापग्रहोंके बीचमें हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु रक्तविकार वा शोषरोगसे होती है ।

अथ रज्वनिपातेन मृत्युः ।

मकर या कुम्भराशि में स्थित चन्द्रमा पापश्रहोंके बीचमें स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु रज्जु वा अग्नि अथवा ऊंचेसे गिरकर होती है ॥ ११७

अथ कारागारे मृत्युः ।

बंधाद्वीनवमस्थयोरशुभयोः सौम्यग्रहादृष्ट्योद्रेष्काणैश्च सर्प-
पाशनिगडैश्छद्रस्थितैर्बंधनात् । कन्यायामशुभान्वितेऽस्तमयगे
चंद्रे सिते मेषगे सूर्ये लग्नगते च विद्धि मरणं स्त्रीहेतुकं मंदरे ॥ ११८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचम नवम स्थानमें पापश्रह स्थित हों अर्थात् एक पंचम और एक नवम हो तो उस प्राणीकी मृत्यु बंधन या किले वा हवालात या जेलखानेमें होती है और जिसके अष्टमस्थानमें पाश या निगड सर्पद्रेष्काण हो उसमें पापश्रह स्थित हो तो वह पुरुष द्रेष्काणके समान बंधनसे मरता है अर्थात् पाशद्रेष्काण हो तो फासीसे, निगडद्रेष्काणसे बेडी इत्यादिसे बाध्य करके, सर्पद्रेष्काण हो तो सर्प-करके मृत्यु होती है ॥

अथ स्त्रीद्वारा मृत्युः ।

जिसके सप्तमस्थानमें कन्याराशि हो उसमें पापश्रहयुक्त चन्द्रमा और मेषमें शुक्र और जन्मलघ्नमें सूर्य स्थित हो तो उस प्राणीकी अपनी स्त्रीके द्वारा मृत्यु होती है ॥ ११८ ॥

अथ कंटकेन मृत्युः ।

शूलोद्दिन्नतनुः सुखेऽवनिसुते सूर्येऽपि वा खे यमे-
ऽथोसक्षीणहिमांशुभिश्च युगपत्पापैस्त्रिकोणाद्यगैः ।

बधुस्थे च रवौ विपत्यवनिजे क्षीणेदुसंबीक्षिते

काष्ठेनाभिहतः प्रयाति मरणं सूर्यात्मजेनेक्षिते ॥ ११९ ॥

जिसके जन्मकालमें लघ्नसे चतुर्थस्थानमें मंगल और सूर्य स्थित हों और दशमस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो वह जीव कांटेसे छिदकर मरता

(३५२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

है और जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमासहित पापयह नवम लग्न
इन तीनों स्थानोंमें स्थित हो तो वह जीव काटिमें छिदकर मरता है और
जिस मनुष्यके चतुर्थ स्थानमें सूर्य और दशमस्थानमें मंगल स्थित हो और
क्षीण चन्द्रमाकरके हृष्ट हो तो वह जीव काटिसे छिदकर मरता है ॥

अथ काष्ठप्रहारेण मृत्युः ।

और जिस मनुष्यके चतुर्थ सूर्य और दशम मंगल हो, शनैश्चरकरके
हृष्ट हो तो वह जीव काष्ठके प्रहारसे मारा जाता है ॥ ११९ ॥

अथ लकुटेन मृत्युः ।

रंध्रास्पदांगहिबुकैर्लकुटे हतांगः प्रक्षीणचन्द्ररुधिरार्किदिनेशयुक्तः ।

तैरेव कर्मनवमोदयपुत्रसंस्थैर्धूमाग्निबन्धनशरीरनिकुट्टनांतः ॥ १२० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमा अष्टमस्थानमें स्थित हो
और मंगल दशम स्थानगत और शनैश्चर लग्नमें और सूर्य चतुर्थ स्थित
हो तो उस प्राणीकी मृत्यु लाठियोंके मारनेसे होती है ॥

अथ धूमाग्निबन्धनेन मृत्युः ।

और जिस पुरुषके क्षीण चन्द्रमा दशम स्थानमें स्थित हो और मंगल
नवमस्थानमें और शनैश्चर लग्नमें और सूर्य पंचमस्थानमें स्थित हो वह
मनुष्य धुएँमें धुटकर अथवा आग्नि या बंधन वा कुटने इत्यादि किसी भी
हेतुसे उस प्राणीका मरण कहना चाहिये ॥ १२० ॥

अथ शस्त्राग्निराजकोपेन मृत्युः ।

बंध्वस्तकर्मसहितैः कुजसूर्यमदौर्निर्याणमायुधशिखिक्षिति-

पालकोपैः । सौरिंदुभूमितनयैश्च सुखास्पदस्थैर्ज्ञेयः क्षतः

कृमिकृतश्च शरीरपातः ॥ १२१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थस्थानमें मंगल और सप्तम स्थानमें
सूर्य और दशमस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो शस्त्र अथवा आग्नि
अथवा राजकोपसे उस जीवकी मृत्यु होती है ॥

अथ कृमिविकारेण मृत्युः ।

जिसके द्वितीय स्थानमें शनैश्चर और चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा और दशमस्थानमें मंगल स्थित हो तो वह जीव धावमें कीडे पड़नेसे मृत्यु-को प्राप्त होता है ॥ १२१ ॥

अथ यानप्रपातान्मृत्युयोगः ।

खेस्थेऽकेऽवनिजे रसातलगते यानप्रपाताद्वधो

यंत्रोत्पीडनजः कुजेऽस्तसमये क्षीणेदुनाभ्युद्गमे ।

विष्मध्ये रुधिरार्किशीतकिरणैर्जूकाजसौरक्षगै-

र्यातैर्वा गलितेदुसूर्यरुधिरैव्योमास्तब्धवाह्यान् ॥ १२२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशम स्थानमें सूर्य और चतुर्थ स्थानमें मंगल स्थित हो तो वह जीव सवारीसे गिरकर मरता है ॥

अथ यंत्रोत्पीडनेन मृत्युः ।

जिस पुरुषके जन्मकालमें सप्तम स्थानमें मंगल और जन्मकालमें शनैश्चर सूर्य चन्द्रमा तीनों स्थित हों तो वह प्राणी किसी यंत्रमें अर्थात् अंजनादिकमें पिचकर मरता है ॥

अथ विष्मध्ये मृत्युः ।

और जिस किसीके तुलाराशिमें मंगल और मेषमें शनैश्चर और कुंभ-राशिमें चन्द्रमा स्थित हो तो वह जीव विष्ठामें गिरकर मरता है और जिसके दशममें क्षीण चन्द्रमा और सप्तम सूर्य और चतुर्थ मंगल स्थित हो तो वह जीव भी विष्ठामें गिरकर मरता है ॥ १२२ ॥

अथ गुह्यरोगशस्त्रदाहेन मृत्युः ।

वीर्यान्वितवक्रवीक्षिते क्षीणेदौ निधनस्थितेऽकर्जे ।

गुह्योद्भवरोगपीडया मृत्युः स्यात्कृमिशस्त्रदाहजः ॥ १२३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमा मंगल करके हृष्ट हो और

अष्टम स्थानमें शनैश्चर स्थित हो उस जीवकी गुदामें रोग उत्पन्न होनेसे अथवा कीडे पड़ने या हथियारसे अथवा अग्निमें जरनेसे मृत्यु होती है ॥२३॥

अथ खण्डन मृत्युः ।

अस्ते रवौ सरुधिरे निधनेऽकपुत्रे क्षीणे रसातलगते हिमगौ खगांतः । लग्नात्मजाष्टमतपःस्विनभौममंदचंद्रैस्तु शैलशि-खराशनिकुड्यपातैः ॥ १२४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगलसहित सूर्य सप्तम स्थानमें स्थित हो और अष्टम शनैश्चर और क्षीण चन्द्रमा चतुर्थ स्थानमें स्थित होतो वह जीव पक्षियोंकरके मारा जाता है ॥

अथाष्टमभावे विशेषफलम् ।

जिस मनुष्यके सूर्य जन्मलघ्नमें, मंगल पांचवें और शनैश्चर अष्टम और चन्द्रमा नवम स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य पहाड़से दबकर अथवा बिजलीके गिरनेसे या दीवारके गिरनेसे मरता है ॥ १२५ ॥

अथाष्टमभावे विशेषफलम् ।

स्वोच्चे स्वोच्चनवांशे च शुभवर्गेऽथ नीचभे । नीचाशि कूरषड्वर्गे मित्रभे सुहृदंशके ॥ २२६ ॥ वर्गोत्तमेऽरिभेर्यशे स्वक्षें द्वादश-धा क्रमात् । फलमष्टमभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम् ॥ १२६ ॥ भक्तेरग्निप्रवेशेन जनहीतः प्रमादतः । दावाग्निना दंभकृत्यात् दीपनेन विषादनात् ॥ १२७ ॥ बंधनाच्चैव लोहाच्च ततः क्रोधात्तथैव च । क्षयकासादपराधान्मृतिर्मृत्युगते रवौ ॥ १२८ ॥

अपने उच्चमें या उच्चके नवांशमें शुभग्रहके वर्गमें अथवा नीचराशिमें या नीचके नवांशमें अथवा पापग्रहके वर्गमें या मित्रकी राशिमें या अपने मित्रके नवांशमें ॥ १२५ ॥ अथवा अपने वर्गोत्तममें अथवा शत्रुकी राशिमें या शत्रुके नवांशमें वा अपनीही राशिमें स्थित जो ग्रह अष्टमभावमें हों उन करके क्रमसे अष्टमभावका फल कहना चाहिये ॥ १२६ ॥ भक्तिकरके अथवा

अग्निमें प्रवेश करके, जनोंके हरण करनेसे, प्रमाद करके, दावाग्नि करके, दंभ करके, दीप करके, विषाद करके ॥ १२७ ॥ बंधन करके, लोह करके, क्रोधसे, क्षय वा कासरोगसे, अपराधसे, क्रम करके सूर्य अष्टम भावमें स्थित हो तो पूर्वोक्त बारह प्रकारमेंसे क्रम करके फल कहना चाहिये ॥ १२८ ॥

जलप्रपाताद्वस्तविधेवंत्रपातेन वा भवेत् । स्त्रीहस्तात्पित्तकफतो दोषत्रयभवान्मतम् ॥ १२९ ॥ जठराग्निगुदारोगपशुपादाभिवाततः । गुदरोगाच्छृंगघातात्क्षयाच्चंद्रेष्टमे मृतिः ॥ १३० ॥ संयामाद्वौग्रहणतः स्वहस्तान्निजशस्त्रतः । द्विजपांश्चादशमघातात्कष्टात्कूपप्रपाततः ॥ १३१ ॥ भुवि याताद्गूपिरोधाद्विषभक्षणतस्तथा । चौरप्रहरणाद्गौमे मृत्युः स्यान्मृत्युभावगे ॥ १३२ ॥

जलके गिरनेसे, हस्तविधिसे, विजलीके गिरनेसे, स्त्रीके हाथसे, कफ-पित्त करके, त्रिदोषसे ॥ १२९ ॥ जठराग्नि करके, गुद्यरोगसे, पशुकी लात करके, गुदरोगसे, सींग मारनेसे, क्षय करके जो पूर्वोक्त चन्द्रमा जिस प्रकारसे अष्टम भावमें स्थित हो तो क्रमसे उसी रोगकरके मृत्यु कहना चाहिये ॥ १३० ॥ संयामसे, गौके पकडनेसे, अपने हाथसे, अपने हथियारसे, ब्राह्मण करके, लोहा लगनेसे, कष्टसे, कुएमें गिरनेसे ॥ १३१ ॥ धरतीम गिरनेसे, गुप्त रोगसे, जहर स्वानेसे, चौरके प्रहारसे जो पूर्वोक्त अष्टम स्थानमें जिस प्रकारसे मंगल अष्टम स्थानमें स्थित हो तो क्रमसे उसी रोगकरके मनुष्यकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १३२ ॥

ज्वरात्कफविकारेभ्यो वातरोगाद्वणेन च । महामायाप्रिय-
जनवियोगाद्वदनामयात् ॥ १३३ ॥ नेत्ररोगादामवाताद्वन्धने-
नोदरामयात् । पादत्रणाद्वुधे मृत्युर्मृत्युभावगते क्रमात् ॥
॥ १३४ ॥ नानारोगैः शूलरोगैः कर्णरोगात्थैव च । स्वज-
नाद्विषूचिकातीसाराच्चनिजभृत्यतः ॥ १३५ ॥ रक्तकोपातु-

रंगाच्च निजेच्छामूर्च्छकोपतः । बहुलक्षणतो मृत्युर्जीवे
स्यान्मृत्युभावगे ॥ १३६ ॥

ज्वर करके, कफविकार करके, वातरोगसे, फोडा करके, शीतलाके
विकारसे, अपने प्यारेके वियोगसे, वदनरोगसे ॥ १३३ ॥ नेत्ररोगसे, आम-
वातरोगसे, बंध करके, उदररोगसे, पैरमें फोडा निकलनेसे मृत्यु होती है
जो मृत्युभावमें क्रमसे बुध स्थित हो तो ॥ १३४ ॥ अनेक रोगसे, शूल-
रोगसे, कर्णरोगसे, अपने मनुष्योंके हाथसे, विषूचिकारोगसे, अतीसाररोगसे,
अपने नौकरके हाथसे ॥ १३५ ॥ रक्तविकार करके, अपनी इच्छा करके,
मूर्च्छारोगसे, बहुतसे लक्षणों करके मृत्यु हो । अष्टम भावमें बृहस्पति स्थित
हो तो पूर्वोक्त क्रम करके रोगसे मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १३६ ॥

तृष्णया मुखरोगाच्च दंतदोषात्रिदोषतः । विषूचिकावमनतो
भुजंगाद्विषभक्षणात् ॥ १३७ ॥ लूतया विषकंठेन सुरतोत्थ-
प्रकोपतः । बहुदुःखाद्वेन्मृत्युमृत्युभावगते सिते ॥ १३८ ॥

बुभुक्षया लंघनेन तथा च बहुभोजनात् । संग्रहण्याः पांडु-
रोगात्प्रमेहात्सन्निपाततः ॥ १३९ ॥ कंटकैत्रणकोपेन हस्तपा-
दाभिघाततः । हस्तितः खरतो मृत्युर्मन्दे स्यान्मृत्युभावगे ॥ १४० ॥

प्यास करके, मुखरोग करके, दंतदोषसे, त्रिदोषसे, विषूचिका रोग
करके, कै करनेसे, सर्पके काटनेसे, जहर खानेसे ॥ १३७ ॥ लूतारोगकरके,
जहरकंठ अर्थात् सर्पकरके, सुरतप्रकोपसे, बहुतसे दुःखोंकरके मृत्यु होती
है, जिसके अष्टम भावमें शुक्र स्थित हो तो क्रम करके कहना ॥ १३८ ॥
बहुत भूख करके, उपवास करके, बहुत भोजन करके, संग्रहणी रोगसे,
पांडु रोगसे, प्रमेह करके, सन्निपात करके ॥ १३९ ॥ कांटोंकरके, फोडा
निकलनेसे, हाथपैरके विधातसे, हाथी करके, मधे करके मृत्यु कहनी ।
पूर्वोक्त जिस प्रकारसे शनि अष्टम भावमें स्थित हो तो क्रम करके उसी
प्रकारसे मृत्यु कहनी ॥ १४० ॥

अथाष्टमभावगतराशिफलम् ।

मेषेऽष्टमस्थे निधनं नराणां भवेद्दिदेशे भजनाश्रितानाम् ॥
कथास्मृतिःपार्थिवपूजितानां महाधनानामतिदुःखितानाम् ॥
॥१४१॥ वृषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां मृत्युर्गृहे श्लेषमकृताद्वि-
कासत् । स्वजनाद्विरोधाच्चतुष्पदाद्वा रात्रौ तथा दुष्टजनादि-
संगात् ॥ १४२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यका मरण परदेशमें भजनके आश्रय करके, कथास्मृतिपार्थिवपूजन करके होती है, वह मनुष्य धनवान् अतिदुःखयुक्त होता है ॥ १४१ ॥ जिस मनुष्यके वृषराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु अपने ही देशमें कफके विकार करके अथवा स्वजनोंके विरोध करके अथवा व्युष्पाद करके वा दुष्ट मनुष्योंके संग करके रात्रिको प्राप्त होती है ॥ १४२ ॥

तृतीयराशौ च भवेन्नराणां मृत्युस्थिते मृत्युरनिष्टसंगात् ॥
स्नेहोद्भवो वा रससंभवो वा गुदप्रकोपादथवा प्रमेहात् ॥ १४३ ॥
कर्केऽष्टमस्थे च जलोपसर्गात् कीटात्तथा चैव विभीषणाद्वा ।
भवेद्दिनाशो परहस्ततो वा विदेशसंस्थस्य नरस्य चैव ॥
॥ १४४ ॥ सिंहोऽष्टमस्थे च सरीसृपाच्च भवेद्दिनाशो मनुजस्य
नूनम् । व्यालोद्भवो वा स्वजनाश्रितः स्याच्चौरोद्भवो वाथ
चतुष्पदोत्थः ॥ १४५ ॥ कन्या यदा चाष्टमगा विलग्नात्तदा
स्ववित्तान्मनुजस्य विद्यात् । स्त्रीणां हि हिंसाविषमाशनात्
स्यात्स्त्रीणां कृते चास्वगृहाश्रितस्य ॥ १४६ ॥

जिस मनुष्यके अष्टम स्थानमें मिथुनराशि स्थित हो तो अनिष्ट संगसे, स्नेहके पैदा होनेसे अथवा रसोत्पत्तिसे, गुह्यरोगसे अर्थात् अर्श वा प्रमेह करके उसकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १४३ ॥ जिसके कर्कराशि अष्टम भावमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु जलके उपर्यसे अथवा कीडे

(३५८)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

करके वा सर्प करके, पराये हाथ करके परदेशमें होती है ॥ १४४ ॥
 जिसके सिंहराशि अष्टम भावमें स्थित हो तो उस प्राणीकी सरीसृप
 अर्थात् कीडेकरके अथवा सर्पकरके, अपने मनुष्योंके आश्रयसे अथवा
 चौपायेसे वा चोरकरके मृत्यु होती है ॥ १४५ ॥ कन्याराशि जिस
 मनुष्यके अष्टमभावमें स्थित हो तो अपने धनकरके अथवा
 खियोंकी हिंसाकरके अथवा अपने घरकी लाकरके, विषके हेतुसे उसकी
 मृत्यु कहना चाहिये ॥ १४६ ॥

तुलाधरे चाष्टमभावसंस्थे भवेन्नराणां द्विपदोत्थमृत्युः । निरा-
 सनेनाथकृतोपवासात्कष्टेन देहस्य भवेत्प्रपातः ॥ १४७ ॥
 स्थानेऽष्टमस्थेऽष्टमराशि संगे नृणां विनाशो रुधिरोद्भवेन ।
 रोगेण वा कीटसमुद्भवश्चमार्गे प्रकुर्याद्वितं मुनीद्विः ॥ १४८ ॥
 चापेऽष्टमस्थे प्रभवेन्नराणां मृत्युः शरीरे शरताडनेन । गुद्धो-
 द्भवेनापि गदेन वापि चतुष्पदोत्थस्य जलोद्भवेन ॥ १४९ ॥

जिस मनुष्यके तुलाराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी
 मृत्यु द्विपदकरके निरासनसे होती है अथवा व्रत करनेसे कहनी चाहिये
 ॥ १४७ ॥ जिसके अष्टमभावमें वृथिकराशि स्थित हो तो उस मनुष्यका
 विनाश रुधिरकरके अर्थात् सूनफिसाद करके अथवा कीट करके
 रास्तेमें मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १४८ ॥ चापेऽष्टमस्थे यानी धनराशि जिसके
 अष्टम भावमें स्थित हो तो उस मनुष्यका शरीर बाणके लगनेसे अथवा
 कमरके उत्पन्न रोगसे या चौपायोंकरके वा जलमें उत्पन्न हुए जीव श्राह
 इत्यादि करके मृत्यु कहनी ॥ १४९ ॥

घटेऽष्टमस्थेऽस्य भवेद्विनाशो वैश्वानरात्सद्गतात् जंतोः ।
 नानारणेवादतया विकारैः श्रवणे वा गेहविहीनमृत्युः ॥ १५० ॥
 मीनेऽष्टमस्थे प्रभवेच मृत्युर्णामतीसारकृतः सुकृष्टात् ।
 पितृज्वराद्वा सलिलाश्रयाद्वा रक्तप्रकोपादथवा च शस्त्रात् ॥ १५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशि अष्टम स्थानमें स्थित हो तो उस प्राणीके घर आग लगनेसे उसका नाश होता है, वैसे मकरराशि अष्टम हो तो श्रम करके अथवा अपने घर बिना अर्धाद् विदेशमें मृत्यु होती है ॥ १५०॥ जिसके मीन राशि अष्टम भावमें हो तो अतीसार करके, बडे कष्टसे या पित्तज्वरसे अथवा जलके आश्रयसे वा रक्तकोपसे या शब्द करके मृत्यु होती है ॥ १५१ ॥

अथ मरणभूमिज्ञानम् ।

होरानवांशकपयुक्तसमानभूमौ योगेक्षणादिभिरतः परिकृप्य-
मेतत् । मोहस्तु मृत्युसमयेऽनुदितांशतुल्यः स्वेशोक्षिते द्विगु-
णतस्त्रियुणः शुभैश्च ॥ १५२ ॥

जन्मकालमें जिस नवांशका उदय हो और उस नवांशका पति जिस राशिमें स्थित हो उसी राशिके नामसमान जीव जैसे स्थानमें वास करता है वैसे ही स्थानमें मरण कहना चाहिये, जैसे नवांशपति मेषराशिमें स्थित हो तो भेदे बकरके रहनेके योग्य स्थानमें मृत्यु कहनी चाहिये, वृषरा-शिमें स्थित हो तो गैया आदि पशुओंके रहनेके स्थानमें मृत्यु कहनी, मिथुनराशिमें स्थित हो तो पुरुषोंके रहनेकी जगहमें, कर्कराशिमें स्थित हो तो कूपमें, सिंहराशिमें स्थित हो तो जंगलमें, कन्याराशिमें स्थित हो तो घरमें वा नाव या जहाजमें, तुलाराशिमें स्थित हो तो बाजारमें, वृ-श्चिकराशिमें स्थित हो तो गढेमें, कंदरामें, धनराशिमें स्थित हो तो पुरुषोंके रहनेकी जगहमें अश्वशालाके पास कहनी, मकरराशिमें स्थित हो तो जल अथवा रेतमें, कुंभराशिमें स्थित हो तो पुरुषोंके रहनेकी जगहम, मीनरा-शिमें स्थित हो तो नदी तालाव वा रत्ली धरतीमें मृत्यु कहनी चाहिये और नवांशपति जिस राशिमें स्थित हो उसी राशिमें कोई अन्य यह भी स्थित हो तो उस यहकी भूमिमें अथवा नवांशाधिपति जिस यहको देसता हो उसकी भूमिमें अथवा नवांशाधिपति जिस राशिमें स्थित हो उस राशिके स्वामीकी भूमिमें मरण कहना चाहिये । यहाँकी भूमि यहयोनि-प्रभेदाध्यायमें कही है उससे जान लेना चाहिये ॥

अथ मरणसमये मोहज्ञानम् ।

जन्मलघ्नमें जितने नवांशमें भुक्त हो गये हों उनको छोड़करके जितने भोगनेको वाकी रहे हों उन वाकी दुष्टश्रहयुक्त नवांशोंके समान काल अर्थात् जितने कालमें उन वाकी नवांशोंके लघ्न भोगे उतने काल मरणसमयमें प्राणीको मोह होता है और वह लग्नराशि अपने स्वामीकरके दृष्ट हो तो पूर्वोक्त कालसे द्विगुने कालतक मोह रहता है, जो वही राशि शुभश्रहोंकरके दृष्ट हो तो त्रिगुण काल मोह जानना और जो राशिपाति और शुभ श्रह दोनों करके दृष्ट वा युत हों तो उस प्राणीको मरण समय पूर्वोक्तकालसे छः गुने कालतक मूर्च्छा रहती है ॥ १५२ ॥

अथ शवपरिणामज्ञानम् ।

दहनजलविमिश्रैर्भस्मसंक्लेदशोषैर्निधनभवनसंस्थैर्वर्यालवर्गैर्विर्भ-
डंतः । इति शवपरिणामश्चितनीयो यथोक्तः पृथुविरचि-
तशास्त्राद्वात्यनूकादि चिन्त्यम् ॥ १५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मलघ्नमें अष्टम स्थानमें जो द्रेष्काणका उदय हो उसीके द्वारा मृतक शरीरका परिणाम कहना चाहिये, यदि वही बाई-सवां द्रेष्काण अग्निसंज्ञक होता है तो उस प्राणीका शरीर जलाया जाता है और जलसंज्ञक हो तो वह शरीर जलमें प्रवाह किया जाता है और जो मिश्रसंज्ञक हो तो वह शरीर सूख जाता है और जो सर्पसंज्ञक-द्रेष्काण हो तो मृतकशरीर काक गृध शृगालादि करके भक्षण किया जाता है । यहां पापश्रहोंका द्रेष्काण हो उसकी अग्निसंज्ञा है और शुभश्रहोंका द्रेष्काण हो उसकी जलसंज्ञा है और मिश्रसंज्ञक द्रेष्काण-उसको कहते हैं कि जो पापश्रहका द्रेष्काण शुभश्रहयुक्त हो और शुभ-श्रहका द्रेष्काण पापश्रहयुक्त हो तो उसको मिश्रसंज्ञक कहते हैं और कर्कराशिका पहिला और दूसरा वृथिकराशिका पहिला दूसरा और मीनराशिका तीसरा द्रेष्काण सर्पसंज्ञक होता है । इस प्रकार मृतकशरीरके परिणामका विचार कहना चाहिये, इन सबका विचार पुराने आचार्योंने आगमन वा गमन करना जाना कहा है ॥ १५३ ॥

अथ त्यक्तलोकज्ञानम् ।

गुरुरुद्गुपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञौ विबुधपितृतिरश्चो नारकी-
यांश्च कुर्युः ॥ दिनकरशशिवीर्याधिष्ठितारूप्यंशनाथाः प्रवर-
समनिकृष्टास्तुंगह्रासादिनूके ॥ १५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य और चंद्रमा इन दोनोंमेंसे जो वह
बली जिस द्रेष्काणमें स्थित हो उस द्रेष्काणका स्वामी जो बृहस्पति हो
तो वह प्राणी देवलोकसे आया कहना और जो चंद्रमा शुक्र इनमेंसे
कोई हो तो पितृलोकसे आया कहना और जो सूर्य मंगल इनमेंसे कोई
हो तो मनुष्यलोकसे आया हुआ कहना और शनैश्चर बुध हो तो
नरकलोकसे आया हुआ प्राणी कहना चाहिये ॥

अथ उक्तलोके श्रेष्ठादिज्ञानम् ।

जो पूर्वोक्त लोकसे आये हुए प्राणियोंके अह अपने उच्चस्थानमें स्थित
हों तो उन प्राणियोंमें पूर्वोक्त लोकमें श्रेष्ठ जानना चाहिये और जो वही
अह अपने उच्च नीचके बीचम स्थित हों तो उन प्राणियोंका हाल पूर्वज-
न्ममें मध्यम कहना चाहिये और जो वही अह अपने नीचस्थानमें स्थित
हों तो उन प्राणियोंका पूर्वजन्ममें नीच हाल कहना चाहिये ॥ १५४ ॥

अथ मृतकप्राणिगम्यलोकज्ञानम् ।

गतिरपि रिपुं ग्रन्थं शयोऽस्तस्थितो वा गुरुरथ रिपुकेद्वच्छद्गः
स्वोच्चसंस्थः ॥ उदयति भवनेऽन्त्ये सौम्यभागे च मोक्षो भवति
यदि बलेन प्रोज्ज्ञतास्तत्र शेषाः ॥ १५५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे, सातवें, आठवें ये तीनों स्थान शून्य
हों तो छठे आठवें इन दोनों स्थानोंमें जिस द्रेष्काणका उदय हो उन
दोनों द्रेष्काणके स्वामियोंमेंसे जो बलवान् हो उसी अहके पूर्वोक्त लोकको
प्राणिका गमन होता है । अथवा लभ्यसे छठे, सातवें, आठवें इन तीनों

(३६२)

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

स्थानोंमें वा दो स्थानोंमें अथवा दो ग्रह या दोसे अधिक स्थित हों तो उनमें जो अधिक बली हो उसी ग्रहके लोकको जाता है ॥

अथ मोक्षयोगः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे और केंद्र और आठव स्थानमें उच्च-राशिमें वृहस्पति स्थित हो तो वह प्राणी मुक्तिको प्राप्त होता है और जो मीनलघ्नमें जन्म हो और वृहस्पति लघ्नमें बली होकर स्थित हो और सम्पूर्ण ग्रह निर्वली हों तो वह प्राणी मुक्तिको प्राप्त होता है ॥ १५५ ॥

अथ मोक्षहेतुज्ञानम् ।

न स्युर्नैर्याणका योगाः प्रोक्ता मृत्युहकाणजाः ।

बलिनः केंद्रषष्ठाष्टद्यूने स्युमोक्षहेतवः ॥ १५६ ॥

जन्मलघ्नसे बाईसवां द्रेष्काण अर्थात् अष्टमभावमें जिस द्रेष्काणका उदय हो वही द्रेष्काण मनुष्यके मरणका कारण है । उस द्रेष्काणका पति बलवान् होकर छठे, आठवें, केंद्रमें स्थित हो तो उस मनुष्यका मरण तीर्थमें होता है अर्थात् मोक्ष होता है ॥ १५६ ॥

अथ तीर्थस्थानज्ञानम् ।

रविमोक्षहकाणेशो रेवापूर्वे तदा स्मृतिः । शोणस्य यमुनायाश्च कूले दक्षिणके तथा ॥ १५७ ॥ चंद्रेमोक्षहकाणेशस्तदा शोणो-त्तरे तटे । अयोध्यायां सरस्वत्यां वेत्रवत्यामथापि वा ॥ १५८ ॥ भौमेऽप्येवं च कृष्णायां गोदावर्यां च नार्मदे । तीर्थे मृतिर्भवेत्फल्युतीर्थे मंदाकिनीतटे ॥ १५९ ॥ बुधे मोक्षहकाणेशो प्राप्य गंगां च कौशिकीम् । गंभीरां चापि वासिष्ठां संधौ वा लोहिते मृतिः ॥ १६० ॥

१ लग्नाद्यो द्वाविंशो द्रेष्काणो मरणकारणतया निर्दिष्टः तदीयो बली यदि रिषु-रथकेंद्रस्यो भवति तदा तीर्थे मरणं संहितास्त्वं ग्रहभवितप्रकारेणोपदशा निरूपितास्तेषु यानि तीर्थानि तेषु मृत्युर्गति वक्तव्यम् ।

जिस मनुष्यके वाईसर्वे द्रेष्काणका सर्व स्वामी होकर छठे, आठर्वे, केंद्रमें स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु नर्मदाके पूर्वभागमें और शोणभद्रमें और यमुनाके दक्षिण भागमें होती है ॥ १५७ ॥ जिसके चन्द्रमा वाईसर्वे द्रेष्काणका स्वामी हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु शोणभद्रके उत्तर अयोध्यामें वा सरस्वतीके किनारे अथवा वेनवतीके पास होती है ॥ १५८ ॥ जिसका मंगल वाईसर्वे द्रेष्काणका स्वामी होकर छठे आठर्वे केंद्रमें बैठा हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु कृष्णानन्दीके किनारे वा गोदावरीके पास अथवा नर्मदा तीर्थमें अथवा फल्गुतीर्थ अर्थात् गयाजीमें अथवा मंदाकिनीके तटपर होती है ॥ १५९ ॥ इसी तरह बुध मोक्षद्रेष्काणका स्वामी होकर पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु कौशिकी गंगाके किनारे अथवा गंभीरा वसिष्ठके संगमके तटपर होती है ॥ १६० ॥

जीवे मोक्षद्वकाणेश सिंधुं वा मथुरापुरीम् । विपाशां प्राप्य
मरणं निश्चितं यदि मानवः ॥ १६१ ॥ काशी द्वारावती कांची
गंगा रामपुरी तथा । गुरौ केंद्रगते स्वोच्चे प्राप्य मृत्युं प्रय-
च्छति ॥ १६२ ॥ शुक्रः शतद्रूं प्राप्य चंद्रभागामिरावतीम् ।
वितस्तामंतिकां वापि मृत्युं यच्छति केंद्रगः ॥ १६३ ॥ शनौ
प्रभासे मृत्युश्च कुरुक्षेत्रे वटेश्वरे । सरस्वत्यां प्रयागे व
कथ्यते पूर्वसूरिभिः ॥ १६४ ॥

जिस मनुष्यके बृहस्पति मोक्षद्वकाणस्वामी होके छठे आठर्वे केंद्रमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य गंगा सागर अथवा मथुरापुरी या व्यासनन्दीके किनारे मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १६१ ॥ अगर बृहस्पति उच्चराशिमें केंद्रमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु काशी, द्वारका, कांची, गंगातट, हरिद्वारमें या अयोध्यामें होती है ॥ १६२ ॥ जो शुक्र वाईसर्वे द्रेष्काणका स्वामी होकर पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु सत-लजा, चंद्रभागा ऐरावती, जेल्य इन नदियोंके किनारे होती है ।

ये नदियाँ पंजाब देशमें स्थित हैं ॥ १६३ ॥ जो शनैश्चर बाईसवें द्रेष्काणका स्वामी होकर छठे आठवें केंद्रमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु प्रभासक्षेत्र अथवा कुरुक्षेत्र अथवा वटेश्वरके वा सरस्वतिके तटपर वा प्रयागराजमें होती है। अब विद्वानोंको चाहिये कि विचार कर फल कहे किस तरहसे जो पुरुष पूर्वोक्त तीर्थोंके निकट वास करनेवाले हैं उनकी तो मृत्यु उन तीर्थोंपर बहुधा होती है किन्तु अन्य देशवाशियोंके इन फलोंका विचार करना चाहिये ॥ १६४ ॥

अथ अष्टमभावेशफलम् ।

अष्टमपे लग्नगते बहुविद्वा दीर्घरोगमृतस्तेन । विद्याविवाद-
निरतो लक्ष्मीं लेभे नृपतिवचसाम् ॥ १६५ ॥ निधनपतौ
धनसंस्थेऽल्पजीवी वैरवान्नरश्वौरः । कूरे सौम्यं तु शुभं किंतु
क्षितिपालतो मरणम् ॥ १६६ ॥ अष्टमपतौ तृतीये बंधुवि-
रोधी सुहद्विरोधी च । दुष्टधीरुद्वीक्ष लोलःसोदररहितो भव-
त्यथवा ॥ १६७ ॥ निधनेशे तुर्यगते पृथिवीयुतो लक्ष्मीपितृ-
मात्रोश्च । दुःखं भाग्यचिंता च रोगान्वितो भवति ॥ १६८ ॥

जिस मनुष्यके अष्टमभावपति लग्नमें स्थित हो तो बहुत विद्वा सहित बड़े रोगकरके मरता है, विद्याके वादमें सहित राजाकी आज्ञासे लक्ष्मीलाभ होता है ॥ १६५ ॥ अष्टमभावपति धनभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य थोड़े दिन जीता है, वैरकरके युक्त चोर होता है, पापग्रह करके शुभग्रह करके पर शुभ राजा करके मरण कहना ॥ १६६ ॥ अष्टमपति तृतीयभावमें स्थित हो तो वह पुरुष भ्राताओंका विरोधी, मित्रोंसे विरोध करनेवाला, दुष्टबुद्धि, दुष्ट वचन बोलनेवाला, कार्मी, संगे भाई करके रहित होता है ॥ १६७ ॥ अष्टमपति चतुर्थमें स्थित हो तो पृथिवीयुक्त, लक्ष्मी, पिता, माता करके दुःखी, भाग्यकी चिंतासहित रोगयुक्त होता है ॥ १६८ ॥

छिद्रपतौ तनयस्थे कूरे सुतविरहितः शुभे ससुतः । जातोऽपि
नैव जीवति कर्मयुक्तस्तु बुद्धिमान् ॥ १६९ ॥ छिद्रेशे रिपुसंगते

दिनकरे भूम्या विरोधी गुरावंगे सीदति दृष्टिरोगकलितः
शुक्रे सरोगी विधौ । भौमे व्याधियुतो ब्रुधे नृपभयं मित्रा-
त्सुखं वै शनौ षष्ठे राहुविधौ हि तत्र शशिभृतत्सौम्येक्षिते
नैव किम् ॥ १७० ॥ मृत्युपतौ सप्तमगे दुष्टस्त्रीप्रियो गुद-
व्याधिः । कूरे भार्याद्रेषी कलव्रदोषान्मृतिं लभते ॥ १७१ ॥
निधनपतौ निधनगते व्यवसायी व्याधिवर्जितो नीरुक् ।
सकलकलाकलितवपुः श्रेष्ठकुले जायते च विदितः ॥ १७२ ॥

अष्टमपति पंचमभावमें स्थित पापग्रह हो तो वह पुरुष
पुत्ररहित और शुभग्रह हो तो पुत्ररहित हो; पैदा होनेसे नहीं जिये,
कर्मसहित बुद्धिमान् होता है ॥ १६९ ॥ अष्टमपति सूर्य छठे स्थानमें स्थित
हो तो पृथिवीसे विरोध करनेवाला हो और बृहस्पति हो तो शरीर
गलित, दृष्टिरोगसहित, शुक्र हो तो भी पूर्वोक्त रोग हो, मंगल हो तो
व्याधिसहित, बुध हो तो राजभय, शनैश्चरकरके मित्रोंसे सुख हो और जो
छठे राहु हो तो भी मित्रसे सुखकारी, चन्द्रमा और शुभ ग्रह करके दृष्ट
हो तो क्या पूर्वोक्त फल नहीं करे ॥ १७० ॥ अष्टमपति सप्तमभावमें स्थित
हो तो उस मनुष्यको दुष्ट स्त्री प्रिय, गुदरोगव्याधियुक्त हो, पापग्रह हो तो
स्त्रीका वैरी, स्त्रीदोषसे मृत्युको प्राप्त हो ॥ १७१ ॥ अष्टमपति अष्टमभावमें
स्थित हो तो वह पुरुष व्यवसायी, आधिरहित, रोगरहित हो, सम्पूर्ण
कलाकरके शोभायमान शरीर, अच्छे कुलमें उत्पन्न हुआ विदित हो ॥ १७२ ॥

मृतिनाथे नवमस्थिते निःसंगी जीवघातकः । पापी बन्धुविरो-
धी पूज्यो विमुखे शुचिः ॥ १७३ ॥ कर्मगते निधनेशो नृप ·
कर्मनीचकर्मनिरतश्च । अलसः कूरे तनयधनवान्मातृरहितः
॥ १७४ ॥ लाभस्थे चाष्टमपे बाल्ये दुःखी सुखी भवति ।
पश्चाद्वीर्घायुः सौम्यखगे पापे अल्पायुर्नरौ भवति ॥ १७५ ॥
व्ययसंस्थितेऽष्टमेशो कूरे वा तस्करो शठो निकृष्टश्च । आत्म-
गतिव्यंगवपुर्मृतिस्तु बहुरोगादिभिश्च ॥ १७६ ॥

अष्टमभावपति नवम स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य निःसन्देह जीवोंका बात करनेवाला, पापी, आताओंका विरोधी, पूज्य, विमुख तथा पवित्र हो ॥ १७३ ॥ अष्टमभावपति दशमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य राजकर्म और नीचकर्ममें निरत होता है, पापश्रहकरके आलसी, शुभश्रहकरके धनपुत्रवान् तथा मातारहित होता है ॥ १७४ ॥ अष्टमपति लाभस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य बाल्यावस्थामें दुःखी और पिछली अवस्थामें सुखी, जो शुभश्रह हो तो मनुष्य अल्पायु होता है ॥ १७५ ॥ अष्टमभवनका स्वामी बारहवें भावमें पापश्रह स्थित हो तो वह मनुष्य दुष्ट, मूर्ख, अधम, आत्मगतियुक्त, बुरा शरीर तथा बहुत रोगोंकरके मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १७६ ॥

अथ भाग्यभावविचारः ।

धर्मक्रियायां हि मनः प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम् ।
तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणे पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥ १७७ ॥
भाग्ये खलाः स्वगृहगाः शुभदृष्टियुता यदि । सौभाग्यसौ-
ख्ययुक्तस्य जन्म विद्याच्च भूपतेः ॥ १७८ ॥ कूरा नीचारिभां-
शस्था भाग्येन शुभवीक्षिताः । सर्वदा भाग्यहीनश्च जन्म
विद्याच्च संशयः ॥ १७९ ॥ लग्नपेडल्पतरे राशौ जन्मकालं गते
सति । भाग्यपेन विशेषण महाभाग्यो भवेन्नरः ॥ १८० ॥
एकेन मध्यभाग्यः स्यादभावे हीनभाग्यकः । विलग्नात्सप्तमं
यावद्राशियोग्यंतराः स्मृताः ॥ १८१ ॥

धर्मके काममें मनकी प्रवृत्ति होनी, भाग्योदय होना, सुंदर स्वभाव, तीर्थयात्रा, पुराणश्रवण ये सम्पूर्ण बातें नवमस्थानसे विचार करना चाहिये ॥ १७७ ॥ जो भाग्यभवनमें पापश्रह अपने स्थानमें होकर शुभश्रहकी हृष्ट-
साहित स्थित हो तो सौभाग्य और सुखसाहित उस मनुष्यका जन्म कहना चाहिये ॥ १७८ ॥ जो पापश्रह नीचराशिर्में वा शत्रुक्षेत्र, शत्रुके नवांश, भाग्यभवनमें स्थित हो और शुभश्रहकरके हृष्ट न हो तो वह मनुष्य

सूदैव काल भाग्यकरके हीन उसका जन्म कहना चाहिये इसमें संशय नहीं है ॥ १७९ ॥ जो जन्मकालका स्वामी अल्पतरराशिमें जन्मकालम हो और विशेषकरके भाग्यनाथभी इसी प्रकार करके हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्य-शाली होता है ॥ १८० ॥ एक करके मध्यभाग्यशाली पुरुष होता है और दोनोंमेंसे कोई न हो तो हीनभाग्य होता है, जन्मलघ्से लेकर सप्तमभाव-पर्यंत अल्पतरराशि कही है सो इसके अन्तरमें होना चाहिये ॥ १८१ ॥

हंति पुण्यं च भाग्यं च सूर्ये पुण्यगते नृणाम् । तुंगस्वक्षें ग्रहे
याते पुष्कलं धर्ममादिशेत् ॥ १८२ ॥ भाग्यभागी भवेद्धन्यः
पितृयज्ञपरायणः ॥ धर्मे पूर्णनिशानाथो क्षीणः सर्वविनाशकः
॥ १८३ ॥ कुजे रक्तपटानंदी भवेत्पाशुपत्रवती । भाग्यहीनश्च
सततं नरः पुण्यगृहं गते ॥ १८४ ॥ मंदभाग्यो बुधे पापे नरो
बौद्धमतानुगः । भाग्यवान्धार्मिकश्चापि शुभे सौम्ये तु धर्मगे
॥ १८५ ॥ भवति भाग्ययुतो नृपवल्लभः सुखगुरुं प्रति भक्तिपरायणः ।
निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवो भवति धर्मगते भृगुनंदने ॥ १८६ ॥

सूर्य नवमस्थानमें स्थित हो तो उस मनुष्यका पुण्य और भाग्य दोनों नाश करता है और जो उच्चराशिमें वा अपनी राशिमें होकर नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य बहुत धर्मका करनेवाला होता है ॥ १८२ ॥ नवम पूर्णचन्द्रमा स्थित हो तो भाग्यवान्, धर्मात्मा, पितृयज्ञ (श्राद्धादिक) करनेमें तत्पर होता है और जो क्षीण चन्द्रमा नवम स्थित हो तो पूर्वोक्त फलको नष्ट करनेवाला होता है ॥ १८३ ॥ जो नवम मंगल स्थित हो तो वह मनुष्य लाल वस्त्रोंका धारण करनेवाला, आनंदयुक्त, पाशुपत्रवतको करनेवाला निरंतर भाग्यहीन होता है ॥ १८४ ॥ जो नवम भवनमें पाप-श्रहयुक्त बुध स्थित हो तो वह मनुष्य मंदभागी, बौद्धमत या जन किंतु आर्यसमाजी होता है और जो बुध शुभश्रहयुक्त नवम स्थित हो तो वह मनुष्य भाग्यवान् तथा धर्मात्मा होता है ॥ १८५ ॥ जिसके नवम स्थानमें

शुक्र बलवान् होकर स्थित हो तो वह मनुष्य भाग्यसहित राजाओंको
ध्यारा, देवता और गुरुकी भक्तिमें तत्पर, अपनी भुजाओं करके इकड़ा
किया भाग्य अधिक जिसने ऐसा होता है ॥ १८६ ॥

विविधतीर्थकरः सुकलेवरः सुखगुरौ नवमे सुखवान् गुणी ।
त्रिदशयज्ञपरः परमार्थवित्प्रचुरकीर्तिकरः कुलवर्धनः ॥
॥ १८७ ॥ दंभप्रधानसुकृतः पितृदैवतवंचकः । हीनभाग्यः
सुधर्मा च नरो नवमगे शनौ ॥ १८८ ॥ स्वक्षोच्चगे शनौ भाग्ये
वैकुण्ठादागतो नरः ॥ राज्यं कृत्वा सुधर्मेण पुनर्वैकुण्ठमेष्यति
॥ १८९ ॥ नीचधर्मानुस्तकः स्यात्सत्यशौचविवर्जितः । भाग्य-
हीनश्च मंदश्च धर्मगे सिंहिकासुते ॥ १९० ॥ नवमस्थानगो
केतुर्बालत्वे पितृकष्टकृत् ॥ विपर्यये भाग्यहीनो म्लेच्छाद्
भाग्योदयो भवेत् ॥ १९१ ॥

जिसके नवमस्थानमें बृहस्पति हो तो वह मनुष्य बहुत तीर्थोंका करने-
वाला, अच्छा शरीर जिसका, सुखसहित, बुद्धिमान्, गुणवान् होता है, पर-
मार्थका जाननेवाला, बड़ी कीर्ति है जिसकी तथा कुलका बढ़ानेवाला होता
है ॥ १८७ ॥ जिस मनुष्यके नवम शनैश्चर स्थित हो वह दंभीपुरुषोंमें
नामी अच्छा कर्म करे, पितृदैवताओंका वश्चक भाग्यहीन तथा सुधर्मी हो
॥ १८८ ॥ जिसके अपनी राशि अथवा अपने उच्चमें शनैश्चर भाग्यभवनमें
स्थित हो तो कहना चाहिये कि यह प्राणी वैकुण्ठलोकसे आया है और
अच्छे कर्म करके पृथ्वीपर राज्य करके फिर भी वैकुण्ठको ही जायगा
॥ १८९ ॥ जिसके नवम राहु स्थित हो तो वह मनुष्य नीच धर्मोंमें तत्पर,
सच और पवित्रता करके रहित, हीनभाग्य तथा मंदबुद्धि होता है ॥ १९० ॥
जिसके नवम स्थानमें केतु स्थित हो तो वह मनुष्य बाल अवस्थामें
पिताके कष्ट देनेवाला और भाग्यहीन होता है, इसके विपर्यय म्लेच्छोंसे
उस मनुष्यका भाग्योदय होता है ॥ १९१ ॥

भाग्यं यदा स्वामियुतेक्षितं च भाग्योदयः स्यान्निजदेशमध्यम्।
अन्यग्रहैः पापशुभैर्युतं चेद्गाग्योदयस्तत्परदेशभूमौ ॥ १९२ ॥
भाग्याधिपश्चेद्यदि केद्रसंस्थ आरौ वयस्ये च सुखोदयं वा ॥
त्रिकोणगः स्वोच्चगतोऽथवा चेन्मध्यं वयस्तस्य फलप्रदं स्यात्
॥ १९३ ॥ भाग्याधिनाथः स्वगृहेऽथ मित्रे गृहेऽथवा स्याद्य-
सोऽन्त्यभागे । भाग्योदयं तस्य वदंति तज्ज्ञाः शुभग्रहेदश्च
युतेक्षिते च ॥ १९४ ॥

जो भाग्यस्थानपति भाग्यभवनमें स्थित हो अथवा भाग्यस्थानको
देखता हो तो उस मनुष्यका भाग्य अपने देशमें ही उदय होता है और
किसी पाप वा शुभग्रहयुक्त वा हृष्ट भाग्यभवन हो तो उस मनुष्यका भाग्यो-
दय परदेशमें होता है ॥ १९२ ॥ जो भाग्यभवनका स्वामी केद्रमें स्थित हो
तो उस मनुष्यका बाल्यअवस्थामें भाग्योदय होता है और भाग्यस्थानपति
अपने त्रिकोणस्थानमें स्थित हो वा उच्चका हो तो उस मनुष्यकी जवानीमें
उसका भाग्योदय होता है ॥ १९३ ॥ जो भाग्यस्थानपति अपने घरका
अथवा अपने मित्रके घरमें स्थित हो तो उस मनुष्यका भाग्योदय
बुद्धापेमें होता है, यह ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओंने कहा है परंतु उस भाग्यस्था-
नपतिको शुभग्रह देखते हों वा युत हों तो पूर्वोक्त फल बुद्धिमान्
विचार करके कहे ॥ १९४ ॥

नीचस्थो वा शत्रुग्रहे गतश्चेद्गाग्यस्वामी रिःफरंधारिगो वा ॥
पापैः खेटैः संयुतो वाथ हृष्टो भाग्यैर्हीनः स्यादरिद्री सदैव
॥ १९५ ॥ नवमभावपतिर्यदि केद्रगो नवमपंचमगश्च यदा
भवेत् ॥ प्रसवलग्रपतिर्यदि तुंगगः सुखसमृद्धियुतो मरणांतकम्
॥ १९६ ॥ नवमभावगतः स्वगृहे शनिभवति चेत्स महाशिव-
यज्ञकृत् ॥ अतिशिवं कुरुते जपसंयुतं नृपतिवाहनचिह्नसम-
न्वितम् ॥ १९७ ॥ नवमभावपतिर्हीरिमध्यगो नवमभं रिपु-
दृष्टियुतं तथा ॥ यदि तदा परधर्मरतो नरः शुभखगैरथ धर्म-
रतः स्वके ॥ १९८ ॥

जो भाग्यभवनका स्वामी अपनी नीचराशिर्में अथवा शत्रुकी राशिर्में स्थित हो अथवा छठे, आठवें, बारहवें स्थानमें स्थित हो, पापग्रहोंकरके संयुक्त अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य भाग्यहीन सर्वदा दरिद्री रहता है॥ १९५॥ जो नवमभावका स्वामी केंद्रमें अथवा नवम पंचम स्थित हो और जन्मलघु पति अपने उच्चमें स्थित हो तो सुखसमृद्धिकरके सहित अपने मरणतक ऐश्वर्यवान् होता है ॥ १९६॥ जिस मनुष्यके नवमभावमें अपनी राशिका शनैश्चर स्थित हो तो वह मनुष्य बड़े शिवका यज्ञ करनेवाला, अत्यन्त कल्याणयुक्त, जपको प्राप्त, राजा सवारियोंके चिह्नसहित होता है॥ १९७॥ जो नवमभावका स्वामी शत्रुओंके बीचमें स्थित हो और नवमस्थान शत्रु ग्रहकी दृष्टियुत हो तो वह मनुष्य पराये धर्ममें तत्पर होता है और उस नवमभावका स्वामी शुभग्रहोंके मध्यमें स्थित हो और नवमभावको शुभ-ग्रह देखते हों तो वह मनुष्य अपनेही धर्ममें तत्पर होता है॥ १९८॥

**क्रूरा धर्मे धर्महीनं कर्कशं चपलं तथा । सौम्याः कुर्वति धर्माद्यं
दयालुं प्रियभाषणम्॥१९९॥** गुरौ भाग्ये भवेन्मंत्री महाभाग्यो-
ऽखिलेश्वरः॥ अबलेऽपि शुभे खेटे भाग्यस्थे धार्मिकोत्तमः२००॥

जो नवमभावमें पापग्रह स्थित हो तो वह मनुष्य धर्महीन, दुष्ट स्वभाव-वाला, चपल होता है और जो नवमभावमें शुभग्रह स्थित हो तो वह मनुष्य धर्मवान्, दयायुक्त, मीठी वाणीका बोलनेवाला होता है ॥ १९९॥ जिसके बृहस्पति भाग्यभवनमें बैठा हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् पृथ्वीका स्वामी होता है चाहे निर्बलभी शुभग्रह नवमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य बहुत उच्चम धर्मात्मा होता है ॥ २००॥

अथ भाग्यभावस्थे गुरौ रव्यादिदृष्टिफलम् ।

अर्कदृष्टे गुरौ भाग्ये मंत्री नृपसमोऽथवा ॥ कांताभोगी शशां-
केन भौमेन धनभाग्यभवेत् ॥२०१॥ धर्मे बुधेन शुक्रेण गोवा-

हनधनान्वितः । हृष्टे सूर्यजे महिषचरस्थावरसंयुतः ॥ २०२ ॥
समृद्धः पार्थिवो जातस्तेजोरूपगुणान्वितः । स्यात्समस्तश्रहे-
र्हृष्टे भाग्यस्थे सुरमंत्रिणि ॥ २०३ ॥

जो नवमस्थानमें बृहस्पति स्थित हो उसको सर्व देखता हो तो वह
मनुष्य मंत्री राजाके समान होता है और जो चंद्रमा देखता हो तो शिर्यों-
का भोगनेवाला होता है और मंगल देखता हो तो धनवान् हो ॥ २०१ ॥ बुध
वा शुक्र करके हृष्ट हो तो गौ सवारी धनसहित होता है और जो शनैश्चर-
करके हृष्ट हो तो महिष, चर और स्थावर करके संयुक्त होता है ॥ २०२ ॥
नवमस्थानमें बृहस्पति स्थित हो उसको सम्पूर्ण श्रह देखते हों तो वह मनुष्य
सम्पूर्ण क्षद्रियोंसहित तेजवान् स्वरूपवान् गुणवान् होता है ॥ २०३ ॥

सर्वे राज्यप्रदा ज्ञेया भाग्यक्षें स्युः शुभग्रहाः । धनस्थाः सर्व-
धाम्यायुर्धर्मसौभाग्यवृद्धिदाः ॥ २०४ ॥ स्वर्क्षराशिस्थिता
पापा ग्रहा भाग्यक्षसंस्थिताः । शुभैर्दृष्टा न कुर्वति प्रभूतगुण-
मुत्तमम् ॥ २०५ ॥ स्वोद्गगः खचरो भाग्ये करोति विभवान्वि-
तम् । सर्वे शुभेक्षिता भूपं कुर्वति रिपुवर्जितम् ॥ २०६ ॥
सकलगगनगेहाः स्वोद्गगा भाग्यराशौ कनकधनसमृद्धं श्रेष्ठमु-
त्पादयन्ति । यदि शुभखगदृष्टा भूपमान्यं करोति विहरिरिपु-
समूहं दिव्यकायं सुकांतिम् ॥ २०७ ॥

जो सम्पूर्ण भाग्यभवनमें शुभग्रह स्थित हों तो राज्यको देते हैं और
जो धनस्थानमें स्थित हों तो सम्पूर्णप्रकारका अन्न और धर्म, आयु और
सौभाग्यकी वृद्धि करते हैं ॥ २०४ ॥ अपनी राशिमें स्थित होकर कोई
पापग्रह भाग्यभवनमें स्थित हो और शुभग्रहकरके हृष्ट हो तो बहुत गुण
और धन नहीं करता है ॥ २०५ ॥ अपनी उच्च राशिमें स्थित होकर जो
ग्रह भाग्यभवनमें स्थित हो तो वह मनुष्य विभवयुक्त होता है और जो
सम्पूर्ण शुभग्रह देखते हों तो राजा शत्रुहीन होता है ॥ २०६ ॥ सम्पूर्ण

प्रहोँमेंसे कोई एक भी ग्रह अपने उच्चका होकर भाग्यभवनमें स्थित हो तो वह मनुष्य सुवर्ण और धनकरके समृद्ध श्रेष्ठ उत्पन्न करता है, जो शुभग्रह उसको देखते हों तो वह राजमान्य होता है, शत्रुओंके समूहका नाश करके बहुत अच्छी देह सुंदर कांतिमान् होता है ॥ २०७ ॥

त्रिचतुःपञ्चखण्डास्तथा पट्सप्तसंस्थिता भाग्ये ॥ प्रत्ययनं बहुधनवंतं कुर्युर्नृपतिं च बुधरहिताः ॥ २०८ ॥ जनयंति भाग्य-संस्था गुरुभौमविवर्जिता ग्रहाः । पुरुषो व्याधियुतो कांता-धनहीनो बंधनार्तमतिरहितः ॥ २०९ ॥

भाग्यभवनमें तीन चार पांच ग्रह तैसे ही छः वा सात स्थित हों तो मनुष्यको बहुत धनवान् प्रति अयनमें करते हैं और जो बुधहीन ग्रह नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ २०८ ॥ जो बृहस्पति मंगल करके रहित वाकीके सम्पूर्ण ग्रह नवमभावमें स्थित हों तो वह मनुष्य व्याधियसित, द्वी और धन करके हीन, बंधन करके दुःखी और मूर्ख होता है ॥ २०९ ॥

अथ धर्मभावविशेषफलम् ।

स्वोच्चे स्वोच्चनवांशे च शुभवर्गेऽथ नीचगे । नीचांशे क्रूरषड्गर्गे मित्रमे सुहृदंशके ॥ २१० ॥ वर्गोत्तमेऽरिभेर्यशे स्वक्षें द्वादशधा क्रमात् । शूलं च धर्मभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम् ॥ २११ ॥ तामसो १ दंभजो २ हीनो ३ दुष्टः ४ पुष्टः ५ पराश्रितः ६ । पिशुनाश्रयसंजातः ७ पापी ८ ह्यतिजडस्तथा ९ ॥ २१२ ॥ कृतच्चनभाषित १० श्वौरः संस्थितः ११ पिशुनाश्रयः १२ । धर्मभावगते सूर्ये जन्मनां परिशील्यते ॥ २१३ ॥

अपनी उच्चराशिमें १, उच्चके नवांशमें २, शुभग्रहके वर्गमें ३, अपनी नीचराशिमें ४, अपने नीचके नवांशमें ५, पापग्रहोंके षड्गर्गमें ६, मित्रकी राशिमें ७, यामित्रके नवांशमें ८ ॥ २१० ॥ अपने वर्गोत्तममें ९,

शत्रुकी राशिमें १०, शत्रुके नवांशमें ११, अपनी राशिमें १२ बारहप्रकार करके क्रमसे नवमभावका फल यवनाचार्यकरके कहा गया है ॥ २११ ॥ तामसकरके १, दंभकरके २, हीन ३, दुष्टता करके ४, पुष्ट ५, पराये आश्रयसे ६, पिशुनकर्मके आश्रयसे उत्पन्न ७, पापी ८, अत्यंत जड ९ ॥ २१२ ॥ कृतद्वनभाषी १०, चोरके संगसे ११, पिशुनके आश्रयसे १२ जो धर्मभावमें सूर्य जिस प्रकारका स्थित हो उसी प्रकार करके बारह प्रकारोंमेंसे क्रमसे फल देता है ॥ २१३ ॥

नृपसंगात् १बन्धुजनात् २विश्वासात् ३पितृतर्पणात् ४ ॥
अत्यल्पफलदानाच्च ५निद्र्या द्विपरवंचनात् ७ ॥ २१४ ॥
अन्यदेवमुपासेन ८ लोकसंगान्मदेन च९॥ अन्यसंगात् १०
शत्रु ११ जाया १२ धर्मभावगते विधौ ॥ २१५ ॥ रणजः १
परसेवोत्थो २ गुरुपोषणसंभवः ३ ॥ वधृष्ठवंधन ५ संप्राप्तः
परम्प्रीलोकसंभवः ६ ॥ २१६ ॥ जनानुरोधाद७ गृहणी ८
भयजो ९ बहुभाषकः १० ॥ परदर्शनतो ११ भौमे शस्त्रतो १२
धर्मभावगे ॥ २१७ ॥ द्विजदेवार्चने जात १ स्तथा दीनदया-
न्वितः २ ॥ त्रतपूतः ३कपटजः ४ पाखंडेन ५ कुकर्मतः ६
॥ २१८ ॥ गाहस्थ्यकृष्णजाया ८द्वादशाना ९ दप्रियतोद्भवः
१० ॥ गुरुभूमा ११ त्साध्वसाच्च १२ धर्मभावगतेदुजः ॥ २१९ ॥

राजाके संगसे १, बन्धुजनोंसे २, विश्वाससे ३, पितृतर्पणसे ४, अल्प-फलदानसे ५ निद्राकरके ६, परवंचनसे ७ ॥ २१४ ॥ अन्य देवताओंकी उपासना करके ८, लोकसंगसे ९ अन्यसंगसे १० शत्रुकरके ११, स्त्रीकरके १२, जो धर्मभावमें चन्द्रमा स्थित हो ॥ २१५ ॥ संघामसे १, पराई सेवासे २, गुरुके पालनसे ३, वध ४, बन्धनसे प्राप्त ५, पराई स्त्री और जनोंकरके उत्पन्न ६ ॥ २१६ ॥ मनुष्योंके विरोधसे ७, स्त्रीकरके ८, भयकरके ९, बहुत बोलनेसे १०; परदर्शनसे ११, शस्त्रकरके १२, जो नवमभावमें

मंगल स्थित हो तो॥२१७॥ ब्राह्मण देवताओंके पूजनसे उत्पन्न १, दीनदया-
करके २, वत करके पवित्र ३, कपट करके ४, पाखण्डकरके ५, स्वोटे कर्मसे
६॥२१८॥ गृहस्थकरके ७, स्त्रीकरके ८, वस्त्रदानकरके ९, अप्रियभाष-
णसे १०, गुरुभूमसे ११, साधुसे १२ जो धर्मभावमें बुध हो तो ॥२१९॥

प्रचुरो १ गुरुसेवोत्थो २ अत्यद्गुतः॒देकन्यकस्तथा॑४ । ततो
गुरुविरोधोत्थ६ स्त्रीर्थजो द्विधर्मकर्मजः ७ ॥२२०॥ दारा-
मते ८ तथा पुत्रानुषंगान् ९ न्यायवर्जितः १० ॥ गुरुवेषण
११ घृणया १२ धर्मजीवे तपःस्थिते ॥२२१॥ परदानेन १
वस्त्रान्वदानेन २ पितृतर्पणात् ३॥ ४ अत्यल्पफलदो॒शुद्धि॑भ्र-
मेण७परवंचनात् ६ ॥२२२॥ अन्यदैवतसंगेन७लोकसंगा-
८ त्सुखप्रजात९॥ अन्यसंगा१० च्छत्रुसेवा ११ कृषिधर्मे१२
सिते शुभे ॥२२३॥ तृतीयवयसंजातः १२ स्वल्पो २ भक्तिवि-
वर्जितः ३ ॥ नैवा ४ न्यजः ५ कपटजः ६ सगृहोभीति ७
संभवः८ ॥२२४ परसेवासमुद्गृतो ९ स्वल्प १० दर्शनसंभ-
वम्११॥ गुरुलब्धिभवो१२ मन्दे धर्मभावे विधीयते॥२२५॥

प्रचुरतासे १, गुरुकी सेवासे २, अद्गुत ३, सुवर्ण ४, गुरुके विरोधसे ५,
तीर्थसे ६, धर्मकर्मसे ७ ॥२२०॥ स्त्रीकी सलाहसे ८, अथवा पुत्रके संगसे
९, ज्ञानरहित १०, गुरुभेषसे ११, घृणाकरके १२ जो बृहस्पति नवम
स्थित हों ॥२२१॥ पराये दानकरके १, वस्त्रोंके दानसे २, पितृके तर्पणसे
३, अत्यल्प फलद ४, बुद्धिभ्रमसे ५, परवंचनासे ६॥२२२॥ अन्यदैवतसंगसे
७, लोकसंगसे ८, सुखप्रजासे ९, अन्यसंगसे १०, शत्रुकी सेवासे ११
खेती करके १२ जो शुक्र नवम स्थित हों ॥२२३॥ तीसरी अवस्थाके
संज्ञानसे १, स्वल्प २, भक्तिविना ३, नैव ४, अन्यज ५, कपटसे ६, भीति-
करके ७ संभव ८॥२२४॥ पराई सेवासे उत्पन्न ९, स्वल्प १०, दर्शनसे
११, गुरु करके प्रात् १२ जो शनैश्चर नवमस्थानमें स्थित हो तो॥२२५॥

अथ धर्मभावस्थितराशिफलम् ।

धर्मस्थिते चैव हि मेषराशौ चतुष्पदोत्थं प्रकरोति धर्मम् ॥
तेषां प्रदानेन च पोषणेन दयाविवेकेन सुपालनेन ॥ २२६ ॥
वृषे च धर्मं प्रगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव धनप्रसूतौ ॥ विचि-
त्रदानैर्बहुगोप्रदानैर्विभूषणाच्छादनभोजनैश्च ॥ २२७ ॥ तृतीय-
राशौ प्रकरोति धर्मं धर्माकृतिं सौम्यकृतं सदैव ॥ अभ्याग-
तोत्थाद्विजभोजनाद्वा दीनानुकंपाश्रयमानतो वा ॥ २२८ ॥
ब्रतोपवासैर्विषमैर्विचित्रैर्धर्मं नरः संकुरुते सदैव ॥ धर्माश्रिते
चैव चतुर्थराशौ तीर्थाश्रयाद्वा धनसेवया वा ॥ २२९ ॥

जो नवमभावमें मेषराशि स्थित हो तो उस मनुष्यको चौपायों करके
उत्पन्न धर्म करनेवाला, उनके दान करके अथवा पोषण करनेसे दया
विवेक करके श्रेष्ठ पालनसे ॥ २२६ ॥ और वृषराशि नवमभावमें स्थित हो
तो वह मनुष्य धर्मका करनेवाला, धनवान्, विचित्र, दानकरके बहुत गोदान
करनेसे, वह भोजनकरके आच्छादित शोभायमान होता है ॥ २२७ ॥ जिस-
के मिथुनराशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य धर्म करनेवाला अधर्म
भी करनेवाला सौम्यप्रकृति सदैव अभ्यागतोंकरके अथवा ब्राह्मणभोजनसे
अथवा दीनोंकी दयासे वा मानसे उनके आश्रयसे ॥ २२८ ॥ जिसके कर्क
राशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य ब्रतोपवासकरके सदा विचित्र
धर्म करनेवाला, तीर्थाश्रय अथवा धनसेवा करनेवाला होता है ॥ २२९ ॥

तत्र स्थिते चाथ हि सिंहराशौ धर्मं परेषां प्रकरोति मत्यः ॥
स्वधर्महीनारिक्रियाभिरेव सुतीथृष्णं विनयेन हीनम् ॥ २३० ॥
धर्माश्रिते स्याद्यदि षष्ठराशिः स्त्रीधर्मसेवां कुरुते मनुष्यः ॥
विहीनभक्तिबहुजन्मना च पाखंडमाश्रित्य तथान्यपक्षम्
॥ २३१ ॥ तुलाधरे धर्मगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव सदा
प्रसिद्धम् ॥ देवद्विजानां परितोषणेन जनानुरागेण तथाद्वुता-

नाम् ॥ २३२ ॥ धर्माश्रिते चाष्टमगे च राशौ पाखंडधर्मे
कुरुते मनुष्यः ॥ पीडाकरं चैव तथा जनानां भक्या विहीनं
परपोषणेन ॥ २३३ ॥

नवमस्थानमें सिंहराशि स्थित हो तो वह मनुष्य पराये धर्मको करने-
वाला, अपने धर्मसे हीन और श्रेष्ठ क्रियाकरके हीन, अच्छे तीर्थका और
विनय करके हीन होता है ॥ २३० ॥ जो नवम भवनमें कन्याराशि स्थित हो
तो वह मनुष्य स्त्रीधर्मकी सेवा करनेवाला, बहुत जन्मोंसे भक्तिहीन और
पाखंडी होता है ॥ २३१ ॥ जिसके तुलाराशि नवमभावमें स्थित हो तो वह
मनुष्य धर्म करनेवालोंमें प्रसिद्ध, देवता और ब्राह्मणोंको संतुष्ट करनेवाला
अनुसागयुक्त अद्भुत होता है ॥ २३२ ॥ जिसके वृश्चिकराशि नवमभावमें स्थित
हो तो वह मनुष्य पाखंडधर्ममें तत्पर, मनुष्योंको पीडा करनेवाला, भक्ति
करके हीन, परायेका पोषण करनेवाला होता है ॥ २३३ ॥

चापे तथा धर्मगते मनुष्यः करोति धर्मं द्विजदेवतर्पणम् ॥
स्वेच्छान्वितं शास्त्रविनिर्मितं च कीर्त्यान्वितं भूमितलेऽपि
संस्थः ॥ २३४ ॥ धर्माश्रिते वै मकरे मनुष्यो पापोत्थधर्मं कुरुते
प्रतापम् ॥ पश्चाद्विरक्तो बहुलोकमान्यो तीर्थाटने वेदपुराण-
भक्तः ॥ २३५ ॥ कुंभे च धर्मं प्रगते सुधर्मं पुंसा विधत्ते सुर-
संघजातम् ॥ वृक्षाश्रयोत्थं च तथोषरं च आरामवापीप्रियं
सदैव ॥ २३६ ॥ धर्माश्रिते चैव हि मीनराशौ करोति धर्म
विविधं नृलोके ॥ जलाशयप्रीतिरतीवकामी तीर्थाटने नित्य-
मर्मसैर्विचित्रैः ॥ २३७ ॥

जिस मनुष्यके धनराशि नवमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य
धर्मका करनेवाला, ब्राह्मणका भक्त, देवताओंका तर्पण करनेवाला, अपनी
इच्छानुसार शास्त्रोंका बनानेवाला, कीर्तिकरके सहित, पृथिवीके ऊपर स्थित
होता है ॥ २३४ ॥ जो यकरलश्च नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य
धर्मात्मा, धनुषविद्यामें प्रतापी, पीछेसे विरक्त, बहुत मनुष्योंकरके मान्य,

तीर्थोंका धूमनेवाला, वेदपुराणका भक्त होता है ॥ २३५ ॥ जिसके कुंभराशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य अच्छे धर्मका करनेवाला, देवताओंका संघजात, वृक्षोंके आश्रयसे उत्पन्न, तैसे ही तालाब बगीचा बावडीसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ २३६ ॥ जिसके नवम स्थानमें मीनराशि स्थित हो तो वह मनुष्य मनुष्यलोकमें विविध धर्मोंका करनेवाला, जलाशयोंमें प्रीति करनेवाला, अधिकतर कामी, तीर्थाटन करनेवाला तथा सदैव काल विचित्र यज्ञोंको करनेवाला होता है ॥ २३७ ॥

अथ नवमभावेशफलम् ।

लग्नगते नवमपतौ देवगुरुविनयवान् शूरः ॥ कृपणः क्षितिकमा-
स्वल्पग्रामी भवति धीमान् ॥ २३८ ॥ नवमाधिपे तु धनगे-
वृषले विदितः सुशीलवात्सल्यः ॥ सुकृती वदनव्यंगश्चतुष्प-
दोत्पन्नपीडितः ॥ २३९ ॥ सहजगते सुकृतयुतौ रूपस्त्रीबन्धु-
वत्सलः पुरुषः ॥ बधुस्त्रीरक्षणकृद्यदि जीवितं बंधुभिः सहितः
॥ २४० ॥ सुकृतेशो हितुकस्थे पितृभक्तो नृपकृतासुपात्र-
विदितः ॥ सुकृती मित्रकर्मरतिर्भवति भूमिवान् ॥ २४१ ॥

जो नवभावपति लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य देवता और गुरुसे विनयसहित, शूर, कृपण, पृथ्वीकर्म करनेवाला, स्वल्पग्रामी और बुद्धिमान् होता है ॥ २३८ ॥ नवमपति धनभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य व्यभिचारिणी स्त्रीका पति, सुशीलवान्, सुकृती, वदनमें व्यंग, चौपायोंकरके पीडित ॥ २३९ ॥ जो नवमभावपति तीसरे स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य सुकृतकरके संयुक्त, स्वरूपवान् स्त्री, भाईपर वत्सतालयुक्त, भाई और स्त्रीकरके रक्षण किया हुआ भ्रातासहित जीता है ॥ २४० ॥ जो नवमभावपति चतुर्थस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य पिताका भक्त, राजाकरके सुपात्र, विदित, सुकृती, मित्रोंसे प्रीतियुक्त, भूमिवान् होता है ॥ २४१ ॥

सुकृतगृहपे सुतस्थे सुकृती गुरुदेवपूजने निरतः ॥ वपुषा-
सुंदरमूर्तिः सुकृतिसमेतो भवति सुतः ॥ २४२ ॥ शत्रुप्रहरार्ते-
राक्षसीधर्मकलितं कलाविकलदेहम् ॥ दर्शति निद्रानिरतं सुकृ-
तपतौ षष्ठगे कुरुते ॥ २४३ ॥ नवमपतौ सप्तमगे सत्ययुता
सुवचना सुरूपा च ॥ शीलश्रीयुक्तदयिता सुकृतयुता जायते
नित्यम् ॥ २४४ ॥ दुष्टजंतुविधाती च गृहबंधनवर्जितः ॥ नव-
मेशो मृत्युगते कूरः षण्ठस्तु विज्ञेयः ॥ २४५ ॥

जो नवमभावका स्वामी पंचमभवनमें स्थित हो तो वह मनुष्य
सुकृती, गुरु और ब्राह्मणोंके पूजन करनेमें तत्पर, सुंदर शरीर, शोभायमान
स्वरूप, सुकृतसहित पुत्र होता है ॥ २४२ ॥ शत्रुके प्रहारसे दुःखित, राक्षसी
धर्मकरके शोभित, कलाओंकरके विकल देह; नींदमें तत्पर जो नवमभावपति
छठें स्थित हो ॥ २४३ ॥ नवमभावपति सप्तम स्थित हो तो वह मनुष्य
सत्ययुत, सुंदरवाणी बोलनेवाला, स्वरूप शीलवान्, उक्त्मीसहित शी सुकृत-
वाली प्राप्त होती है ॥ २४४ ॥ जो नवमभावपति अष्टमपति हो तो वह
मनुष्य दुष्ट जीव अर्थात् सिंहादिकोंका मारनेवाला घरके बंधनसे रहित
दुष्ट नपुंसक होता है ॥ २४५ ॥

सुकृतपतिः सुकृतगतः सुबंधुभिः प्रीतिमतुलसत्त्वम् ॥ दातारं
देवगुरुस्वजनकलत्रादिषु च भक्तम् ॥ २४६ ॥ नृपकार्यनृपलाभं
सुकर्मनिरतं मातृभक्तम् ॥ धर्मख्यातं कुरुते सुकृतपतिर्दशम-
गृहलीनः ॥ २४७ ॥ दीर्घायुधर्मयुतो धरापती रत्नादिवस्त्र-
सहितः ॥ धनाचितः सुकृतख्यातः सततं सुकृतपतौ लाभभव-
नस्थे ॥ २४८ ॥ द्वादशगे सुकृतेशो मानी देशांतरी सुरूपश्च ॥
विद्याचारी शुभखेटे कूरे च भवने नृपतिधूर्तः ॥ २४९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-
ज्योतिषिपंडितश्यामलालकृते ज्योतिषश्यामसंग्रहे भाव-
निर्याणवर्णनं नाम पंचविंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

जो नवमभावपति नवमस्थानमें ही स्थित हो तो वह मनुष्य अपने भाइयोंसे श्रीति करनेवाला, अतिबलवान्, दाता, देवता और गुरु, अपने जन और खी इत्यादिका भक्त होता है ॥२४६॥ राजकार्य करनेवाला, नृपसे लाभ, अच्छे कर्ममें तत्पर, माताका भक्त, धर्मवान् होता है ॥२४७॥ दीर्घायु, धर्मसहित पृथ्वीका पति, रत्नादिक वस्त्र आभूषणधनसहित, निरंतर सुकृती होता है जिसके नवमभावपति लाभभवनमें स्थित हो ॥२४८॥ जो नवमभावपति व्ययभवनम स्थित हा तो वह मनुष्य मानी, विदेशी, रूपवान्, विद्याचास्त्रसहित शुभग्रहके होनेसे होता है और जो पापग्रह व्ययभवनमें हो तो धूर्त नृपति होता है ॥ २४९ ॥

इति श्रीवंशबोरालिकस्थगौडवंशावंतश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिं पं ०

श्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां ज्योतिषश्यामसंग्रहे

भावनिर्याणवर्णनं नाम पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ वंशाध्यायप्रारम्भः ।

आसीद्गौड्कुले नितांतविमले वंशावरेल्यां पुरा
श्रीगोविंदपदारविंदनिरतो गोविंदरामः सुधीः ।
ज्योतिशास्त्रमहोदधेः परतरं पारं गतो योऽञ्जसा
प्रख्यातःस्वयशोभरेण भुवने मान्योऽपि सद्गृभृताम् ॥ १ ॥

अत्यंत निर्मल गौडकुलमें बांसवरेली नगरमें पहिले श्रीगोविंदके चरणारविंदमें है रति जिनकी ऐसे गोविंदराम नामक पंडित हुए, वे ज्योतिषशास्त्ररूपी जो समुद्र है उसको शीघ्र पार जानेवाले अपने यशरूपी भास्करद्वारा संसारविस्थात श्रेष्ठ राजाओंकरके माननीय हुए हैं ॥ १ ॥

घनश्यामदासस्तु तत्सुनुरासीत्पितुः पादपद्मद्वये सानुरागः ।
य ईड्योगुणोद्यैर्निर्जैर्लब्धवर्णः कृती तत्रविद्याभ्यपारं जगाम२॥
पिताके चरणारविंदमें है अनुराग जिनका, अपने गुणोंके समूहो-

करके ईड्य अर्थात् स्तुति योग्य, तंत्र विद्याहपी समुद्रके पार जानेवाले
घनश्यामदास नामक पंडित उन गोविंदरामके पुत्र हुए ॥ २ ॥

राधापतिध्याननिविष्टचेताः सर्वैद्विद्याणां सुहृदं हि जेता ॥

अनन्यभक्तः शुभकर्मरक्तस्तदंगजोऽभूद्वलदेवनामा ॥ ३ ॥

श्रीराधापति श्रीकृष्णचंद्रके चरणोंमें है चित्त जिनका, सम्पूर्ण इंद्रियोंको अच्छी तरहसे जीतनेवाले, श्रीकृष्णके अनन्यभक्त, श्रेष्ठ कर्मोंमें तत्पर बलदेवप्रसाद नाम तिन घनश्यामदासके पुत्र होते हुए ॥ ३ ॥

तस्यात्मजोऽहं पितृपादपञ्चद्वयार्चने प्रीतिरतो विपश्चित् ॥

बंशावरेल्यां निवसामि नूनं श्रीश्यामलालो ब्रजराजभक्तः ॥४॥

श्रीलालजीरामगुरोः सकाशादधीत्य विद्यां महतः प्रयत्नात् ॥

गत्वा विदेशेषु महीपतिभ्यः प्राप्ता प्रतिष्ठा परमा गरिष्ठा ॥५॥

उन बलदेवप्रसादका पुत्र मैं हूं कि पिताके दोनों चरणारविंदमें प्रीति करनेवाला, श्रीब्रजराजका भक्त श्यामलाल नाम पंडित निश्चय बांसबरेलीमें वास करता हूं ॥४॥ श्रीलालजीराम गुरुके सकाशसे बहुत परिश्रम-करके इस ज्योतिषविद्याका अध्ययन किया और परदेशमें जाकर राजा-ओंकरके बहुत भारी जो प्रतिष्ठा है उसको प्राप्त किया ॥ ५ ॥

श्रीमन्महाराजसवाइपूर्वमहेंद्रवर्यो हि प्रतापसिंहः ।

टीकंगढाधीश इति प्रसिद्धो बुदेलखण्डे नितरां विभाति ॥ ६ ॥

आदरेण समाहृय तेन भूपालमौलिना ।

नियुक्तो मानतः पूर्वं राजज्योतिर्विदासने ॥ ७ ॥

श्रीमन्महाराज सवाई है पूर्वमें पद जिनके, महेंद्रोंमें श्रेष्ठ अर्थात् सवाई महेंद्र श्रीमद्भूप अष्टोन्नर शत १०८ श्रियालंकृत सरामदराजहाय बुदेलखण्ड श्रीप्रतापसिंहजू देव टीकंगढाधीशकरके संसारमें प्रसिद्ध बुदेलखण्डमें निरंतर शोभायमान है ॥ ६ ॥ उन भूपालशिरोमणिने आदरसे बुलाकर मानसंहित राजज्योतिषीकी जगहपर मुझको नियुक्त किया ॥ ७ ॥

पुस्तकों मिलने के स्थान :-

- | | |
|---|---|
| १. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवाँ खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई—४०० ००४ | २. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जिंठाणे—महाराष्ट्र) |
| ३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक—वाराणसी (उ. प्र.) | |